ॐ

श्री जिनवाणी

(पूजन पाठ संग्रह)

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

कृति	:	श्री जिनवाणी (लाल जिनवाणी)
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	षष्टम, रजत वर्षायोग 2023 बीना
लागत मूल्य	:	200/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 3. अरिहंत जैन सागर 8236060889
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

हमारे आराध्य
संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित

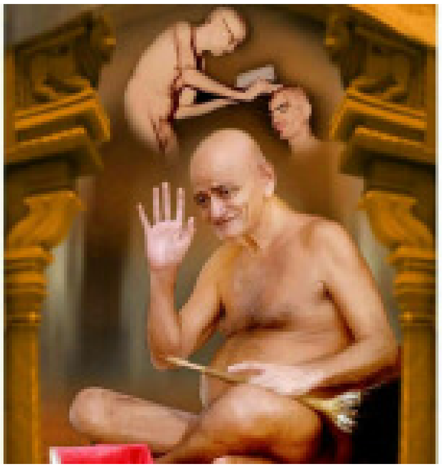

आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज

(शार्दूल विक्रीड़ित)

श्री विद्यामुनि धर्मरूप सुगुरु, विंद्या नमामि प्रियं।
विद्या नाशति सर्व कर्म दुःखान्, विद्ये नमो भगवते॥
विद्योऽपैति सुखी भवन्ति न जनाः, विद्यो यशो वर्द्धतु।
विद्याद्रौस्वरतिर्ददाति सुपदं, हे विद्य! माम् पालय॥

(यहाँ विद्या शब्द का प्रयोग आकारान्त पुल्लिंग के रूप में किया गया है)

वैरागी विजयी विशाल हृदयी, ज्ञानी महात्मा प्रभु।
तेजस्वी तप त्याग तीर्थ तपसी, त्यागी जितेन्द्री गुरु॥
कल्याणी सदयी उदार विनयी, दाता गुरू को भजूँ।
विद्यासागर श्रेष्ठ संत गुरु को, पूँजू नमोऽस्तु करूँ॥

अन्तर्भाव

श्री जिनवाणी (लाल जिनवाणी) यह कृति अत्यंत उपयोगी कृति है जो कि संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक, कविहृदय शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज के द्वारा तैयार की गई है। जिसका संकलन एवं संयोजन करके अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस कृति में देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति-पूजा करने का एक नया सोपान तैयार किया गया है। जिसमें सभी पूजायें, भक्तिपाठ, नित्यपूजायें, नैमित्तिक पूजायें, पर्व पूजायें, व्रत पूजायें एवं कई विधानों की पूजाओं को रखा गया है। प्रभु भक्ति और गुणगान आगमानुकूल अत्यंत सरल भाषा एवं सारभूत शैली में प्रस्तुत किया गया है जिसके माध्यम से सभी भक्तगण नवीन भावों के साथ भाव-विभोर होकर प्रभु की भक्ति-विधान एवं गुणगाान तथा स्तुति कर सकें।

मुनिश्री की अभी तक लगभग १५० कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, दीप-अर्चना, आरती, कहानी, भजन, नाटक, मुक्तक, कवितायें आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। विधान करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों की पूजाओं में जयमाला यद्यपि थोड़ी बड़ी जरूर लगेंगी लेकिन उनमें तीर्थंकरों के जीवन-चारित्र को समाहित करने का प्रयास किया गया है। लोगों का यह कहना है कि इस जिनवाणी से पूजन करते समय ऐसा लगता है कि हम अपनी ही बात को भगवान से कह रहे हैं तथा अपनत्व भाव झलकता है। बीच-बीच में पूज्य आचार्यश्री के विचारों को हाईको के रूप में प्रस्तुत किया गया है। तथा श्रावकों के पाठ करने हेतु कुछ आवश्यक सूत्र-पाठों को भी रखा गया है।

जिन्होंने जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से किसी भी माध्यम से सहयोग किया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस जिनवाणी के माध्यम से सभी लाभ लें इसी भावना के साथ गुरुदेव और मुनि श्री के चरणों में नमन...।

बा० ब्र० संजय, मुरैना

दीक्षा गुरु संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य
बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागर जी महाराज का परिचय

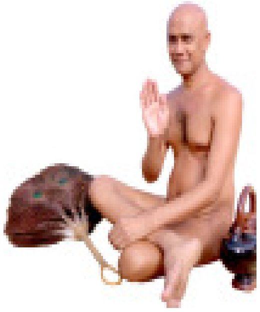

पूर्व नाम : राजेश नायक जैन
जन्म : 15.01.1973, पीपरा जिला सागर (म.प्र.)
पिता : स्व. श्री साबूलालजी नायक जैन
माता : स्व. श्रीमती चंद्ररानी नायक जैन
भ्राता : स्व. श्री सुनील नायक जैन
भावज : श्रीमती निकेता नायक जैन
भगिनी : श्रीमती राजकुमारी–राजकुमार जैन, जयपुर
श्रीमती सुनीता–अशोककुमार जैन (चिरोंजी), सागर
श्रीमती अनीता–राकेशकुमार जैन, रहली
लौकिक शिक्षा : बी.एससी. (गणित), एम.ए. (अर्थशास्त्र)
ब्रह्मचर्य व्रत (2 वर्ष) : 3 अगस्त 1998, भाग्योदय तीर्थ, सागर
संघ प्रवेश : 11 फरवरी 1999, कुण्डलपुर, दमोह
आजीवन व्रत : 21 अप्रैल 1999, सिद्धोदय तीर्थ, नेमावर
मुनि दीक्षा : 22 अप्रैल 1999, सिद्धोदय तीर्थ, नेमावर
(वैसाख शुक्ल सप्तमी)

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज द्वारा रचित मौलिक कृतियाँ

1. श्री बड़ेबाबा विधान
2. श्री जिनचक्र विधान
(24 तीर्थंकर विधान)
3. श्री वृषभनाथ विधान
4. श्री अजितनाथ विधान
5. श्री शंभवनाथ विधान
6. श्री अभिनंदननाथ विधान
7. श्री सुमतिनाथ विधान
8. श्री पद्मप्रभ विधान
9. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
10. श्री चन्द्रप्रभ विधान
11. श्री सुविधिनाथ विधान
12. श्री शीतलनाथ विधान
13. श्री श्रेयांसनाथ विधान
14. श्री वासुपूज्य विधान
15. श्री विमलनाथ विधान
16. श्री अनंतनाथ विधान
17. श्री धर्मनाथ विधान
18. श्री शांतिनाथ विधान
19. श्री कुंथुनाथ विधान
20. श्री अरनाथ विधान
21. श्री मल्लिनाथ विधान
22. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
23. श्री नमिनाथ विधान
24. श्री नेमिनाथ विधान
25. श्री पार्श्वनाथ विधान
26. श्री महावीर विधान
27. पंचबालयति विधान
28. बाहुबली विधान
29. नवदेवता विधान
30. श्री सिद्ध विधान
31. श्री सिद्धचक्र विधान
32. श्री तीर्थंकरचक्र
(तीस चौबीसी) विधान
33. श्री अरिहंतचक्र विधान
34. श्री तीर्थचक्र विधान
35. श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
36. श्री शीतलनाथ विधान (वृहत्)
37. श्री शांतिनाथ विधान (वृहत्)
38. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान (वृहत्)
39. त्रिकाल चौबीसी विधान
40. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान
41. भक्तामर दीप अर्चना/ऋद्धिविधान
42. श्री भक्तामर बीजाक्षर विधान
43. श्री कल्याणमंदिर विधान
44. श्री कल्याणमंदिर बीजाक्षर विधान
45. श्री एकीभाव विधान
46. जिनस्तुति विधान
47. णमोकार पैंतीसी विधान
48. णमोकार दीप अर्चना विधान
49. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
50. यागमण्डल विधान
51. पंचकल्याणक विधान
52. श्री निर्वाणक्षेत्र विधान
53. श्री सम्मेदशिखर विधान
54. श्री गणधर विधान
55. चौंसठऋद्धि विधान
56. दसलक्षण विधान
57. नंदीश्वर विधान
58. सोलहकारण विधान (लघु)
59. सोलहकारण विधान
60. श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान
61. विद्यागुरु विधान
62. विद्यागुरु बुंदेली विधान
63. चन्द्रविद्या गैरतगंज विधान
64. रक्षाबन्धन विधान
65. पावागिरि विधान (पवाजी)
66. कोलारस के खड़ेबाबा विधान
67. जैन दीपावली पूजन विधि
68. श्री जिनवाणी (लालजिनवाणी)
69. लघु जिनवाणी
70. लघु जिन पूजा
71. पूजाञ्जलि विद्या
72. आरती विद्या
73. नाटक विद्या
74. विद्या-गुरु गौरव गाथा
75. भजन विद्या 1-2
76. पद्यानुवाद विद्या
77. सामायिक विद्या
78. कहानी संकलन
79. नाटक संकलन
80. कविता संकलन
81. संस्मरण संकलन
82. ऐसे बनें जैसे (मुक्तक)
83. प्यारी माँ (काव्य)
84. बिटिया रानी (काव्य)
85. संकल्प विद्या
(नियम चार्ट)
86. प्रसंग (संस्मरण)
87. श्री शांतिनाथ विधान
(फोल्डर)
88. चन्देरी के चन्द्रप्रभु
89. श्री समवसरण विधान
90. जिनगुणसम्पत्ति विधान
91. बुंदेली जिनवाणी
92. छत्री वाले पार्श्वनाथ
93. श्री क्षमासागरजी पूजन
94. पोहरी के आदिनाथ पूजन
95. श्री छहढाला
96. श्री छहढाला
(जिज्ञासा-शान्ति)
97. श्री छहढाला विधान
98. देव-शास्त्र-गुरु विधान
99. श्री जिनसहस्रनाम विधान
100. श्री पंचस्तोत्र विधान

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज द्वारा रचित मौलिक कृतियाँ

101. आचार्य छत्तीसी विधान
102. साधु परमेष्ठी विधान
103. श्री तीर्थंकर अर्चना
104. श्री चौबीसी ऋद्धिविधान
(24 तीर्थंकर दीप-अर्चना ऋद्धि विधान)
105. श्री वृषभनाथ ऋद्धिविधान
106. श्री अजितनाथ ऋद्धिविधान
107. श्री शंभवनाथ ऋद्धिविधान
108. श्री अभिनंदननाथ ऋद्धिविधान
109. श्री सुमतिनाथ ऋद्धिविधान
110. श्री पद्मप्रभ ऋद्धिविधान
111. श्री सुपार्श्वनाथऋद्धिविधान
112. श्री चन्द्रप्रभ ऋद्धिविधान
113. श्री सुविधिनाथ ऋद्धिविधान
114. श्री शीतलनाथ ऋद्धिविधान
115. श्री श्रेयांसनाथ ऋद्धिविधान
116. श्री वासुपूज्य ऋद्धिविधान
117. श्री विमलनाथ ऋद्धिविधान
118. श्री अनंतनाथ ऋद्धिविधान
119. श्री धर्मनाथ ऋद्धिविधान
120. श्री शान्तिनाथ ऋद्धिविधान
121. श्री कुंथुनाथ ऋद्धिविधान
122. श्री अरनाथ ऋद्धिविधान
123. श्री मल्लिनाथ ऋद्धिविधान
124. श्री मुनिसुव्रत ऋद्धिविधान
125. श्री नमिनाथ ऋद्धिविधान
126. श्री नेमिनाथ ऋद्धिविधान
127. श्री पार्श्वनाथ ऋद्धिविधान
128. श्री महावीर ऋद्धिविधान
129. श्री बाहुबली ऋद्धिविधान
130. श्री नमिनाथ ऋद्धिविधान (शहडोल)
131. श्री नमिनाथ विधान (शहडोल)
132. श्री नेमिनाथ वैराग्य
133. सोलह शान्तिनाथ विधान
134. श्री वृहद् गणधरवलय विधान
135. बड़गाँव (कटनी) विधान
136. श्रुतधाम (बीना) विधान
137. श्रुतधाम (बीना) ऋद्धिविधान
138. संस्कार विद्या
139. अभिषेक-शांतिधारा विधि
140. अक्षयतृतीया विधान
141. कर्मदहन विधान
142. चंदनषष्ठी विधान
143. श्रुतपंचमी विधान
144. भोजपुर के शांतिनाथ विधान
145. लघु सिद्धचक्र विधान
146. सुव्रत विचार
147. समयसार विधान
148. स्वयंभू विधान
149. बालाबेहट के पार्श्वनाथ विधान
150. श्री बड़ेबाबा दीप अर्चना-ऋद्धिविधान

===

विद्या सुव्रत संघ
जिनशासन की प्रभावना एवं जिनवाणी के संरक्षण व संवर्धन के लिए सदैव समर्पित।

श्री जिनवाणी प्रकाशन में बीना के पुण्यार्जक परिवार

११००० श्रीमती राजमतीजी (पप्पू गारमेन्ट) परिवार।
११००० श्री द्वादश वर्षीय पंचम वर्ष ग्रुप।
११००० श्रीमती राजमती-सुरेशचंद्र जैन।
११००० श्री सचिन-आराध्य जैन।
५१०० श्री रवीन्द्रकुमार-सुनीता जैन (पप्पू होजरी)
५१०० श्रीमती इन्द्रा स्वाती जैन।
५१०० श्री गुलाब चंद जैन (सौरभ मेडीकल)।
५१०० श्रीमती सरिता आशा टडैया परिवार।
५१०० श्री अरविंदकुमार-जयंती जैन (मनीष वस्त्रालय)।
५१०० श्री डॉ डी. के. जैन।
५१०० श्रीमती पुष्पा बाई जैन, सैदपुर।
५१०० श्री वसंतकुमार-शकुन जैन (बिट्टू गारमेन्ट)।
५१०० श्री मिनी-संदीप जैन
५१०० श्रीमती गीता चौधरी।
५१०० श्री सुरेश जैन (कौशल ब्रदर्स)।
५१०० श्री मनीष-आभा सिंघई।
५१०० श्रीमती मंजू मेडम।
५१०० श्री संतोषकुमार जैन सेसई।
५१०० विकास आयरन।
५१०० अरविंदकुमार-साधना जैन P.N.B. वाले।
५१०० ब्र. मणि दीदी परिवार।
५१०० श्री ज्ञानचंद-सुनीता, दिलीप-नम्रता, हर्षिता जैन।
५१०० श्री प्रसन्न शाह।
५१०० अर्चना जैन शमसाबाद।
५१०० श्री विवेक-सपना चौधरी।
५१०० श्री अंकित-रुचि जैन (दिगंबर स्वीट्स)।
५१०० स्व. श्री मुन्नालालजी की स्मृति में श्रीमती प्रेमबाई, राजकुमार-ममता, ऋतुराज, ऋतिक, कविता जैन लिधौरा।

अन्य सहयोगी परिवार

> श्री बाबूलाल-राजमती, संतोष-सरोज, विमल, रवि जैन लिधौरा।
> श्री सुकुमार-सुनीता, अतिशय-उपाधि, अभिनव जैन रहली वाले।
> श्री संजय-रितु सराफ।
> श्री बाबूलाल-निर्मला, प्रवीण-ज्योति, खुशी, महक जैन उज्जैन वाले।
> डॉ. सनमत राहुल-अंजना जैन।
> श्री अनिमेष-मानिका जैन।
> श्री परिमल-दिव्या, पारस,परी दिवाकर।
> मंगलदीप परिवार अशोकनगर।
> दिव्यम् जैन।
> श्री दयाचंदजी, संजीवकुमार शास्त्री परिवार।
> श्रीपाल जैन।
> श्री रचित-निकिता अंबाला।
> श्री प्रवीण शाह।
> श्री यशवंत-रश्मि शाह।
> सुषमा सुनंदा छतरपुर।
> कु. सौम्या जैन।
> अविशी, अनन्या, एकाग्र जैन (टुक-टुक गारमेंट्स)।
> श्री कुंदनलाल कोलुआ वाले।
> श्री अमन-नमन सिंघई सेसई वाले।
> श्री संजय-जूली, समिन सिंघई सेसई वाले।
> श्री राजेश जैन।
> अखिल भारतीय महिला परिषद्।
> श्री आशीष-अंशुल मिडला।
> श्री अंकित-किरण जैन।
> श्रीमती चंपा बहिन जी।
> श्री रमेशचंद सचिन जैन बड़ी बजरिया।
> श्री कमलेश जैन मुंगावली।
> श्री अमित-अभिलाषा जैन।

- श्री मुकुल-सुरभि पवैया।
- श्री प्रकाशचंद जैन बड़ेगाँव वाले।
- श्री राजेन्द्र, राजीव, रजनीश जैन पड़रिया वाले।
- श्री मनीष पड़रिया।
- श्री नरेन्द्र जैन भोंरदा वाले।
- श्री फूलचंद जैन एडवोकेट।
- श्री अशोक जैन एडवोकेट।
- श्री सुगुनचंद जैन मदउखेड़ी वाले।
- श्री आर. सी. जैन, संदीप जैन।
- श्री आशीष-नीतू जैन।
- श्रीमती चंदा जैन।
- श्री राकेश-रजनी जैन (पप्पू गारमेंट्स)।
- श्री कपूरचंद जैन बसारी वाले।
- श्री मनीष जैन मरफी वाले।
- ऋषभी-नीतू जैन।
- श्रीमती सपना जैन।
- श्रीमती राखी-अमित जैन सैदपुर।
- श्री अरुण प्रकाश बुखारिया।
- श्रीमती रितु चौधरी।
- श्री संजय पढरिया जैन।
- श्री निधि-आलोक जैन दलपतपुर।
- श्री समीर जैन गुड़गाँव।
- श्रीमती आशा शाह।
- श्री उपेन्द्रकुमार बिहारीलाल जैन।
- श्री नरेन्द्र जैन (आदिनाथ ब्रोकर्स)।
- श्री सुनील जैन जाखलोन।
- श्रीमती आशा जैन बड़ेगाँव।
- श्री शैलेन्द्र-प्रणीता जैन मढ़िया वाले।

===

शास्त्र स्वाध्याय का मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य। -३

ओकारं बिन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः॥
अविरल शब्द घनौघ-प्रक्षालित सकल भूतलकलंका।
मुनिभिरूपासित तीर्थाः, सरस्वती हरतु नो दुरितम्॥
अज्ञान तिमिरान्धानां, ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

श्री परम गुरवे नमः, परम्पराचार्य गुरवे नमः, सकलकलुष विध्वंसकं, श्रेयसां परिवर्धकं, धर्मसम्बन्धकं, भव्य जीव मनः प्रतिबोध कारकमिदं, शास्त्रं श्री......नामधेयं, अस्य मूलग्रन्थ कर्त्तारः श्री सर्वज्ञदेवास्तदुत्तर-ग्रन्थ कर्त्तारः श्री गणधरदेवाः, प्रतिगणधर-देवास्तेषां वचोनुसार मासाद्य आचार्य प्रवर श्री.........विरचितं।

(श्रोतारः सावधानतया शृणवन्तु।)

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारकं।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनं॥

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः।
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ॥
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता।
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

===

विषय सूची (INDEX)

नित्य-पूजन खण्ड

1. मंगल मंत्र 01
2. मंगल भावना 01
3. मंगलाष्टकम् स्तोत्र 02
4. अभिषेक पाठ 05
5. अभिषेक स्तुति 10
6. अभिषेक गीत 11
7. अभिषंक आरती 12
8. लघु-शांतिधारा 13
9. बृहत्-शांतिधारा-1 15
10. बृहत्-शांतिधारा-2 20
11. बृहत्-शांतिधारा-3 23
12. दर्शन पाठ 26
13. दर्शन पाठ (पद्यानुवाद) 27
14. लघु जिन पूजन 29
15. विनय पाठ 37
16. पूजा पीठिका 39
17. देव-शास्त्र-गुरु पूजन 44
18. समुच्चय पूजन 49
19. कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य 52
20. श्री नवदेवता पूजन-1 53
21. अर्घ्यावली-महार्घ्य 57-64
22. शांतिपाठ-विसर्जन 65
23. पंचपरमेष्ठी पूजन 67
24. णमोकार महामंत्र पूजन 71
25. नवदेवता पूजन-2 76
26. अकृत्रिम चैत्यालय पूजन 80
27. श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन 86
28. श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन 90
29. श्री चौबीसी पूजन 96
30. कुण्डलपुर बड़ेबाबा पूजन 101
31. श्री वृषभनाथ पूजन 107
32. श्री अजितनाथ पूजन 114
33. श्री शम्भवनाथ पूजन 120
34. श्री अभिनन्दननाथ पूजन 126
35. श्री सुमतिनाथ पूजन 133
36. श्री पद्मप्रभ पूजन 139
37. श्री सुपार्श्वनाथ पूजन 146
38. श्री चन्द्रप्रभ पूजन 152
39. श्री सुविधिनाथ पूजन 157
40. श्री शीतलनाथ पूजन 164
41. श्री श्रेयांसनाथ पूजन 169
42. श्री वासुपूज्य पूजन 175
43. श्री विमलनाथ पूजन 182
44. श्री अनंतनाथ पूजन 189
45.श्री धर्मनाथ पूजन 195
46. श्री शांतिनाथ पूजन 201
47. श्री कुंथुनाथ पूजन 209
48. श्री अरनाथ पूजन 215
49. श्री मल्लिनाथ पूजन 221
50. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन 228

51. श्री नमिनाथ पूजन 233
52. श्री नेमिनाथ पूजन 239
53. श्री पार्श्वनाथ पूजन 247
54. श्री महावीर पूजन 252
55. श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन 258
56. श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पूजन 262
57. पंच बालयति तीर्थंकर पूजा 267
58. श्री भरतेश पूजन 272
59. श्री बाहुबली पूजन 276
60. त्रिकाल चौबीसी पूजन 282
61. तीस चौबीसी पूजन 288
62. मानस्तंभ पूजन 293
63. समवसरण पूजन 297
64. सहस्त्रकूट पूजन 302
65. सहस्त्रनाम पूजन 307
66. चारित्रशुद्धि पूजन 310
67. रविव्रत पूजन 314
68. जिनवाणी सरस्वती पूजन 318
69. विद्यागुरु पूजन 323

पर्व पूजन खण्ड

70. सोलहकारण पूजन 328
71. पंचमेरू पूजन 333
72. नंदीश्वर पूजन 337
73. दसलक्षण पूजन-विधान 342
74. रत्नत्रय पूजन 348
75. क्षमावाणी पूजन 353

नैमित्तिक पूजन खण्ड

76. दीपावली पूजन विधि 358
77. गौतम गणधर स्वामी पूजन 365
78. महावीर जयन्ती पूजन 377
79. महावीर निर्वाण पूजन 381
80. अक्षय तृतीया पूजन 386
81. श्रुतपंचमी पूजन 391
82. मोक्ष सप्तमी पूजन 396
83. श्री रक्षाबन्धन पूजन 400

आरती खण्ड

84. आरती-पंच परमेष्ठी 405
85. आरती-चौबीसों भगवान 406
86. आरती-आदिनाथ भगवान 407
87. आरती-चन्द्रप्रभ स्वामी 408
88. आरती-शांतिनाथ स्वामी 409
89. आरती-पार्श्वनाथ स्वामी 410
90. आरती-महावीर स्वामी 411
91. आरती-बाहुबली स्वामी 412
92. आरती-विद्यागुरु 413-414
93. आरती-शांतिविधान 555
94. आरती-गणधर विधान 612
95. आरती-चौंसठऋद्धिविधान 634
96.आरती-विद्यागुरु(बुंदेली) 649

भक्ति खण्ड

97. सिद्धभक्ति (प्राकृत) 415
98. पंचमहागुरु भक्ति(प्राकृत) 416
99. आचार्य वंदना 417

विधान खण्ड

100. मंगलाचरण 420
101. श्री सिद्धचक्र यंत्र लघु विधान 421
102. श्री सिद्ध विधान 430
103. श्री भक्तामर विधान 440
104. श्री कल्याणमंदिर विधान 480
105. श्री एकीभाव विधान 505
106. श्री चौबीसी विधान 526
107. श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान 538
108. श्री शांतिनाथ विधान (लघु) 548
109. श्री बाहुबली विधान 556
110. श्री निर्वाण क्षेत्र विधान 574
111 श्री सम्मेदशिखर स्तुति 585
112. श्री सम्मेदशिखर विधान 586
113. श्री गणधर विधान 600
114. श्री चौंसठऋद्धि विधान 613
115. विद्यागुरु बुंदेली विधान 635

स्तुति खण्ड

116. निर्वाण काण्ड 371
117. महावीराष्टक स्तोत्र 374
118. महावीराष्टक (हिन्दी) 375
119. श्री गोम्मटेश थुदि 571
120. श्री गोम्मटेश अष्टक-1 571
121. श्री गोम्मटेश अष्टक -2-भजन 572
122. स्वयंभू स्तोत्र (हिन्दी) 650
123. गुरु वंदना 654
124. लघु प्रतिक्रमण 655
125. आलोचना पाठ 657
126. बारह भावना 658
127. सामायिक पाठ 661
128. समाधि भावना 664
129. आत्म भावना 665
130. जिनवाणी स्तुति 666
131. श्री भक्तामर स्तोत्र 667
132. तत्त्वार्थसूत्रम् 675
133. श्रीजिनसहस्रनाम-स्तोत्र 689
134. तीर्थंकरों के पंचकल्याणक की तिथियाँ 704
135. सूतक-पातक चार्ट 706
136. बड़े बाबा चालीसा 707
137. श्री पार्श्वनाथ चालीसा 711
138. श्री विद्यागुरु चालीसा 713
139. गंधोदक भजन 717
140. जाकर आते हैं 718

जाप्य मंत्र खण्ड

141. भाद्रमास के व्रत जाप्य मंत्र 347
142. षोडशकारण व्रत जाप्य मंत्र 479
143. अष्टाह्निका व्रत जाप्य मंत्र 537
144. समवसरण व्रत जाप्य मंत्र 537
145. सर्व शांतिमंत्र जाप्य मंत्र 537

===

नित्य पूजन खण्ड

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बंधु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र–महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त–सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥]
श्रीमन्नम्र – सुरासुरेन्द्र – मुकुट – प्रद्योत–रत्नप्रभा–,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥
सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति – श्री – नगराऽधिनाथ–जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥
नाभेयादि – जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशति–
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥
ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,

सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्चसुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

===

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगंधाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें) [यहाँ जल से हाथ धोयें।]

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रक्षालनं करोमि।

अमृत स्नान (पात्र शुद्धि) (अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

तिलक लगाना (उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चंदनमोषधीशं, शुभ्रं सुगंधाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोमि।

[१. शिखा, २. मस्तक, ३. ग्रीवा, ४. हृदय, ५. दोनों कान, ६. दोनों भुजाएँ, ७. दानों कलाई, ८. नाभि, ९. पीठ इन नौ स्थानों पर तिलक करें]

दिग्बंधन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगलकलश एवं दीप स्थापना

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मंगलकलश स्थापनं करोमि।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिर हराय दीपकं स्थापनं करोमि।

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसंततिलका)

श्रीमन्–नतामर – शिरस्तट – रत्नदीप्ति
तोयावभासि – चरणाम्बुज – युग्ममीशम्।
अरिहंतमुन्नत – पद – प्रदमाभिनम्य–,
तन्मूर्ति – षूद्यदभिषेक – विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्निक (माध्याह्निक/आपराह्निक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपंचमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत–मुखादयस्ताः।
सद्भाव–लब्धि–समयादि–निमित्त–योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण–शशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य–कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसंततिलका)

भृङ्गार – चामर – सुदर्पण–पीठ–कुम्भ–
तालध्वजातप – निवारक – भूषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जयपाठ–पदावलीभिः, सिंहासने
जिन! भवन्त – महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि–सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसंततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य – विधौ – सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि–वारिभि–रपूरय–दुद्ध–कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम–चंदन–भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात–कुम्भीय–कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय–पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान–चंदनादि–सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसंततिलका)

आनन्द – निर्भर – सुर – प्रमदादि–गानैर्–
वादित्र–पूर–जय – शब्द – कलप्रशस्तैः।

उद्गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबंध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं[१]॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशान्ति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्ति-सन्मुक्ति-लक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

---

१. नयार्थ तत्त्वम्

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे...संवत्सरे...मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसंततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क–कान्त–
मुच्चैः स्थितं स्थगित–भानु–कर–प्रतापम्।
मुक्ताफल–प्रकर – जाल–विवृद्ध–शोभं,
प्रख्यापयत्–त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात–चल–चामर–चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत–कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क–शुचिनिर्झर – वारि–धार–
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय–चंदन – सदक्षत–पुष्पपुञ्ज–
नैवेद्य–दीपक – सुधूप–फल–व्रजेन।
कर्माष्टक–क्रथन – वीर–मनन्त–शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

हे तीर्थपा! निज–यशो–धवली–कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख–महा–गदानाम्।
सद्भव्य–हृज्जनित–पङ्क–कबंध–कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत–शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घैं - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(वसंततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...) ॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–२, सब- रोज कराओ रे॥
प्रासुक जल से...॥
ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–२, सब शीश झुकाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥१॥
देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–२, सब मिलकर गाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥२॥
रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आए, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–२, सब पुण्य कमाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥३॥
भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–२, सब होड़ लगाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥४॥
फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–२, जयकार लगाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥५॥
प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–२, सब करो कराओ रे...।
प्रासुक जल से...॥६॥

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....
जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आए शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....
श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....
जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....
हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तुम भी अपना फर्ज निभालो, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

अभिषेक आरती

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

१. श्री वृषभ-वीर-प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव-शास्त्र-गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आती प्यारी॥
प्रभु का...

२. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव-भव में उपकारी॥
प्रभु का...

३. प्रभु का अभिषेक ह्वन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

४. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुए मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

५. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

६. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

७. अभिषेक आरती पूजाएँ, सौभाग्य पुण्य से मिल पाएँ।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पाएँ मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

लघु-शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, द्वादश-गणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान-पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महीव्याप्ताय, अनन्त-संसारचक्र-परिमर्दनाय, अनन्त-दर्शनाय, अनन्त-ज्ञानाय, अनन्त-सुखाय, अनन्त-वीर्याय, त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, धरणेन्द्र-फणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका-चतुस्संघोपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-विनाशनाय, अघातिकर्म-विनाशनाय। **अपवादं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **मृत्युं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व अग्निभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व-शत्रुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमृगभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मचक्रभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमंत्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्षयरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वकुष्ठरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूररोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वनरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाश्वमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगोमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **सर्वमहिषमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वधान्यमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववृक्षमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगुल्ममारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपत्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपुष्पमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वफलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदेशमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविषमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेताल-शाकिनीभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वकर्माष्टकं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ सुदर्शन-महाराज मम चक्र-विक्रम-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व-जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-भव्यानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-ग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-देशानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-यजमानानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वदुःखं हन हन, दह दह, पच पच कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

शिवमस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान-पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः। इत्येन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक-धारा-वर्षणम्।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

वृहत्-शान्तिधारा-१

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं सिद्ध मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरहंत सरणं पव्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मंसरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि-सिद्धमंत्र-पूजन-भक्ति प्रसादात् **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** शान्तिधाराकर्त्तृणां सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत्क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम-डामरविघ्न-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि क्षां क्षः वः वः हूं फट् सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु-करु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोत्तोलन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरोत्तोलन सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डल सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मण्डिताय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्टक-मण्डन मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु।

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमोऽघोरगुणबंभचारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विडोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणबुद्धिरिसीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धि-रिसीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा रणांगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमानमंत्रेण सर्वरक्षार्भवतु स्वाहा।

तव भक्तिप्रसादात्–लक्ष्मी–पुर–राज्यगेहपद–भ्रष्टोपद्रव दारिद्रोद्–भवोपद्रव–स्वचक्र–परचक्रोद्–भवोपद्रव–प्रचण्ड–पवनानल–जलोद्भवो–पद्रव–शाकिनी–डाकिनी–भूत–पिशाच–कृतोपद्रव–दुर्भिक्ष–व्यापार–वृद्धि–रहितोपद्रवाणाम् विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनानि सदा संतु सद्धर्म श्रीबलायु–रारोग्यैश्वर्या–भिवृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण–कल्याण–मंगल–रूप–मोक्ष–पुरुषार्थश्च भवतु।

इत्येन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक–धारा–वर्षणम्।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र–सामान्य–तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

देख सामने
प्रभु के दर्शन हैं
भूत को भूल

वृहत्-शान्तिधारा-२

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं इ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनन्तचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनन्त-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, बृहत्फणा-मण्डल-मण्डिताय ऋषि-आर्यिका श्रावक-श्राविका-प्रमुख-चतुःसंघोपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमंत्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मंत्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्**

छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं **अस्मभ्यं** चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य- शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा संतु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपमुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फुर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

बृहत्-शान्तिधारा-३

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं सिद्ध मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरहंत सरणं पव्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मंसरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि-सिद्धमंत्र-पूजन-भक्ति प्रसादात् **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** शान्तिधाराकर्त्तृणां सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ऋद्धिमंत्रभक्तिप्रसादात् सर्वेषां शान्तिर्भवतु विसूचिका-ज्वरादि-रोग-विनाशनं भवतु।

२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं शिरोरोगविनाशनं भवतु।

३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं नासिकारोगविनाशनं भवतु।

४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगविनाशनं भवतु।

५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु।

६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु।

७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं हृदयरोगविनाशनं भवतु।

८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं परस्परविरोधविनाशनं भवतु।

९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं श्वासरोगविनाशनं भवतु।

१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु।

११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं प्रतिवादिविद्याविनाशनं भवतु।

१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं अन्यगृहीतं श्रुतज्ञानं भवतु।

१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं दारिद्र्यविनाशनं भवतु।

१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्ववेदिनो भवन्तु।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं स्वसमयपरसमयवेदिनो भवन्तु।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादिज्ञानं भवतु।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व-इड्ढिपत्ताणं कामितवस्तु-प्राप्तिर्भवतु।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेशप्रमितज्ञानं भवतु।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवतु।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अन्तरिक्षगमनं भवतु।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहतं भवतु।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशनं भवतु।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं विरुद्ध-वचःस्तम्भनं भवतु।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं विरुद्ध-सेनास्तम्भनं भवतु।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं विरुद्ध-अग्निस्तम्भनं भवतु।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं विरुद्ध-जलस्तम्भनं भवतु।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशनं भवतु।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं असाध्यव्याधिविनाशनं भवतु।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादिभयविनाशनं भवतु।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं भूतप्रेतादिभयविनाशनं भवतु।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अपस्मारप्रलापनचिन्ताविनाशनं भवतु।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशनं भवतु।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं जन्मान्तरवैरभावविनाशनं भवतु।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विडोसहिपत्ताणं गोगजाजमहिषमारी-विनाशनं भवतु।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनुष्यामरोपसर्गविनाशनं भवतु।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं मानसिकोपद्रवविनाशनं भवतु।

३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं वाचनिकोपद्रवविनाशनं भवतु।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं कायिकोपद्रवविनाशनं भवतु।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादश–कुष्ठ–गण्डमालादिक–विनाशनं भवतु।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशीतज्वरविनाशनं भवतु।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशनं भवतु।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्वव्याधिविनाशनं भवतु।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणर्द्धिर्भवतु स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाण–बुद्धिरिसीणं राजपुरुषादि–भयविनाशनं भवतु।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं धनधान्यसमृद्धिर्भवतु।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि–महावीर–वड्ढमाण–बुद्धिरिसीणं रत्नत्रयं समाधिसुखं च भवतु।

ॐ णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूये वा विवादे वा रणंगणे वा थम्भणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमानमंत्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु–विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामरविघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्र खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्धि छिन्धि परमंत्रान् भिन्धि भिन्धि क्षां क्षः वः वः हूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्वोक्त-मंत्राणां पूजन-भक्तिप्रसादात् ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविकाणा **अस्माकं** शान्तिधाराकर्तृणां च सर्वपापविनाशनं भवतु। रत्नत्रयं भवतु। सद्धर्म-प्रभावना भवतु। सुगतिगमनं समाधिमरणं च भवतु। सम्पूर्णकल्याण- मंगलरूप मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र-धनानि सदा संतु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

दर्शन पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्॥ १॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्॥ २॥
वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
जन्मजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति॥ ३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्त नाशनम्।
बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम्॥ ४॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृत - वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः॥ ५॥
जीवादितत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय॥ ६॥

चिदानन्दैक - रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः॥ ७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वरः॥ ८॥
नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत् त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति॥ ९॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्ति-र्दिनेदिने।
सदामेऽस्तुसदामेऽस्तु,सदामेऽस्तु भवेभवे॥ १०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपिदरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः॥ ११॥
जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम्।
जन्ममृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्॥ १२॥
अद्याभवत् सफलता नयन -द्वयस्य,
देव! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणः॥१३॥

===

दर्शन पाठ

(दोहा)

दर्शन प्रभु अरिहंत का, दर्शन पाप नशाय।
दर्शन सीढ़ी स्वर्ग की, दर्शन मोक्ष दिलाय॥१॥
जिन-दर्शन मुनि वन्दना, हरे पाप दुख पीर।
छिद्र सहित ज्यों अंजली, खोती अपना नीर॥२॥
पद्मरागमणि कान्ति सम, वीतराग मुख देख।
दर्शन से बहु जन्म के, नशते पाप अनेक॥३॥

दर्शन श्री जिन-सूर्य का, भव-तम करता नाश।
हृदय कमल विकसित करे, सारे अर्थ प्रकाश॥४॥
दर्शन श्री जिन-चन्द्र का, धर्मामृत बरसाय।
हरे दाह भव जन्म का, सुख का सिन्धु बढ़ाय॥५॥
प्रतिपादक सब तत्त्व के, गुणसागर मय आठ।
नगन शान्त जिन रूप को, सदा झुकाऊँ माथ॥६॥
चिदानन्द परमातमा, एक जितेन्द्री रूप।
दिग्दर्शक परमात्म के, नमूँ सिद्ध शिव रूप॥७॥
अन्य शरण मेरी नहीं, मात्र शरण जिन नाथ।
करुणा कर रक्षा करो, मेरी रक्षा आप॥८॥
त्रय जग में तुम सा नहीं, रक्षक त्राता ठौर।
वीतराग सा देव भी, हुआ न होगा और॥९॥
भव-भव में प्रतिदिन रहे, श्री जिन-भक्ति सदैव।
नित मुझमें जिन-भक्ति हो, हो जिन-भक्ति सदैव॥१०॥
मुझे बिना जिन-धर्म के, चक्री की ना आश।
भले दुखी दारिद रहूँ, पर जिन-धर्म निवास॥११॥
जनम-जरा-मृतु रोग वा, जनम-जनम के पाप।
प्राप्त करोड़ों अघ नशें, जिन-दर्शन से आप॥१२॥

(ज्ञानोदय)

नाथ! आप के पद कमलों के, पावन दर्शन आज किए।
जिससे मेरे प्यासे नयना, सफल हुए गुण-सुधा पिए॥
तीन लोक के तिलक जिनेश्वर, आज मुझे लगता ऐसा।
मेरा खारा भवसागर अब, शेष बचा चुल्लू भर सा॥१३॥

===

लघु जिन पूजन

विनय–पाठ (दोहा)

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु – द्वार।
जिन–सूरज जिन–चन्द्र को, नमोऽस्तु बारम्बार॥ १॥
कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकी नाथ॥ २॥
आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान्॥ ३॥
भक्तों को तुम तारते, तारण–तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज॥ ४॥
नाथ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर भी करुणा करो, कर दो अब उद्धार॥ ५॥
जन्मादिक व्याधि हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बंध से मुक्ति दो, देकर कुछ संन्यास॥ ६॥
तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार॥ ७॥
जल बिन ज्यों मछली हुई, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात॥ ८॥
नमूँ–नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्रगुरु को नमूँ, हो मंगल आशीष॥ ९॥
परमेष्ठी पाँचों नमूँ, नमूँ–नमूँ नवदेव।
भूत भविष्यत आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव॥ १०॥
मंगल–मंगल बोल हों, मंगल–मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥ ११॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (९ बार णमोकार)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि-मूलमंत्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥
श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पांजलिं...)

पाँचों कल्याणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ्य चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो अर्घं...।

पूजा प्रतिज्ञापाठ

(ज्ञानोदय)

तीनलोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान-सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होमकर, भाव शुद्ध करने आया॥

ॐ ह्रीं विधि-यज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगलपाठ (मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥

(इति जिनेन्द्र-स्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ (दोहा)

चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज॥

(इति परमर्षि-स्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं...)

===

नवदेव-देवशास्त्रगुरु पूजन

(ज्ञानोदय)

श्री अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय सब साधु महान्।
जय जिन धर्म जिनागम जय जिन-चैत्य तथा चैत्यालय धाम॥
ये नव देवा देव-शास्त्र-गुरु, पूजित जग में जिन भगवान।
मन मंदिर में इन्हें बिठाकर, हम करते हैं पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण। (पुष्पांजलिं...)

जल तज के रत्नत्रय जल से, अब कर दो पावन हमको।
तुम बिन सक्षम कौन यहाँ पर ? नीर करे अर्पण तुमको॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जगत कूप में आग लगी है, उसमें जलते सब प्राणी।
तन मन भव का ताप मिटाती, जिनवर वाणी कल्याणी॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जग वैभव की मारामारी, तजने तंदुल चढ़ा रहे।
भक्ति-नाव से मुक्ति-गाँव को, पाने माथा झुका रहे॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षातान्...।

जिन सूरज के नाम मात्र से, भाग्यकमल खिलकर महके।
काम रोग की व्यथा मिटे तो, ब्रह्मचर्य बगिया महके॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

क्षुधा साँप है महाभयंकर, आप गरुड़ बन आ जाओ।
ये नैवेद्य आपको अर्पण, क्षुधा जहर प्रभु नशवाओ॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यथा रात में सूरज गाफिल, तथा मोह में हम अंधे।
ज्ञान किरण दो हमको भगवन्, करें आरती हम बन्दे॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...

जिसके दिल में प्रभु तुम वसते, उसके विधि बंधन टूटें।
हृदय हमारे आओ भगवन्!, धूप चढ़ाकर हम पूजें॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

वही सही फल जो उग करके, फसल बढ़ाए घर भर दे।
अगर वही फल प्रभु चरणों में, अर्पण हो तो शिवपुर दे॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अष्ट द्रव्य का मिश्रण करके, भाव भक्ति से चढ़ा रहे।
अक्षय अंक मिले रत्नत्रय, यही भावना बना रहे॥
देवशास्त्रगुरु नवदेवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

नवदेवों के साथ में, देव-शास्त्र-गुरु जाप।
भक्तों के संकट हरे, सुख दे अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

अर्हत् भगवत् घातिकर्म बिन, भव्य जनों को तार रहे।
अष्टकर्म बिन सिद्ध महन्ता, आतम के श्रृंगार रहे॥
शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, गुरु आचार्य ज्ञान पथ दें।
शास्त्र पठन करते करवाते, उपाध्याय विद्यारथ दें॥१॥
ज्ञान ध्यान तप में रत रहके, साधु थामते धर्म ध्वजा।
पूज्य पंच परमेष्ठी ये हैं, मिले इन्हीं की शरण मजा॥
जैनधर्म का चक्र निरन्तर, चलता हरता कर्म कथा।
अर्हत्वाणी जिन आगम का, अमृत पीकर हरो व्यथा॥२॥
प्रभु मूरत जिन चैत्य मनोहर, मन को शान्ति दिलाते हैं।
जिन मंदिर जिन चैत्यालय जो, चित्त भ्रांति नशवाते हैं॥
पूज्य यही नवदेव पूज लो, दसवें की क्यों हो पूजा।
दसवें की जो करते पूजा, उनसा मूढ़ नहीं दूजा॥३॥
दोष अठारह रहित देव हैं, देवों के जो देव रहे।
हित से सहित शास्त्र हितकर हैं, ग्रन्थ रहित गुरु देव रहे॥
परिषह उपसर्गों में जिनका, मन मेरु सा अचल रहा।
देव-शास्त्र-गुरु तीन रतन की, पूजन को मन मचल रहा॥४॥
जिन नव देवा, देव-शास्त्र-गुरु, ये आदर्श हमारे हैं।
इनके पूजक भक्तजनों के, रात दिवस त्यौहारे हैं॥
हरके संकट भरें सम्पदा, विघ्न कष्ट उलझन हर दें।
इस गंगा में नहा-नहा के, 'सुव्रत' मन पावन कर लें॥५॥

(दोहा)

भाव भक्ति से गा लिए, नव देवों के गीत।
देव-शास्त्र-गुरु नाम में, घटे न अपनी प्रीत॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शान्ति शान्तिधारा करें, करें शान्ति चहुँ ओर।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त कमल के भोर॥

(शान्तये शान्तिधारा...पुष्पांजलिं...)

महार्घ्य

(ज्ञानोदय)

जिन मूरत पाँचों परमेष्ठी, देव-शास्त्र-गुरु को पूजूँ।
नामादिक नव-देव पूज लूँ, तीर्थंकर तीरथ पूजूँ॥
दया धर्म दसलक्षण पूजूँ, रत्नत्रय मन से पूजूँ।
पूज्य भावनाओं को सादर, महाअर्घ्य लेकर पूजूँ॥

ॐ ह्रीं सर्वपूज्य-पदेभ्यो महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ

(चौपाई)

शान्तिप्रभु चन्दा के जैसे, गुण-धर नेत्र कमल के जैसे।
पंचम चक्री सोलम जिनवर, आठों प्रातिहार्य मय मनहर॥
शान्तिनाथ प्रभु शान्ति प्रदाता, जगत् पूज्य को हम नत माथा।
हमें शान्ति दो जगत् शान्ति हो, हम पूजें नित शान्ति शान्ति को॥

(दोहा)

पूजक रक्षक राज्य को, राजा देश विदेश।
गुरु मुनियों को शान्ति दें, परम शान्ति परमेश॥

(ज्ञानोदय)

सभी प्रजा सम्पन्न सुखी हो, राजा धर्मी सक्षम हो।
योग्य समय पर सम्यक् विधि से, बादल बरसें रिमझिम हो॥
चोरी-मारी रोग व्याधियाँ, जग से सब दुर्भिक्ष टले।
सुख दाता जिनधर्म चक्र हो, यही भाव दिन रात फले॥

(दोहा)

घातिकर्म हर पा लिए, उज्ज्वल केवलज्ञान।
जगत् शान्ति सुखमय करो, वृषभादिक भगवान्॥

(शान्तिधारा...)

इष्ट-प्रार्थना

(ज्ञानोदय)

नमूँ चार अनुयोग पढ़ूँ मैं, प्रभु वन्दन सत्संग करूँ।
गुण गाऊँ पर दोष न बोलूँ, सबसे हित मित बात करूँ॥
तव चरणों में मम हिय थित हो, मेरे हित में तव चरणा।
जब तक मैं निर्वाण न पाऊँ, यही भावना ये रटना॥

(दोहा)

क्षमा करो मम दुख हरो, रत्नत्रय दो नाँव।
वीर मरण मैं कर सकूँ, दो चरणों की छाँव॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

विसर्जन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजा विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(नौ बार णमोकार)

===

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हत् देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्‌बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय रूप नवदेवेभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्त्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो एवं सकल जिनागमेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री शम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः॥
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः॥
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः॥
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः॥
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः॥
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।

श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः॥

(इति जिनेन्द्र-स्वस्तिमंगल-विधानं परिपुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥
जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षि-स्वस्तिमंगल-विधानं परिपुष्पांजलिं...)

देव-शास्त्र-गुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

देव सिद्ध अरिहंत हैं, शास्त्र जिनागम ग्रन्थ।
नग्न दिगम्बर गुरु जिन्हें, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

(हरिगीतिका)

हैं सिद्ध वा अरिहंत् श्रद्धा, शास्त्र सम्यग्ज्ञान हैं।
निर्ग्रन्थ गुरु चारित्र तीनों, भक्त जन के प्राण हैं॥
सो देव गुरुवर शास्त्र भजने, हम करें आह्वान भी।
कल्याण करने हो नमोऽस्तु, आइए भगवान जी॥

(दोहा)

अरिहंतों को नमन कर, शास्त्र जिनागम ध्याएँ।
निर्ग्रन्थों की अर्चना, करके नमोऽस्तु गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

चैतन्य वैभव देख करके, देव भरते नीर हैं।
ले अर्चना की भक्त नैया, पा रहे भव तीर हैं॥
हम जन्म आदिक दुख मिटाने, नीर अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

(दोहा)

निर्मल करने चेतना, प्रासुक नीर चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

संसार के जलते महल में, जीव सब संतप्त हैं।
जिनधर्म के आश्रित हुए वो, शान्ति पाते भक्त हैं॥
यह मोह ज्वाला शान्त करने, गन्ध अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

चंदन सी हो चेतना, सो हम चरण चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

भण्डार अक्षय है स्वयं का, आज तक सोचा नहीं।
सो खण्ड खण्डित हो भटक के, खो रहे मौका सही॥
सिद्धीश के स्वामी बनें सो, पुंज अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
अक्षय श्रद्धा कर सकें, सो हम पुंज चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कैवल्य तरु के पुष्प खिलते, ब्रह्मचारी बाग में।
मुक्तीवधू नत नयन हो वर-माल लाए हाथ में॥
अब्रह्म की पीड़ा मिटाने, पुष्प अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
आतम पुष्प खिला सकें, सो हम पुष्प चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अध्यात्म का रस पान करके, भोग तृष्णा भागती।
संतोष रस आनन्द चखने, भक्ति की लौ जागती॥
निःशेष तृष्णा हो अतः नैवेद्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
आत्म स्वाद के रसिक हो, हम नैवेद्य चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

निर्ग्रन्थ सम्यग्ज्ञान से जब, अन्ध हरते मोह का।
बन के तभी अरिहंत स्वामी, पथ दिखाते मोक्ष का।
अज्ञान दुख का अन्ध हरने, आरती हम कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
ज्ञान ज्योति की प्राप्ति को, दीपक आज जलाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

सबको जलाते कर्म हैं पर, जो जलाते कर्म को।
वह भूप हैं चित् रूप हैं, उनके बिना क्या धर्म हो॥
हम धर्म से हर कर्म हरने, धूप अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
ध्यान अग्नि की प्राप्ति हो, सो हम धूप चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जिन भक्ति से तो भुक्ति वाले, मोह के फल भी लगे।
जो आत्म साधक को न रुचते, मोक्ष के फल ही रुचे॥
दो भक्ति का फल मुक्ति सो फल, भक्त अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, ले फल आज चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

ले अष्ट द्रव्यों के सुमिश्रण, अर्घ्य ये तैयार हैं।
श्रद्धा समर्पण और भक्ति, भक्त के त्यौहार हैं॥
त्यौहार करके नाच गा के, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

(त्रिभंगी)

हैं धर्म स्वरूपी, चेतन रूपी, देव-शास्त्र-गुरु आप रहे।
हम हैं अज्ञानी, पापी मानी, कर्मों के अभिशाप रहे।
फिर मिलन हमारा, कैसा प्यारा, हो पाएगा कौन कहें।
सो अर्घ्य चढ़ाके, आतम ध्याके, हम तुम स्वामी साथ रहें।
आठों द्रव्य सजाय के, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु तीन हैं, धर्म रत्न भगवान।
पृथक-पृथक वा साथ में, हो नमोऽस्तु गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

देव-शास्त्र-गुरु तीन रत्न हैं, जो रत्नत्रय रूप रहे।
जो व्यवहार रूप रत्नत्रय, दाता निश्चय रूप रहे॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, देव सिद्ध अरिहंत रहे।
मुनि निर्ग्रन्थ हमारे गुरुवर, तीनों के हम भक्त रहे॥१॥
जड़ रत्नों का मोह त्यागकर, चेतन रत्न परखते जो।
विषय भोग संसार देह तज, नग्न दिगम्बर बनते वो॥
बाह्य रूप में पिछी कमण्डल, अन्दर चेतन में रहते।
या तो अपने में रहते या, अपने वालों में रहते॥२॥
पहले गुरु आचार्य हमारे, परमेष्ठी छत्तीस गुणी।
उपाध्याय पच्चीस गुणी फिर, साधु रहे अठबीस गुणी॥
जिन भक्तों के नग्न दिगम्बर, परम पूज्य गुरुदेव यही।
इनके अनुचर जैन दिगम्बर, कहलाते स्वयमेव सही॥३॥

ये निर्ग्रन्थ साधु जब चढ़ते, क्षपकश्रेणी का तुंग शिखर।
तो छ्यालीस मूलगुण धारी, बन जाते अरिहंत प्रवर॥
कर्म घातिया की सैंतालिस, अघातिया की सोलह भी।
कुल त्रेसठ प्रकृति को हरकर, सजे सभाएँ बारह भी॥४॥
दिव्यध्वनि ओंकार रूप फिर, खिरे निरक्षर भाषा में।
महा अठारह भाषा जिसमें, सात शतक लघु भाषा में॥
अनेकान्त स्याद्वादमयी जो, गणधर गूँथे शास्त्रों को।
यही शास्त्र हैं द्वादशांग मय, ज्ञान दिलाएँ भक्तों को॥५॥
ये अरिहंत जिनेश्वर ज्यों ही, समवसरण का त्याग करें।
योगनिरोध धारकर स्वामी, मुक्तिवधू से राग करें॥
अष्टकर्म हर सिद्धचक्र में, मिल बैठे शुद्धातम से।
इन्हीं देव अरिहंत सिद्ध के, गुण गाने हम आ धमके॥६॥
गुण गाने का यही प्रयोजन, आयोजन परमातम का।
वीतराग विज्ञान प्राप्त कर, पर्व करें शुद्धातम का॥
बस इतना सा काम करा दो, भव-भव तक हम पूजेंगे।
'सुव्रतसागर' मुनि के नमोऽस्तु, मोक्ष महल तक गूंजेंगे॥७॥

(सोरठा)

यथाशक्ति हम पूज, देव-शास्त्र-गुरु नाम को।
कर लें आतम खोज, सो नमोऽस्तु धर ध्यान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरुवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धारा दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, देव-शास्त्र-गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

तज संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी बहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥
निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचाएंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जाएंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जाएँ अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शान्ति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किए पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जाएंगे तो, मोक्षदातृ अरिहंत मिलें॥

कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहंता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पाई, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।
सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव-शास्त्र-गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अरिहंत स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी॥१॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शान्ति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें॥२॥

कहें देव अरिहंत जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रन्थ आचार्य वाँचें।
अनेकान्त रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानन्द प्राणी॥३॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी॥४॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है॥५॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

देव-शास्त्र-गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनन्तानन्त भजें।
'सुव्रत' बन के संत दिगम्बर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर-अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु प्रभु करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

पूज्य तीस चौबीसी वाले, सभी सात सौ बीस जिनं।
तीन लोक के तीन काल के, करके नमोऽस्तु पूजें हम॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बंधी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं...।

(ज्ञानोदय)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य भक्ति का, हम सब करके कायोत्सर्ग।
आलोचन कर पाप नशाएँ, ले चैत्यालय का संसर्ग॥

यथाशक्ति हम भी तो पूजें, जगत पूज्य जिन चैत्यों को
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ाएँ, ऋद्धि-सिद्धि हो भक्तों को॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सुबह दोपहर संध्या वेला, देव वन्दना भक्त करें।
पूर्वाचार्यों के अनुचर हों, पंच महागुरु भक्ति करें॥
कायोत्सर्ग ध्यान से करके, णमोकार की जाप करें।
वीतराग अरिह-न्त सिद्ध हों, हम भी भव दुख पाप हरें॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

श्री नवदेवता पूजन-१

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद-विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अरिहंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ाके मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार, लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥

अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्‌गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना कर लें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥

पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नन्दीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवाँ दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचबालयति का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥
दया निधे निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें॥
पूज्य मल्लि प्रभु नेमि पार्श्व, अतिवीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥

करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, त--ाज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः बुंदेली संत श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अरिहंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तम-क्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-सम्बन्धिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो

नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-शत्रुंजय-तारंगा-हस्तिनापुर-चमत्कार-महावीरजी-तिजारा-पद्मपुरा आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे.... मध्यप्रदेशे... जिलान्तर्गते... मासोत्तममासे... मासे... पक्षे... तिथौ.... वासरे... मुनि-आर्यिकाणां श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अरिहंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन-विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। यः यः यः। (कायोत्सर्गं...)

===

पंचपरमेष्ठी पूजन

(दोहा)

पंच परम परमातमा, परमेष्ठी भगवान।
करके नमोऽस्तु हम करें, पूजन वा गुणगान॥

(शंभु)

जय परमेष्ठी, जय परमेष्ठी, जय परमेष्ठी पाँचों न्यारे।
अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरु, जय उपाध्याय साधू प्यारे॥
आदर्श यही जिनशासन के, हम भक्तों के तो प्राण रहे।
हैं चलते फिरते तीरथ ये, शुद्धातम के निर्वाण रहे॥
हम काल अनन्ता गवाँ चुके, बिन परमेष्ठी की पूजा के।
कर क्षमा हमें अपनाओ हम, निज से जिन हों जिन पूजा से॥
मन-वचन-काय को शुद्ध बना, अब परमेष्ठी को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, सो नमोऽस्तु के स्वर गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी जिनसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

तन रोग तनिक ही दुख देते जो, नशे तनिक सा श्रम करके।
भव-रोग लगे अति भारी जो, चेतन भोगे रो-रो करके॥
प्रभु रत्नत्रय जल औषधि दें, अब जन्म आदि के रोग हरें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कर राग कभी कर द्वेष कभी, यह दुनियाँ ज्वालामुखी बनी।
जो निज को पर को दग्ध करे, पर भस्म चेतना हुई नहीं॥
प्रभु! शान्त स्वभावी चंदन दें, यह राग-द्वेष का ताप हरें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जग दृश्य लुभाकर आतम की, आँखों में धूल झोंकते हैं।
हम पछताकर जब रोते हैं, तब प्रभु जी नयन पौंछते हैं॥
अब अपना अक्षत वैभव दें, पर-आकर्षण प्रभु नाश करें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शिकारी आता है, दाने का लोभ दिखाता है।
फिर छलिया जाल बिछाता है, जिसमें लोभी फँस जाता है॥
यह काम लोभ का चक्रव्यूह, अब छेदन करने पुष्प धरें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सागर मरघट तृष्णा जैसी, यह पेट क्षुधा की खाई है।
कितनी भर लो, कितनी भर लो, पर पूर्ण नहीं भर पाई है॥
प्रभु त्याग तपस्या का रस दो, हम क्षुधा रिक्तता पूर्ण करें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

विज्ञान विधा ने बिजली के, हैलोजन तक तो जला लिए।
पर हाय अँधेरे मिट न सके, क्यों घी के दीपक भुला दिए॥
घी दीप भेद-विज्ञानी सम, पथ हमें दिखा अज्ञान हरें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जड़-दीप जले या धूप जले, तो शेष कालिमा दे जाते।
पर कर्म कालिमा हरकर ये, चैतन्य रूप को चमकाते॥
ये दीप धूप हैं हेय नहीं, ये उपादेय के कर्म हरें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

विषयों की मस्ती ने कितने, घर फूँके कितने दिल तोड़े।
जब दिखे सामने फल इनके, तो जीने की आशा छोड़े॥
अब हमसे दुख न किसी को हो, पूजा का यह फल प्राप्त करें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

निस्सार जगत उस समय लगे, जब साथ न कुछ ले जा पाते।
बहुमूल्य हमारा जीवन क्यों, फिर इनमें ही हम उलझाते॥
अब अर्घ्य चढ़ा हरके उलझन, अनमोल सिद्ध-पद प्राप्त करें।
सो पाँचों परमेष्ठी पूजें, हम करके नमोऽस्तु शीश धरें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

कर नमोऽस्तु अरिहंत को, भजें सिद्ध आचार्य।
उपाध्याय मुनि साधु के, गुण गाएँ हम आर्य॥

(शंभु)

हम जिन्हें मानते अपना वो, अपनापन कुछ यूँ निभा रहे।
चौरासी लाख योनियों के, वो हमको चक्कर खिला रहे॥
फिर कैसे ये अपनापन हैं, जो अपनेपन से दूर करें।
ये मोही माया क्यों हमको, दुख सहने पर मजबूर करें॥१॥

ये गुत्थी कैसे सुलझेगी, इस दुख से कौन बचाएंगे।
सो समाधान लेने स्वामी, जिन-पूजन भक्त रचाएंगे॥
पूजा के स्वामी कौन चुनें, सो परमेष्ठी पाँचों चुनके॥
गुण गाओ तो दुख कष्ट मिटें, अपना लें प्रभु-पूजा सुनके॥२॥

जय प्रथम पूज्य परमेष्ठी की, अरिहंत जिनेश्वर स्वामी की।
जो कर्म घातिया नशा दिए, तीर्थंकर अंतर्यामी की॥
निर्दोष रहे अतिशयकारी, हैं छ्यालीस गुण के धारी।
ओंकार रूप दे दिव्य ध्वनि, प्रभु समवसरण कमलाकारी॥३॥
हैं शुद्ध-बुद्ध चैतन्य सुखी, लोकाग्र निवासी अविनाशी।
हैं अष्ट गुणी प्रभु सिद्धचक्र, कर दक्ष बना दो संन्यासी॥
छत्तीस गुणी आचार्य गुरो, दें शिक्षा दीक्षा जग तारें।
सन्मार्ग हमें दें पाप हरें, निज सम हमको भी श्रृंगारें॥४॥
हैं उपाध्याय पच्चीस गुणी, अज्ञान हरें अध्यात्म भरें।
दें सम्यग्ज्ञान कलाएँ गुरु, संशय विभ्रम के तत्त्व हरें॥
हैं अट्ठाबीस गुणी साधू, मुनि नग्न दिगम्बर उपकारी।
जिनशासन के आधार ध्वजा, हैं भेदज्ञान के अधिकारी॥५॥
गुण छ्यालीस गुण आठ तथा, छत्तीस गुणी पच्चीस गुणी।
अठबीस गुणी ही मूलगुणी, बाँकी में क्या गुण कहो गुणी॥
भगवान हमें गुण दान करें, जो तिष्ठें सम्यग्दर्शन पर।
वे अणुव्रत और महाव्रत हैं, जो सुख देते शुद्धातम कर॥६॥
अरिहंत बनें फिर सिद्ध बनें, यों पूजा की आवश्यकता।
मुनि नग्न दिगम्बर साधु बिना, जिनशासन तो टिक ना सकता॥
ये मूल पाँच परमेष्ठी को, जो भक्त भक्ति से पूज रहे।
जिनचरणचिह्न पर चलने को, 'सुव्रत' के नमोऽस्तु गूँज रहे॥७॥

(सोरठा)

परमेष्ठी के मंत्र, ऋद्धि-सिद्धि के तंत्र हैं।
मोक्षमहल के यंत्र, भजने भक्त स्वतंत्र हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पाँचों परमेष्ठी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, परमेष्ठी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

णमोकार महामंत्र पूजन

स्थापना (दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, सदा रहे जयवंत।
परमेष्ठी वाचक भजें, णमोकार महामंत्र॥

(ज्ञानोदय)

महामंत्र जो शब्द ब्रह्म है, अनादि अनन्त मंत्र रहा।
सब मंगल में पहला मंगल, दुख हर्ता सुख तंत्र रहा॥
यह अरिहंत सिद्ध आचार्यों, उपाध्याय मुनि का वाची।
णमोकार की पूजा करने, श्रद्धा नाँची गुण वाँची॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सुभौम नामक चक्री ने जब, णमोकार जल पर लिखकर।
पैरों द्वारा मिटा दिया तो, नरक गया श्रद्धा खोकर॥
श्रद्धालु इसके आश्रय से, जन्म आदि दुख पाप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कैंसर हृदयाघात कोढ़ सम, महाभयंकर तपते रोग।
हरकर रोगी कामदेव हों, णमोकार का पा संयोग॥

मैनारानी–श्रीपाल सम, शीतल हों संताप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो–णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः संसारताप–विनाशनाय चंदनं...।

आणं–ताणं कछु ना जाणं, सेठ वचन परमाणं हैं।
सूली बदले सिंहासन में, डवाँडोल पाते गम हैं॥
अंजन बना निरंजन हम भी, अक्षय विद्या सिद्ध करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो–णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अक्षयपद–प्राप्तये अक्षतान्...।

जहाँ सुरक्षित शील नहीं हो, ब्रह्मचर्य पर संकट हों।
णमोकार की माला जपकर, शीघ्र काम कामी पट हों॥
सेठ सुदर्शन सीता रानी, जैसे भय अभिशाप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो–णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः कामबाण–विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सेठ धनंजय के बेटे को, विषधर ने विषपान दिया।
मरण तुल्य भी जाग उठा ज्यों, णमोकार का ध्यान किया।
भोजन भजन मंत्र का करके, विषय विषों की क्षुधा हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो–णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यः क्षुधारोग–विनाशनाय नैवेद्यं...।

विद्युत चोर चुरा कर मणियाँ, खुद को पहले छिपा लिया।
बंधक हो फिर णमोकार जप, भाग्य सितारा जगा लिया॥
भूलों भटकों का साथी जो, मंत्रदीप में जोत भरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो–णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं...।

अब तक जितने सिद्ध बने या, कर्म नशाए आठों जो।
पूर्व भवों में रचे रचाए, णमोकार के पाठों को॥

मंत्र हवन कर कर्म हनन को, भक्त धूप ले हवन करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

णमोकार पर रखें भरोसा, जिसका ऐसा फल होगा।
हर मुश्किल का हल होगा रे, आज नहीं तो कल होगा॥
मंत्र जाप से विश्वशान्ति हो, विघ्न अमंगल श्राप हरें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

इक पलड़े पर णमोकार हो, इक पर दुनियाँ सारी हो।
चलो तराजू से तौलें तो, णमोकार ही भारी हो॥
इसकी महिमा वाँच न पाए, अर्घ्यों का आलाप करें।
णमोकार की पूजा कर हम, णमो-णमो के जाप करें॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

णमोकार के पाँच पद, भजकर गाएँ गान।
सो जयमाला हम कहें, करने निज कल्याण॥
अर्हत् सिद्धाचार्य को, णमो-णमो कर जोड़।
उपाध्याय मुनि साधू को, नमोऽस्तु लाख करोड़॥

(चौपाई)

सब मंत्रों का रहा मंत्र जो, सब मंत्रों का जनक मंत्र वो।
महामंत्र है मंत्र राज है, जिनशासन का मुकुट ताज है॥१॥
णमोकार यह मंत्र निराला, पूर्ण मनोरथ करने वाला।
पाँच पदों का ये धारी है, चित् चैतन्य चमत्कारी है॥२॥

प्रथम णमो अरिहंताणं है, अरिहंतों को नमन नमन है।
जो छ्यालीस मूलगुण धारी, समवसरण की महिमा न्यारी॥३॥
पुनः णमो सिद्धाणं भज लें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु कर लें।
अष्टगुणी चेतन के स्वामी, सिद्ध बनें हम भी आगामी॥४॥
पुनः णमो आइरियाणं है, आचार्यों के सेवक हम हैं।
शिक्षा-दीक्षा देकर तारें, हमको भव से पार उतारें॥५॥
णमो उवज्झायाणं वाँचो, उपाध्याय के पद में नाँचो।
ज्ञान दीप दे मार्ग दिखाएँ, रत्नत्रय देकर चमकाएँ॥६॥
णमो लोए सव्वसाहूणं को, नमस्कार हो साधू जन को।
नग्न दिगम्बर संत महंता, इनसे जिनशासन जयवंता॥७॥
पाँच पदों के पैंतीस अक्षर, अट्ठावन मात्राएँ जपकर।
ऐसे णमोकार को ध्याओ, अपनी नैया पार लगाओ॥८॥
ऐसो पंच चार पद ध्याता, जो नवकार मंत्र कहलाता।
मंगलमय मंगल कहलाता, णमोकार हर पाप नशाता॥९॥
णमोकार को जिसने ध्याया, उसने शीघ्र सहारा पाया।
पल में अंजन बना निरंजन, सूली बन गई झट सिंहासन॥१०॥
शीतल हुई अग्नि की ज्वाला, सर्प बने पुष्पों की माला।
श्वान बना सुर सुन्दर न्यारा, बैल बना सुग्रीव कुमारा॥११॥
णमोकार के पद्य सुनाके, राम बने रामायण पाके।
हथिनी बनी सती सीताजी, चंदनवाला जीती बाजी॥१२॥
णमोकार जब पार्श्व सुनाये, नाग-नागिनी सुर पद पाए।
पूरी कथा कौन कह पाए, हम तो सादर शीश झुकाएँ॥१३॥

यही प्रार्थना अंत हमारी, जब तक मिले न मोक्ष सवारी।
णमोकार का मंत्र न भूलें, रत्नत्रय धर आतम छू लें॥१४॥
रोम-रोम में णमोकार है, श्वांस-श्वांस में णमोकार है।
प्राण-प्राण में णमोकार है, भक्तों का धन णमोकार है॥१५॥
अपराजित यह णमोकार है, मृत्युंजय यह णमोकार है।
अनादिमंत्र यह णमोकार है, महामंत्र यह णमोकार है॥१६॥
रोग निवारक णमोकार है, विघ्नविनाशक णमोकार है।
संकटमोचक णमोकार है, पाप विनाशक णमोकार है॥१७॥
दुखनाशक यह णमोकार है, सुखकारक यह णमोकार है।
चिदानन्द कर णमोकार है, मोक्षधाम कर णमोकार है॥१८॥
णमोकार तो णमोकार है, णमोकार तो णमोकार है।
णमोकार तो णमोकार है, णमोकार तो णमोकार है॥१९॥

(सोरठा)

णमोकार की गूँज, गूँजे अंतर-भाव से।
आत्म सिद्धि को पूज, हो नमोऽस्तु नत भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन णमोकार मंत्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

णमोकार का मंत्र दे, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, णमोकार जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

नवदेवता पूजन-२

स्थापना (हरिगीतिका)

अरिहंत स्वामी घातिया हर, भक्त जन को तारते।
कर वज्र जैसा आत्म पौरुष, सिद्ध शिव सुख धारते॥
आचार्य दीक्षा ज्ञान आदिक, दे चलाते धर्म को।
कर साधना उवझाय साधू, काटते दुख कर्म को॥
ये पाँच परमेष्ठी तथा जिन, धर्म आगम चैत्य को।
चैत्यालयों के साथ पूजें, शुद्ध करने चित्त को॥
नवदेवता ये पूज्य हम भी, कर नमोऽस्तु पूज लें।
प्रभु आप मन में आ वसो तो, रूप तुम सम खोज लें॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मिथ्यात्व के तूफान दुख की, घोर वर्षा कर रहे।
सम्यक्त्व के छाते बिना, भवि लोग दुख से डर रहे॥
चारित्र की नैया मिले सो, भेंट प्रासुक जल करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

भव राग आग जले सदा तो, भस्म सब जग हो रहा।
वैराग्य के प्रेमी जनों का, दिल इसी से रो रहा॥
यह राग आग मिटा सकें सो, भेंट यह चंदन करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अज्ञान की आँधी चली तो, ज्ञान क्षत विक्षत हुआ।
शुद्धात्म कैसे फिर मिले जब, ध्यान प्रभु का ना हुआ।

प्रभु ध्यान कर अज्ञान हरने, भेंट यह अक्षत करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

संसार में बस वासना की, नित्य मधुशाला मिलें।
अध्यात्म के पथ से डिगाने, काम की ज्वाला जलें॥
इस काम की लीला हरें सो, पुष्प यह अर्पित करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम भोज्य कितना कर चुके पर, भूख यह मिटती नहीं।
बहु सागरों का जल पिया पर, प्यास भी बुझती नहीं॥
जिन तत्त्व से हो तृप्ति सो, नैवेद्य यह अर्पित करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

जब लोग ईर्ष्या से जलें तो, हो अँधेरी हर गली।
जब दीप से दीपक जलें तो, रोज हो दीपावली॥
सो दीप श्रद्धा का जलाने, दीप को प्रज्ज्वल करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

हैं युद्ध कर्मों के निराले, खुद स्वयं लड़ना पड़ें।
जो युद्ध योद्धा जीतते वो, मोक्ष की सीमा चढ़ें॥
अब हों पराजित हम नहीं सो, धूप यह खेया करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

व्यापार सुख दुख का करें पर, बेच पाते दुख नहीं।

पुरुषार्थ सम्यक् ना करें सो, भोग पाते सुख नहीं॥
व्यापार सुख दुख त्यागने को, भेंट प्रासुक फल करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जब द्रव्य निर्मल कर लिए तो, भाव निर्मल ना हुए।
जब भाव निर्मल कर लिए तो, द्रव्य निर्मल ना हुए॥
हों द्रव्य निर्मल भाव निर्मल, अर्घ्य यह अर्पित करें।
नव देवताओं को नमोऽस्तु, सिर झुकाकर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य नव देवता, जिनकी हो जयमाल।
मंगल उत्तम शरण को, हो नमोऽस्तु त्रयकाल॥

(शेर)

जय-जय श्री नवदेवता हैं देव हमारे।
त्रय-लोक में हैं पूज्य ये श्रद्धान सहारे॥
इनकी विभूति देख के हम अर्चना करें।
अपनी विभूति प्राप्ति को हम प्रार्थना करें॥१॥
पहले श्री अरिहंत देव को नमोऽस्तु हो।
जिनकी कृपा से मोह शत्रु पै जयोऽस्तु हो॥
फिर सिद्धचक्र पाठ का विस्तार हम करें।
अध्यात्म की सवारी से संसार से तिरें॥२॥
आचार्य देव शिक्षा दीक्षा दे के भी तारे।
छत्तीस मूलगुणी हैं गुरुदेव हमारे॥
निर्ग्रन्थ उपाध्याय दे के ज्ञान देशना।

अज्ञान अन्ध को मिटाते करते देर ना॥३॥
अट्ठाईस मूलगुणी साधु नग्न दिगम्बर।
करें आत्मा की साधना हो मुक्ति स्वयंवर॥
ये तो रहे परमेष्ठी पाँच पूज्य हमारे।
जिनको नमोऽस्तु करके चमके भाग्य सितारे॥४॥
जो है अनादि से अनन्तकाल तक चले।
जिनधर्म चक्र के सहारे मोक्ष सुख मिले॥
अरिहंत भाषी दिव्यध्वनि गुरु गूँथ के।
जिन शास्त्र जिनागम रचा के तत्त्व पूजते॥५॥
नव देवताओं के बनाए बिन बनाए चैत्य।
जिन मूर्तियों को पूज के हो चेतना पवित्र॥
चैत्यालयों की मंदिरों की वन्दना करें।
जिनके सहारे शुद्ध अपनी साधना करें॥६॥
नवदेवता आदर्श हमें थाम लीजिए।
भक्तों की प्रार्थना पै आप ध्यान दीजिए॥
दुख संकटों को जीतने का ज्ञान दीजिए।
'सुव्रत' को अपनी शरण-स्वामी आप लीजिए॥७॥

(सोरठा)

नवदेवों के जाप, ग्रह-परिग्रह के भय हरें।
शुद्ध बनें तज पाप, करके नमोऽस्तु जय करें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरीगीतिका)

नव देवताओं को विनय से, जो समर्पित हो रहे।
वो पाप दुख भय रोग हर के, लोक पूजित हो रहे॥

–

संसार का धन प्राप्त कर वो, ज्ञान धन सुख भोगते।
'सुव्रत' तभी गुणगान करके, आत्म धन सुख खोजते॥

(दोहा)

नवदेवा स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अकृत्रिम चैत्यालय पूजन

स्थापना (दोहा)

अकृत्रिम चैत्यालय भजें, हाथ जोड़ कर मोड़।
पूजा के पहले करें, नमोऽस्तु लाख करोड़॥

(ज्ञानोदय)

आठ करोड़ों छप्पन लाखों, कुल संत्यान्वे रहे हजार।
तथा चार सौ इक्यासी हैं, अकृत्रिम चैत्यालय द्वार॥
तीन लोक के बिम्बालय हम, अपने हृदय विराजें जी।
मंदिर जैसा चेतन करने, ढोल नगाड़े बाजें जी॥

(दोहा)

नौ सौ पच्चिस कोटियाँ, त्रेपन लाख जिनीश।
बिम्ब सहस सत्ताईस भज, नौ सौ अड़तालीस॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

(पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

मृगतृष्णा का जल चमके जो, सचमुच भूल भुलैया है।
नीर मिला ना प्यास बुझी ना, जिससे डगमग नैया है॥
मिला न कोई हमें सहारा, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कैसा भी पानी हो लेकिन, आग बुझाए ताप हरे।
ऐसे जिनमन्दिर का सुमरण, पाप-ताप संताप हरे॥
मंदिर जैसा हमें बना दो, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जिनका रचनाकार न कोई, सिद्ध वर्णमाला जैसे।
जिनके दर्शन को व्याकुल पर, दर्शन हों हमको कैसे॥
जिन्हें पुंज अर्पित कर पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जिनमंदिर की धरा धाम पर, शाश्वत चेतन बाग खिलें।
जिनके माली बनने पर ही, निज पराग के पुष्प खिलें॥
हम भी ब्रह्मरमण को पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनमंदिर की परिक्रमा बिन, भोजन पानी रुच न सके।
परिक्रमा कर भक्त जनों का, क्षुधा रोग कुछ कर न सके॥
जिनचरणों का स्वाद चखें हम, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा जले जग धुआँ करे सो, चेतन का मुख काला हो।
चैत्यालय का दीप जले सो, चारों ओर उजाला हो॥
मंदिर जैसा दीप जलाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जिनमंदिर के धूप घटों में, धूँ-धूँ करके धूप जले।
हम भक्तों के अंतरघट में, धूँ-धूँ करके कर्म जले॥
आत्म घटों को हम महकायें, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अनन्त भव के पुण्यफलों से, जैन वंश जिन धर्म मिलें।
भव्य जनों को भगवानों के, जिनदर्शन साक्षात् मिलें॥
जिनदर्शन निज का दर्शन दे, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अरिहंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्मध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥

अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ्य

भवनवासियों के भवनों में, अधोलोक में मंदिर हैं।
सात करोड़ बहत्तर लाखों, रहे अलौकिक सुंदर हैं॥
अर्घ्य चढ़ा हम दर्शन पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अधोलोक स्थित अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

मध्यलोक के चैत्यालय जो, मनुज लोक में शोभित हैं।
रहे चार सौ अट्ठावन कुल, भक्त जनों से पूजित हैं॥
अर्घ्य चढ़ा हम दर्शन पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोक स्थित अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

उर्ध्वलोक के चैत्यालय जो, कुल चौरासी लाख रहे।
और संत्यान्वें हजार भी, साथ अधिक तेईस रहे॥
अर्घ्य चढ़ा हम दर्शन पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक स्थित अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आठ करोड़ों छप्पन लाखों, कुल संत्यान्वें रहे हजार।
तथा चार सौ इक्यासी हैं, तीन लोक के मंदिर द्वार॥

अर्घ्य चढ़ा हम दर्शन पाएँ, तारण-तरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक स्थित अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

तीन लोक के जो रहें, अकृत्रिम जिनधाम।
जिनको नमोऽस्तु कर करें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! जय हो! तीर्थों की।
जय हो! जय हो! तीर्थंकरों की, जय हो! जय हो! बिम्बों की॥
जिनशासन में जिनबिम्बों का, वैभव पापों को धोता।
बिम्ब चैत्य प्रतिमा मूरत का, अर्थ एक सा ही होता॥१॥
मानव निर्मित जिनबिम्बों को, हम तो कृत्रिम बिम्ब कहें।
बिना बनाए जिन बिम्बों को, ग्रन्थ अकृत्रिम बिम्ब कहें॥
दो प्रकार के जिन बिम्बों को, जहाँ विराजे जाते हैं।
वह आलय चैत्यालय होते, जिन मंदिर कहलाते हैं॥२॥
कृत्रिम और अकृत्रिम दोनों, प्रकार के चैत्यालय हों।
भजें अकृत्रिम चैत्यालय हम, जिनके दर्शन दुर्लभ हों॥
कहाँ तिष्ठते ये चैत्यालय, आओ! इसका ज्ञान करें।
इस वैभव के आगे हम क्या, समझ-समझ अभिमान हरें॥३॥
अनन्त जो आकाश तत्त्व के, सुनो! लोक बहु मध्य रहे।
उर्ध्व मध्य वा अधोलोक ये, उसके भेद प्रसिद्ध रहे॥
पुरुषाकार पैर फैला कर, हाथ कमर पर धार रहा।
मुख को रखे दिशा उत्तर में, ऐसा लोकाकार रहा॥४॥

उत्तर दक्षिण की चौड़ाई, सब में रही सात राजू।
पूरब पश्चिम घटती बढ़ती, ऊँचाई चौदह राजू॥
अधो लोक के सातों राजू, पूरित नरक निगोदों से।
पर पहली पृथ्वी शोभित है, कुछ चैत्यालय बिम्बों से॥५॥
मध्य लोक वा उर्ध्व लोक मिल, दोनों में सातों राजू।
जहाँ सुशोभित चैत्यालय हैं, उर्ध्व अधो आजू-बाजू॥
ज्योतिष व्यंतर वैमानिक में, अनगिन दीपों में शोभें।
मध्य लोक के ढाई दीप वा, नन्दीश्वर में मन मोहें॥६॥
जिनकी संख्या हम तुम जानें, बार-बार भी कहना रे।
जिनबिम्बों की चैत्यालय की, आओ! गाएँ महिमा रे॥
एक जिनालय में कुल प्रतिमा, बिम्ब एक सौ आठ रहे।
ध्यान लीन पद्मासन वाले, धनुष पाँच सौ उच्च रहे॥७॥
प्रातिहार्य आठों के साथी, आठों मंगल द्रव्य रहे।
हर मंदिर में रहे एक सौ, आठ मनोहर नित्य रहे॥
जहाँ-जहाँ जिनबिम्ब विराजे, वैभव जिनका कौन कहे।
सूर्य करोड़ों शरमा जाते, ज्ञानी ध्यानी मौन पड़े॥८॥
बिम्ब हमें वैराग्य करा दें, चैत्य हमें चैतन्य करें।
प्रतिमा प्रतिमा जैसे कर दें, मूरत-सूरत धन्य करें॥
शब्द छन्द के ज्ञान बिना हम, करें भक्ति श्रद्धालु हो।
'सुव्रत' को अब शीघ्र निहारो, तारो आप दयालु हो॥९॥

(सोरठा)

तीन लोक के चैत्य, चित चैतन्य सुधाम हैं।
करके नमोऽस्तु भक्त, खोजें मोक्ष मुकाम हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

प्रभु के चैत्यालय करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चैत्यालय जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन

स्थापना (सखी)

नहिं भाग्य भरोसे रहकर, पुरुषार्थ किया सब सहकर।
वैराग्य-यान पर चढ़कर, फिर जा पहुँचे जो शिवपुर॥
वो चिदानन्द सिद्धातम, सर्वोच्च पूज्य अविनाशी।
जो ज्ञानशरीरी निर्मल, हैं लोकशिखर के वासी॥
चैतन्य शुद्ध अब करने, पूजें सब सिद्ध जिनों को।
हो कृपा सिद्धप्रभु की तो, हम नाशें भव भ्रमणों को॥

(दोहा)

देह प्राप्त कर देह से, पाए देहातीत।
उन सिद्धों के चरण में, वन्दन हो अगणीत॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा कंचन आतम, सब सिद्ध प्रभु जी पाए।
तज रागद्वेष मिथ्यामल, पुद्गल के बंध नशाए॥
अब जन्म-मरण के बंधन, अपने सम दूर करा दो।
हम जल से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तज मोह-ताप की लपटें, निज की शीतलता पाई।
अध्यात्म-सदन में रमके, निज आत्म-विभूति बचाई॥
संयोग-वियोग की ज्वाला, अपने सम दूर करा दो।
चंदन से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जब छूटे झूठे आश्रय, तब अन्तर्लीन हुए हो।
तज आधि-व्याधि-उपाधि, चित् खण्ड-अखण्ड छुए हो॥
अब नाथ हमारी भटकन, अपने सम दूर करा दो।
ले पुंज करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं...।

चारित्र-गंध से चेतन, हे नाथ आपकी महकी।
तो चेतन सौन-चिरैया, चैतन्य बाग में चहकी॥
अब काम-शिकारी का भय, अपने सम दूर करा दो।
ले पुष्प करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब ज्ञानामृत सुख रस का, अन्तर से झरना झरता।
फिर उसे न दुनियाँ रुचती, वह भोग स्वयं का करता॥
अब क्षुधा-रोग की पीड़ा, अपने सम दूर करा दो।
नैवेद्य करें हम अर्पण, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

खलु चिच्चदेव की ज्योति, जो अन्धकार को खा ले।
वह दिखे जले न बाहर, चैतन्य सदन प्रकटा ले॥

अब मोह अमावस काली, अपने सम दूर करा दो।
हम करें आरती वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जब महका निज-सौरभ तो, हर कर्म-कली मुरझाई।
चित्-चमत्कार देखा तो, फिर मुक्तिरमा शर्माई॥
जड़-चेतन का मिश्रण अब, अपने सम दूर करा दो।
हम करें धूप से वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जो खोज चुका हो दुर्लभ, अनुपम निज-रूप सुहाना।
वो यहाँ-वहाँ क्यों भटके, जो पाए मोक्ष ठिकाना॥
संकल्प-विकल्प सभी अब, अपने सम दूर करा दो।
फल अर्पित करें नमन हम, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज-नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह-नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द चिद्रूप हैं, चित् चैतन्य विलास।
जिनके गुण गण में बसे, भक्तों का संन्यास ॥

(सखी)

जो स्वयं सिद्ध हैं जग में, जो सिद्ध धाम के स्वामी।
चैतन्य निलय के वासी, जिन्हें बारम्बार नमामि॥

सब कर्म-समूह नशा के, सुन्दर आतम जो पाए।
वह अनुपम स्वरूप पाने, हम गुण गाने ललचाए॥१॥
ज्यों मिले साध्य-साधन तो, कुन्दन बन जाता कंकर।
त्यों कृपा आपकी हो तो, हम भक्त बनें शिव-शंकर॥
जब सिद्ध दशा मिलती तो, नहिं अभाव हो आतम का।
नहिं नष्ट ज्ञान दर्शन हो, यह मत है जिनशासन का॥२॥
जो त्याग-तपस्या करके, निज-पर का मंगल करके।
जब कर्मपटल सब हरते, तो प्राप्त आठ गुण करके॥
झट सिद्धालय में वस के, भोगें वो अनन्तसुख को।
हे सुख सम्पन्न जिनेश्वर, हम खोजें बस उस सुख को॥३॥
वह सुख उत्पन्न स्वयं से, जो निरुपम है बिन बाधा।
प्रतिपक्ष रहित अविनाशी, ना कम होता ना ज्यादा॥
वह भोग विषय में न होता, वह रहता अचल सदा जो।
सिद्धों ने जिनको भोगा, हमको भी वही चखा दो॥४॥
प्रभु तुमने रोग हरे तो, औषध से नहीं प्रयोजन।
जब अंध हरा तो तुमको, दीपक से नहीं प्रयोजन॥
जब भूख-प्यास हर ली तो, षट् रस भोजन से क्या हो।
जब तुमने गंध हरी तो, चंदन फूलों से क्या हो॥५॥
जब श्रमण बने तो तुमने, श्रम निद्रा पूर्ण मिटाई।
तब कोमल आसन शय्या, क्या काम तुम्हारे आई॥
ऐसी वह सिद्ध अवस्था, जो परम सुहानी पाई।
बस उसको पाने हमने, यह पूजन आज रचाई॥६॥

पूजन का यही प्रयोजन, हो नमन सभी सिद्धों को।
हो रहे हुए होंगे जो, यशवान पूज्य सिद्धों को॥
नित तीनों संध्याओं में, हम करते उन्हें नमोऽस्तु।
वह सिद्ध दशा बस पाएँ, 'सुव्रत' की जो प्रिय वस्तु॥७॥

(दोहा)

सिद्ध भक्ति निर्दोष जो, करे नमन वा ध्यान।
सिद्धों जैसा शीघ्र वह, सुखी बने भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अनन्त सिद्ध स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्त सिद्ध जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ विदेह के, तीर्थंकर प्रभु बीस।
विद्यमान रहते सदा, उन्हें झुकाएँ शीश॥

पंचचामर (नाराच)

विदेहक्षेत्र में जिनेश, बीस विद्यमान हैं।
वही हमें सहाय हैं, वही हमारी शान हैं॥
विराजमान जो सदा, समो-समाज में रहें।
नमोऽस्तु है उन्हें सदैव, जो स्वरूप में रहें॥

विदेहक्षेत्र की सुतीर्थ, वन्दना न पा सकें।
न पुण्य है न भाग्य है, अतः न दर्श पा सकें॥
न शब्द हैं न द्रव्य हैं, न अर्चना रचा सकें।
उन्हें यहीं पुकार रोज, शीश ही झुका सकें॥

(दोहा)

पूर्ण काम हमने किया, जपकर तेरा नाम।
मन में आकर आप भी, पूर्ण करो निज काम॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकर जिनसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मलीन कर्म से रहे, अतः न शुद्ध हो सके।
न क्षीर नीर ला सके, न जन्म मृत्यु धो सके॥
नशाए जन्म आदि जो, जिनेन्द्र वो समुद्र दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

सराग हो सभी सहें, विराग से न राग है।
जला रही अतृप्त मोह, राग-द्वेष आग है॥
बुझाए राग आग जो, जिनेन्द्र साम्य भाव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

झुकाव अन्य पै रहा, किए न आत्म साधना।
घुमाव विश्व में हुआ, मिली न शुद्ध चेतना॥
निवास मोक्ष में मिले, अतः जिनेन्द्र छाँव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

गुलाब काम का प्रतीक, त्याग का सरोज है।
गुलाब में फँसे खिला न, आत्म का सरोज है॥
स्वभाव पुष्प सी खिलाइए, विदीर्ण आत्म को।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

न शान्त हो सकी क्षुधा, न तृप्त चित्त हो सका।
न हो सके विरक्त सो, अभक्ष्य-भक्ष्य को भखा॥
अशेष कामना तजें, स्वभाव ज्ञान वस्तु दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रकाश के प्रभाव से, पदार्थ अन्य ही दिखें।
न दीप वो कभी जला, जहाँ जिनेन्द्र ही दिखें॥
जिनेन्द्र पूजने चले, निजात्म तत्त्व प्राप्त हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

चिदात्म के विलास के, विकास तो हुए नहीं।
चली विभाव आधियाँ, स्वभाव जो छुए नहीं॥
जिनेन्द्र गंध में रमें, विनाश कर्म गंध हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

कि पाप नर्क दें कि पुण्य, स्वर्ग भोग मोक्ष दें।
चुनाव क्या करें यही, जिनेन्द्र भक्त सोच लें॥
अभाव पाप पुण्य का, जिनेन्द्र के बिना न हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

त्रिलोक में त्रिकाल में, जिनेन्द्र धर्म मात्र है।
उदार दृष्टिकोण भक्त, मात्र धर्म पात्र है॥
विशुद्ध है दयामई, क्षमादि धर्म धारता।
स्वरूप वस्तु का यही, अनन्त भव्य तारता॥
न भेदभाव ये करे, कि भेदज्ञान तो करे॥
न वित्त राग ये करे, कि वीतराग तो करे।
जिनेन्द्र देव से सदैव, धर्मचक्र तो चले।
पदारविन्द से हुए न ?, कौन-कौन के भले॥
कि शंखनाद ज्यों हुआ, त्रिलोक में ध्वजा उड़ी।
पतंग भक्ति की उड़ी, कि डोर आप से जुड़ी॥
सँभालिए पतंग तंग, कीजिए न भक्त को।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दुर्लभ जिन-दर्शन रहा, दुर्लभ जिन-आशीष।
दुर्लभ जिन-महिमा कहें, अतः झुकाएँ शीश॥

(ज्ञानोदय)

अनादिकाल से धर्मतीर्थ बिन, भव-सागर में डूब रहे।
किन्तु अभी तक मिले न भगवन्, चेतन पाने जूझ रहे॥
बड़ी-बड़ी दुर्लभता से अब, जिन-दर्शन जिन-धर्म मिला।
साक्षात् प्रभु तो मिल न पाए, जिन-बिम्बों से हृदय खिला॥१॥
हृदय खिला लेकिन हम उसमें, प्रभु आसीन न कर पाए।
भूत भविष्यत और आज भी, चिदात्म शोध न कर पाए॥

कभी भूत की याद में रोये, कभी भविष्य की चिंता में।
कुछ न मिला सो यह मन लागा, विद्यमान भगवंता में॥२॥
अनन्त है आकाश बीच में, लोक जहाँ प्राणी रहते।
मध्यम त्रसनाली में त्रस हों, लोकालोक इसे कहते॥
लोकशिखर पर सिद्ध विराजें, ऊर्ध्वलोक में देव रहें।
अधोलोक में देव नारकी, मध्यलोक हम लोग रहें॥३॥
एक राजु के मध्यलोक में, असंख्यात हैं सागर द्वीप।
जम्बूधातकी पुष्करार्द्ध ये, ढाई द्वीप है बीचों-बीच॥
पाँचमेरुमय पाँच विदेह के, एक क्षेत्र में हैं बत्तीस।
पूर्ण एक सौ साठ जहाँ पर, चौथाकाल विहरते ईश॥४॥
पाँच भरत ऐरावत पाँचों, कर्म भूमियाँ दस जिनमें।
सभी एक सौ सत्तर होतीं, इतने तीर्थंकर इनमें॥
एक विदेह के पूरब पश्चिम, कुल होते बत्तीस नगर।
जिनमें कम से कम आठों में, मिलें एक बस तीर्थंकर॥५॥
इस विध पाँच विदेह क्षेत्र के, हुए बीस तीर्थंकर जी।
पाँच-पाँच सौ धनुष ऊँचाई, पूर्व कोटि की आयु भी॥
आयु पूर्ण कर मोक्ष पधारें, विद्यमान जो तीर्थंकर।
उसी नाम के मुनि तब बनते, केवलज्ञानी तीर्थंकर॥६॥
सीमंधर युगमंधर बाहु, सुबाहु सुजात स्वयंप्रभ जी।
श्री ऋषभनाथ अनन्तवीर्य जी, सौरीप्रभु विशाल कीर्ति॥
वज्रधर चन्द्रानन चन्द्रबाहु, भुजंग ईश्वर नेमि जी।
वीरसेन प्रभु महाभद्रजी, देवयश अजितवीर्य जी॥७॥
विद्यमान बीसों तीर्थंकर, विदेह क्षेत्र में यही रहें।

वहाँ देह से जा न सकें हम, पुण्य कथा हम यहीं कहें॥
निजी वज्र पौरुष से ये प्रभु, पाँचों कल्याणक पाते।
वीतराग विज्ञान चरित से, निज का स्वरूप प्रकटाते॥८॥

नाम मात्र हर काम बनाता, पाप ताप संताप हरे।
पुण्य वर्गणा शीश झुकाएँ, आतम भवदधि पार करे॥
'सुव्रत' साक्षात् प्रभुदर्शन कर, निजानन्द रस पान करें।
इसीलिए तो विदेह क्षेत्र के, प्रभुओं का सम्मान करें॥९॥

(सोरठा)

विदेहक्षेत्र के बीस, तीर्थंकर जो उर धरें।
पा उनका आशीष, ऋद्धि-सिद्धि पा भव तरें॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विद्यमान के प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विद्यमान जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

श्री चौबीसी पूजन

(मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिनको पुंज धरें॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्‌गल का बंध, सारे द्वन्द्व करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाएँ मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित बसंत, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥

जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

छोटा भले हो
दर्पण मिले साफ
खुद को देखो

कुण्डलपुर बड़ेबाबा पूजन

स्थापना (सवैया मात्रिक छन्द-२१ मात्रा)

(ज्ञानोदय)

हे सुखकारी! अतिशयकारी, पूज्य बड़ेबाबा सुखकार।
कुण्डलपुर पर्वत पर शोभित, जिन्हें पूजते सुर-नर-नार॥
पूजा को हम द्रव्य सँजोकर, करते आह्वानन नत माथ।
हृदय कमल के उच्चासन पर, आन विराजो मेरे नाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बाह्य मैल से देह मलिन है, उसको जल से सब धोते।
देह सजाकर सब खुश हैं पर, कर्म रोग से सब रोते॥
जनम जरा मृति राग द्वेष को, धोने को हम सब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुचि जल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध आग है महा भयङ्कर, जिसमें जलते संसारी।
आतम वैभव जला उसी में, दुखी भटकते नर नारी॥
तन मन आतम शीतल करने, सभी ताप हरने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, चंदन पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धन बल सत्ता रूप सम्पदा, पा करके जड़ की माया।
नश्वर जीवन में भूले हम, अक्षय आतम ना ध्याया॥
तजकर दुखद जगत पद सारे, प्रभु जैसे बनने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अक्षत पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् ...।

सब रोगों में महारोग है, कामदेव जिसको कहते।
जिसके रोगी भव-भव भटकें, सब दुख संकट वे सहते॥
तीन लोक के इस राजा पर, विजय प्राप्त करने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, पुष्प समर्पण को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं...।

क्षुधा रोग के कारण हम सब, पाप बन्ध करते जाते।
इसकी औषध करने को हम, भक्ष्याभक्ष्य भखे जाते॥
रोग निरन्तर बढ़ता जाता, इसे नाशने अब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ नैवेद्य भेंट लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यें बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह तिमिर के कारण जग में, चारों ओर अँधेरा है।
महाबली इस राजा का ही, सारे जग में डेरा है॥
ज्ञान-दीप के प्रभा पुञ्ज को, देख मोह तम नश जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, दीपक पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अच्छे बुरे सभी कर्मों ने, हमको बाँधा इस जग में।
सब जल जाता ये ना जलते, सुख-दुख देते पग-पग में॥
धूप सुगन्धी तव-पद-रज से, कर्माष्टक झट जल जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, धूप चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल की इच्छा से इस जग के , हमने काम किए सारे।
पाए खुशी क्षणिक फल पाकर, दुखी हुये जब हम हारे॥
दुखी जगत के सब फल तजकर, मोक्ष महाफल मन भाये।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ फल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं...।

शुचि जल चंदन अक्षत लाए, शुद्ध पुष्प नैवेद्य लिए।
दीप धूप नाना फल मिश्रित, श्रेष्ठ अर्घ्य हम भेंट किए॥
अर्घ्य चढ़ाने वाले भविजन, अनर्घपद आतम पाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अर्घ्य चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण आषाढ़ को, कुण्डलपुर के नाथ।
वसे गर्भ मरुमात के, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र कृष्ण नवमी तिथी, कुण्डलपुर के नाथ।
जन्मे नाभिराय के, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में मुनि बने, कुण्डलपुर के नाथ।
नग्न दिगम्बर रूप को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, कुण्डलपुर के नाथ।
जगतपूज्य ज्ञानी बने, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चौदस माघ को, कुण्डलपुर के नाथ।
मोक्ष गए कैलाश से, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े-बाबा अर्हं नमः।

जयमाला (दोहा)

नाथ बड़े बाबा बड़े, स्वामी परम दयाल।
भक्ति सहित गुणगान की, कथा करूँ जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

मध्यप्रदेश दमोह जिले में, कुण्डलपुर इक ग्राम रहा।
इसके दक्षिण में इक पर्वत, कुण्डलगिरि शुभधाम रहा॥
ऊपर नीचे जहाँ बहुत से, मन्दिर प्रतिमाएँ प्यारी।
बीचों-बीच बड़ेबाबा की, प्रतिमा है अतिशयकारी॥१॥

अतिशय की है कथा निराली, किंवदन्ति व्यापारी की।
ऐसे पर्वत पर प्रभु आए, खुशी प्रजा तब सारी थी॥
पद्मासन प्रतिमा मनहारी, चर्चित देश विदेशों में।
तब औरंगजेब था आया, धर्म विरोधी भेषों में॥२॥

मूर्ति विरोधी उसने जैसे, घात लगायी बाबा पर।
दूध धार बह शहद-मक्खियाँ, देखा भागा वह डरकर॥
देखा अतिशय जब वह उसने, बना मूर्ति पूजक सच्चा।
नहीं मूर्तियाँ अब तोड़ूँगा, नियम लिया उसने अच्छा॥३॥

पन्ना का राजा बेघर था, राज्य हारकर वह अपना।
मन्दिर जीर्णोद्धार कराकर, पूर्ण हुआ उसका सपना॥
बहुत-बहुत है अतिशय प्यारे, श्रद्धा के आधार रहे।
नाथ अनाथों के हो प्रभु तुम, सबको भव से तार रहे॥४॥
चरण आपके तारणहारे, रोग शोक भय नाशक हैं।
इसीलिए तो तुमको ध्याते, सच्चे योगी साधक हैं॥
विद्यागुरुवर छोटेबाबा, पहली बार यहाँ आए।
मन्दिर छोटा सा देखा तो, बहुत बड़ा सब बनवाए॥५॥
उसमें बाबा जाएँ कैसे?, सभी ओर यह चर्चा थी।
किन्तु फूल सी उड़कर पहुँची, भक्ति-पुण्य गुरु अर्चा थी॥
बहुत बड़ा यह अतिशय देखा, किए विहार बड़ेबाबा।
श्रद्धालु लाखों दर्शक थे, संघ सहित छोटेबाबा॥६॥
छोटेबाबा ने उच्चासन, दिया बड़ेबाबा को ज्यों।
बड़ा संघ छोटेबाबा का, किया बड़ेबाबा ने त्यों॥
अट्ठावन बहनों की दीक्षा, हुई आर्यिका श्रेष्ठ बनीं।
दोनों बाबा इक दूजे का, रखते हैं नित ध्यानधनीं॥७॥
ज्ञान-सिन्धु के शुभाशीष से, कुण्डलपुर जब गुरु आए।
कृपा बड़ेबाबा की पाकर, समवशरण सी छवि पाए॥
छोटेबाबा का सपना जो, हुआ समय पाकर सच्चा।
बहुत विरोधी होने पर भी, दिया उच्च आसन अच्छा॥८॥
जो भी आते द्वार आपके, मन वांछित फल पाते हैं।
उभय लोक के वैभव पाकर, मुक्ति रमा पा जाते हैं॥
सो मिलकर हम भक्त पुकारें, टेर सुनो अब तो बाबा।
'सुव्रत' धरकर तुमको पूजें, अपने सम कर लो बाबा॥९॥

(दोहा)

सद्‌गुण के भण्डार हैं, वृषभनाथ भगवान।
पूजा क्या ? जयमाल क्या ? मैं बालक नादान॥
फिर भी श्रद्धावश किया, पूजन वा जयमाल।
उसका फल बस यह मिले, छूटे भव जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पूज्य बड़ेबाबा करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
सब कष्टों को मेट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

चौबीस तीर्थंकरों के नाम व चिह्न

वृषभनाथ का बैल चिह्न है, हाथी अजितनाथप्रभु का।
शम्भव प्रभु का घोड़ा प्यारा, बन्दर अभिनन्दनप्रभु का॥
सुमतिनाथ का चकवा पक्षी, पद्मप्रभू का लालकमल।
सुपार्श्वप्रभु का चिह्न साँथिया, चन्द्रप्रभू का चन्द्र विकल॥
मगर चिह्न प्रभु पुष्पदंत का, कल्पवृक्ष शीतलप्रभु का।
है गैंड़ा श्रेयांसनाथ का, भैंसा वासुपूज्यप्रभु का॥
विमलनाथ का सुन्दर शूकर, अनन्त जिनवर का सेही।
धर्मनाथ का वज्रदण्ड अरु, शान्तिनाथ का हिरण सही॥
कुन्थुनाथ का बकरा प्यारा, मछली अरनाथप्रभु का।
मल्लिनाथ का चिह्न कलश है, कछुआ मुनिसुव्रतप्रभु का॥
श्वेतकमल नमिनाथ देव का, नेमिनाथ का शंख रहा।
पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प अरु, वर्द्धमान का सिंह रहा॥

श्री वृषभनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥

मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।
तुम्हारी भक्ति का चंदन, हरे भव ताप बढ़-चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

सभी संसार के पद तो, दिए आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

सुगंधी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुनकर के।
करो रोशन हमारा मन, उतारें आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जलाएँ धूप कर्मों की, चढ़ाएँ धूप जो स्वामी।
वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हर लो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् की, महिमा अपरंपार।
पूजे जो धर ध्यान वह, राग-द्वेष से पार॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाए।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आए॥१॥
वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
एक माह जब उम्र शेष तब, नन्दीश्वर का उत्सव कर॥
बाइस दिन की कर सल्लेखन, प्रथम स्वर्ग ललितांग हुए।
धर्मसहित ललितांग मरण कर, वज्रजंघ प्रिय पुत्र हुए॥ २॥

वज्रजंघ श्रीमति रानी ने, दो चारण मुनि सत्कारे।
जो उनके ही अंतिम सुत थे, दिए पूजकर आहारे॥
इसी समय चारों मंत्री भी, नकुल व्याघ्र वानर शूकर।
मुनि से सुनकर जनम कथा सब, खुश थे मुनि चरणा छूकर॥ ३॥
आप आठवें भव तीर्थंकर, बन जब मोक्ष विराजेंगे।
तब श्रीमति श्रेयांस बनेगी, आठों भी शिव पाएंगे॥
वज्रजंघ श्रीमति इक रात्रि, दम घुटने से मरण किए।
पात्रदान से भोगभूमि में, दोनों आर्या आर्य हुए॥४॥
पात्रदान के अनुमोदन से, वहीं चार उत्पन्न हुए।
पात्रदान की महिमा सुनकर, हम सब भक्त प्रसन्न हुए॥
आर्य गया ऐशान स्वर्ग में, देव हुआ श्रीधर नामी।
उसी स्वर्ग में चारों जन्मे, उसी स्वर्ग आर्या जन्मी॥ ५॥
श्रीधर हुआ सुविधि केशव फिर, वज्रनाभि चक्रेश हुआ।
आठों जीव वहीं फिर जन्मे, श्रीमति तब धनदेव हुआ॥
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाए।
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थसिद्धि पाए॥६॥
तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, वह अहमिन्द्र यहाँ आए।
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाए॥
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न दिए।
रत्नवृष्टि देवों ने की तब, नगर अयोध्या जन्म लिए॥७॥
तीन लोक के जीवों को तब, मिली शान्ति केवल पल भर।
इन्द्राज्ञा से शचि ने तब ही, मरुदेवी को मूर्च्छित कर॥
लिया गोद में ज्यों जिन बालक, तब सम्यग्दर्शन पाके।
दिए इन्द्र को भावी भगवन्, 'पुण्यफला' के गुण गाके॥ ८॥

ऐरावत हाथी पर लेकर, चला इन्द्र सौधर्म वहाँ।
सुमेरु पर्वत पाण्डुक वन में, मणिमय पाण्डुकशिला जहाँ॥
एक हजार आठ कलशों में, क्षीर सिन्धु का जल भर के।
किया जन्म अभिषेक वहाँ पर, पूर्व दिशा में मुख करके॥ ९॥
फिर सौधर्म इन्द्र ताण्डव कर, 'वृषभ' नाम रक्खा उनका।
हुआ सुनन्दा यशस्वती से, विवाह बंधन फिर जिनका॥
ब्राह्मी भरत सहित सौ सुत को, यशस्वती ने फिर जन्मा।
और सुन्दरी बाहुबली को, सुनो! सुनन्दा ने जन्मा॥१०॥
ब्राह्मी तथा सुन्दरी को दे, अंक तथा लिपि विद्याएँ।
पुत्र भरत वा बाहुबली को, दी बाकी सब शिक्षाएँ॥
वर्णाश्रम षट्कर्म बनाकर, पूज्य जिनालय बनवाए।
पिता राज्य अभिषेक करा के, तुमको राजा बनवाए॥ ११॥
नीलांजना अप्सरा का जब, नृत्य देख वैराग्य हुआ।
दिया भरत को राज्य तथा फिर, लौकान्तिक आगमन हुआ॥
देवों ने वैराग्य सराहा, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ।
बैठ सुदर्शन नाम पालकी, सिद्धार्थक वन गमन हुआ॥ १२॥
अहो! नमः सिद्धेभ्यः कहकर, पंचमुष्टि केशलौंच किए।
संग चार हजार राजा के, जिन दीक्षा ले धन्य हुए॥
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तब, छह माहों का योग धरा।
मरीचि ने मत कपिल बनाया, सभी भ्रष्ट थे हाल बुरा॥ १३॥
अन्तराय जब हुआ वर्ष भर, तो श्रेयांस सोम राया।
अक्षय तृतीया को इक्षु रस, देकर दानतीर्थ पाया॥
पंचाश्चर्य हुए दाता घर, सबने जय-जयघोष किए।
एक हजार वर्ष तप करके, घातिकर्म प्रभु नाश दिए॥ १४॥

समवसरण में तीर्थंकर प्रभु, केवलज्ञानी धरम दिए।
रत्न त्याग तब प्रथम भरत जी, जिन अर्चन कर नमन किए॥
भव्य पुण्य से विहार करके, धर्मचक्र को चला दिया।
फिर कैलाश धाम पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिया॥ १५॥
काल दोष से समय पूर्व में, लेकर जन्म मोक्ष पाए।
करके उत्सव भक्त आपकी, पदवी पाने ललचाए॥
हम भी नाथ! आपके गुण गा, मना रहे आनन्द अहो।
रागद्वेष भी मंद हुआ है, मुखर भक्ति का छन्द प्रभो॥ १६॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानन्द महा॥
पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥ १७॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।
तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शान्ति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥ १८॥

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् सम, उतरे कार्मिक भार।
यह पाने वरदान हम, बोलें जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अजितनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो, हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथाएँ, रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव, -रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गए।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गए॥
हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।
जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव-चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कामांध से व्याकुल हमें तो, गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिलीं ना, मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात-दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह, सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले नैवेद्य अर्पण, से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना, खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन-दीप से निज-दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं...।

हम आज तक तो जल न पाए, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या, ज्ञान तप निष्फल रहे॥
अब धूप खे जिन रूप पाएँ, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या, मोह के फल मिल रहे।
भूले तुम्हें भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पाएँ, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अजितनाथ प्रभु की कथा, भक्त सुनाएँ आज।
कर्मशत्रु को जीतने, दो चरणों का राज॥

(ज्ञानोदय)

वत्स देश का नगर सुसीमा, वहाँ विमलवाहन राजा।
सुन्दर चतुर गुणी उत्साही, करे धर्ममय हित काजा॥
सदा धर्म से पुण्य, पुण्य से, अर्थ भोग हो प्राप्त यहाँ।
इसीलिए वह जैनधर्म का, धर्मात्मा हो गया अहा॥ १॥
किसी समय वह हो वैरागी, रत्नत्रय धर संत बना।
जिनदीक्षा ले आत्म ज्ञानमय, निर्मोही निर्ग्रन्थ बना॥
तीव्र तपस्या करके उसने, ग्यारह अंगों को जाना।
भावनाएँ फिर सोलह भाकर, तीर्थंकर का पद बाँधा॥ २॥
और अन्त में णमोकार को, जप-जप समाधिमरण किया।
विजय अनुत्तर स्वर्ग पहुँचकर, स्वर्ग सुखों को वरण किया॥
पन्द्रह माहों तक देवों ने, दिव्य रत्न सुर बरसाए।
फिर सोलह सपनों को देकर, सुर से भू पर प्रभु आए॥ ३॥
जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, मेरु पर अभिषेक किया।
अजितनाथ शुभ नामकरण कर, न्यारा ताण्डव नृत्य किया॥

जन्म हुआ तो बंधु वर्ग भी, रिपुओं पर जय विजय किए।
सभी शत्रुओं पर जय पाकर, अजितनाथ साम्राज्य किए॥ ४॥
आयु बहत्तर लाख पूर्व की, देह सुनहरी सी पाई।
साढ़े चार सौ धनुष ऊँचाई, सुख सामग्री सब पाई॥
कभी महल की छत पर बैठे, उल्कापात तभी देखा।
भव-भोगों से विरक्त हो तब, फिर वैराग्य पाठ सीखा॥ ५॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, तब वैराग्य सराहा था।
जिससे प्रभु ने जूठन जैसा, राज्य पाठ सब त्यागा था॥
किया राज्य-अभिषेक पुत्र का, उसे राज्य अपना सौंपे।
बैठ सुप्रभा शिविका पर फिर, स्वयं सहेतुक वन पहुँचे॥ ६॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः कह कर, सप्तपर्ण तरु तल में जा।
एक हजार राजाओं के सह, नियम लिया फिर बेला का॥
जिनदीक्षा ली साँयकाल में, ज्ञान मनःपर्यय पाया।
ब्रह्मा नृप ने प्रथम दान दे, पंचाश्चर्य पुण्य पाया॥ ७॥
मौन रहे छद्मस्थ काल में, बारह बरस तपस्या की।
केवलज्ञानी धर्मात्मा बन, हर ली कर्म समस्या भी॥
समवसरण में दिव्य देशना, देकर धर्मघोष की जय।
अंतर बाहर का वैभव पा, चमत्कार पाया अतिशय॥ ८॥
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, अजित नाम सार्थक करके।
एक माह तक योग निरोध कर, सारे कर्म नष्ट करके॥
प्रातः प्रतिमायोग धार कर, मोक्ष पधारे स्वामी जी।
अजितनाथ सम हम बन जाएँ, अतः करें प्रणमामि जी॥ ९॥

अजितनाथप्रभु के शासन में, सगर चक्रवर्ती जन्मा।
जिसके साठ हजार पुत्र थे, सुन्दर गुणी महा धन्या॥
शुद्ध वंश के पुत्र पिता के, आज्ञाकारी भी होते।
अतः पिता की आज्ञा से वे, धर्म कार्य से अघ धोते॥ १०॥

भरत चक्रवर्ती से निर्मित, श्री कैलाश शिखर पर जो।
रत्नों के चौबीस जिनालय, अरिहंतों के मंदिर वो॥
चारों ओर उसी पर्वत के, परिखा कर गंगा भर दी।
दण्डरत्न से कार्य पूर्ण कर, जिनशासन की जय कर दी॥ ११॥

पुत्रों के मरने की झूठी, खबर सगर ने जब पाई।
भागीरथ को राज्य दिया तब, जिनदीक्षा फिर अपनायी॥
उधर पिता के मुनि बनने की, खबर मिली जब पुत्रों को।
तो पुत्रों ने जिनदीक्षा ले, धारा शुभ चारित्रों को॥ १२॥

पिता पुत्र सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे तप करके।
और यहाँ भागीरथ राजा, बने संत सब तज करके॥
ध्यानी मुनि भागीरथ जी के, चरण पखारे इन्द्र महान्।
वह जलधारा गंगा पहुँची, तब से गंगा तीर्थ समान॥ १३॥

भागीरथ गंगा के तट से, तप करके निर्वाण गए।
सुनकर कथा धर्म की हम सब, जिन-गंगा पहचान गए॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाए।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाए॥ १४॥

द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।
जिनका नाम अकेला सुनकर, भक्तों के कल्याण हुए॥
फिर भी गुरु ग्रह बाधा हरने, अज्ञानी प्राणी डोलें।
ग्रह क्या? मृत्युंजय बनते जो, अजितनाथ की जय बोलें॥ १५॥

शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या?, हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥
किन्तु आप सम चिदानन्द को, 'सुव्रत' पाने ललचाए।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आए॥ १६॥

(दोहा)

अजितनाथ को पूजकर, करें प्रार्थना आज।
कर्म शत्रु पर जय मिले, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शम्भवनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥
काल अनन्त गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ाके भक्त आपके मौन हैं॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ाएँ निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भेद-ज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बढ़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्गुरु अपनाये।
सद्गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएँ, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-शुक्ल-पूर्णिमायां जन्म-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल-पूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शम्भवजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(सोरठा)

शम्भवप्रभु जिनराज, विश्वकार्य सम्भव करो।
गुण गाएँ हम आज, निज स्वभाव में अब धरो॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असम्भव सम्भव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा-चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गाएँ, बारम्बार नमोऽस्तु हो ॥१॥

एक विमलवाहन राजा था, वह ऐसा करके चिंतन।
यह संसारी जीव मृत्यु के, बीच खोजता है जीवन॥
मोहकर्म के विकट उदय से, यमराजों के दाँतों में।
फँसकर भी बचना नहिं चाहे, धिक्! धिक्! मिथ्या बातों में॥२॥
सीमित आयु को यह प्राणी, शरण माँगता कण-कण में।
यह मत उसको यम के मुख में, पहुँचा देता क्षण-क्षण में॥
हाय! हाय! अज्ञानी चेतन, फिर भी ना वैराग्य धरे।
दुखवर्धक भव-चक्र भ्रमण के, कर्तव्यों से राग करे॥३॥
तृष्णा की संतप्त धूप से, आकुल व्याकुल होकर के।
विषय भोग की जीर्ण नदी के, तट की छाया पा करके॥
विषय भोग की करे सुरक्षा, और स्वयं को नष्ट करे।
अतः अनन्तानन्त भवों में, शुद्धातम को भ्रष्ट करे॥४॥
यह चिंतन कर विरक्त हो फिर, मोक्षमार्ग स्वीकार किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
फिर संन्यास क्रिया से तन तज, ग्रैवेयक अहमिन्द्र बने।
स्वर्ग त्याग शम्भव नृप बनकर, मेघ देख वैराग्य धरे॥५॥
नर तन में यम नर्तन करके, नर तन का ही नाश करे।
प्रथम दगा दे दाग बाद में, इस पर ना विश्वास करे॥
तन से राग भोग नीरस जो, मूरख उन्हें सरस समझें।
यह संसार असार जानकर, ज्ञानी इन्हें तजें सुलझें॥६॥
निज वैभव रत्नत्रय पाकर, जिन वैभव को पा जाओ।
आप स्वयं यमराज बनो तो, मृत्युंजय बन सुख पाओ॥
सार सार का सार ग्रहण हो, लौकान्तिक यों वचन कहे।

फिर सिद्धार्थ पालकी में प्रभु, बैठे वन को गमन करे ॥७॥
दीक्षित होकर बने स्वयंभू, ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा।
सुरेन्द्रदत्त को प्रथम दान का, मिला पुण्य सौभाग्य अहा॥
चौदह वय छद्मस्थ गुजारी, बेलामय निज ध्यान लगा।
चार घातिया जड़ें उखाड़ीं, पाया केवलज्ञान महा ॥८॥
देवों ने कैवल्य महोत्सव, खूब मनाया नाच बजा।
अनन्तचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण फिर खूब सजा॥
जिसकी ज्योति 'जिन' से होती, 'जिन' के मोती चित् खोती।
जिन महिमा में गद्-गद् जिनकी, आतम रोती दुख धोती ॥९॥
ऐसे शम्भवप्रभु ने सुन लो, चन्द्र तिरस्कृत कर डाले।
राहू केतु शनि कृष्ण शुक्ल के, पक्ष बहिष्कृत कर डाले॥
और अंत में एक माह जब, आयु कर्म अवशिष्ट रहा।
गिरि सम्मेदशिखर पर धारा, प्रतिमायोग विशिष्ट रहा ॥१०॥
जन्म शाम को मोक्ष शाम को, पाए नन्तकाल विश्राम।
कार्य असम्भव सम्भव करने, भक्त मुक्ति को करें प्रणाम॥
मिले चिदातम निज शुद्धातम, अगर कृपा हो तेरी नाथ।
अतः भक्ति का रचा उपक्रम, रहे हमारे सिर पर हाथ ॥११॥
पर जिन महिमा जो नहिं जानें, जिन्हें आप पर नहिं विश्वास।
यहाँ-वहाँ सिर फोड़ें भटकें, करके अपना सत्यानाश॥
गुरुग्रह का वस करें निवारण, नाथ !आपका भजकर नाम।
वे क्या जानें शम्भव प्रभु जो, दें भव सुख भी दें निर्वाण ॥१२॥
सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥

लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो,जिनपद का सम्मान किया ॥१३॥

(दोहा)

अश्व चिह्नमय शोभते, जिनवर शम्भवनाथ।
विश्व समस्या दूर हो, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥
तुमने गुण वन्दन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥
हम हैं संसारी प्राणी, भव-आक्रन्दन में चीखें।
क्या वन्दन नन्दन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचाएँ पूजा, बस भक्त आपके होके॥

कर्मों के बंधन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

(दोहा)

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाए चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥
यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुए पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षणभंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥
अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमाएँ।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जाएँ॥
हैं भक्ति-पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुए हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति-दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान-ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन-रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥
हमें अपने पास बुलाकर, निज परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न ना समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वादश शुक्ला माघ में, बंधन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल चौदस मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सत्य वचन से सिद्ध जो, अभिनन्दन जिनराज।
आनंदित नत हो कहें, जयमाला हम आज॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाए मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोऽस्तु हो अविराम॥ १॥
एक महाबल सुन्दर राजा, धन-वैभव जिसका भारी।
चारों वर्णों का भी रक्षक, न्याय पुण्य गुण यश धारी॥
बहुत काल भोगों में गुजरा, किन्तु तृप्त जब नहीं हुआ।
तो वैराग्य धार मुनि बनकर, शाश्वत आतम रूप छुआ॥ २॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बंध किया।
अगले भव में अभिनन्दन प्रभु, बनने का अनुबंध किया॥
तजकर देह अनुत्तर पहुँचा, जहाँ भोग स्वीकार किए।
फिर जिन-भक्ति सहित सुर तजकर, धरती पर अवतार लिए॥ ३॥
माँ ने सोलह स्वप्न देखकर, जिनवर को सिर टेक दिया।
जन्म त्रिलोकीनाथ लिए जब, इन्द्रों ने अभिषेक किया॥
नाम आपका अभिनन्दन रख, लगा टक टकी ताक रहे।
बना हजारों, नयन भुजाएँ, करके ताण्डव नाँच रहे॥ ४॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, राज्य तुम्हीं को पिता दिए।

तुम्हीं राज्य उपभोग करो फिर, पिता स्वयं वैराग्य लिए॥
राजा बनकर राज्य प्रजा को, सुखी गुणी सम्पन्न किया।
तभी आपको बनते मिटते, मेघ महल ने खिन्न किया॥ ५॥

विनाशीक भोगों का वैभव, नष्ट हमें भी कर देगा।
पला-पुसा यह शरीर हमको, नगर-नारि सम तज देगा॥
हुए विरागी तो लौकान्तिक, देवों ने आ पूजा की।
बैठ हस्तचित्रा शिविका में, वन में जा जिन-दीक्षा ली॥ ६॥

ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, गए अयोध्या अगले दिन।
इन्द्रदत्त राजा ने विधिवत्, किया भक्ति से पड़गाहन॥
निरंतराय आहार हुए तो, नभ में जय-जय देव कहें।
अहो! दान यह अहो! पात्र यह, दाता को भी धन्य कहें॥ ७॥

मन्द-मन्द महकी वायु फिर, रत्न पुष्प नभ से बरसे।
ढोल नगाड़े नभ में गूँजे, जिससे भू-अम्बर हर्षे॥
खाद्य वस्तु अक्षीण यही तो, पंचाश्चर्य कहे जय-जय।
वर्ष अठारह मौन धारकर, बिता दिया छद्मस्थ समय॥ ८॥

दीक्षावन में असन वृक्ष के, नीचे आतम ध्यान हुआ।
बेला लेकर साँयकाल में, प्रभु को केवलज्ञान हुआ॥
दिव्य अर्चना कर देवों ने, समवसरण फिर सजा दिया।
जिस पर कमलासीन आपने, बिगुल धर्म का बजा दिया॥ ९॥

धर्मवृष्टि कर आर्यखण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किया॥
प्रातःकाल बहुत मुनियों के, साथ परमपद प्राप्त किया।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, जीवन मरण समाप्त किया॥ १०॥

भक्ति सहित अभिनन्दन प्रभु का, इन्द्रों ने गुणगान किया।
मना मोक्षकल्याणक सादर, स्वर्ग लोक प्रस्थान किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥ ११॥

ऐसे अभिनन्दन जिनवर जी, भव का वैभव हरण करें।
खुद निर्भय भय हरें हमारा, हम तो सादर चरण पड़ें॥
इनको गुरुग्रह तक सीमित कर, हो जाता है पाप महान्।
जिनका केवल सुमरण करना, ऋद्धि-सिद्धि दे हर वरदान॥ १२॥

अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥
अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अविनाशी कर, 'सुव्रत' की झोली भर दो॥ १३॥

(दोहा)

शोभित बन्दर चिह्नमय, प्रभु अभिनन्दननाथ।
दिव्य भव्य गुण पा सकें, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री सुमतिनाथ पूजन

स्थापना (लय : माता तू दया करके...)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥
हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छूलेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो राग-द्वेष करके, दुःख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥
संताप मिटाने को, जिन-चंदन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्मचक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुख पाने को आकुल, -व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यह पुद्गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥
अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे ॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन-करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बंध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर-दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े॥
अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शम्भवजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(सोरठा)

सुमतिनाथ भगवान्, जो अविनाशी धन दिए।
बुद्धि-वृद्धि दो दान, अतः नमन पूजन किए॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥ १॥

जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥
दर्शन पूजन का क्या कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥ २॥

इक राजा रतिषेण नाम का, कला तथा विद्या स्वामी।
काम भोग की कुछ न कमी थी, अरिहंतों का अनुगामी॥
अर्जन रक्षण वर्धन व्यय से, धर्म अर्थ सेवन करता।
लीलापूर्वक राज्य पालकर, मन में यों चिन्तन करता॥ ३॥
पर्यायों की भव भँवरों में, अपना आतम फँसा रहा।
दुर्जन्मों के दुर्मरणों के, साँपों से यह डँसा गया॥
कौन करे कल्याण जीव का, कैसे पथ सुख-शान्ति मिले।
अर्थ काम संसार बढ़ाता, इनसे तो दुख दर्द मिले॥ ४॥
घर में रहकर धर्म कर्म में, होती रहती पाप कथा।
हिंसा सहित धर्म से फिर क्या?, मिट सकती है व्यथा कथा॥
पाप रहित मुनि धर्म मात्र ही, शाश्वत सुख दे आतम को।
ऐसा उत्तम फल का दाता, यही हुआ चिन्तन हमको॥ ५॥
राज्य सौंप अतिरथ बेटे को, खुद ने ले ली जिनदीक्षा।
ममता त्यागी समता धर ली, मोह-शत्रु जय की इच्छा॥
जीव मात्र का मंगल हो जब, ऐसे भावों को साधे।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद को बाँधे॥ ६॥
अंत समय संन्यासमरण कर, वैजयन्त अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग कर भरतक्षेत्र में, वृषभ वंश उत्पन्न हुए॥
नगर अयोध्या में जन्मोत्सव, करके सुमति नाम रक्खा।
इन्द्रों ने स्वर्णिम तन प्रभु को, पूज पुण्य पाया पक्का॥ ७॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, सुमतिनाथ को राज्य मिला।
आर्त्तध्यान बिन रौद्रध्यान बिन, सभी प्रजा का भाग्य खिला॥
दिव्य राज भोगों को भोगा, भव से शीघ्र विरक्त हुए।
सुमति नाम को सार्थक करने, निज हित में अनुरक्त हुए॥ ८॥

मैं तो ज्ञानी कहलाता हूँ, अहित क्रिया कैसे कर लूँ।
अल्प सुखों को त्याग आज ही, शुभ वैराग्य हृदय धर लूँ॥
यदि सम्यक् वैराग्य न हो तो, सम्यक ज्ञान न मिल सकता।
जब तक सम्यग्ज्ञान न तब तक, निज स्वरूप न खिल सकता॥९॥
निज स्वरूप में लीन न जब तक, तब तक क्या सुख पाओगे।
अतः सुखार्थी बन वैरागी, वरना फिर पछताओगे॥
तब लौकान्तिक देवों ने आ, कर दी हाँ-हाँ अनुमोदन।
अभय पालकी में फिर बैठे, चले सहेतुक वन भगवन्॥ १०॥
इक हजार राजाओं के सह, बेला मय मुनि दीक्षा ली।
ज्ञान-मनःपर्यय झट प्रकटा, पद्मराज के भिक्षा ली॥
बीस वर्ष छद्मस्थ बिताकर, बेला मय ध्यानस्थ हुए।
केवलज्ञानी संत हुए तो, ज्ञानोत्सव मय भक्त हुए॥११॥
आप अठारह क्षेत्रों में फिर, कर विहार कल्याण किए।
आत्मा को परमात्मा बनने, बनो महात्मा ज्ञान दिए॥
मासिक योगनिरोध किया फिर, प्रतिमायोग ध्यान ध्याया।
अविचल कूट सम्मेदशिखर से, संध्या मोक्ष महल पाया॥१२॥
ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
चारों धामों का सुख मिलता, सादर शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शान्ति कहाँ जो, शान्ति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥ १३॥
जिनप्रभु को बस गुरु ग्रह नाशक, जो माने वे अज्ञानी।
सुमतिनाथ का नाम अकेला, हर ले सभी परेशानी॥

हर संकट के कंटक हर लो, खुशियों की दे दो कलियाँ।
'सुव्रत' तुम सम बनने माँगें, मोक्ष महल सुख की गलियाँ॥१४॥

(दोहा)

जिन का चकवा चिह्न है, पञ्चम जो जिनराज।
सुमति नाम जिनका उन्हें, नमस्कार हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री पद्मप्रभ पूजन

स्थापना (वसंततिलका)

हे! पद्मनाथ परमेश जिनेश स्वामी।
तीर्थेश षष्टम विभो कमलेश नामी॥
संसार में कमल-सम बनके विरागी।
चैतन्य रूप चखते बन वीतरागी॥

चारित्र के परम पूजित हो विहारी।
सारे विभाव दुख संकट के निवारी॥
वैराग्य के सुरथ पै हमको बिठाओ।
संन्यास दे हृदय में जिनदेव आओ॥

ये अर्चना हम करें प्रभु नाम लेके।
शुद्धात्म का वरण हो जिन जाप देके॥

दे दो हमें चरण की बस धूल थोड़ी।
सम्बंध हो मुकति से बन जाए जोड़ी॥

(दोहा)

पूज्य पद्मप्रभु देव जी, भक्त जनों के ईश।
सबको तो सब दो मगर, हमको दो आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ये जन्म-मृत्यु भय चेतन को सताते।
डूबे स्वयं भव-समुद्र हमें डुबाते॥
श्रद्धान दो वरदहस्त समाधिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

संसार ताप तपते हमको तपाते।
चैतन्य के महल तो बिखरे हि जाते॥
दो जैन-तीर्थ सुधरे निज आत्म वास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

आज्ञा न देव गुरु शास्त्र जनों की मानी।
पाए न भोग जग के नहीं मोक्ष रानी॥
हो छत्र-छाँव हम पै कह दो तथास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

तृष्णाएँ काम-मृग की मिटतीं न स्वामी।
जो भोग भोग बनता दुठ और कामी॥

दुर्दर्प काम तज दो निज ब्रह्म वस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सारे हि रोग नशते जग औषधि से।
पै भूख रोग बढ़ता चरु औषधि से॥
ऐसी क्षुधा हरण को व्रत वृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

है मोह की हर किरण करती अँधेरे।
तो भी सभी जगह पै उसके वसेरे॥
वैराग्य ज्ञान मणि चेतन खोज ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

सर्वत्र कर्म-फल जीव चखे अकेले।
देते न साथ जगबंधु गुरु न चेले॥
दो कर्म के हरण को जप ध्यान अस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

संसार वृक्ष कड़वे फल वो खिलाते।
खाके जिन्हें हम सदा मरते हि जाते॥
सम्यक्त्व संयम सुधामृत स्वाद ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अध्यात्म की शिखर की सबसे ऊँचाई।
शुद्धात्म धाम जिससे बस दे दिखाई॥

वो देवशास्त्र गुरु ही बस दान देते।
पूजा विधान विधि सो हम ठान लेते॥
ये नीर चंदन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिये साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(वसंततिलका)

संसार में शरण हैं जिनदेव साँचे।
ध्या के सदाचरण भक्त मयूर नाँचे॥
सर्वस्य पाप विधि बंधन को नशाते।
सो भक्त भक्तिमय हो गुणमाल गाते॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आए॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्याकर के, बोलो कौन कहाँ रोते॥ १॥
आओ उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
नगर सुसीमा के अपराजित, राजा सार्थक नाम धरे।
अंतरंग बहिरंग शत्रु को, जीत दया के काम करे॥ २॥
राजभोग को भोग बाद में, चिन्तन कर गंभीर हुए।
क्षण भंगुर नश्वर जग माया, पुद्गल कर्म शरीर हुए॥
चिदानन्द का वैभव पाने, राज्य पुत्र को सौंप दिया।
जिनदीक्षा को वन जा खुद को, प्रभु चरणों में सौंप दिया॥३॥
कठिन साधना तूफानी कर, जैनधर्म का नाद किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥

अन्त समय में कर सल्लेखन, ग्रैवेयक अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग नृप अपराजित के, पुत्र कमल सम पद्म हुए॥४॥
जन्म हुआ ज्यों हर्ष हुआ त्यों, मोह शोक का अन्त हुआ।
वैर विरोध काँपकर भागें, घर–घर पर्व बसंत हुआ॥
इन्द्रों ने फिर न्हवन कराके, पूज्य पद्मप्रभ नाम रखा।
पर्व जन्म कल्याणक करके, पुण्य भक्ति को खूब चखा॥५॥
जिन बालक बन पालक ऐसे, कौन करे वर्णन उसका।
वो सौभाग्य नहीं पा सकता, अल्प भाग्य होगा जिसका॥
हाथी की दुर्दशा श्रवण कर, पूर्व भवों का ज्ञान हुआ।
तत्त्व स्वरूप जानकर खुद को, खुद पर खेद महान् हुआ॥६॥
यहाँ कौन–सा पदार्थ ऐसा, जिसको मैंने छुआ नहीं।
देखा सूँघा खाया ना हो, जिसको मैंने सुना नहीं॥
अभिलाषा के इस सागर को, पूर्ण कौन भर पाया है।
भोग सर्प ने तन वामी में, रहकर विष फैलाया है॥ ७॥
फिर भी मोह उसी से करके, आत्म धर्म को भुला दिया।
पापों को ही धर्म मानकर, शाश्वत चेतन सुला दिया॥
जिन्हें हुआ वैराग्य उन्हीं के, लौकान्तिक सुर में सुर गा।
बेला सहित लिए जिनदीक्षा, सजे मनोहर वन में जा॥८॥
ज्ञान मनःपर्यय फिर पाया, फिर चर्या की दिन अगले।
पाँच वृत्तियों से भोजन कर, सोमदत्त को पुण्य मिले॥
गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा करके, परिषहजय चारित्र धरा।
संवर तप से किए निर्जरा, छह माहों का मौन धरा॥ ९॥
जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी संत बने।
नर इन्द्रों ने सुर इन्द्रों ने, पूजा जब भगवन्त बने॥

सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥१०॥
दिव्य देशना देकर खुद को, साबित सच्चा आप्त किया।
मासिक योग निरोध धारकर, अहा! मोक्ष को प्राप्त किया॥
श्रीसम्मेदशिखर का पावन, पूजित मोहनकूट हुआ।
मना मोक्षकल्याणक प्रभु का, अपना दिल अभिभूत हुआ॥११॥
ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पाई है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आए वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥१२॥
पद्मनाथ परमेश्वर प्रभु ने, राग-द्वेष को लाँघ लिया।
किन्तु रागियों ने ही उनको, राहु-केतु तक बाँध दिया॥
करें निवारण मात्र सूर्य ग्रह, प्रभु कमजोर नहीं इतने।
'सुव्रत' जिनका नाम मात्र सुन, मुक्तिरमा टेके घुटने॥१३॥

(बसंततिलका)

हैं नष्ट-भ्रष्ट सुर छन्द सभी ऋचाएँ,
ऐसी दशा गुण कथा किस भाँति गाएँ।
आशीष पा हम किए गुणगान थोड़ा,
दे दो क्षमा भगत् है अंजान मौंड़ा॥

(दोहा)

लाल कमल से शोभते, पद्मप्रभु जिनराज।
खिले कमल सम भक्त हम, अतः नमन हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥

(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अरिहंतेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।
भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥
होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥

(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइए।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाए उन्हीं से दगा॥
ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥
ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को चरण का, ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बीता काल अनन्त रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गई अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पाएँ ज्योति अनन्तज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥
कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूति फल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गाएंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आएंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥
आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

आत्म शक्ति की व्यक्ति को, करें भक्ति हम लोग।
सुपार्श्वप्रभु के गीत गा, बने मुक्ति के योग॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुखअम्बर हो।
सुख के सूरज-चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥१॥

सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानन्द तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पाएँ हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचाएँ हम॥ २॥

राज्य क्षेमपुर का इक राजा, नंदिषेण जो राज्य करे।
धर्म अर्थ अरु काम पुण्य से, बुद्धि पराक्रम प्राप्त करे॥
मोक्षमार्ग पर चलकर निज पर, जय करना उसकी इच्छा।
अतः पुत्र को राज्य दानकर, उसने ले ली मुनिदीक्षा॥३॥

तीर्थंकर पद कर्म बाँधकर, सल्लेखन कर सुर पाए।
मध्यम ग्रैवेयक की आयु, भोगी फिर भू पर आए॥
नगर बनारस में फिर जन्मे, जिनका नाम सुपार्श्व पड़ा।
जिनकी सेवा में जग वैभव, तव चरणों में आन खड़ा॥४॥

राज्य प्राप्त कर आठ तरह के, सुख पाए थे स्पर्शन के।
पाँच तरह के रसना वाले, नासा नयन कर्ण मन के॥

पंचेन्द्रिय विषयों को पाकर, आत्म नियंत्रण ना छोड़ा।
जब देखा था ऋतु परिवर्तन, तब मुनि बनने मन मोड़ा॥५॥
लौकान्तिक सुर गुण गाए तब, बैठ मनोगति शिविका में।
पहुँच सहेतुक वन में प्रभु ने, जिनदीक्षा ली संध्या में॥
साथ एक हजार राजा थे, बेला का था नियम लिया।
अगले दिन महेन्द्रदत्त ने, पड़गाहन कर दान दिया॥ ६॥
नौ वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर बेलामय ध्यान लगा।
गर्भ तिथी में गर्व हमें है, केवलज्ञानी हुए अहा॥
ज्ञानोत्सव फिर समवसरण में, जिन-बगिया के फूल झड़े।
जिसकी माला से भक्तों के, बंधन कर्म समूल झड़े॥ ७॥
विहार रुचा न तो विहार तज, लोक शिखर पाने मचले।
मासिक योगनिरोध धारकर, सम्मेदाचल धाम चले॥
प्रभास कूट से कर्म हटाकर, प्रभु ने महा प्रयाण किया।
सूर्योदय में तब इन्द्रों ने, महा मोक्षकल्याण किया॥ ८॥
नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥
समवसरण फिर मोक्षधाम पा, जैन धरम का मान रखा।
हम नजदीक आपके आए, हमने यह अरमान रखा॥ ९॥
जीव तत्त्व यह शुद्ध करा दो, अजीव हम से दूर करो।
हर लो आस्रव बंध द्वन्द्व सब, कर्म निर्जरा पूर्ण करो॥
द्रव्य भाव नोकर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥१०॥
पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।
आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥

श्वाँस–श्वाँस धड़कन–धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन–श्रद्धा खुशबू॥११॥

(सोरठा)

सुपार्श्वप्रभु दुखहार, जग को सुख के धाम हो।
क्या गाएँ गुणमाल, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह–जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥

यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ–ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ–ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल–खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्–फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम–मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन–मन भव–संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख–सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अंध-बंधमय लोक को, दिए दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिए दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥

अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ १॥
पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥ २॥
फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिए।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बंध किए॥ ३॥
अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥ ४॥
घातिकर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥ ५॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥ ६॥
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥

चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥ ७॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुविधिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदंत अरिहंता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥
सर्वत्र आपका यश है, है महिमा खूब तुम्हारी।
तुम अतिशय खूब दिखाते, जय-जय हो नाथ तुम्हारी॥

जो जय-जय करे तुम्हारी, उसका हर बंध विलय हो।
फिर उसको क्या भय संकट, उसकी भी फिर जय-जय हो॥
बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाए।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म-मृत्यु दुख पाए॥
अब जन्म-मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग-द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥

अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाए, नहिं पूजन पाठ रचाई॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ्य बनाके।
कई बार चढ़ाके लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥

हम आए हैं घबराके, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥
अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुकाकर शीश।
धर्म-धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुविधि प्रभु अनुपम रहे, दें इच्छित वरदान।
शाश्वत गुण पाने करें, नमन भजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को पाने भक्ति करें ॥१॥

फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥२॥

जिनका तन अशान्त रहता हो, वाणी आकुल-व्याकुल हो।
सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥

उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥३॥
महापद्म नामक राजा जो, गुणी प्रजा को सुखी किया।
जिनको देकर ज्ञान भूत हित, प्रभु ने अंतर्मुखी किया॥
जिनके उपदेशामृत को पी, राजा चिन्तन मग्न हुआ।
भव-भोगों से विरक्त होकर, मोक्षमार्ग संलग्न हुआ॥४॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधी।
और अन्त में समाधि धर कर, प्राणत सुर पदवी साधी॥
चले स्वर्ग से काकंदीपुर, राजा थे सुग्रीव जहाँ।
रही पट्टरानी जयरामा, हुआ आपका जन्म वहाँ॥५॥
इन्द्रों ने जन्मोत्सव करके, पुष्पदंत यह नाम रखा।
राज्य प्रेम पूर्वक भोगा फिर, जिनको उल्कापात दिखा॥
राजा को वैराग्य हुआ तो, लौकान्तिक ने पद पूजे।
सुमति पुत्र को राज्य सौंपकर, सूर्य प्रभा से वन पहुँचे॥६॥
पुष्पक वन में पुष्पदंत ने, पुष्पवृष्टिमय तप ओढ़ा।
पंचमुष्टि केशलौंच किए फिर, पंच पाप परिग्रह छोड़ा॥
पंच महाव्रत धार लिए तो, रूप दिगम्बर संत हुए।
पुष्पमित्र आहारदान से, जिनशासन जयवंत हुए॥७॥
चार वर्ष छद्मस्थ बिताकर, नागवृक्ष के नीचे जा।
केवलज्ञान प्राप्त कर डाला, सुरनर पर्व करें गा-गा॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर के गुण, क्या इससे सुन्दर होगा॥८॥

विहार कर सम्मेदशिखर के, उच्च कूट सुप्रभ पर जा।
हजार मुनि के साथ शाम को, मोक्षमहल में वसे अहा!
किन्तु कठिन यह मोक्ष महापथ, हमको सरल बना डाला।
अंतरंग-बहिरंग नमन कर, जिनको शीश झुका डाला॥९॥

जय ऐसे प्रभु पुष्पदंत की, जय-जय से रज कर्म गली।
भूत डाकिनी ग्रह बाधा फिर, क्यों ना भागें ढूँढ गली॥
किन्तु शुक्र ग्रह शुक्र दिवस में, इन्हें बाँधते कुछ पागल।
सुनो! इन्हीं के नाम मात्र से, क्षण में हो मंगल-मंगल॥१०॥

अब इतनी सी विनय आपसे, संकट उलझन दूर करो।
इतना अगर न कर सकते तो, हममें साहस धैर्य भरो॥
लाभ हानि सुख दुख सब सहके, लीन रहें प्रभु चरणों में।
पूजन पाठ तभी सार्थक जब, 'सुव्रत' हों शिव शरणों में॥११॥

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान्, मगर चिह्नमय शोभते।
हम करने कल्याण, सादर गुण गा पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, पुष्पदंत जिनराज॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

चैत्र अष्टमी कृष्ण में, त्यागे अच्युत धाम।
वसे सुनन्दा गर्भ में, श्री शीतल भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस लिए, शीतल जिनवर जन्म।
राजा दृढरथ भद्रपुर, पर्व करें हो धन्य॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस तिथि, तजे राग की वस्तु।
नग्न सहेतुक में हुए, शीतल मुनि को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा पौष में, कर अज्ञान जयोस्तु।
शीतल प्रभु सर्वज्ञ को, करते भक्त नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु शीतलनाथ॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्याएँ शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥ १॥
वन विहार को कभी गए तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥
क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बंध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥ २॥
दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥
विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।
किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥ ३॥
विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥

देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥ ४॥
उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घातिकर्म रज हर डाली॥ ५॥
दोष अठारह नशा दिए तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ ६॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोऽस्तु हो धर ध्यान॥

(मात्रिक सवैया)

प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।
जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करें विराम॥
वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥

(दोहा)

निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : पाँचों मेरु असी...)

श्रद्धा-जल की देकर धार, मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शान्ति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिन सम निज का हो आहार, क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आए प्रभु श्रेयांस जी, माँ नन्दा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जिनके आश्रय से हुए, भक्तों के कल्याण।
ऐसे प्रभु श्रेयांस का, नमन सहित गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छाएँ।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पाएँ॥ १॥
ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥

परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥ २॥
एक नलिनप्रभ राजा था जो, ऋद्धि-सिद्धि मय धर्मात्मा।
जिनवर का सान्निध्य प्राप्तकर, बना संत उसका आत्मा॥
फिर तीर्थंकरप्रकृति बाँधकर, मृत्यु महोत्सव किया अहा।
सोलहवें सुर के पुष्पोत्तर, विमान में जा इन्द्र हुआ॥ ३॥
भोग-भोगकर नगर सिंहपुर, विष्णु-नन्दा पुत्र हुए।
तीन ज्ञान के धारी प्रभु के, जन्म समय आश्चर्य हुए॥
रोग-शोक-भय कष्ट मिटे सब, पापी जीव बने धर्मी।
पुष्पवृष्टि हो देव नृत्य हों, संतोषी हों षट्-कर्मी॥ ४॥
देवों ने जन्मोत्सव करके, पूज्य नाम श्रेयांस रखा।
तन के अवयव ऐसे बढ़ते, ज्यों चंदा हो बाल सखा॥
राज भोगकर इक दिन देखा, बसंत ऋतु का परिवर्तन।
भव भोगों से विरक्त होकर, श्रेयस्कर को सौंपा धन॥ ५॥
चले मनोहर वन तो शिविका, विमलप्रभा पर हुए सवार।
इक हजार राजाओं के सह, तप धारा हुई जय-जयकार॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, दिए नन्द राजा आहार।
पंच-पंच आश्चर्य हुए तो, प्रथमदान मंगल उपहार॥ ६॥
दो वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर दीक्षा वन को पहुँचे।
बेला करके बने केवली, देव पर्व को आ पहुँचे॥
समवसरण फिर लगा जहाँ थे, सतहत्तर गणधर धारी।
कुल चौरासी हजार मुनि थे, बीस लाख आर्या न्यारी॥ ७॥
सुर-नर से उस भरी सभा को, ज्ञान दिया फिर वह छोड़े।
फिर सम्मेदशिखर पर मासिक, ध्यान किया बंधन तोड़े॥

संकुलकूट हुआ पावन तब, प्रभु श्रेयांस मोक्ष पाए।
उसी तीर्थ में त्रिपृष्ठ नामक पहले नारायण आए॥ ८॥
अश्वग्रीव प्रतिनारायण भी, हुए विजय बलभद्र तभी।
इस प्रकार श्रेयांसनाथ को, भूल सके ना जगत् कभी॥
जिनके ज्ञान ध्यान यश वैभव, सब सीमाएँ लाँघ रहे।
फिर भी भगत उन्हें गुरु ग्रह के, परिहारों से बाँध रहे॥ ९॥
जिनके जन्म समय से अब तक, धर्म ध्वजा की हुई विजय।
"श्रेयांसि बहु विघ्नानि" भी, सुन श्रेयांस नाम से क्षय॥
देख चराचर जग को भी जो, निज स्वरूप का स्वाद चखे।
जिनकी चरण धूल सिर धरकर, झट कर ले कल्याण सखे॥ १०॥
हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥
यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥ ११॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥ १२॥

(सोरठा)

गेंड़ा जिनका चिह्न, श्रेयांसनाथ प्रभु नाम है।
हम पर रहो प्रसन्न, प्रभु को सदा प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥

काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहंता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म-द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव२, कि स्वर्गों से देव आए२,वासुपूज्यजी।
माँ ने सोलह सपने देखे२, कि त्रिलोकीनाथ आए२, वासु....
माँ जयावती हर्षायी२, कि गर्भ में पूज्य आए२, वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई२, कि सुर नर गीत गाए२ वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बाजे चम्पापुर में बधाई२, कि नगरी में पूज्य जन्मे२, वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई२, कि त्रिलोक में आनन्द छाए२, वासु....

अभिषेक हुआ मेरु पर[२], कि देव क्षीर जल लाए[२], वासु....
फागुन वदि चौदस आई[२], कि शचि सुर नर झूमें[२], वासु....

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदि चौदस आई[२], कि प्रभु हुए वैरागी[२], वासु....
लौकान्तिक देव पधारे[२], कि बने तप सहभागी[२], वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से[२], कि वन मनोहर पहुँचे[२], वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर[२], कि केशलौंच किए त्यागी[२], वासु....

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब दूज माघ सुदि आई[२], कि घातिकर्म सब नाशे[२], वासु....
तब बने केवली स्वामी[२], कि लगा समवसरण प्यारा[२], वासु....
फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल[२],कि गूँजे जय-जयकारे[२], वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा[२], कि धर्म ध्वजा फहराई[२], वासु....

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों सुदि चौदस आई[२], कि कर्म सारे हर डाले[२], वासु....
हुई मुक्ति वधू नत नयना[२], कि वरमाला तुम्हें डाली[२], वासु....

हुई चम्पापुर से मुक्ति[२], कि पाँचों कल्याण हुए[२], वासु....
बाजे चम्पापुर शहनाई[२], कि प्रभु को मोक्ष हुआ[२], वासु....
भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनाएँ भा करके, बारह विधि के बजा दिए।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिए॥ १॥

जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हर ले, संकट महाभयंकर जो॥ २॥

एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।
राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥ ३॥

तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।

भोग स्वर्गसुख सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥ ४॥

कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥ ५॥

एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ ६॥

आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।
एक हजार वर्ष तक रहकर, चम्पापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बंधन हर वंदित होकर॥ ७॥

ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चम्पापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥ ८॥

जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥
ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥ ९॥

अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
राग-द्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥१०॥
मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी-व्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी-कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥ ११॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाएं मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री विमलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

विमलनाथ प्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(शंभु)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।
कर्मों के बंधन टूट पड़े, जिन-रस की धार बहे झर-झर॥
हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर, हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पाई है।
इसलिए आज हे विमलराज!, यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिये कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

भवसागर क्षार अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े ॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर-ज्योति आप्त, भागे मोह-खली॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

(शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, शीश झुका के गुण गाएँ॥
अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज श्रृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्त्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर–संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अरिहंत को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण–अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

विगत दोष गुण कोष हैं, विमलनाथ जिनदेव।
शिव नेता को भक्त के, शीश झुके स्वयमेव॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल–पल के॥
ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥ १॥

विमलप्रभु जैसे बनने को, विनय सुनो हे! विमलेश्वर!
नाथ! आपके पद पर चलने, कहें कहानी चित देकर॥
पद्मसेन इक धर्मी राजा, एक छत्र जो राज्य करे।
कल्पवृक्ष सम प्रजा जनों के, न्याय नीति से काज करे॥ २॥

तथा प्रजा भी राजाज्ञा को, पाल-पालकर पली-पुषी।
राजा को प्रभु मिले केवली, तब नमोऽस्तु की खुशी-खुशी॥
प्रभु से धर्म स्वरूप जानकर, अगली पर्याएँ जानी।
केवल दो भव जग में हैं सो, उसने तप की भी ठानी॥ ३॥
ऐसा पर्व मनाया उसने, जैसे कि तीर्थंकर हो।
पद्मनाभ को राज्य सौंपकर, निकला स्वयं दिगम्बर हो॥
ग्यारह अंगों का अध्ययन कर, प्रभु ने की चाँदी-चाँदी।
नामकर्म के योग्य पुण्यकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी॥ ४॥
चार-चार आराधन करके, अंत समय में मरण किए।
सहस्त्रार में सहस्त्रार की, इन्द्र विभूति वरण किए॥
जहाँ अठारह सागर उसकी, पूर्ण आयु थी भोगमयी।
चार हाथ ऊँचा तन उसका, जघन्य लेश्या शुक्लमयी॥ ५॥
वह आहार मानसिक करता, अणिमा-महिमा गुणवाला।
भोग-भोग चिरकाल स्वर्ग को, भूपर था आने वाला॥
तो काम्पिल्य नगर के राजा, कृतवर्मा की पटरानी।
जयश्यामा ने सोलह सपने, देख उन्हीं का फल जानी॥ ६॥
हुआ गर्भ कल्याणक तब ही, लहर खुशी की दौड़ी थी।
जयश्यामा ने पुत्र जन्म दे, अपनी राहें मोड़ीं थीं॥
देव जन्म-अभिषेक पूर्ण कर, नाम विमलवाहन रक्खे।
ताण्डव नृत्य इन्द्र ने करके, भक्ति रंग डाले पक्के॥ ७॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु का, पर्व राज्य अभिषेक हुआ।
बर्फ-नगीना, देख विलीना, प्रभु को झट वैराग्य हुआ॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, प्रभु की हाँ में हाँ-हाँ की।
चले देवदत्ता शिविका से, बेलामय जिनदीक्षा ली॥ ८॥

नन्दनपुर के कनक-प्रभु तब, राजा ने पड़गाहन कर।
दे आहार दान सुख पाया, पंचाश्चर्य पुण्य पाकर॥
तीन वर्ष छद्मस्थ बिताकर, दीक्षावन में ध्यानी हो।
पूर्ण घातिया कर्म नशाए, पुजते केवलज्ञानी हो॥९॥
समवसरण में गंधकुटी में, सिंहासन कमलासन पर।
हुए विराजित जहाँ मेरु अरु, थे मंदर पचपन गणधर॥
विहार करके भव्य धान्य को, तुष्ट पुष्ट संतुष्ट किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, योग निरोध स्वरूप किया॥१०॥
आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥
फिर सौधर्म इन्द्र ने आकर, अंतिम शुभ संस्कार किया।
ऐसे विमलनाथ को हमने, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥ ११॥
बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥१२॥

(सोरठा)

सूकर जिनका चिह्न, विमलनाथ प्रभु नाम है।
सिद्ध बने हर काम, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अनन्तनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अनन्तगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनन्तप्रभु उसके प्रभु, नमोऽस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें, पदवी मिले अरिहंत की।
इससे रचाई अर्चना प्रभु, परमपूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी, भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनन्त स्वामी को नमन, करें वन्दना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि, मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या, मिली नहीं यहाँ दवा॥

करें निजात्म को निरोग, नीर को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

अनादि से जले तपे, मिली सदा अशान्ति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव, आत्म रूप शान्ति है॥
करें निजात्म को सुशीत, शीत को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

विनाशवान ही हमें, मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी, सुपुंज को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जिसे स्व-वीतरागता, जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम, तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील, पुष्प को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शरीर है नहीं शरीफ, भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान, के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त, कामना चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

महान् मोह की घटाएँ, आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की, महान् मोह नाशती॥

भरें निजात्म ज्ञान से, सुदीप ये जलाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

लकीर हाथ की भरी, विभाव गंध कीच से।
निकालिए हमें अनन्त, कर्म-बंध बीच से॥
भरें निजात्म गंध से, सुगंध को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अनन्त जन्म लक्ष्य के, अभाव में गँवा दिए।
फलों भरी चिदात्म को, कषाय से जला दिए॥
मिले निजात्म आत्म को, फलात्म के चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥
अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्तनाथजी, बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिये, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ्य महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहंत जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

अनन्त गुण भण्डार हैं, प्रभु अनन्त भगवान।
अनन्त गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्रपौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोकशिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाए, क्या हमसे तुम हो रूठे ?॥१॥
सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥२॥
समझा दो जयश्यामा नन्दन!, सिंहसेन सुत समझा दो।
एक पद्मरथ राजा वाली, पुण्य-कथा भी बतला दो॥
एक दिवस वह सुने स्वयं प्रभ, जिनवर जी के दिव्य वचन।
जिनको सुनकर मन में गुनकर, छोड़ा राज्य पाठ यश धन॥३॥
राज्य पुत्र धनरथ को देकर, संयम धर आगम ध्याया।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सल्लेखन कर सुर पाया॥
स्वर्ग त्याग कर नगर अयोध्या, सिंहसेन जयश्यामा के।
गर्भ जन्म कल्याणक उत्सव, सुर-रत्नों को वर्षा के॥४॥
बचपन गया बनें फिर राजा, देखा उल्कापात तभी।
बनें विरागी तो लौकांतिक, सुर अनुमोदन करे तभी॥
दीक्षा का आहार दान दे, विशाल राजा सुखी हुए।
दो छद्मस्थ वर्ष के गुजरे, केवलज्ञानी आत्म छुए॥५॥
जय आदिक पचास गणधर से, समवसरण की सभा भरी।
द्रव्य तत्त्व अध्यात्म शिखर की, प्यारी दिव्य-ध्वनि बिखरी॥

भव्य जनों को ज्ञान मार्ग दे, विहार करना छोड़ दिया।
तीर्थ स्वयंभूकूट शिखर पर, मासिक योग निरोध किया॥ ६॥
इकसठ सौ मुनियों को साथी, बना मोक्ष को पाया था।
शुभ अंतिम संस्कार सुरों ने, कर कल्याण मनाया था॥
जिनके नाम मात्र सुमरण से, अनन्त गुण यूँ ही मिलते।
उनको बुधग्रह तक सीमित कर, किसके खुशी बाग खिलते॥७॥
तब ही पुरुषोत्तम नारायण, फिर सुप्रभ बलभद्र हुए।
मधुसूदन प्रतिनारायण भी, इसी काल में हुए हुए॥
ऐसी श्री अनन्त जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥८॥
कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥९॥

(सोरठा)

सेही जिनका चिह्न, जो प्रभु अनन्तनाथ हैं।
वैभव मिले अनन्त, जिन चरणों में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइए, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥

आतमा की शान्ति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ाएँ जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुए।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुए॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥

गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मण्डप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मण्डप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ाएँ, धर्म से हर काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुए कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घातिकर्म संसार।
धर्म संत अरिहंत को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्षधर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

अधर्म से ऊँचे उठे, छुए धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिए धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्मप्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्मधुरंधर धीरा, धर्म धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्मतीर्थ के पालक, अपना कैसा है नाता॥ १॥

जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ २॥
एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजापालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥ ३॥
बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थसिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुए॥ ४॥
कुमारकाल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया-माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥ ५॥
हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥
पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुए।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुए॥ ६॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥

धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर॥ ७॥
धर्मदेशना धर्मध्वजा दे, किए विहार बंद स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गए।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे॥ ८॥
दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥९॥
तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धारकर पाप नाशकर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥ १०॥
उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोहपंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में, 'सुव्रत' को बुलवालो ना॥ ११॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हरकर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।
जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥

शान्ति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥
जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जब-जब शान्ति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप-घट की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जब-जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो२
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में२
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....

एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी।
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथ जी।
सौधर्म शचि सह आए, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथ जी।
नृप विश्वसेन हर्षाए, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथ जी।

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा।
झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य॥
जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बंधु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाए, केवलज्ञानी हों अरिहंता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहंत को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥ १॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बंधन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥ २॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥ ३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥ ४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥

कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्त्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥ ७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥ ९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥ १०॥

कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥ १२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री कुन्थुनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुन्थुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, १९-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वन्दना।
द्रव्य लाए साथ करने अर्चना॥
आप कुन्थुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥
कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़ कर के कर्मबंधन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम ...।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥
नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं॥
चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥
गंध के बदले हरो विधि-पाक को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं लाए चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुन्थुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अरिहंत को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

कर्म हरण मुक्तिवरण, कुन्थुप्रभु के स्थान।
यूँ ही मिलते भक्त को, अतः करें गुणगान॥
चक्रवर्ति छठवे रहे, तेरहवे रतिनाथ।
सत्रहवे तीर्थेश की, करें भक्ति नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥

त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥ १॥
जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुन्थु जिनवर॥ २॥
यही कुन्थुप्रभु पिछले भव थे, रिपु-विजयी सिंहरथ राजा।
तब ही उल्कापात देखकर, धर्मी बन गए मुनिराजा॥
कैसे हो कल्याण विश्व का, जब रोया यों अन्तर-मन।
इतनी बढ़ी विशुद्धि तब ही, शुद्ध हुआ सम्यग्दर्शन॥ ३॥
तब तीर्थंकरप्रकृति बाँधी, और समाधिमरण करके।
स्वर्ग अनुत्तर पाया जिसको, त्याग दिया नर बन करके॥
सूरसेन नृप श्री कान्ता माँ, हस्तिनागपुर हुए खुशी।
इन्द्र जन्म अभिषेक पर्व कर, नाम कुन्थु रख हुए सुखी॥ ४॥
राजा बने मण्डलेश्वर फिर षट्खण्डों के अधिकारी।
जातिस्मरण से आत्म ज्ञान पा, की शिवपथ की तैयारी॥
लौकान्तिक का अनुमोदन पा, चले पालकी विजया से।
तुरत सहेतुक वन में जाकर, हुए सुशोभित दीक्षा से॥ ५॥
धर्ममित्र ने पंचाश्चारी, दीक्षा का आहार दिया।
सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, तेला वाला नियम लिया॥
तिलक वृक्ष के नीचे स्वामी, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण की सभा लगी तो, सबने सुनी दिव्यवाणी॥ ६॥

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किए।
कर्म हरण कर मुक्ति वरण कर, मोक्ष कुन्थुप्रभु प्राप्त किए॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहाई थी।
चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पाई थी॥ ७॥
तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुन्थुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी॥
कुन्थु नाम बस कर्म हरे सब, बुध ग्रह की क्या बात रही?
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही॥ ८॥
जैसा आप कहोगे स्वामी, वैसा हम क्या कर न सकें?
किन्तु अकेले तड़प रहे हम, विरह वेदना सह न सकें॥
अतः रिझाने तुम को आए, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ॥ ९॥

(सोरठा)

बकरा जिनका चिह्न, कुन्थुनाथ प्रभु नाम है।
करुणाकर चैतन्य, प्रभु को सतत प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(शिखरणी) (लय : महावीराष्टक)

हजारों फूलों से, अधिक जिनकी गंध महके।
करोड़ों सूर्यों से, अधिक जिनका तेज चमके॥
अनन्तों जन्मों में, इस तरह हो पुण्य अर्जन।
तभी मिल पाएंगे, अरह प्रभु के देव-दर्शन॥
किया होगा कोई, गत समय में पुण्य हमने।
इसी से पाई है, मनुज भव पर्याय हमने॥
बने हैं जैनी तो, अरह जिन को वन्दन करें।
झुका के माथा भी, विनय करके अर्चन करें॥
हमारी आत्मा में, प्रकट परमात्मा तुम करो।
नहीं तो श्रद्धा के, निलय मन को पावन करो॥
हमारी नैया को, जिनवर तुम्हीं पार कर दो।
इसी से भक्ति के, वर सुमन स्वीकार कर लो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ाएंगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पाएंगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

रसायन मंत्र मणियों में, न शान्ति है तो क्यों जाएँ।
तभी चंदन चढ़ाके हम, प्रभु सम शान्ति झलकाएँ॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

हुई सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाए।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आए॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥
तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें, कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम–काजल जलाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय मोक्षफल–प्राप्तये फलं...।

जमाने में उलझकर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घपद–प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटक कूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य अरनाथ जो, हैं सप्तम चक्रेश।
चौदहवे रतिनाथ हैं, अष्टदशम् तीर्थेश॥
त्रिजग-ईश त्रय कर्म हर, भव-सागर के पार।
जय-जय की जयमालिका, कहें त्रियोग सँभार॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुन्दर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं॥ १॥
इनके दर्शन-भर करने से, उर में निर्मलता आती।
पूजन से सब पातक कटते, पुण्य-आवली शर्माती॥
चिंतन मनन ध्यान जप-तप से, निज स्वभाव सा झलक रहा।
तभी आपके गुणगाने को, हृदय हमारा ललक रहा॥ २॥
ज्ञानी ध्यानी सुर विद्याएँ, कह न सके कवि पण्डित जो।

उनके गुण हम क्या गाएंगे, आप स्वयं में मण्डित जो॥
फिर भी जहाँ सूर्य ना जाता, वहाँ दीप क्या जलें नहीं?
बच्चे बाहें फैलाकर क्या, सागर का जल कहें नहीं?॥ ३॥
पिछले भव में धनपति राजा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधें।
गए स्वर्ग संन्यासमरण कर, मनुज बने जब सुर त्यागें॥
गर्भ जन्म का पर्व सुदर्शन, राजा रानी पाए थे।
स्वर्ग-सुखों को त्याग-त्यागकर, देव पर्व में आए थे॥ ४॥
चौदह रत्न नवो निधि भोगी, पर देखा जब मेघ विलय।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तब, लौकान्तिक बोले जय-जय॥
राज्य दिया अरविन्द पुत्र को, स्वयं वैजयंती से जा।
लिए सहेतुक वन में दीक्षा, चौथा ज्ञान तुरत उपजा॥ ५॥
चक्रपुरी नृप अपराजित के, हुई पारणा दीक्षा की।
आम्र तरू-तल बने केवली, जगह वही थी दीक्षा की॥
बारह भरी सभाएँ जिनको, तत्त्वज्ञान अरनाथ दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, महामोक्ष प्रभु प्राप्त किए॥ ६॥
किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाये।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥ ७॥
कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्ररत्न का, जिन पर चलकर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥ ८॥

जिनका नाम अकेला सुनकर, निधियाँ रत्न चक्र दौड़ें।
उनका नाम कहो बुध ग्रह में, सीमित करके क्यों जोड़ें ?
पाप शत्रु का मान मरोड़े, राज-रसोड़े जो छोड़े।
राज-रमा घट-दासी जैसी, चक्ररत्न घट-सा छोड़े॥ ९॥
इसी तीर्थ में सुभौम चक्री, नन्दिषेण बलभद्र हुए।
पुण्डरीक छठवे नारायण, प्रतिनारायण निशुम्भ हुए॥
ऐसे श्री अरनाथ देव से, एक प्रार्थना बस यह हो।
रत्नत्रय से मुक्तिवधू से, चट मँगनी पट विवाह हो॥ १०॥
किया नमोऽस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा जीवन में॥
फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोऽस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥ ११॥

(सोरठा)

चरण शरण में मीन, चिह्न सदा ही शोभता।
जो हैं कमलासीन, उन्हें जगत् नित खोजता॥
वो हैं अर जिनराज, जो शुद्धातम सुख भरें।
उन्हें नमोऽस्तु आज, हम पर भी करुणा करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरहनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री मल्लिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२], हम आज सजाए रे॥
नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥
अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥
पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)[२], हम भक्त बुलाएँ रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पाएँ।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

जीना अरु मरना, (हाँ–हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

खस चंदन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पाएंगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएंगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पाएँ।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ–हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पाएँ।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ–हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
पर की आसक्ति (हाँ–हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर–रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥
रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
काया भव व्याधि (हाँ–हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ–जिनेन्द्राय क्षुधारोग–विनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पाएँ।
अतः आरती दीप जला, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
मोही भव गलियाँ (हाँ–हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ–जिनेन्द्राय मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं...।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जाएँ।
अतः सुगंधी खेकर हम, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
कर्मों के शत्रु (हाँ–हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ–जिनेन्द्राय अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

सुख–दुख की परवाह न की,निज–कर्त्तव्य निभाए तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाए तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटाएँ।
अतः भेट फल निजफल को, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥
जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचें फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जग में पूज्य विशेष हैं, मल्लिनाथ योगीश।
जयमाला के नाम से, मिले हमें आशीष॥
कर्म-शरण संसार दे, धर्म-शरण दे तार।
पाने शरण विशेष अब, आए प्रभु के द्वार॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुंडों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥ १॥
एक वैश्रवण राजा देखे, जब बरगद का पेड़ गिरा।
जब इतना मजबूत गिरा तो, अपना तो हो हाल बुरा॥
इसी दृश्य से हो वैरागी, राज रमा जग छोड़ गए।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति धर, कर सल्लेखन स्वर्ग गए॥ २॥
स्वर्ग त्याग मिथिला नगरी के, राजा कुम्भ बड़े प्यारे।
जिनकी प्रजावती रानी को, देकर स्वप्न जन्म धारे॥
गर्भ जन्म कल्याणक विधि से, मल्लिनाथ यह नाम रखा।
सौ वर्षों का कुमारकाल जब, बीता तो सब नगर सजा॥ ३॥

तभी याद आई स्वर्गों की, कहाँ त्याग का फल पावन।
और कहाँ यह लज्जादायक, बिडम्बना विवाह बंधन॥
ऐसे विवाह की निन्दा कर, दीक्षा का उद्योग किया।
तब लौकान्तिक देवों ने आ, अनुमोदन सहयोग किया॥ ४॥

अहो! अहो! कौमार्य दशा में, नर-इन्द्रों को जो दुष्कर।
वही विषय तज चले श्वेत-वन, बैठ जयन्त पालकी पर॥
'प्रशान्तरूपायदिगम्बराय' को, धरा 'नमः सिद्धेभ्यः' कह।
हुई पारणा मिथिलानगरी, नंदिषेण राजा के गृह॥ ५॥

बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिए॥ ६॥

जनम-मरण की जहाँ तरंगें, भँवरे इच्छा की रखता।
भवसागर दुख जल से पूरित, मिथ्या चंदा से बढ़ता॥
मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥ ७॥

तब ही पद्म चक्रवर्ती अरु, नन्दिमित्र बलदेव हुए।
तब बलीन्द्र प्रतिनारायण भी, नारायण तब दत्त हुए॥
जिनका नाम मोह ग्रह हर ले, फिर क्या बात केतु ग्रह की।
अतः नमोऽस्तु मल्लिनाथ को, जो दें राह मोक्षगृह की॥ ८॥

धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥

चरित–मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज–भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥ ९॥
स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥ १०॥
अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥
सब मंगल में पहला मंगल, जिन–दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥ ११॥

(सोरठा)

कलश चरण में चिह्न, मल्लिनाथ प्रभु नाम है।
आतम मिले अभिन्न, इससे सदा प्रणाम है॥
हे निर्मोही! आप्त, करो एक हम पर नजर।
दुख गम करो समाप्त, कालसर्प–भवयोग हर॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घपद–प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण दूजा कृष्ण को, तज प्राणत सुर इन्द्र।
सोमा माँ के गर्भ में, आए सुव्रत नंद॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥ १॥

बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ २॥

आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥ ३॥

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ ४॥
आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ ५॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ ६॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बंधन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बंध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का श्रृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥

कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।
आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।
अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।
इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।
इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

निज–निधियों पर शिव–गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप–कुदाल लिया जिसने, निज–वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ–जिनेन्द्राय अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन–गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ–जिनेन्द्राय मोक्षफल–प्राप्तये फलं...।

हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन–सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज–मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घपद–प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥ १॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥ २॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥ ३॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥ ४॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥ ५॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥ १॥

पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥
अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ २॥
गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ ३॥
ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ ४॥
तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥५॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ ६॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥

किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ ७॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना ऐसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।
मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ ८॥
इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ ९॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥ १०॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥११॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥
अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥

अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥

अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥
फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[2]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बंधन।[2]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बंधन टूटे।[2]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[2]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्मचक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ १॥
अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥ २॥
धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकरप्रकृति पाए।
समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आए॥
शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥ ३॥
धर्मचक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥
बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥ ४॥

वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाए।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाए॥
क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥ ५॥
नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बंधन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो एसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥६॥
अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बंधन भी फेंके॥७॥
चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे - पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥८॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥
ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥९॥
भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥१०॥

दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥
इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥११॥
ब्रह्मदत्त भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द्व-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
ऋद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥१२॥
सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥१३॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामई, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥
जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

संकट उपसर्गों से डरकर, जिनको जीवन दुख लगता।
पाप त्यागने से जो डरते, मोक्षमार्ग से भय लगता॥
अपनी हिम्मत हारे चुके जो, टूट चुके जो बिखर चुके।
वो पाकर पारस का सम्बल, ऋद्धि-सिद्धि पर संवर चुके ॥१॥
दुख संकट उपसर्ग उन्हें अब, कभी सता ना सकेत है।
उनका जीवन कुन्दन सम हो, जो पारस को भजते हैं॥
जी हाँ! ये वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥२॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेईसवें तीर्थेश रहे।
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो हम सब के ईश रहे॥
भरतक्षेत्र के पोदनपुर में, जब राजा अरविन्द्र हुए।
विश्वभूति वा अनुन्धरी के, कमठ अनुज मरुभूति हुए॥३॥
दोनों राजा के मंत्री थे, दुर्जन कर्मठ रहा विष सा।
मरुभूति सुन्दर पत्नी का, स्वामी सज्जन अमृत सा॥
मरुभूति को मार कमठ ने, पत्नी पर अधिकार किया।
मरुभूति ने वज्रघोष के, हाथी वाला जन्म लिया॥४॥
फिर क्रमशः सुर रश्मिवेग सुर, वज्रनाभि नर-चक्रेश्वर।
ग्रैवेयिक अहमिन्द्र देव हो, फिर आनन्द मण्डलेश्वर॥
राजा ने मुनिराजा बनकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
सल्लेखन कर प्राणत सुर से, इन्द्र त्याग आए काशी॥५॥
वामा माँ के आँगन में फिर, हुआ गर्भ कल्याणक था।

सोलह सपनों का मंगल फल, अश्वसेन ने वाँचा था॥
रत्नों की वर्षा सुखकारी, हुआ जन्म कल्याणक फिर।
शचि सौधर्म इन्द्र ने प्रभु को, लिया गोद में खुश होकर॥६॥
कर अभिषेक इन्द्र ने प्रभु का, नाम रखा फिर पार्श्वकुमार।
हरे रंग के बालक पारस, यौवन-क्रीड़ा किए बिहार॥
तो देखा कि तापस नाना, पंच-अग्नि तप को मचले।
सो लकड़ी कटने के पहले, पारस समझाने निकले॥ ७॥
बोले आप 'इसे मत काटो', पर नाना जी काटे थे।
सो दो सर्प-सर्पिणी कटकर, दो हिस्सों में बांटे थे॥
जो पारस के उपदेशों को, सुनकर स्वर्ग सिधारे थे।
पद्मावति धरणेन्द्र हुए जो, शान्ति-भाव को धारे थे॥८॥
इस विध पारस तीस वर्ष की, कुमारदशा गुजारे थे।
किन्तु एक दिन भेंट देखकर, भवसुख से वैरागे थे॥
तप कल्याणक में दीक्षा ली, साथ तीन सौ थे राजे।
गुल्मखेट में धन्यराज के, ढोल पारणा के बाजे॥९॥
यूँ छद्मस्थ चार माहों के, बाद कमठ के प्राणी ने।
दस भव के रिपु शम्बर बनकर, कष्ट दिए अभिमानी ने॥
सात दिनों तक महाभयंकर, उपसर्गों को पार्श्व छुए।
पद्मावति ने छत्र लगाया, फणारूप धरणेन्द्र हुए॥१०॥
दूर हुआ उपसर्ग कमठ का, प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
समवसरण में दिव्यध्वनि दे, पारस को निर्वाण हुआ॥
स्वर्णभद्र की कूट शिखरजी, श्रावण शुक्ल सप्तमी को।
किये मोक्ष कल्याणक उत्सव, सबने मोक्ष सप्तमी को॥११॥
तब से अब तक पारस प्रभु के, जय-जयकारे गूँज रहे।
प्रभु जैसे उपसर्ग विजेता, बनने हम सब पूज रहे॥

क्षमा धरें भव पार करें हम, पूजा का फल यह देना।
'विद्या' के 'सुव्रत' को पारस, पारसमणि सम कर देना॥१२॥

(दोहा)

पारसमणि सोना करे, पारस पारसनाथ।
सो पारस बनने करें, हम नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री महावीर पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर!,
शासननायक-जय महावीर।

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥

जय महावीर–जय महावीर!,
शासननायक–जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल–व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा–जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव–गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपद–प्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाण–विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका–छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोग–विनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली–भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥
जगत्–भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति–पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपद–प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादिधारा, तीर्थंकर प्रभु चला रहे।
भव्य-जीव तो इस धारा में, निज को जिन से धुला रहे॥
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, समय-समय पर जन्म धरें।
वृषभनाथ से महावीर तक, जिनशासन को धन्य करें॥१॥
अंतिम प्रभु श्री वर्धमान जी, वर्तमान जिननायक हैं।
जिनके शासन तीर्थकाल में, आज तत्त्व सुख दायक हैं॥

आओ! उनकी कथा कहें जो, पंचम बालयतीश रहे।
माँ त्रिशला सिद्धार्थ राज के, श्री नंदन जगदीश रहे॥२॥
जी हाँ! ये वो ही स्वामी जो, पुत्र भरत चक्री के थे।
जीव भील का बना मरीचि, नाती वृषभनाथ के थे॥
गुरु-भक्ति से वृषभनाथ के, साथ बने मुनि दीक्षा ली।
लेकिन परिषह सह न सके सो, मिथ्यामत की शिक्षा ली॥३॥
परिव्राजक की दीक्षा लेकर, मिथ्यापथ आसीन हुए।
कल्पित आदिक तत्त्व रचाकर, जन्म-मरण लवलीन हुए॥
किन्तु सिंह के जीवन में, जब मुनियों का उपदेश सुना।
सिंह प्राप्त कर सम्यग्दर्शन, सिंहकेतु सुरदेव बना॥४॥
कनकोज्ज्वल सुर हरिषेण सुर, प्रियमित्र सुर नंद हुआ।
जो तीर्थंकर प्रकृति बाँध के, सल्लेखन कर इन्द्र हुआ॥
सोलह सपने देकर जिनके, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
शचि ने सम्यग्दर्शन पाया, जन्मों के अभिषेक हुए॥५॥
नाम **वीर** श्री **वर्धमान** रख, देवराज के नृत्य हुए।
संजय विजय वीर दर्शन कर, मुनि जब निःसंदेह हुए॥
तो फिर **सन्मति** नामकरण कर, बाल्यकाल के खेल हुए।
संगम सुर से **महावीर** का, नाम प्राप्त कर ख्यात हुए॥६॥
तीस वर्ष के कुमारकाल को, व्यतीत कर भव भोग तजे।
नहीं सुहाई हल्दी मेंहदी, विवाह मण्डप भी न सजे॥
ज्यों वैराग्य हुआ त्यों ही तो, तप कल्याणक पर्व हुआ।
कूलग्राम के कूलराज के, खीर पारणा हर्ष हुआ॥७॥
उज्जयिनी में महारुद्र ने, महा घोर उपसर्ग किए।
हार मानकर **अतिवीर** वा, **महतिपूज्य** दो नाम दिए॥
साँकल बँधी चंदना ने फिर, किया वीर का ज्यों दर्शन।
बन्धन टूटे तो वीरा का, करे चंदना पड़गाहन॥८॥

विधिपूर्वक आहार दान दे, पर्व चंदना ने पाए।
बारह वय छद्मस्थ विताकर, केवलज्ञान प्रभु पाए॥
किन्तु हुई ना दिव्यदेशना, तब गौतम को ज्ञान मिला।
मुनि बन प्रथम बने गणधर जो, कुल ग्यारह का साथ मिला॥९॥
बनी चंदना प्रथम आर्यिका, समवसरण की सभा सजी।
विपुलाचल पर दिव्यध्वनि दे, समवसरण की सभा तजी॥
तीस वर्ष कैवल्यकाल फिर, योगनिरोध किए स्वामी।
पावापुर के सरवर से फिर, मोक्ष गए अंतर्यामी॥१०॥
कार्तिक कृष्ण आमवस प्रातः, प्रभु निर्वाण पधारे थे।
हुआ मोक्ष कलयाणक उत्सव, लाडू भक्त चढ़ाए थे॥
उसी शाम को गौतम गणधर, केवलज्ञान प्रकट करते।
सो संध्या में दीप जलाकर, घर-घर दीपोत्सव करते॥११॥
तब से चले वीरशासन यह, हम सबका उद्धार करे।
भव-भव तक हम ऋणी रहेंगे, हम पर प्रभु उपकार करें॥
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाएँ, पर्व दशहरा दीवाली।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, मिले सभी को खुशहाली॥१२॥

(सोरठा)

महावीर भगवान, हम भक्तों के प्राण हैं।
करते नमोऽस्तु ध्यान, होते निज कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन

(दोहा)

आदिनाथ को नमन कर, भरत प्रभु को ध्याऊँ।
बाहुबली को सिर झुका, पूजा साथ रचाऊँ॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ ने, पथ दे जीना सिखा दिया।
चक्री भरतदेव ने चक्कर, कर्म चक्र का छुड़ा दिया॥
बाहुबली ने बाहुबली हो, कर्म शत्रु को हरा दिया।
इन्हें विराजित करके मन में, मैंने माथा झुका दिया॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

आधा जीना आधा मरना, नाथ! यही अभिशाप हरो।
पूरा जीना पूरा मरना, मुझे सिखा दो पाप हरो॥
जनम मरण का मरण करा दो, प्रासुक नीर समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध आग जब क्षमा नीर से, बुझे तभी चित शीतल हो।
आतम बगिया महक उठे फिर, संयम का पथ मंगल हो
क्रोध आग हर क्षमा नीर दो, चंदन तुम्हें समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जड़ को चेतन चेतन को जड़, बहिरातम बनके माना।
परमातम अन्तर आतम का, अन्तर अब तक ना जाना

भेद ज्ञान अब मुझे करा दो, तंदुल पुंज समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

इन पुष्पों ने भगवन् मेरा, चैन छीन बेचैन किया।
काम रोग की व्यथा बढ़ाकर, फिर व्याकुल दिन रैन किया
जिन बनकर मैं काम नशाऊँ, जीवन पुष्प समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोग मुझे हर समय भोगते, मैं क्या भोगूँ भोगों को।
लेकिन भोगों की इच्छा से, बढ़ा रहा भव रोगों को
ज्ञानामृत दो क्षुधा नशाऊँ, ये नैवेद्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य नाम सुनते ही जग में, अंधकार दादा भागें।
वैसे ही प्रभु नाम सुनें तो, मोह नींद से उठ जागें
आतम का मैं दीप जलाऊँ, प्रभु पद दीप समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कब तक मुझको धूप जलाना, तथा धूप में जलना है।
कब चिन्मय सा रूप सजा के, मुक्तिरमा से मिलना है

धूल उड़ा दो मम कर्मों की, अनुपम धूप समर्पित है।
आदि–भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ–भरत–बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

जैसे फल पेड़ों से जुड़कर, बनते सरस मधुर मीठे।
वैसे मुझको जोड़े रखना, अपने चरणों से नीके
महा मोक्षफल चरण आपके, ये फल जिन्हें समर्पित है।
आदि–भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ–भरत–बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल–प्राप्तये फलं...।

रत्नों जैसा अर्घ्य न मेरा, सुर छन्दों मय वचन नहीं।
भाव भक्ति भी दिखा न सकता, गुण गाने का यतन नहीं
फिर भी अनर्घपद को पाने, सादर अर्घ्य समर्पित है।
आदि–भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ–भरत–बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद–प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रयजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

आदि–भरत–बाहुबली, प्रथम किए कल्याण।
जिनकी महिमा गीत को, गाऊँ मैं धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

रोटी कपड़ा मकान को जग, दुखी–दुखी मर मार रहा।
कल्पवृक्ष जब खो बैठा तो, करता हा–हाकार रहा॥
तब आदीश्वर ने शिक्षा दे, भक्तों पर उपकार किया।
कृषी करो या ऋषी बनो ये, भव्यों को उपहार दिया॥१॥

असि मसि आदिक षट्कर्मों का, दिया दिया वरदान दिया।
ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों, कन्याओं को ज्ञान दिया॥

प्रजा व्यवस्थित करके तुमने, धारा था वैराग्य महा।
खोले धर्म द्वार इस युग में, आदिम जिनवर बने यहाँ॥२॥
मोक्षमार्ग बतलाया चलके, षट्–आवश्यक भी पाले।
इसीलिए हे पागल मनवा, जिनवर के गुण तू गा ले॥
आदिनाथ के पुत्र भरत जो, बने चक्रवर्ती पहले।
चौथा वर्ण बना के जग में, राज्यों की जय को निकले॥३॥
चक्र चला के जय पाई पर, हुआ न वापिस चक्र जहाँ।
तब गुस्सा आई चक्री को, दुश्मन मेरा कौन यहाँ॥
मेरी जिसे दासता अथवा, ये सत्ता स्वीकार नहीं।
तब पाए लघु भ्राता अपने, जिसने मानी हार नहीं॥४॥
तभी भरतजी बाहुबली को, हार दिलाना ज्यों सोचे।
जल्ल मल्ल फिर दृष्टि युद्ध में, हारे भरत चक्र फैंके॥
परिक्रमा कर चक्र रुका तब, लज्जित हुए भरत हारे।
बाहुबली फिर वैरागी बन, राज–पाट त्यागे सारे॥५॥
एक साल तक उपवासी बन, ध्यान किया उपसर्ग सहा।
लेकिन केवलज्ञान हुआ ना, हाय! हाय! यह कर्म कथा॥
भरत भ्रात ने तब जाकर के, जैसे क्षमा याचना की।
बाहुबली निर्विकल्प बने तब, अपनी पूर्ण साधना की॥६॥
केवलज्ञानी बनकर स्वामी, श्री कैलाशधाम पहुँचे।
बाहुबली जी आदिनाथ से, पहले मोक्ष धाम पहुँचे॥
केवलज्ञान शीघ्र उपजा के, भरत बने शिवपुर वासी।
आदिनाथ फिर मोक्ष पधारे, मैं तीनों का पद वासी॥७॥

तीन-तीन प्रभुओं की अर्चा, मैंने साथ रचा डाली।
इसका फल बस इतना पाऊँ, रात दिवस हो दीवाली॥
राग द्वेष औ मोह तीन ये, दोष सभी मम नाथ हरो।
रत्नत्रय से मुझे सजाकर, 'सुव्रत' के सब पाप हरो॥८॥

(दोहा)

त्रय योगों को शुद्ध कर, गाए ये गुणगान।
इसके फल से कण्ठ मम, प्रभु से हो स्वरवान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शान्ति शान्तिधारा करें, करें शान्ति चहुँ ओर।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त करल के भोर॥

(शान्तये शान्तिधारा...पुष्पांजलिं...)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार।
पूजा के पहले करें, शीश झुका सत्कार॥

(ज्ञानोदय)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर, तीन-तीन पद के धारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, क्रम-क्रम से जग हितकारी॥
पूजा करने भाव बनाए, द्रव्य सजाए मनहारी।
हृदय कमल पर आन विराजो, तीनों भगवन उपकारी॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जीवन की जो रही परीक्षा, नाम उसी का मरण रहा।
जनम बुढ़ापा उसके साथी, इनसे काई नहीं बचा॥

सफल परीक्षा में होने को, प्रासुक जल यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तपकर कंचन कंचन सा हो, हार गले का बन चमके।
किन्तु नाथ! हम भवाताप से, आज तलक तो ना चमके
ताप हरें कुन्दन से चमकें, सो चंदन यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

ऊँचाई पर जाना हो तो, सूर्य ताप सहना होगा।
शाश्वत पद को पाना हो तो, सम्यक् तप करना होगा
सम्यक् तप कर शाश्वत बनने, उज्ज्वल अक्षत अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान...।

छेद काष्ठ में कर सकता पर, भ्रमर फूल में फँस मरता।
त्यों चेतन सुख वाला है पर, काम व्यथा से दुख सहता
ब्रह्मचर्य सौरभ महकाने, पुष्प पुंज यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी पेट को कभी जीभ को, कभी मनोगत इच्छा को।
पापी बन जाती है दुनियाँ, भूल आपकी शिक्षा को
क्षुधा मिटाने नैवेद्यों की, श्रेष्ठ भेंट यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

असुरक्षित दीपक ज्यों बुझते, आँधी तूफानों द्वारा।
त्यों ही तुम बिन हम भक्तों के, जीवन में है अँधयारा

उजयारा तुम सम पाने को, जगमग दीपक अर्पित है।
शान्ति–कुन्थु–अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो धुँआ राख के, साथ सुगंधी भी फैले।
पर कर्मों की रज से हम तो, सदा रहे मैले–मैले
नाथ! आपकी पद रज पाने, धूप सुगंधी अर्पित है।
शान्ति–कुन्थु–अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म–दहनाय धूपं...।

नहीं परीक्षा से हम डरते, किन्तु कटुक फल से डरते।
मधुर–मधुर फल पाएँ खाएँ, यह इच्छा भी ना रखते
लेकर दीक्षा मुक्ती पाने, प्रासुक फल यह अर्पित है।
शान्ति–कुन्थु–अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल–प्राप्तये फलं...।

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शान्ति–कुन्थु–अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद–प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शान्ति–कुन्थु–अरनाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति–कुन्थु–अरनाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति–कुन्थु–अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीनों पदधारी रहे, शान्ति-कुन्थु-अरनाथ।
जयमाला के पूर्व में, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्तिनाथ की, जग के शान्ति प्रदाता की।
जय हो! जय हो! कुंथुनाथ की, सबके आश्रयदाता की॥
जय हो! जय हो! अरहनाथ की, ऋद्धि-सिद्धि सुख दाता की।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर, जय हो! भाग्य विधाता की॥१॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदवी धारी।
कामदेव के रूप जन्म ले, दुनियाँ मोहित की सारी॥
जिनको देख युवतियाँ नारीं, निज श्रृंगार भूलती थीं।
गोदी में बच्चे उल्टे ले, भोजन पान भूलती थीं॥२॥

षट्खण्डों के अधिपति बनकर, शौर्य पराक्रम दिखा दिए।
जिससे दुश्मन राजाओं के, जग में छक्के छुड़ा दिए॥
चौदह रत्न नवोनिधि पाई, छ्यानवें हजार रानी थीं।
चक्ररत्न पा चक्रवर्ति हो, ली दीक्षा कल्याणी भी॥३॥

तीर्थंकर हो धर्मचक्र से, समवसरण को सजा दिया।
कर्मचक्र को नष्ट किया फिर, मुक्तिवधू को रिझा लिया॥
तीन लोक के उच्च शिखर पर, नाथ! विराजे हैं जाकर।
हम तो वहाँ न जा सकते सो, करें अर्चना गुण गाकर॥४॥

अब तो केवल यही प्रार्थना, शान्तिप्रभु दो शान्ति हमें।
कुन्थुनाथ जी करुणा कर दो, अरहनाथ दो मुक्ति हमें॥
है विश्वास आश भी पूरी, हमको आप निहारोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, हम भक्तों को तारोगे॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्ति-कुंथु-अर प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्ति-कुन्थु-अर राय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

पंच बालयति तीर्थंकर पूजन

स्थापना (दोहा)

पाँचों बालयतीश प्रभु, वासपूज्य मल्लीश।
नेमि पार्श्व अतिवीर को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

चौबीसों तीर्थंकर करते, पूर्ण चार पुरुषार्थों को।
किन्तु मिले हैं काल दोष से, पंच बालयति भक्तों को॥
यद्यपि यह अपवाद नियम का, पर आदर्श लगे हमको।
पाँचों बाल ब्रह्मचारी की, अतः रचाएँ पूजन को॥

(दोहा)

श्रद्धासन पर आ वसो, पाँचों बाल यतीश।
बाल ब्रह्म में रम सकें, दो ऐसा आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जन्म नदी के मरण तटों से, इच्छा सागर भर न सका।
किन्तु हुआ खारा अति खारा, जिससे अपना शौर्य थका॥
जन्म मरण दुख प्रभु सा हरने, प्रासुक जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कभी मिलन का राग जलाएँ, कभी वियोग भरी पीड़ा।
ऐसे में क्या शान्ति मिलेगी, मिले द्वेष की बस क्रीड़ा॥
प्रभु सम हम भी इसे त्यागने, चंदन जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

राज-पाठ सब पड़ा रहेगा, जब यमराज पुकारेगा।
साथ निभाएगा ना बेटा, कब निज रूप निहारेगा॥
प्रभु सम आतम वैभव पाने, अखंड अक्षत पुंज धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काम भोग से मूर्छित होकर, अपना शील जला डाला।
अहो! व्याह बन्धन अपनाकर, निज पुरुषत्व गवां डाला॥
प्रभु सम निज रमणी अब वरने, प्रभु चरणों में पुष्प धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कण-कण भक्षण करके भी यह, भूख न संयम बिन मिटती।
बना बना सब खा डाला पर, आश न निज रस की दिखती॥
प्रभु सम निज के रसास्वाद को, सादर यह नैवेद्य धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

स्वारथ के रिश्ते नातों में, भेद ज्ञान की आँख मुंदी।
सो अज्ञान अंधेरा फैला, दर-दर भटके स्वयं सुधी॥
प्रभु सम निज का दर्शन करने, करें आरती दीप धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मचन्द ने धर्मचन्द के, स्वच्छन्द होकर पथ रोके।
किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ हुए हम, पाए बस केवल धोखे॥
निजानन्द हम प्रभु सम पाने, आज समर्पण धूप करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोगों के संग्रह रक्षण में, अस्त व्यस्त अभ्यस्त रहे।
इन भोगों का फल क्या होगा, मात्र भोग में मस्त रहे॥
तजें भोग के योग आप सम, मिले मोक्ष फल भेंट करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥
दयानिधे! निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

पंच बालयति नाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पंचबालयति जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रभो, तीर्थंकर जी पाँच।
कामजयी जयमालिका, रे मन गाके नाँच॥

(ज्ञानोदय)

तीर्थंकरों की कथा कहानी, हम तुम अच्छे से जाने।
जिनके शुभ चारित्र श्रवण कर, अपनी आतम पहचाने॥
ये सारे ही तीर्थंकर जी, पूर्ण चार पुरुषार्थ किए।
लेकिन हुए पाँच कुछ ऐसे, जो बस दो पुरुषार्थ किए॥१॥
वासुपूज्य प्रभु मल्लिनाथ हैं, नेमि पार्श्व प्रभु वीरा वे।
सिद्धांतों के अपवादी पर, हमको लगते हीरा से॥
राज-पाठ न रुचे इन्हीं को, बन बैठे भव वीरा हैं।
लगी न मेंहदी चढ़ी न हल्दी, सचमुच ये तो हीरा हैं॥२॥
जगतपूज्य हैं वासुपूज्य प्रभु, पूज्य बनाएँ भक्तों को।
शुद्धातम का पथ दिखला दें, विषयों के आसक्तों को॥
मोहमल्ल की शल्य मिटा के, निज-पर मोहित हो बैठे।
भक्तों का मन मोह लिया हम, तुम पर मोहित हो बैठे॥३॥
राजुल का दिल तोड़ नेमि ने, मुक्तिवधू से राग किया।
दया अहिंसा धर्म पालने, विषयों का सुख त्याग दिया॥

भय उपसर्ग विजेता बन के, कमठ शत्रु तक तार दिए।
वज्र पुरुष पारस को हम तो, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥४॥
वर्तमान के वर्धमान हैं, शासननायक वीरा रे।
नाँव हमारी ना थामी तो, हम तो हुए अधीरा रे॥
आप बिना यह सकल विश्व तो, ब्रह्मचर्य बिन सुलग रहा।
बाल–ब्रह्मचारी साधक का, उत्सव जग से विलग रहा॥५॥
अतः आपसे यही प्रार्थना, जिसे भक्त बस कह सकता।
विश्वशान्ति को पुनः आपकी, परम–परम आवश्यकता॥
आप तथा सिद्धांत आपके, सबको पार लगाएंगे।
'सुव्रतसागर' गुरु 'विद्या' बिठा ले, निकट आपके आएंगे॥६॥

(सोरठा)

पाँचों बाल यतीश, करके नमोऽस्तु हम भजें।
पाके प्रभु आशीष, आत्म ब्रह्म से हम सजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद–प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पंचबालयति प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पंच बालयतिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री भरतेश पूजन

स्थापना (दोहा)

आदिनाथ सुत भरत हैं, पूज्य केवली ईश।
पूजन के पहले जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर शीश॥

(ज्ञानोदय)

नवनिधियाँ चौदह रत्नों के, साथ हजारों रानी को।
त्याग दिए निज वैभव पाने, मुक्तिवधू कल्याणी को॥
बन वैरागी हुए दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज उठे।
भक्तों को जब कुछ ना सूझे, करके नमोऽस्तु पूज झुके॥

(दोहा)

वैरागी को देखकर, पाने निज वैराग्य।
मन सिंहासन पर वसो, भरतेश्वर महाराज॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

चक्री का वैभव चक्री को, अजर अमर जब कर न सके।
फिर क्या करना इस वैभव का, जो पर भव में चल न सके॥
भरतेश्वर यूँ चिन्तन करके, मुनि बनकर भव पार किए।
प्रासुक जल यह जिन्हें भेंट हम, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मान भंग ना हो चक्री का, बाहुबली ने भंग किया।
चक्र फेंककर भरतेश्वर ने, महा भयंकर द्वंद्व किया॥
भरत क्रोध संताप त्याग कर, निज शीतल श्रृंगार किए।
गंध सुगंधित जिन्हें भेंट हम, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

षट्खण्डों के अधिपति को भी, शिलापट्ट पर जगह नहीं।
क्या अस्तित्व हमारा होगा, इसकी कोई खबर नहीं॥
अतः भरत जग नाम धाम तज, सिद्धशिला पर नाम किए।
अखण्ड अक्षत जिन्हें भेंट हम, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सा परिवार भरत ने, निज कषाय से जला दिया।
बाहुबली को उत्तेजित कर, वैरागी पथ दिखा दिया॥
भरत बने फिर खुद वैरागी, मुक्तिवधू को प्राप्त किए।
भक्ति सुमन यह जिन्हें भेंट हम, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

रचें रसोइये तीन सौ पैंसठ, भोज्य कटक ना पचा सके।
फिर भी तृप्त न भरत हुए सो, स्वाद रसी के सभी तजे॥
फिर हम क्यों भोजन पर मरते, क्यों ना निज रस याद किए।
अतः भेंट नैवेद्य भरत को, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह जाल में भरत रहे पर, भूले भटके ना पंथा।
घर में रहे भरत वैरागी, सो बन बैठे भगवंता॥
आत्म ज्ञान का सूर्य उगा कर, निज पर का उद्धार किए।
दीप जला हम करें आरती, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के हैं युद्ध निराले, सबको लड़ने पड़ते हैं।
चक्री को भी ना छोड़ें ये, अपमानित तक करते हैं॥
जड़ कर्मों का पिण्ड छुड़ाने, षट्खण्डों को त्याग दिए।
धूप जला हम भजें भरत को, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सभी युद्ध भरतेश्वर हारे, बाहुबली जी जय पाए।
पुण्य-पाप फल खट्टे मीठे, जो बोये वो उग आए॥
शुद्धातम के फल चखने को, पुण्य पाप फल त्याग दिए।
भरतेश्वर को फल अर्पित कर, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

चक्रवर्ति की भोग संपदा, वैभव इन्द्रों के जैसे।
आतम वैभव पाने तरसें, शीघ्र मिले हमको कैसे।
भरतेश्वर आत्मस्थ हुए तो, सिद्ध अवस्था प्राप्त किए।
अर्घ्य चढ़ा हम अनर्घ बनने, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री भरतेश जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

शुद्धातम की प्राप्ति को, निज वैभव को छोड़।
भरत हुए अर्हंत सो, हो नमोऽस्तु कर जोड़॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! भरतेश्वर की, पहले चक्री त्यागी की।
जय हो! जय हो! नग्न दिगम्बर, आतम के अनुरागी की॥
आदिनाथ नन्दा नन्दन की, षट्खण्डों के अधिपति की।
बाहुबली के अग्रज भ्राता, परम पूज्य श्री जिनपति की॥१॥
दिया भरत को राज्य अयोध्या, बाहुबली को पोदनपुर।
आदिनाथ फिर दीक्षित होकर, मुक्त हुए पाकर शिवपुर॥
राज्य किए संचालित चक्री, किन्तु न उसमें रचित हुए।
पुत्र रत्न फिर चक्र रत्न फिर, धर्म रत्न भी प्रकट हुए॥२॥

षट्खण्डों के अधिपति ज्यों ही, किए प्रवेश अयोध्या में।
चक्र द्वार पर क्यों रुक बैठा, रिपु है कौन अयोध्या में॥
ज्ञान हुआ कि बाहुबली को, भरत दासता ग्राह्य नहीं।
अतः सैन्य के युद्ध टालकर, नजर मल्ल जल युद्ध सही॥३॥
भीषण युद्ध भरत ज्यों हारे, तो क्रोधित हो फेंका चक्र।
तीन तीन दे प्रदक्षिणा तब, वापिस लौट गया था चक्र॥
बाहुबली तब बने विरागी, क्षमा याचना भरत किए।
किन्तु न माने बाहुबली जी, नग्न बने जग त्याग दिए॥४॥
इधर दुखी हो भरतेश्वर जी, करें राज्य का संचालन।
उधर वर्ष भर बाहुबली जी, तप करते ले खड्गासन॥
बने घौंसले बाँबी तन पर, किन्तु हुआ ना केवलज्ञान।
क्योंकि शल्य थी मुझसे मेरा, भाई पाया दुख अपमान॥५॥
तभी वर्ष भर गुजर गया पर, भरत ना आए दर्शन को।
किन्तु भरत ज्यों जाकर पहुँचे, केवलज्ञान हुआ उनको॥
रहे भरत घर में वैरागी, राजपाट मन से न छुए।
त्याग चक्रवर्ती का वैभव, दीक्षा लेकर नग्न हुए॥६॥
शीघ्र घातिया कर्म नष्ट कर, बने केवली अरिहंता।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, पूज्य भरत हो जयवंता॥
करके भरतेश्वर की पूजा, चक्री सा वैभव मिलता।
किन्तु मोक्ष के प्रेमी जन का, इससे चेतन कब खिलता॥७॥
अतः अर्चना के बदले में, भक्तों की क्या इच्छा हो।
जग में रहें जिनेन्द्र भक्त बन, शीघ्र भरत सम दीक्षा हो॥
जड़ में ना आनन्द मनाएँ, निजानन्द में लीन रहें।
'सुव्रत' निज के चक्री बनकर, चिदानन्द स्वाधीन रहें॥८॥

(सोरठा)

निज स्वभाव को जान, भरत तजे संसार को।
भक्त बनें भगवान, नमोऽस्तु बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

भरतेश्वर स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, भरतेश्वर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री बाहुबली पूजन

स्थापना (दोहा)

बाहुबली कामदेव हैं, जिनशासन के धाम।
सबसे ऊँची मूर्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

(शंभु)

जय बाहुबली! जय गोम्मटेश!, जय कायोत्सर्ग प्रणेता की।
जय वृषभ सुनन्दा नन्दन की, परिषह उपसर्ग विजेता की॥
जैनासन में हे निर्मोही!, तुम सबको मोहित खूब करो।
हम मोहित तेरी मुद्रा पर, तुम हम पर दया जरूर करो॥
माँ पिता भाई बंधु छोड़े, धन राज्य प्रजा से मुख मोड़े।
प्रभु अर्जी हमारी सुनकर के, चित् ज्ञान छींटे मारो थोड़े॥
तो आत्म हमारी जाग उठे, फिर तजे मोह की निद्रा को।
अब करके नमोऽस्तु पूज रहे, प्रभु बाहुबली की मुद्रा को॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस दुनियाँ के रिश्ते नाते, हैं कच्ची माटी के कलशा।
ये साथ दूर तक दे देंगे, विश्वास नहीं इनका पलका॥
ये मतलब के रिश्ते तजने, प्रासुक जल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जब चक्र चला अपने मारें, तो किन पर हम विश्वास करें।
इसलिए त्यागकर दुनियाँ को, वैराग्य धरें संन्यास धरें॥
हम बनें तपस्वी तुम जैसे, सो चंदन सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

तुम किए तपस्या ऐसी कि, पग से सिर तक लिपटी बेलें।
तब बने घौंसले बांबी भी, तब तन पर सर्पादिक खेलें॥
तुम डरे नहीं हम डरें नहीं, सो अक्षत सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

धन दौलत नारी के खातिर, जब भाई-भाई को मार रहा।
यह अहं ब्रह्म की शल्य रही, किसको अर्हम् से प्यार यहाँ॥
हम ब्रह्म-विहारी तुम सम हों, सो पुष्पांजलि ये अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

उपवास वर्षभर कर तुमने, आहार किया न पिया पानी।
जो तीर्थंकर भी कर न सके, वो किए साधना तूफानी॥

हम भूख-प्यास तुम सम त्यागें, नैवेद्य तभी तो अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।
जल मल्ल नेत्र युद्धों में भी, अग्रज चक्रेश्वर टिक न सके।
यह घोर स्वार्थ का अँधियारा, जिसमें निज पर कुछ दिख न सके॥
तज स्वार्थ जलाएँ निज ज्योति, सो दीप आरती अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।
अपनों ने सगा बना करके, फिर दगा दिया फिर दाग दिया।
उपसर्ग परीषह सहकर भी, तुमने अपने से राग किया॥
संकल्प आप सम डिग न सके, सो धूप दशांगी अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।
उपकार करोगे ना जब तक, तब तक तो चरण न हम छोड़ें।
तुम ठुकराओ या अपनाओ, विश्वास कभी न हम तोड़ें॥
हम चलें आपके कदमों पर, सो श्रीफल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।
वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर से पूर्व जो, पाए पद निर्वाण।
दुनियाँ में यशवान हैं, बाहुबली भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ की, यशस्वती पटरानी थी।
तथा दूसरी रही सुनन्दा, सुन्दर बड़ी सयानी थी॥
दिया भरत को जन्म प्रथम ने, पहले हुए चक्रवर्ती।
तथा सुनन्दा बाहुबली को, जन्मीं तो पूजे धरती॥१॥
राज्य भरत को दिया प्रभु ने, बाहुबली युवराज बने।
आदिनाथ ने दीक्षा ली फिर, मुक्तिवधू के राज बने॥
चक्ररत्न पा भरतेश्वर फिर, करने को दिग्विजय चले।
जब लौटे तो नगर द्वार पर, चक्र रुका जो खूब खले॥२॥
जिसका मतलब शेष रहा है, वश करना भ्राताओं को।
उनको आज्ञा मान्य नहीं सो, तजें सभी बाधाओं को॥
सबने ले ली जिन दीक्षा पर, बाहुबली प्रतिकार किए।
हम परतन्त्र बनें क्यों अब जब, पिता बराबर राज्य दिए॥३॥
दूतों को फटकारा ज्यों ही, तभी युद्ध की हवा चली।
एक तरफ तो भरत सैन्य था, एक तरफ थे बाहुबली॥
तभी मंत्रियों ने समझाया, लड़ते हो क्यों आपस में।
बिगड़ेगा तो कुछ न तुम्हारा, प्रजा पड़ेगी आफत में॥४॥
श्रेष्ठ यही कि युद्ध टालकर, बचिए जन-धन हानि से।
या फिर नेत्र मल्ल जल वाले, युद्ध करो आसानी से॥

विजय सुनिश्चित हो जाने पर, होगी फिर टकरार नहीं।
हुआ फैसला युद्ध देखने, मंत्र मुग्ध तैयार सभी॥५॥
तब जल मल्ल नेत्र युद्धों में, बाहुबली जब विजित हुए।
तभी उन्हीं पर चक्रेश्वर जी, चक्र चलाकर कुपित हुए॥
हुआ चक्र से बाल न बाँका, बाहुबली पर आहत थे।
हाय! हाय! यह दुनियाँ जिसमें, रिश्ते नाते स्वारथ के॥६॥
भैया का व्यवहार देख यों, बने विरागी बाहुबली।
दीक्षा लेकर बने तपस्वी, खड़े हुए मुनि बाहुबली॥
लता घौंसले सर्पादिक से, सत्कारे मुनि बाहुबली।
एक वर्ष उपवास देखकर, चक्री पूजे बाहुबली॥७॥
ज्यों भरतेश्वर ने पूजा तो, शल्य मिटाए बाहुबली।
मुझसे भैया दुखी हुआ ये, बात भुलाए बाहुबली॥
जैसे ही निश्शल्य हुए तो, बने केवली बाहुबली।
कर विहार कैलाश अचल से, मोक्ष गए प्रभु बाहुबली॥८॥
भले मोक्ष प्रभु चले गए पर, दिखें सामने बाहुबली।
इसीलिए तो जग मंदिर में, खूब पुजें प्रभु बाहुबली॥
गोम्मट राजा ने बनवाए, सबसे ऊँचे बाहुबली।
तभी गोम्मटेश्वर कहलाए, सबसे सुन्दर बाहुबली॥९॥
मुक्तिवधू संग मस्त हुए वो, दृश्य हमें कब झलकेंगे।
तुम बिन हम ना रह पाएंगे, सो चरणों में धमकेंगे॥
हमें बुला लो या आ जाओ, अर्जी यही हमारी है।
हमने अपना फर्ज निभाया, अब तो आपकी बारी है॥१०॥

फर्ज निभाते हैं हम अपना, चरणों में सर रखने का।
क्या तेरा भी फर्ज नहीं है, हाथ शीश पर रखने का॥
सदा रहे आशीष शीश पर, रात दिना बस बाहुबली।
बाहुबली बनने को 'सुव्रत', पूज रहे प्रभु बाहुबली॥११॥

(दोहा)

सवा पाँच सौ धनुष की, बाहुबली की देह।
महा बिम्ब के गीत गा, हमको मिले विदेह॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

बाहुबली स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बाहुबली जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

उन्हें जिनके
तन-मन नग्न हैं
मेरा नमन!

सीना तो तानो
पसीना तो बहा दो
सही दिशा में

श्री त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना (दोहा)

तीनकाल के जिनवरा, पूज्य बहत्तर ईश।
क्रम-क्रम से व साथ में, जिन्हें नवाएँ शीश॥
मंद बुद्धि अल्पज्ञ हम, जिन-शासन के दास।
सादर नमोऽस्तु कर उन्हें, पाएँ निज संन्यास॥

(भुजङ्गप्रयात)

सदा धर्म का चक्र दोड़े जहाँ पे, परमपूज्य तीर्थेश होते वहाँ पे।
सभी को दया दे सम्भाला जिन्होंने, किए साधना मोक्ष पाया उन्होंने॥
बुरा भाग्य दुर्भाग्य कैसा हमारा, उन्हीं ने हमें त्याग शुद्धात्म धारा।
अहोभाग्य सौभाग्य फिर भी हमारा, उन्हें याद करके उन्हीं को पुकारा॥
रचा अर्चना फर्ज हमने निभाया, रहें आत्म सम्पत्ति में भाव भाया॥

(दोहा)

पूज्य बहत्तर नाथ की, अगर कृपा हो जाए।
बाल न बाँका हो सके, भक्त शीघ्र तर जाए॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकर जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः..। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

पुनर्जन्म होना पुनर्मृत्यु होना, पुनर्गर्भ में तो नवों माह सोना।
चले जिन्दगी भर यही रोना-धोना, यही वेदना तो हमें रोज ढोना॥
इसी वेदना से ना रक्षा कहीं हो, इसी वेदना की दवा तो तुम्हीं हो।
इसे त्याग तुम सम चिदानन्द पाएँ, अतः कर नमोऽस्तु तुम्हें जल चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कहीं कामना है कहीं ताड़ना है, धधक सी रही चित्त में वासना है।
इसी से न शीतल हुई चेतना है, हुई लुप्त सी विश्व में साधना है॥

तभी रोज झुलसे कली चेतना की, इसी को खिलाने प्रभो अर्चना की।
इसे आप सम रोज हम भी खिलाएँ, अतः कर नमोऽस्तु सुगंधी चढ़ाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।
पिए मद्य लंगूर तो हाल क्या हो, उछल कूद से हाल बेहाल सा हो।
यथा चित्त को वित्त विक्षत बनाएँ, तुम्हें भूलकर ठोकरें खूब खाएँ॥
नहीं चाहिए पाप की राजधानी, हमें चाहिए आप सी जिंदगानी।
हमें आप सम्पूर्ण सिद्धि दिलाएँ, अतः कर नमोऽस्तु ये अक्षत चढ़ाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।
पिता पुत्र के हाथ थामें चलाए, सभी राह के कीच काँटे हटाए।
उजड़ते घरों को पुनः जो वसाते, न आसूँ बहें सो गले से लगाते॥
हमारे सभी कीच काँटे हटालो, जगत पूज्य बापू गले से लगालो।
हमें आप संतान अपनी बनाएँ, अतः कर नमोऽस्तु सुमन को चढ़ाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।
प्रभु को अगर चाहते आप पाना, कभी संकटों से नहीं भाग जाना।
करो रोज पूजा पढ़ो जैन गीता, क्षुधा को मिटाने चखो आत्म मीठा॥
हमारी क्षुधा वेदना को मिटा दो, हमें भी रसीला निजी रस पिला दो।
हमें षट्-रसी व्यंजनों से बचाएँ, अतः कर नमोऽस्तु ये व्यंजन चढ़ाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग- विनाशनाय नैवेद्यं...।
जमाना सभी की सदा राह रोके, किसी न किसी विध निजी राय रोपे।
प्रभु आपने तो न थोपा न रोका, सही मार्ग दो पर कभी दो न धोखा॥
पुजारी अभी तो हुए हम तुम्हारे, कभी न कभी आप होंगे हमारे।
चलें पंथ निर्ग्रन्थ अरिहंत पाएँ, अतः कर नमोऽस्तु ये दीपक जलाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

प्रभु वन्दना से अशुभ भाव स्वाहा, भरे पुण्य का खूब भण्डार आहा।
यही पुण्य संसार के भोग देता, यही वीतरागी महा योग देता॥
हमारी यही आप से प्रार्थना है, हरो कोहरा कर्म का जो घना है।
हमें वीतरागी दिगम्बर बनाएँ, अतः कर नमोऽस्तु दशांगी चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

करे कार्य कोई यहाँ जो हमारा, उसे रोज का रोज देते गुजारा।
किसी ने अगर रोज पूजा तुम्हीं को, मिलेगा नहीं क्या सभी कुछ उसी को॥
यही द्वार साँचा जहाँ में कहाता, खजाने सभी मुक्त हाथों लुटाता।
प्रभु आप हम पर खजाने लुटाएँ, अतः कर नमोऽस्तु तुम्हें फल चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

घी मिश्री मेंदा ये तीनों, मात्रा में जब उचित पके।
इष्ट-मिष्ट स्वादिष्ट शिष्ट वो, हलुवा तन को पुष्ट रखे॥
यूँ ही तीन काल के प्रभु की, कृपा अगर हो जाए तो।
इष्ट-मिष्ट स्वादिष्ट आतमा, प्रभु जैसी बन पाए हो॥
रत्नत्रय का हलुवा प्यारा, है अनमोल खजाने सा।
प्रभु-भक्ति से उसे बना लो, तप से खूब पकाने का॥
चर्या करके उसे चबाएँ, उसे पचाए निज चिंतन।
यह आध्यात्मिक मिश्रण पाने, द्रव्यों का मिश्रण अर्पण॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तीन काल में गर्भ के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भमङ्गलमण्डिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन काल में जन्म के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री जन्ममङ्गलमण्डिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन काल में तपों के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपोमङ्गलमण्डिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन काल में ज्ञान के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमङ्गलमण्डिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन काल में मोक्ष के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षमङ्गलमण्डिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जयमाला

भूत भविष्यत आज के, चित चैतन्य मुकाम।
जयमाला के पूर्व में, जिन को नम्र प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय श्री निर्वाण जिनन्दा, जय-जय सागर प्रभु जिन-चन्दा।
जय-जय महासाधु संन्यासी, जय-जय विमल प्रभु अविनाशी॥१॥
जय-जय श्रीधर निज श्रीधारी, जय-जय सुदत्त दान दातारी।
जय-जय अमल प्रभु अरिहंता, जय-जय प्रभु उद्धर भगवन्ता॥२॥

जय-जय अंगिर भाग्य विधाता, जय-जय सन्मति सन्मति दाता।
जय-जय सिन्धु जिनेश्वर स्वमी, जय-जय कुसुमांजलि नमामी॥३॥
जय-जय प्रभु शिवगण सिद्धेशा, जय-जय प्रभु उत्साह जिनेशा।
जय-जय ज्ञानेश्वर शिवज्ञानी, जय-जय परमेश्वर प्रणमामि॥४॥
जय-जय विमलेश्वर वन्दामि, जय-जय पूज्य यशोधर ध्यानी।
जय-जय पूज्य कृष्णमति कुन्दन, जय-जय ज्ञानमति जिन नन्दन॥५॥
जय-जय शुद्ध शुद्धमति साधन, जय-जय श्री श्रीभद्र परमधन।
जय-जय श्री अतिक्रान्त सहारे, जय-जय शान्तानाथ हमारे॥६॥
जय-जय ऋषभ जिनेश नमोऽस्तु, जय-जय अजित अरीश नमोऽस्तु।
जय-जय शम्भवनाथ नमोऽस्तु, जय अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु॥७॥
जय-जय सुमति स्वभाव नमोऽस्तु, जय-जय पद्म जिनेन्द्र नमोऽस्तु।
जय-जय नाथ सुपार्श्व नमोऽस्तु, जय-जय चन्द्र चकोर नमोऽस्तु॥८॥
जय-जय सुविधि सहाय नमोऽस्तु, जय-जय शीतलनाथ नमोऽस्तु।
जय-जय श्रेयांसनाथ नमोऽस्तु, जय-जय वासुपूज्य नमोऽस्तु॥९॥
जय-जय विमल विनम्र नमोऽस्तु, जय-जय नाथ अनन्त नमोऽस्तु।
जय-जय धर्म धनीश नमोऽस्तु, जय-जय शान्ति शान्ति नमोऽस्तु॥१०॥
जय-जय कुन्थुनाथ नमोऽस्तु, जय-जय श्री अरनाथ नमोऽस्तु।
जय-जय मल्लिनाथ नमोऽस्तु, जय मुनिसुव्रतनाथ नमोऽस्तु॥११॥
जय-जय प्रभु नमिनाथ नमोऽस्तु, जय-जय नेमिनाथ नमोऽस्तु।
जय-जय पारसनाथ नमोऽस्तु, जय-जय श्री महावीर नमोऽस्तु॥१२॥
जय-जय श्री महापद्म नमोऽस्तु, जय-जय श्री सुरदेव नमोऽस्तु।
जय-जय देव सुपार्श्व नमोऽस्तु, जय-जय स्वयंप्रभुजी नमोऽस्तु॥१३॥

जय सर्वात्म-भूत नमोऽस्तु, जय-जय देवपुत्र सु-नमोऽस्तु।
जय-जय जिन कुलपुत्र नमोऽस्तु, जय-जय आप्त उदंक नमोऽस्तु॥१४॥
जय-जय प्रोष्ठिल पूज्य नमोऽस्तु, जय-जय कीर्तिकंत नमोऽस्तु।
जय मुनिसुव्रत देव नमोऽस्तु, जय अर-अप्तमनाथ नमोऽस्तु॥१५॥
जय-जय श्री निष्पाप नमोऽस्तु, जय-जय सु-निष्कषाय नमोऽस्तु।
जय-जय विपुल विराग नमोऽस्तु, जय-जय निर्मलनाथ नमोऽस्तु॥१६॥
जय-जय चित्रगुप्त सु नमोऽस्तु, जय-जय समाधिगुप्त नमोऽस्तु।
जय-जय स्वयंभू जी नमोऽस्तु, जय-जय अनिवर्तक जी नमोऽस्तु॥१७॥
जय-जय श्री जयदेव नमोऽस्तु, जय-जय जिनवर विमल नमोऽस्तु।
जय-जय देवपाल सु नमोऽस्तु, जय-जय अनन्तवीर्य नमोऽस्तु॥१८॥

(घत्ता)

तीनों कालों की, जिन चौबीसी, मोक्षमहल के, पट खोलें।
उनके जो अनुचर, पाते निज घर, भक्ति भजन कर, जय बोलें॥
यह भाव बनाके, अर्घ्य सजाके, शीश झुकाते, हम तुमको।
शास्वत् निज आतम, हे! परमातम, झट अपने सम, दो हमको॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-चौबीसी-सम्बंधी द्वासप्तति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

त्रयकालिक जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, त्रयकालिक जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

तीस चौबीसी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

ढाई द्वीप में पाँच भरत हैं, इतने ही ऐरावत हैं।
इन दस क्षेत्रों में त्रिकाल में, तीस क्षेत्र परिवर्तित हैं॥
पूज्य तीस चौबीसी जिनमें, हुए सात सौ बीस जिनम्।
जिनके दर्शन हो न सके तो, हुआ हमारा व्याकुल मन॥
हुई भावना पूजन की तो, मन को मंदिर बना लिया।
भक्ति चौक के श्रद्धासन पर, प्रभु को सादर बुला लिया॥
आवेदन सुनकर प्रभु आओ, दो हमको निज संवेदन।
जिनको नमोऽस्तु समगं-समगं, फिर पत्तेयं-पत्तेयं॥

(दोहा)

प्रभु श्रद्धा विश्वास से, होता सब आसान।
शक्ति चक्र की प्राप्ति हो, अतः करें आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

नहिं जन्म मृत्यु की इच्छा, नहिं सुख शान्ति की वांछा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

नहिं ताप खेद नशवाएँ, नहिं देह सुगन्धित पाएँ।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

नहिं जगत सम्पदा पाने, नहिं अक्षय आत्म बनाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नहिं स्वर्ग भोग की आशा, नहिं ब्रह्म रमण का वासा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

नहिं भोग भोगना जग के, नहिं स्वाद चाहते खुद के।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नहिं देह कान्ति चमकाने, नहिं आत्म ज्योति प्रकटाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

नहिं कर्म विजय की इच्छा, नहिं चाहे शिक्षा दीक्षा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नहिं गुच्छे पाना फल के, नहिं सपने मोक्ष महल के।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं श्री तीस-चौबीसी-सम्बंधी-सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंच कल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

जो कल्याणक गर्भ के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय तीसचौबीसी-सम्बंधी-सप्तशतविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक जन्म के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय तीसचौबीसी-सम्बंधी-सप्तशतविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक तपों के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय तीसचौबीसी-सम्बंधी-सप्तशतविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक ज्ञान के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय तीसचौबीसी सम्बंधी सप्तशतविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक मोक्ष के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय तीसचौबीसी-सम्बंधी-सप्तशतविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रिंशत्चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीस-तीस चौबीसियाँ, जयमाला के नाम।
जिन तीर्थंकरचक्र को, बारम्बार प्रणाम॥

(विष्णु)

जहाँ-जहाँ पर जैन भक्त हैं, मंदिर मिलें वहाँ।
जहाँ-जहाँ पर जिनमंदिर हैं, प्रभु के चैत्य वहाँ॥
तीन काल वाले तीर्थंकर, सभी पूजते हैं।
हम भी उनके नाम जाप कर, आत्म खोजते हैं॥१॥
जम्बू-धातकी-पुष्करार्ध में, पूरव-पश्चिम में।
क्षेत्र भरत ऐरावत वाले, सब ही भगवन् के॥
भूत-भविष्यत-वर्तमान के, तीर्थंकर प्यारे।
पूज्य सात सौ बीस जिनेश्वर, जग के उजयारे॥२॥
जिनमें से कुछ-कुछ जिनवर तो, मोक्ष पधारे हैं।
कुछ भविष्य में जाएंगे सो, नमन हमारे हैं॥
प्रथम रहे निर्वाणनाथ जी, तीर्थंकर स्वामी।
अंतिम सुरार्घदेव उन्हीं में, जिनको प्रणमामि॥३॥
इन चौबीसी तीर्थंकर के, मंत्रों की माला।
परम्परा से जपते-जपते, हरती जंजाला॥
इनके व्रत उपवास क्रिया कर, अनुष्ठान करना।
तथा सात सौ बीस जैन व्रत, करके दुख हरना॥४॥
उद्यापन में यथायोग्य कुछ, दान पुण्य कर लो।
या फिर करो प्रतिष्ठा प्रभु की, जन्म सफल कर लो॥

या फिर दान तीस ग्रन्थों का, करके धर्म करो।
या फिर आर्या मुनि बनकर के, सारे कर्म हरो॥५॥

इतना कोई कर न सके तो, नाम मंत्र जपना।
इतना कोई कर न सको तो, दर्शन तो करना॥
इतना भी यदि कर न सको तो, भाव नमन कर लो।
इतना भी यदि कर न सको तो, बिना भाव भज लो॥६॥

भाव रहित भी प्रभु का भजना, पुण्य बहुत देता।
जो क्रमशः दे स्वर्ग मोक्ष जो, सिद्ध तत्त्व देता॥
'सुव्रत' इनकी माला जप के, शुद्धातम पाओ।
मालामाल शीघ्र हो आतम, सिद्ध शिला पाओ॥७॥

(सोरठा)

हम करके गुणगान, भजे तीस चौबीसियाँ।
हो सबका कल्याण, खोलें आतम खिड़कियाँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीस चौबीसी सम्बंधी सप्तशत-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

मानस्तंभ पूजन

स्थापना (दोहा)

बीस हजार सोपान चढ़, मुख्य द्वार के धाम।
चउ दिशि मानस्तंभ के, प्रभु को करें प्रणाम॥

(जिन गीता)

मान की मूरत रहे हम, मान मर्दन क्या करेंगे।
दर्श मानस्तंभ के कर, मान का मर्दन करेंगे॥
सो करें जिन अर्चना हम, मान का गिरिवर गलाने।
भक्ति से करते नमोऽस्तु, मुक्ति का मण्डप रचाने॥

(सोरठा)

मानस्तंभ के नाथ, जिनशासन की शान हैं।
करो हृदय में वास, करते हम आह्वान हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मान के ही साथ जन्में, मान के ही साथ मरते।
कंश जैसी हो दशा यदि, मान को हम तज न सकते॥
मान की यात्रा मिटाने, भक्ति नैया खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मान को जब ठेस लगती, व्यर्थ के संताप होते।
कर दशानन सी अवस्था, जीव अपना चैन खोते॥
मान का संताप हरने, भक्ति चंदन खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

मान कर मानी बने हम, तत्त्व के ज्ञानी नहीं।
सो भटकते कौरवों सम, बन सके ध्यानी नहीं॥
स्वस्थ हो क्षतिग्रस्त जीवन, धाम अक्षत खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

मान के ये कीट काँटे, निज कभी खिलने न देते।
रात दिन चुभते ही रहते, आप से मिलने न देते॥
मान के ये शूल हरने, पुष्प निज का खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वाद चक्खा मान का सो, कमठ जैसे रो रहे हैं।
आतमा का स्वाद चखने, भाव अब तो हो रहे हैं॥
मान का विष त्याग करके, ज्ञान अमृत खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मान के जग जाल ने तो, विश्व को सम्मोह डाला।
दृष्टि पर पर्दा पड़ा सो, ना दिखे निज का उजाला॥
मान का हरने अँधेरा, दीप-मार्दव खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

मान का ऊँचा हिमालय, जो गिराता है सभी को।
कर्म का पाताल देता, दे न सिद्धालय किसी को॥
मान तज निर्वाण पाने, गंध निज की खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

मान से बस फूल सकते, किन्तु कोई फल न सकते।
बीज दे तो दे अहं के, किन्तु अर्हं बन न सकते॥
मान के तज फल विषैले, मोक्ष फल को खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

टेक मानस्तंभ को सर, मान को स्तंभ करके।
मान बढ़ता है हमारा, अर्घ्य से सम्मान करके॥
मान मानस्तंभ पा कर, आतमा निज खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

क्रोध कर संसार जलता, मान कर ना प्यार पाओ।
कपट कर खोओ स्वजन को, लोभ कर धुतकार पाओ॥
इन कषायों पर विजय हो, पथ वही हम खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ-चतुर्दिक्षु स्थित-जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

धूलिसाल परिकोट के, करके द्वार प्रवेश।
चारों मानस्तंभ के, भक्त भजें परमेश॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! जय हो! जिनवर की।
जय हो! जय हो! समवसरण के, मानस्तंभ जिनेश्वर की॥
समवसरण सम मंदिर प्यारे, मानस्तंभ सहित होते।
मान हरें पर मान बढ़ाकर, कर्म रोग संकट खोते॥१॥

जो नीचे चौकोर सुहाने, ऊपर गोलाकार रहें।
नीचे-नीचे वज्रमयी हों, फटिकमणीमय मध्य रहें॥
ऊपर हैं वैडूर्यमणीमय, जिस पर कमल सुशोभित हैं।
जिन पर चारों ओर स्वर्ण की, जिन प्रतिमाएँ पूजित हैं॥२॥
छत्र चँवर घंटा आदिकमय, दिव्य अलौकिक उज्ज्वल हों।
जिन पर रत्नों की मालामय, कलश कलशियाँ झिलझिल हों॥
कलशों के आजू-बाजू में, जिनशासन की ध्वजा उड़े।
ऐसा मानस्तंभ देखकर, भक्तों की श्रद्धा उमड़े॥३॥
ऊँचे-ऊँचे नभ स्पर्शी जो, बहुत दूर से दिख जाते।
जिससे मिथ्यादृष्टि जन के, मानी सिर झट झुक जाते॥
चारों मानस्तंभ लगे ज्यों, नन्त चतुष्टय दर्शाते।
बिम्बों के अभिषेक इन्द्रगण, करके पर्व पुण्य पाते॥४॥
मानस्तंभ इन्द्र निर्मित हों, अतः इन्द्रध्वज कहलाते।
जग सम्मान करें इनका पर, हम तो नमोऽस्तु कर ध्याते॥
मानस्तंभ जिनेश्वर जी के, दर्शन पूजन गुण गाके।
यही प्रार्थना हम करते हैं, जिन बिम्बों के पद ध्याके॥ ५॥
हमने विघटन किया स्वयं का, खुद को बड़ा बनाने में।
किन्तु आज तक बन ना पाए, अब क्या हो पछताने में॥
मान मार्ग है पतित धाम का, अतः मान हम तजने को।
समवसरण को रचा रहे हैं, मानस्तंभ को भजने को॥ ६॥
पर पदार्थ के कारण हमने, व्यर्थ मान अभिमान किया।
मान त्यागना परम धाम दे, यह हमने पहचान लिया॥
नाथ! आपके नाम जाप से, 'सुव्रत' अपने काम करें।
लघु बनकर के प्रभु बन जाएँ, निज में निज विश्राम करें॥ ७॥

(सोरठा)

त्यागें मान कषाय, मानस्तंभ को पूजके।
मान स्तंभ हो जाए, सो नमोऽस्तु स्वर गूँजते॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक् मानस्तंभ-जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मानस्तंभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चतुर्दिशी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

समवसरण पूजन

स्थापना (दोहा)

वृषभादि जिनवर प्रभु, तीर्थंकर चौबीस।
समवसरण के ईश को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

(शंभु)

हे पुण्यफला! तीर्थंकर जी, तुम समवसरण आसीन हुए।
सो चौबीसों प्रभु हम पूजें, जो नभ में कमलासीन हुए।
पर द्रव्यों के त्यागी तुमको, हम रागी बनकर मना रहे।
जो चिदानन्द तुम भोग रहे, वह चखने पूजा रचा रहे॥

(सोरठा)

घातिकर्म को नाश, समवसरण सुख भोगते।
आह्वानन कर दास, आश्रय पाने पूजते॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

जिस जन्म मृत्यु की पीड़ा से, हीरा सा आतम विखर रहा।
प्रभु उसे आपने ज्यों जीता, तो ज्ञान महल निज निखर गया॥
यह जन्म-मृत्यु की भव धारा, हम मोड़ सकें जिनशासन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

इस राग-बाग के चंदन ने, प्रभु के वंदन से दूर किया।
चित का उपवन तो खिला नहीं, भव का संताप जरूर दिया॥
यह पाप ताप संताप मिटे, हम महक उठें जिन चंदन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पर-पर कहने में जग तत्पर, पर पर को अब तक ना त्यागा।
पर के त्यागी को मुक्ति वरे, जिसके पीछे यह जग भागा॥
हम उस पद के प्रत्यासी हैं, जो मिले आत्म अनुशासन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नर जीवन दे नारी कहती, अय नर! मुझ में मत उलझो रे।
हो सके त्याग जग नारी को, निज आतम नारी समझो रे॥
इस जन्मदातृ का मान रखें, अरु बचें भोग दुश्शासन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कुछ सोच रहे क्या-क्या खाएँ, कुछ सोच रहे अब क्या खाएँ।
यह पुण्य पाप की बलिहारी, जो चेतन स्वाद न चख पाएँ॥
निज ज्ञान रसोई हम चाहें, प्रभु चौबीसों जिन भगवन् से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

क्या अंधे का सूरज चंदा, क्या होली है क्या दीवाली।
बस ऐसे ही हम मोही हैं, आएँ खाली जाएँ खाली।
अब दीप जला विश्वास करें, कल चमकेंगे हम भगवन् से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

हम जहाँ गए उस रूप हुए, बस इससे ही विद्रूप हुए।
सान्निध्य आपका पाकर भी, क्यों अब तक ना चिद्रूप हुए॥
यह कर्मों की बाधा हर लें भगवान भक्त सम्मेलन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

हम अपने हुए सो जग के हुए, अपराध यही कुछ कर बैठे।
अब हमें क्षमा कर अपना लो, हम नाथ आपके हैं बेटे॥
हम तेरे होंगे तब ही तो, फल पाएंगे निज चेतन से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

ज्यों लोहे को बस उसकी ही, खुद जंग मिला दे मिट्टी में।
यों गलत धारणा जीवों को, बरबाद करे हर दृष्टि में॥

ले अर्घ्य धारणा शुचि करने, अब करें प्रार्थना भगवन् से।
सो वृषभ आदि तीर्थंकर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥
ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।
जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं श्री समवसरणस्थित-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला (दोहा)

चौबीसों जिनराज के, समवसरण सुखकार।
पूजा लगे सुहावनी, गुण गाए संसार॥

(रोला)

गुण गाए संसार, भक्त हम करें नमोऽस्तु।
मण्डल को विस्तार, शीघ्र हम करें ज्योऽस्तु॥
दुनियाँ की क्या बात, मुक्ति खुद राह निहारे।
ऐसे जिनवर नाथ, दीजिए हमें सहारे॥१॥
आप सर्व सम्पन्न, मोह को नष्ट किए ज्यों।
अंतराय आवरण, कर्म भी नष्ट हुए त्यों॥
तीर्थंकर पद नाम, हुआ कर्मोदय जैसे।
शीघ्र बने भगवान, पूज्य अरिहंतों जैसे॥२॥
पाए केवलज्ञान, तभी इन्द्रासन डोले।
इन्द्र अवधि से जान, शीघ्र कुबेर से बोले॥
प्रभु पाए कैवल्य, रचो तुम समवसृती को।
सुरपति का आदेश, पुण्य सुख दे धनपति को॥३॥
जाकर अतः कुबेर, नमोऽस्तु कर करे अर्चना।
समवसरण निर्माण, किए हैं सुन्दर रचना॥
जिसका वर्णन कौन, करे वचनों के द्वारा।
अतः कमा लो पुण्य, भक्ति की पाकर धारा॥४॥

(दोहा)

बारह योजन आदि का, क्रमशः घट–घट अर्द्ध।
नेमिनाथ का डेढ़ हो, सवा पार्श्व का सर्ग॥
इक योजन का वीर का, समवसरण विस्तार।
हम तो सादर पूजते, यथाशक्ति सत्कार॥

(रोला)

यथा शक्ति सत्कार, करें हम जिनवर पूजा।
चौबीसों जिनराज, देव सा दिखे न दूजा॥
घातिकर्म को नाश, दोष अट्ठारह जीते।
गुण धारें छ्यालीस, चिदातम का रस पीते॥
भक्त प्रार्थना समवसरण प्रभु हमको देना।
थामो भक्त पतंग, उड़ा शिवपुर तक देना॥
जड़ धन की क्या बात, आतमा का धन पाकर।
'सुव्रत' हों अरिहंत, चरण गुण प्रभु के गाकर॥

(सोरठा)

महाजनों के मान्य, समवसरण चौबीस जिन।
हम अर्चक सामान्य, करते नमोऽस्तु रात दिन॥

ॐ ह्रीं श्री समवसरणस्थित–चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद–प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

सहस्त्रकूट पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

एक हजार आठ नामों के, बिम्ब जिनालय धाम रहे।
वही सहस्त्रकूट चैत्यालय, जिनशासन की शान रहे॥
कोटिभट श्रीपाल उसी का, दर खोले जय बोलें हम।
पूज्य सहस्त्रकूट के दर्शन, करके पूजन कर लें हम॥

(दोहा)

सहस्त्रकूट जिन बिम्ब के, हम पूजें जिन धाम।
हृदय कमल आसीन कर, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलि...)

(लय—माता तू दया करके...)

जन्मों में शोर भरा, मरणों में है मातम।
दुख दर्द भरे जग में, कब पूजें परमातम॥
परमातम-जल पाने, यह नीर समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

रिश्तों में आग भरी, माया में है ज्वाला।
जब मोह करे आतम, तो हो जाता काला॥
जिन शरण मिले शीतल, यह गंध समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कितने भव घूम चुके, प्रभु! तुम्हें भूल के हम।
चौरासी चक्कर में, हम पा न सके आतम॥

अब तुमसे मिलने को, ये पुंज समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जो काम कामना में, आनन्द तृप्ति चाहें।
बदनाम वही होकर, पाते दुख की राहें॥
प्रभु चरणों में रमने, ये पुष्प समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इन इन्द्रिय-विषयों में, रस जिन को आते हैं।
साँचे भगवन उन पर, खुश नहिं हो पाते हैं॥
अब प्रभु-कृपा पाने, नैवेद्य समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

ज्यों अधिक रोशनी में, कुछ दिखे न आँखों से।
त्यों अधिक सफलता में, सब भटकें राहों से॥
सन्मार्ग दिखा देना, शुभ दीप समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेलों में, जय किसने पाई है।
जिसने सब सहकर के, प्रभु महिमा गाई है॥
हों कर्म विजेता हम, यह धूप समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

क्या योग्य हमारे है, यह तुम तो पहचानो।
बस वही भक्ति फल दो, जो उचित आप जानो॥
अब अपने सम कर लो, फल आज समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कितने भव गुजर गए, हित हुए नहीं अपने।
प्रभु! आप बिना ये तो, क्या पूरे हों सपने॥
कल्याण विश्व का हो, यह अर्घ्य समर्पित है।
सो सहस्त्रकूट के सब, बिम्बों को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

(ज्ञानोदय)

सहस्त्रकूट के पूर्व दिशा वा, विदिशा में जो चैत्य रहे।
दो सौ बावन बिम्ब वही तो, सुर-इन्द्रों से पूज्य रहे॥
सहस्त्रकूट से ज्ञान प्राप्ति को, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अलग-अलग वा साथ-साथ में, नमोऽस्तु के स्वर गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्य-पूर्वदिशा-विदिशा-सम्बंधी-सर्व-जिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सहस्त्रकूट के दक्षिण दिशि वा, विदिशा में जो चैत्य रहे।
दो सौ बावन बिम्ब वही तो, नर-इन्द्रों से पूज्य रहे॥
सहस्त्रकूट से ध्यान प्राप्ति को, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अलग-अलग वा साथ-साथ में, नमोऽस्तु के स्वर गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्य-दक्षिण-दिशा-विदिशा-सम्बंधी-सर्व-जिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सहस्त्रकूट के पश्चिम दिशि वा, विदिशा में जो चैत्य रहे।
दो सौ बावन बिम्ब वही तो, मुनि-इन्द्रों से पूज्य रहे॥

सहस्त्रकूट से तपो प्राप्ति को, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अलग-अलग वा साथ-साथ में, नमोऽस्तु के स्वर गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्य-पश्चिम-दिशा-विदिशा-सम्बंधी-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सहस्त्रकूट के उत्तर दिशि वा, विदिशा में जो चैत्य रहे।
दो सौ बावन बिम्ब वही तो, हम भक्तों से पूज्य रहे॥
सहस्त्रकूट से मोक्ष प्राप्ति को, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अलग-अलग वा साथ-साथ में, नमोऽस्तु के स्वर गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्य-उत्तर-दिशा-विदिशा-सम्बंधी-सर्व-जिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

(दोहा)

चउ दिशि विदिशा के सभी, सहस्त्रकूट के बिम्ब।
नमोऽस्तु कर हम पूजते, कल्याणक प्रतिबिम्ब॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक मण्डित सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

सहस्त्रकूट के बिम्ब भज, आदिप्रभु के नाम।
भजें कहें जयमालिका, जिनशासन के धाम॥

(चौपाई)

धर्मों का सरताज रहा जो, जिनशासन का राज रहा वो।
सच्चे देव-शास्त्र-गुरु वाला, पूज्य पंच परमेष्ठी वाला॥१॥
नवों देवताओं के वाला, शुद्धातम आतम सुख वाला।
भक्त इसी का आश्रय पाके, खुश होते धन द्रव्य लगा के॥२॥

तरह-तरह मंदिर बनवा के, रचें आयतन दर्शन पाके।
जिनमें सहस्त्रकूट जिनालय, एक हजार आठ प्रभु की जय॥३॥
पद्मासन खड्गासन धारी, परम वीतरागी मनहारी।
सम्यग्दर्शन के साधन हैं, मोक्षमार्ग देते चेतन हैं॥४॥
अतः बुजुर्गों ने बनवाए, जैन धर्म की ध्वज फहराए।
यही भाव जब मन में आए, तो विद्यागुरु भक्त जगाए॥५॥
दे आशीष कराये जय-जय, सहस्त्रकूट के बने जिनालय।
जगह-जगह गुरु विद्या देते, वीतरागता दरशा देते॥६॥
हमको भी गुरु विद्या देना, सहस्त्रकूट सम शरणा लेना।
हम भी तुम सम बनें विरागी, शुद्धातम के हों अनुरागी॥७॥
हो अरिहंत सिद्ध आगामी, मुक्तिवधू के हम हों स्वामी।
'सुव्रत' यही भावना भाएँ, अपना नाम अमर कर जाएँ॥८॥

(सोरठा)

जपकर प्रभु के नाम, सहस्त्रकूट हम पूजते।
नमोऽस्तु करें प्रणाम, अपनी आतम खोजते॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूट-चैत्यालयस्थ-सर्व-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सहस्त्रकूट स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सहस्त्रकूट जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

सहस्रनाम पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

श्री जिनसेनाचार्य गुरु ने, सहस्रनाम स्तोत्र रचा।
एक हजार आठ नामों का, तीर्थंकर संस्तोत्र रचा॥
आओ! हम भी प्रभु नामों का, पूजन पाठ भजन कर लें।
मन मंदिर के उच्चासन पर, प्रभु का आह्वानन कर लें॥

(दोहा)

हृदय वेदिका पर वसें, तीर्थंकर के नाम।
नमोऽस्तु कर हम पूज लें, चित् चैत्यालय धाम॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्री जिनेन्द्रसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जनम-मरण के दुख हरें, करें आत्म उद्धार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, दें प्रासुक जल धार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

भव-भव का तपना हरें, पाएँ शान्ति अपार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, दें चंदन की धार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

राग-द्वेष भय को हरें, चलें जगत के पार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, हों अक्षत उपहार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काम-भोग पीड़ा हरें, कर लें ब्रह्म विहार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, भेंट पुष्प का हार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जड़-पुद्गल के रस तजें, हो अपना आहार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, सौंपें चरु रसदार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा हर सकें, दीवाली त्यौहार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, करें दीप उजयार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के संग्राम में, करने जय-जयकार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, खे लें धूप बहार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अपने-अपने कर्म के, फल भोगे संसार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, मिले मोक्षफल सार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पाप रूप ब्रह्माण्ड है, सुख-दुख का विस्तार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, अर्घ्य भेंट सुख द्वार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सहस्रनाम के नाथ के, कल्याणक त्यौहार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज लें, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-प्राप्त-अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सहस्रनाम का कर सकें, हम भी पथ स्वीकार।
सो जयमाला कह करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(हाकलिका)

सहस्रनाम स्तोत्र रहा, जिनवर का संस्तोत्र महा।
प्रभु तीर्थेश नाम-माला, प्यारी पूज्य भजन-माला॥१॥

समवसरण में प्रभु बैठें, चरणों में सुर नर लेटें।
तब सौधर्म-इन्द्र आके, सहस्रनाम के गुण गाके॥२॥
करे निवेदन नत होकर, हो विहार प्रभु धरती पर।
आवेदन स्वीकार हुआ, प्रभु का भव्य-विहार हुआ॥३॥
भक्तों का उद्धार हुआ, ऐसा बारम्बार हुआ।
सहस्रनाम तब से सबको, प्यारा न्यारा भक्तों को॥४॥
इसकी महिमा सुख वाली, करे दशहरा दीवाली।
रोग शोक दुख कष्ट हरे, ऋद्धि-सिद्धि समृद्ध करे॥५॥
जग के सुख का क्या कहना, मोक्ष राज्य का दे गहना।
अतः मनन चिंतन कर लो, पूजन पाठ भजन कर लो॥६॥
जिससे दुख संकट ना हों, नहीं कष्ट दुर्घटना हों।
रोग शोक भय वैर टलें, लोग शान्ति की राह चलें॥७॥
प्रभु सम नाम कमाओ रे, 'सुव्रत' काम बनाओ रे।
प्रभु को नहीं भुलाओ रे, प्रभु जैसे बन जाओ रे॥८॥

(सोरठा)

प्रभु का सहस्रनाम, पढ़ें सुनें अर्चन करें।
पाने आतम राम, नमोऽस्तु कर वन्दन करें॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सहस्रनाम स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सहस्रनाम जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

चारित्रशुद्धि पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरिहंत जिनेश्वर, हरे घातिया चारों जो।
हे! छ्यालीस मूलगुणधारी, हमको जरा निहारो तो॥
रत्नत्रय दे समवसरण में, थोड़ी जगह हमें दे दो।
अपने जैसा हमें बनाने, अपनी शरण हमें ले लो॥

(दोहा)

व्रत चारित्र शुद्धि करें, अरिहंतों को पूज।
श्रद्धा गृह में आ वसो, गूँजें नमोऽस्तु गूंज॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(जोगीरासा)

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, जनम-मरण दुख पीते।
रत्नत्रय के अमृत जल से, शुद्धातम को सींचें॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को प्रासुक जल ले, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, भव ज्वाला सुलगाते।
रत्नत्रय का चंदन लेकर, चिदानन्द महकाते॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को चंदन लेकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, दर-दर दुख से घूमें।
रत्नत्रय के अक्षत लेकर, सिद्ध शहर में झूमें॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को पुंज चढ़ाकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, होते रागी कामी।
रत्नत्रय से निज रमणी के, हों दूल्हे आगामी॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को पुष्प चढ़ाकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, जड़ रस भोजन चाहें।
रत्नत्रय की बना रसोई, निज रस चेतन चाखें॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को नेवज लेकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, पाते घोर अँधेरे।
रत्नत्रय के दीप जलाकर, करते ज्ञान सबेरे॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को दीप जलाकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, सहें कर्म की जेलें।
रत्नत्रय के न्याय धरम से, मुक्ति बाग में खेलें॥

बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को धूप चढ़ाकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, बीज पाप के बोते।
रत्नत्रय की खेती करके, मोक्ष महल में होते॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को फल अर्पित कर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

बिन चारित्र शुद्धि के प्राणी, अपने से अनजाने।
रत्नत्रय के रत्न अर्घ्य से, पाते आत्म खजाने॥
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, शुद्धि हेतु पथ खोजें।
अरिहंतों को अर्घ्य चढ़ाकर, करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतु:त्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा चारित्रशुद्धि व्रतेभ्यो नम:।

जयमाला

(दोहा)

कर चारित्रशुद्धि मिले, महा मोक्ष सुख धाम।
जयमाला गाकर करें, नमोऽस्तु नम्र प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय श्री अरिहंत जिनन्दा, भक्तों के हो परमानन्दा।
समवसरण के ईश निराले, हो छ्यालीस मूलगुण वाले॥१॥

धर्मचक्र के जिनवर स्वामी, सिद्ध चिदातम हो आगामी।
दोष अठारह के जय कर्त्ता, मोक्षमार्ग तत्त्वों के नेता॥२॥
रत्नत्रय के पालक दाता, शुद्ध ब्रह्म वैदेही ज्ञाता।
आप रहे चारित्र खजाने, सो कमलासन आसन थामे॥३॥
परिग्रह के हो आप विजेता, सो सिंहासन चरणों लेटा।
मुक्तिवधू भी राह निहारे, नत नयना हो चरण पखारे॥४॥
अतः शरण में हम भी आए, रत्नत्रय पर हम ललचाए।
तेरह विध चारित्र धरें हम, पाँच महाव्रत को पालें हम॥५॥
पाँच समितियाँ तीन गुप्तियाँ, इस बिन किसकी हुईं मुक्तियाँ।
बारह सौ चौंतीस व्रतों की, करें शुद्धि चारित्र पदों की॥६॥
मिले स्वरूपाचरण चरित्रा, करें चेतना शुद्ध पवित्रा।
हे! चारित्र शिरोमणि ज्ञानी, सुनो! हमारी करुण कहानी॥७॥
सदाचार की शिक्षा दे दो, रन्तत्रय की दीक्षा दे दो।
अंत समाधिमरण कराना, 'सुव्रत' के व्रत शुद्ध बनाना॥८॥

(दोहा)

जो चारित्र शुद्धि करे, पाए पद अरिहंत।
बने सिद्ध सो कर रहे, नमोऽस्तु 'सुव्रत' संत॥

ॐ ह्रीं द्वादश-शताधिक चतुःत्रिंशत् (१२३४) रूप चारित्रशुद्धि शिरोमणि श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य अरिहंत जी, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहंता जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

रविव्रत पूजन

स्थापना (दोहा)

पारसनाथ जिनेश को, हो नमोऽस्तु नत शीश।
रविव्रत की पूजा करें, पाने प्रभु आशीष॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ, उपसर्ग निवारक पार्श्वनाथ।
जो तुम्हें पूजते श्रद्धा से, वे मोक्षमहल के बनें नाथ॥
हम रविव्रत की पूजा करने, मन आंगन आज बुहार रहे।
अखियों से नाथ प्रवेश करें, नत हो कर जोड़ पुकार रहे॥

(दोहा)

इस अपार संसार में, पार्श्वनाथ शरणार्थ।
इच्छा पूरण कीजिये, सफल करें पुरुषार्थ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(जोगीरस)

क्षमा नीर पीकर प्रभु पारस, कषाय मल को धोएँ।
जन्म मरण से ना घबराएँ, तो संकट दुख खोएँ॥
इन संसार दुखों से बचके, ऋद्धि-सिद्धि सुख चाहें।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कमठ क्रोध से जले जलाए, पर पारस बन ध्यानी।
समता का साम्राज्य लुटाए, कमठ हो गया पानी॥
राग द्वेष संताप मिटाने, चेतन चंदन चाहें।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अक्षयपद के अभिलाषी का, क्या कर लें बाधाएँ।
किन्तु स्वयं शर्मिंदा होकर, चरणों में झुक जाएँ॥
संकट में पथ धैर्य न छोड़ें, हम पारस बन जाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कमठ करे उपसर्ग पार्श्व पर, चट्टानें बरसाए।
पर फूलों सी उन्हें लगें जो, आतम ध्यान लगाए॥
बंजर धरती कर उपजाऊ , ब्रह्म पुष्प महकाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पारस का पा-रस हो जाते, बंजर कमठ रसीले।
आतम के रसिया बन जाते, क्यों न हुए हम गीले॥
भव-तृष्णा की भूख मिटाने, हम नैवेद्य चढ़ाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अंधेरे में फिर-फिर के, बना कमठ अज्ञानी।
रत्नत्रय का दीप जला के, पार्श्व बने निज ज्ञानी॥
केवलज्ञान प्रकाशी बनने, घी के दीप जलाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

द्वेष भाव से धूँ-धूँ जल के, कमठ करे उपसर्गा।
कर्मोदय को सहकर पारस, जीत लिए उपसर्गा॥
प्रभु सम कर्मविजेता बनने, खेकर धूप चढ़ाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पारसमणि को छूकर लोहे, सोने के बन जाते।
पर पारस को छू श्रद्धालु, खुद पारस बन जाते॥
हमें भक्ति का फल यह देना, दुख संकट सह जाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कमठ देखकर पारस प्रभु की, वीतराग मुद्रा को।
राग-द्वेष भूला हम धारें, वीतराग मुद्रा को॥
अर्घ्य चढ़ा वरदान मिले ये, यही भावना भाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोऽस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

पारस प्रभु का नाम ले, रविव्रत पूजें लोग।
सुख संपति आनन्द पा, बनें मुक्ति के योग॥

(विष्णु)

जय-जय पारस, जय-जय पारस, जय पारस देवा।
देवों के तुम देव कहाते, भक्त करें सेवा॥
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा के श्यामा।
पारस नगर बनारस जन्मे, गए मुक्ति धामा॥१॥
उपसर्गों के सांप भागते, ज्यों प्रभु नाम सुनें।
भक्तों के मन मोर मचल के, पारस नाम चुनें॥
पारस-पारस जप के पापी, परमेश्वर बनते।
रविव्रत का आधार बना के, पारस को भजते॥२॥

रविव्रत की है कथा निराली, आओ! कुछ वाँचें।
कथा व्यथा को हरने वाली, सुनकर के नाँचें॥
एक सेठ मतिसागर जिसका, पाप कर्म आया।
जिसका बेटा विदेश में जो, मिलने ना पाया॥३॥
मिलने की जब आशा टूटी, तो मुनि से पूछा।
मुनि बोले दुख हरने कर लो, रविव्रत की पूजा॥
सेठ किए ज्यों रविव्रत पूजा, विधि विधान करके।
हुई पुत्र से भेंट तभी तो, दुख वियोग हरके॥४॥
जो प्रभु की पूजा करते वो, भक्त इन्द्र जैसे।
ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पत्ति पाते, उन्हें कष्ट कैसे॥
काक बीट सम वो गिनते हैं, जड़ धन सुख नाते।
संकटमोचक, निज ज्ञायक वो, पारस बन जाते॥५॥
हम भी रविव्रत पूजा करके, देखें ये सपने।
झट अरिहंत सिद्ध बन जाएँ, गुण पाकर अपने॥
जब तक ऐसा हो ना तब तक, पारस को पूजें।
'सुव्रत' को लख लोगों के मुख, सूजें तो सूजें॥

(सोरठा)

रविव्रत की कर जाप, संकट दुख का नाश हो।
कटें कर्म अभिशाप, अपना मोक्ष निवास हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय ॥

(पुष्पांजलिं...)

जिनवाणी सरस्वती पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवाणी जिन भारती, हरती दुख अज्ञान।
सो पूजें जिन सरस्वती, कर नमोऽस्तु सम्मान॥

(त्रिभंगी)

तीर्थंकर वाणी, जगकल्याणी, सुनकर प्राणी, ज्ञान करें।
जिन तत्त्व प्रकाशी, धर्म विकासी, मोक्ष निवासी, दान करें॥
हम करें अर्चना, यही प्रार्थना, करें साधना, तत्त्वों को।
माँ हृदय पधारें, रूप निखारें, पार उतारें, भक्तों को॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

तन होता निर्मल, खोता जग-मल, गंगा के जल-पानी से।
निज चेतन चमके, दुनियाँ महके, प्रभु की सुन के, वाणी से॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, जल से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हम जग के ध्यानी, लोभी मानी, हो अज्ञानी, पाप करें
यह दुनियाँ सपना, फिर क्यों तपना, पाके अपना, ताप हरें॥
तीर्थंकर वाणी सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, चंदन अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

वाणी तो नश्वर, पर अविनश्वर, देती शिवपुर, ज्ञानी को।
पर में क्यों फूले, आतम भूले, अब तो छूले, वाणी को॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अक्षत अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

भव सुमन महकते, जीव चहकते, इनमें फँसते, बन भोगी।
जिन सुमन वचन सुन, अंतस में गुन, ब्रह्म रमण चुन, बन योगी॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, पुष्पक अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

यह क्षुधा हमारी, है बीमारी, दुख दे भारी, कब तज लें।
जिन वचन सहाई, क्षुधा दवाई, निज रस दायी, कब चख लें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, नैवज अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! प्रभु बिन तेरे, घोर अँधेरे, कहाँ सबेरे, होंगे रे।
दो हमें उजाले, आतम वाले, फिर क्यों काले, होंगे रे॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, दीप से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

ये कर्म कषैले, ऐसे खेले, भव-भव मैले, हमें करें।
जिन वचन तरंगी, सात सुभंगी, विमल तरंगी, कर्म हरें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, धूप से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

बिन श्री जिनवाणी, सुन निज वाणी, सारे प्राणी, दुख भोगें।
जिनवाणी गा के, पाप नशा के, आतम ध्याके, सुख भोगें॥
तीर्थंकर वाणी सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, फल से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथमानुयोग-अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

जो परमार्थ बताने वाले, चरित पुराण शास्त्र होते।
शंका रहित रहें ज्यों के त्यों, देकर पुण्य-पाप धोते॥
बोधि-समाधि के भण्डारे, जो श्रद्धा मजबूत करें।
वो प्रथमानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग संबंधिनः जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं...।

करणानुयोग-अर्घ्य

लोकालोक विभाग बताएँ, षट्कालों के परिवर्तन।
सभी योनियों सब गतियों के, हाल बताएँ दर्पण सम॥
अपने भावों के फल क्या हों, भवदुख से भयभीत करें।
वो करणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री करणानुयोग संबंधिनः जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं...।

चरणानुयोग-अर्घ्य

श्रावकचर्या मुनिचर्या का, सम्यग्ज्ञान सिखाए जो।
यम-संयम चारित्र धारने, रक्षासूत्र बताए जो॥
राग-द्वेष की वृत्ति त्यागने, चेतन शुद्ध स्वरूप करें।
वो चरणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री चरणानुयोग संबंधिनः जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं...।

द्रव्यानुयोग-अर्घ्य

जीवाजीव पुण्य-पापों के, बंध-मोक्ष के तत्त्वों के।
सत्य स्वरूप बताकर हरते, मोह अँधेरे भक्तों के॥
'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' से, सिद्ध रूप चैतन्य करें।
वो द्रव्यानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यानुयोग संबंधिनः जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं...।

सम्पूर्ण श्रुत-अर्घ्य

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, नमः रूप ओंकारमयी।
द्रव्यभावश्रुत आत्म स्वरूपा, द्वादशांग अनेकान्तमयी॥
जग कल्याणी जो जिनवाणी, माँ जैसा उपकार करें।
हीनाधिक बिन जिन-आगम को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

(दोहा)

इक सौ बारह कोटियाँ, कुल तेरासी लाख।
अट्ठावन हजार तथा, द्वादशांग पद पाँच॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिरूप-सम्पूर्णजिनागम-स्वरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती-देव्यै अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः।

जयमाला (दोहा)

दिव्य ध्वनि ओंकारमय, दे निज-पर का ज्ञान।
सो जयमाला हम कहें, कर नमोऽस्तु सम्मान॥

(ज्ञानोदय)

पहला आचारांग इसी में, पद अष्टादस रहे हजार।
दूजा सूत्र कृतांग अंग है, जिसमें पद छत्तीस हजार॥
स्थानांग है अंग तीसरा, जिसमें पद ब्यालीस हजार।
चौथा समवायांग जहाँ पद, एक लाख चौंसठ हज्जार॥१॥

पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति में, पद दो लख अठबीस हजार।
छठवें ज्ञातृकथा में पद हैं, पाँच लाख छप्पन हज्जार॥
उपासकाध्यानंग सातवाँ, ग्यारह लख सत्तर हज्जार।
रहे अन्तकृत अष्टम में पद, तेइस लख अठबीस हजार॥२॥
नौवें अनुत्तर दशांग में, बानवें लख चवालीस हजार।
अंग प्रश्नव्याकरण दसम में, लाख तिरानवें सोल हजार॥
सूत्र विपाक ग्यारवें में पद, एक करोड़ चौरासी लाख।
बारहवाँ तो दृष्टिवाद है, पाँच भेद हैं जिसकी शाख॥३॥
जहाँ एक सौ आठ कोटि अरु, इकसठ लाख छप्पन हजार।
और पाँच पद बारहवें में, जिनकी होती जय-जयकार॥
एक अरब बारह करोड़ अरु, जोड़े पद तेरासी लाख।
फिर अट्ठावन हजार पाँच पद, द्वादशांग के कुल पद शाख॥४॥
पद का प्रमाण श्लोकों में, कुल इक्यावन करोड़ हैं।
आठ लाख हजार चौरासी, छह सो साढ़े इक्कीस हैं॥
इस विध तीर्थंकर के द्वारा, कथित ज्ञान श्रुतसागर का।
गणधर देवों ने ग्रन्थों में, गूँथा सम्यक् गागर का॥५॥
अंग उपांग प्रकीर्णक पाहुड, सूत्र पूर्वगत धर्म कथा।
थुति परिकर्म प्रथम अनुयोगा, ठवन चूलिका ज्ञान कथा॥
समीचीन जिन सरस्वती की, पूजा कर अज्ञान हरें।
रत्नत्रय संयम धारण कर, शाश्वत केवलज्ञान करें॥६॥
भजें द्रव्यश्रुत मिले भावश्रुत, अतः अर्चना रचा रहे।
भाव भक्ति से पर्व मनाकर, शिखर मान का गला रहे॥
संकट दुख कर्मों का क्षय हो, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
अंत समाधि मरण करें हम, 'सुव्रत' पाएँ जिनगुण धन॥७॥

(दोहा)

जिनवाणी के ज्ञान से, समझें सार असार।
सो नमोऽस्तु हम सब करें, पाने को भव पार॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

जिनवाणी माता करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत श्रुतज्ञान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, जिनवाणी श्रुतराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विद्यागुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

नन्दन हैं तीर्थेश के, भवसागर के पार।
विद्या गुरु ज्ञानेश को, नमन अनन्तों बार॥

(ज्ञानोदय)

हे विद्या गुरु! हे विद्या गुरु! करें आपका हम वन्दन।
नहीं भरे मन वन्दन से तो, करें आपकी पद पूजन॥
पूजन करके भी प्यासा मन, खाली-खाली सा रहता।
तभी भक्ति के इस साधन से, गुण गाकर मन खुश रहता॥१॥
हमने गुरुवर यही सुना कि, गुणी बनें गुण गाकर के।
पाप गले झट मिले सफलता, गुरुचरणों में आकर के॥
तभी लिखें हम मानस तल पर, विद्या नाम महा न्यारा।
आओ गुरुवर! इस आसन पर, करें समर्पण हम सारा॥ २॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं..)

नीर तीर दे पीर चीर दे, प्राणी को सुख दे पानी।
उदक फुदक कर जल मल हरता, पयस् सरस जग कल्याणी॥
किन्तु कभी ये घातक भी हों, इस पर अपना ध्यान नहीं।
लेकिन प्रासुक जल से गुरु की, पूजा दे वरदान सही॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

छेदन भेदन ताड़न में भी, सदा महकता चन्दन है।
किन्तु आग में राख बने फिर, निज गुण खोता चन्दन है॥
लेकिन गुरु हर दिशा दशा में, धैर्य धार समता ध्याते।
तभी आपके चरणों में हम, चन्दन वन्दन को लाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

ये संसार चक्र है देखो, कुछ भी यहाँ अवस्थित ना।
धन दौलत कुर्सी के खातिर, भ्रात-भ्रात में बैर तना॥
तभी आप ये जग माया तज, बनें निरम्बर अविकारी।
अक्षयपद के तुम अभिलाषी, मोक्ष राज्य के अधिकारी॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जिसने लाँघीं सब सीमाएँ, सब पर रौब जमाता जो।
सब पर अपना हुकुम चलाता, कामदेव कहलाता वो॥
किन्तु आपसे वही हारकर, चरणों में टेके माथा।
वाह! वाह! उस ब्रह्मचर्य की, अर्चन कर गाएँ गाथा॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सारा जग खाने को जीता, पर तुम जीने को खाते।
उस पर भी संयम पालन को, भांति-भांति तप अपनाते॥

भोजन त्याग भजन करते हो, ज्ञानामृत का पान करो।
ज्ञानामृत गुरु हमें पिलाकर, भूख प्यास दुख शान्त करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह धुन्ध भव कन्द मोह है, द्वन्द्व-फन्द दुर्गन्ध नसा।
धूप भूख विष-कूप भूप है, मोह-चोर चहुँ ओर वसा॥
बन वैरागी ज्ञान-कला से, आप किए हल इन सबका।
दीपक से हम करें आरती, मिटे अँधेरा भव-भव का॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

फूलों का जो सार इत्र वह, घर आँगन जग महकाता।
किन्तु देह को छूकर क्षण में, मल जैसा वह बन जाता॥
जो चारित्र सार जीवन का, वो तुम पाकर महक रहे।
धूप चढ़ाकर गुरु चरणों में, खुशी-खुशी हम चहक रहे॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल से फसल फसल से फल हों, प्रथम कौन यह पता नहीं।
किन्तु परस्पर कारण बनते, कर्म कर्म फल कथा यही॥
कर्म कर्मफल तुम्हें न रुचते, तुम्हें मोक्ष फल को पाना।
यही हमारी भी इच्छा है, फल अर्पित कर फल पाना॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अर्घ्य चढ़ाने वालों को गुरु, बस ऐसा वरदान रहे।
नयनों में हो चित्र आपका, होठों पर गुरु नाम रहे॥
कान आपकी सुनें कहानी, मन में गुरु का ध्यान रहे।
गात-माथ गुरु सेवा में हो, साँस-साँस गुरु नाम रहे॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय नमः।

जयमाला

(दोहा)

गुण पाना दुर्लभ रहा, बहुत कठिन गुणगान।
गुण पाने गुण गा रहे, जयमाला के नाम॥

(ज्ञानोदय)

सारी की सारी यह दुनियाँ, अटक रही जब भोगों में।
तभी आप भोगों को तजकर, मगन रहो निज योगों में॥
दुनियाँ में गुरु ऐसे रहते, कीच बीच ज्यों कमल रहे।
जंगदार लोहे जैसे हम, तुम सोने से अमल रहे॥ १॥
दिन में हम सारे जग वाले, दुखवर्धक ही काम करें।
और रात को चूर-चूर हो, सुख नाशक आराम करें॥
किन्तु आप दिन में तत्त्वों के, राज समझते समझाते।
और रात में सावधान हो, ध्यान लगाते सुख पाते॥ २॥
ठण्डी से डरकर हम भागें, शीत लहर से जब काँपें।
कोट रजाई गद्दा कंबल, तरह-तरह से तन ढाँकें॥
किन्तु आप तो रहो निरम्बर, और खुले नभ में सोते।
देख आपकी कठिन साधना, कर्म काँप फक-फक रोते॥ ३॥
गर्मी से जब ताल तलैया, नदी सरोवर सूख रहे।
हरियाली का नाम न दिखता, ठूँठ-ठूँठ से रूख रहे॥
दुनियाँ वाले पंखा कूलर, ए.सी. में आराम करें।
तभी आप तन से ममता तज, उच्च शिखर पर ध्यान करें॥ ४॥
वर्षा की क्या बात कहें हम, वर्षा ऋतुओं की रानी।
बिजली बादल इसी बहाने, पद प्रक्षाल करे पानी॥

जहाँ इन्द्रियाँ इस दुनियाँ पर, हुकुम चलाती मनमानी।
वहीं इन्द्रियाँ देख साधना, हो जातीं पानी-पानी॥ ५॥

नाथ! हमारी विनती सुनकर, हमें निहारो अपनाओ।
विद्यारथ पर हमें बिठाकर, मोक्ष महल तक पहुँचाओ॥
बस इतना सा काम करा दो, फिर ना भीड़ बढ़ाएंगे।
ना पकड़ेंगे पाँव आपके, ना ही शोर मचाएंगे॥ ६॥

काम हमारा नहीं हुआ तो, बार-बार आना होगा।
भीड़ बढ़ाना भजन सुनाना, चरणों को छूना होगा॥
करें समर्पित 'सुव्रत' सब कुछ, समाधान तुम प्रश्नों के।
धरती अम्बर रोशन तुमसे, आन वान तुम जश्नों के॥

(दोहा)

सरल रहा बनना गुणी, दुर्लभ है गुणगान।
पाकर गुरु आशीष हों, सभी कार्य आसान॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं...।

(दोहा)

विद्या विद्या दे करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत गुरुनाम॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

पर्व पूजन खण्ड

सोलहकारण पूजन

स्थापना (दोहा)

सोलहकारण भावना, भव्य जीव जो भाएँ।
तीर्थंकर वो हम भजें, कर नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

(ज्ञानोदय)

मिथ्या हर सम्यग्दर्शन कर, सोलहकारण जो भाएँ।
तीर्थंकरप्रकृति वो बाँधे, पाँचों कल्याणक पाएँ।
धर्म चक्र के बनें प्रवर्तक, निज पर का उद्धार करें।
लोक पूज्य को हम भी पूजें, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणाणि अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(आंचली बद्ध चौपाई)

जल धोता मिथ्या मल गाँव, देता रत्नत्रय का गाँव।
अतः ले नीर, भवसागर तैरें बन वीर।
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन हरता तन का ताप, पथ दे हर ले भव संताप।
अतः ले गन्ध, पाएँ संयम परमानन्द॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत में कर विश्वास, धर न सके अक्षय संन्यास।
अतः ले पुंज, हम भी पाए आतम कुंज॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

विषयों की नित उड़ती धूल, सो कर बैठे कामी भूल।
अतः ले फूल, विषय भोग के त्यागें शूल॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः कामबाण विध्वंसानाय पुष्पाणि...।

बिन विवेक हम कर आहार, दुखी हुए होकर बीमार।
अतः नैवेद्य, भेंट करें बनने निज-वैद्य॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

भेद-ज्ञान के खोलें नैन, सो हम करें आरती जैन।
मिटे अँधयार, दीपों वाला हो त्यौहार॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

शुद्ध भाव तो मिल न पाएँ, शुभ भावों पर हम ललचाएँ।
अतः ले धूप, खे महकाएँ चिन्मय रूप॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

विष-फल है सारा संसार, जिसे भोगकर हों लाचार।
अतः फल भेंट, पूजा कर पाएँ निज-भेंट॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु पूज के, सम्यग्दर्शन होए।
विश्व शान्ति से शुद्ध कर, दर्शन विशुद्धि होए॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१॥

गुणियों का सम्मान ही, धर्म–महल आधार।
यही विनयसम्पन्नता, मोक्ष महल का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥२॥

सप्तशील व्रत हैं जहाँ, वहाँ झुके संसार।
निरतिचार यह शीलव्रत, है सुख का भण्डार॥

ॐ ह्रीं श्री निरतिचार शीलव्रत–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥३॥

सदा ज्ञान अभ्यास जो, करें आत्म का ज्ञान।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ये, करे स्व–पर कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥४॥

जगत दुखों से जो डरे, मुनि बन बने जिनेश।
यही भाव संवेग है, सुख दे हमें विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥५॥

यथाशक्ति से त्याग कर, जो करते निज दान।
मिलें रत्न निधियाँ उन्हें, वो बनते भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥६॥

यथाशक्ति से तप तपें, इच्छा करें निरोध।
बारह तप से कर्म हर, कर लें आतम शोध॥

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥७॥

नग्न दिगम्बर साधु के, करे विघ्न जो दूर।
साधुसमाधि है यही, सुख यश दे भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥८॥

मुनि–सेवा करना सदा, चर्या में सहयोग।
वैयावृत्यकरण यही, बने मुक्ति के योग॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यकरण–भावनायै नमः अर्घ्यं...॥९॥

अरिहंतों की अर्चना, भाव भक्ति गुणगान।
अर्हद्भक्ति है यही, वीतराग विज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१०॥

शिक्षा दीक्षा दें हमें, मोक्षमार्ग दें दान।
आचार्यों की भक्ति कर, पा जाते निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥११॥

उपाध्याय की भक्ति कर, मिटे पाप अज्ञान।
जीवों में हो मित्रता, पाते केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१२॥

आगमोक्त स्वाध्याय कर, अंतरतम हो नाश।
प्रवचनभक्ति दे यही, चित् चैतन्य प्रकाश॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१३॥

छह आवश्यक पालना, पूरे निज-निज काल।
आवश्यकापरिहाणि ये, करती मालामाल॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१४॥

ज्ञान ध्यान चारित्र से, रागद्वेष हर मान।
करके मार्गप्रभावना, बढ़े धर्म की शान॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१५॥

साथी से गोवत्स सम, रखें प्रेम वात्सल्य।
ये प्रवचन-वत्सलत्व है, हरे जगत की शल्य॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन-वात्सल्य-भावनायै नमः अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य

सोलह कारण भावना, भाकर बने अनर्घ।
पृथक्-पृथक् वा साथ में, हो नमोऽस्तु ले अर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः।

जयमाला

भाकर सोलह भावना, हों तीर्थंकर सिद्ध।
नमोऽस्तु कर जयमाल कर, होते भक्त प्रसिद्ध॥

(चौपाई)

प्राणी अनादि मिथ्यादृष्टि, पाकर साँची करुणा दृष्टि।
मिथ्या हर हों सम्यग्दृष्टि, भाएँ भावना बदले सृष्टि॥१॥
जीवमात्र के हों हितकारी, दरशविशुद्धि धरें उपकारी।
विनय मोक्ष का महल घुमाये, सब में मैत्री भाव जगाए॥२॥
जो निर्दोष शील आचारी, उसे पूजते सब संसारी।
ज्ञान तत्त्व का जो अभ्यासी, मोक्ष चले बनकर संन्यासी॥३॥
धर संवेग तजे जग-जाला, निज वैभव का खोले ताला।
दान-त्याग जो खुश हो करते, ऋद्धि-सिद्धि से निज घर भरते॥४॥
यथाशक्ति जो करें तपस्या, निज पर की वह हरें समस्या।
साधुसमाधि करें जो प्राणी, अंत समाधि हो कल्याणी॥५॥
वैयावृत्य करें जो सेवा, वही बनें देवों के देवा।
अरिहंतों के जो अनुरागी, वही बनें आतम के स्वादी॥६॥
आचार्यों के जो श्रद्धालु, धर्म अहिंसा धरें दयालु।
उपाध्याय बहुश्रुत की ज्योति, पाप हरें दे आतम मोती॥७॥
प्रवचन शास्त्रों के अध्येता, मोक्षमार्ग के बनते नेता।
जो अवश्य आवश्यक पालें, दुख संकट से नाँव तिरा लें॥८॥
जिनशासन ध्वज जो फहराएँ, वो शुद्धातम को चमकाएँ।
गौ-बछड़े सी ममता धारें, निजानन्द चैतन्य निखारें॥९॥
यही भावना भव की नाशी, परमातम गुण आत्म विकासी।
'सुव्रत' यही भावना भाएँ, तीर्थंकर बन सिद्ध कहाएँ॥१०॥

(सोरठा)

तीर्थंकर के योग्य, सोलहकारण भावना।
कर नमोऽस्तु हम लोग, भाएँ करने साधना॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सोलहकारण नित करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सोलहकारण भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचमेरू पूजन

स्थापना (दोहा)

पंचमेरू जिन बिम्ब की, महिमा बड़ी महान।
द्रव्य भाव से हम करें, जिनपूजन गुणगान॥

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के बिम्ब दर्शन, इन्द्र करके पूजते।
अभिषेक कर देकर प्रदक्षिण, आत्म अपनी खोजते॥
वो पंचमेरू के जिनालय, दिव्य अस्सी सुख सजें।
हैं एक सौ अठ बिम्ब हर में, कर नमोऽस्तु हम भजें॥

(दोहा)

मन वेदी पर आइए, पंचमेरू भगवान्।
हम को स्वस्थ बनाइए, सुनकर यह आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

(पुष्पांजलिं...)

(आँचलीबद्ध चौपाई)

जन्म आदि से हो भयभीत, जिनवर से कर बैठे प्रीत।
सुनो भगवान्, भव जल तिरने दो सुख यान॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

शीतल तन है मृतक समान, जो देता हमको यह ज्ञान।
तजो यह काय, चेतन चंदन सी हो जाय॥ पंचमेरू...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

पंचमेरू हैं अक्षय धाम, दिखे वहीं से मोक्ष मुकाम।
रहे आदर्श, दें निज दर्श दिलाएँ हर्ष॥ पंचमेरू...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

खिलें कीच में फूल समान, पंचमेरू यों उच्च महान।
नशायें राग, निज में रमने दें वैराग्य॥ पंचमेरू...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पंचमेरू की करके याद, यदि आहार लगे बेस्वाद।
तभी चैतन्य, लगे रसीला दे आनन्द॥ पंचमेरू ...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

पंचमेरू उज्ज्वल मालाएँ, आतम झिलमिल सी झलकाएँ।
जला के दीप, हम प्रभु के जा वसें समीप॥ पंचमेरू ...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पंचमेरू सम निश्चल होएँ, करें तपस्या तो क्यों रोएँ।
कटें सब कर्म, सिद्धालय का पायें धर्म॥ पंचमेरू ...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

दुनियाँ पापों का विस्तार, पुण्यफला अरिहंता द्वार।
दिलाए मोक्ष, पूजा का फल आतम सौख्य॥ पंचमेरू ...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥ पंचमेरू ...

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला (दोहा)

प्रथम सुदर्शन फिर विजय, अचल रु मन्दर चार।
विद्युन्माली नाम के, पंचमेरू सुखकार॥

(ज्ञानोदय)

अनन्त जो आकाश तत्त्व के, बीचों-बीच लोक शोभे।
जिसके अंदर त्रसनाली में, मध्यलोक मन को मोहे॥
वहीं केन्द्र में जम्बूद्वीप के, मध्य सुदर्शन मेरु रहे।
मूल एक हजार योजन कुल, इक लख योजन उच्च रहे॥१॥
सोने के मणियों से निर्मित, जग में रहे मुकुट के सम।
जिस पर भद्रशाल नन्दन वन, रहे सौमनस पाण्डुक वन॥
चार दिशाओं के ये वन हैं, जहाँ शिलाएँ हैं चारों।
वहीं जन्म अभिषेक करें सुर, ढारो रे! कलशा ढारो॥२॥

इन्हीं वनों में रहे जिनालय, जिनकी है सोलह संख्या।
एक जिनालय में बिम्बों की, इक सौ आठ रही संख्या॥
भद्रशाल पूरव पश्चिम में, बाईस हजार योजन है।
हरा भरा नाना वृक्षों से, रत्न रचित मन मोहन है॥३॥
भद्रशाल के ज्यों वैभव हों, तीन मेरुओं के वैसे।
जंबूद्वीप के मेरु जैसे, चार मेरु भी हैं वैसे॥
पूरे अस्सी रहे जिनालय, अकृत्रिम को टेको शीश।
बिम्बों की संख्या भी सुन लो, अठ हजार छह सौ चालीस॥४॥
उज्ज्वल-उज्ज्वल गन्ध सुगंधित, अचिन्त्य महिमावान् रहे।
अनादि अनिधन सुरासुरों से, पूजित जिन भगवान् रहे॥
जिनकी महिमा कही न जाए, सजे नाट्यशालाओं से।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, भक्ति समर्पण भावों से॥५॥
पंचमेरू की बिम्ब अर्चना, थापन कर हम आज करें।
पूजा का फल यही चाहते, साक्षात् पूजन शीघ्र करें॥
फिर संवेग धरे वैरागी, रत्नत्रय धर संत बनें।
भेदाभेद भावना करके, वीतराग अरिहंत बनें॥६॥
मुक्तिवधू से परिणय करने, ध्यान बराती ले दौड़ें।
सिद्ध अवस्था पाकर हम भी, निज से निज नाता जोड़ें॥
पंचमेरू सम अचल बनें हम, अतः रचाई पूजा है।
'विद्या' के 'सुव्रत' का नमोऽस्तु, अंतर्मन से गूँजा है॥७॥

(सोरठा)

पंचमेरू को पूज, भाव हमारे यों हुए।
कर लें निज की खोज, छुएँ सौख्य ज्यों प्रभु छुए॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पंचमेरू स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पंचमेरू जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

नन्दीश्वर पूजन

स्थापना (दोहा)

शाश्वत है अष्टाह्निका, जिनशासन के पर्व।
नन्दीश्वर जिन बिम्ब को, करें नमोऽस्तु सर्व॥

(हरिगीतिका)

आषाढ़ कार्तिक और फाल्गुन, अंत में आठों दिना।
अष्टाह्निका के पर्व आते, अष्टमी से पूर्णिमा॥
सुर द्वीप नन्दीश्वर पधारें, चैत्य चैत्यालय भजें।
ना जा सकें नर सो यहाँ पर, थापना कर हम भजें॥

(दोहा)

मन को नन्दीश्वर बना, बिम्बों का कर ध्यान।
कर नमोऽस्तु हम पूजते, आओ! श्री भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तरदिक्षु विद्यमान द्विपंचाश-ज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय-नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

नन्दीश्वर का कर ध्यान, नयन बरसते हैं।
झट दर्शन दो भगवान, भक्त तड़पते हैं॥

जल थल का पाकर तीर, प्रभु से जाएँ मिलें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हों आकुल व्याकुल रोज, नन्दीश्वर जाने।
पर जा न सकें हम लोग, तीरथ कर पाने।
दो आश्रय हर भव पीर, चेतन महक उठें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

नन्दीश्वर तीर्थ महान, बावन चैत्यालय।
सिद्धों जैसे भगवान्, झलके सिद्धालय॥
पूरी हो इच्छा तीव्र, अक्षय धाम चलें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नन्दीश्वर गोलाकार, जैसे फूल खिले।
सुर भौरों सम गुंजार, करके पूज चले॥
हम हरें काम का कीच, परमानन्द चखें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

नन्दीश्वर का रसपान, जो भी कर लेते।
भोजन का तज रसपान, आतम चख लेते॥
भोगों का त्यागें बीज, निज का स्वाद चखें।

छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नन्दीश्वर अष्टम दीप, झिलमिल झलक रहा।
ले भक्त भक्ति का दीप, प्रभु को निरख रहा॥
प्रभु मोती हम हैं सीप, उज्ज्वल रूप सजें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

नन्दीश्वर इतना शुद्ध, जैसे ज्ञायक हों।
हम भजकर बनें विशुद्ध, निज के लायक हों॥
हम कर्म हरें बन वीर, करके ध्यान भजें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नन्दीश्वर के बागान, रत्नत्रय फल दें।
हर के सारे अज्ञान, उज्ज्वल सुख फल दें॥
हों कर्मों से भयभीत, निज श्रृंगार करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

त्रय अष्टाह्निक पर्व में, नन्दीश्वर जिनधाम।
देव भजें साक्षात् हम, भजें यहीं कर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! नन्दीश्वर की, जय हो! सभी मंदिरों की।
जय हो! जय हो! वहाँ विराजित, चैत्यालय जिन बिम्बों की॥
देव वहाँ त्रय अष्टाह्निक में, दिव्य द्रव्य ले जाते हैं।
भक्ति-भाव से करें अर्चना, हम तो यहीं रचाते हैं॥१॥
अनगिन दीप सागरों से जो, निर्मित मध्यलोक प्यारा।
उसका अष्टम दीप मनोहर, नन्दीश्वर गोलाकारा।
एक अरब त्रेसठ लाखों अरु, चौरासी हजार योजन।
एक दिशा में इतना फैला, चंदा जैसा आभूषण॥२॥
जहाँ चार दिशि में अंजन वन, चार-ढोल सम बढ़िया हैं।
एक-एक अंजन सम्बन्धी, चार-चार बावड़ियाँ हैं॥
मध्य बावड़ी में इक दधिमुख, वन हैं कुल दधिमुख चारों।
वहाँ बावड़ी के दो कोने, जिनके रतिकर वन आठों॥३॥
एक दिशा में इक अंजन वन, दधिमुख चार आठ रतिकर।
कुल तेरह वन चार बावड़ी, जोड़ो चारों को गिनकर॥
कुल बावन वन की शिखरों पर, बावन पूज्य जिनालय हों।
इक मंदिर में बिम्ब एक सौ-आठ रहे जिनकी जय हों॥४॥
पाँच हजार छः सौ सोलह कुल, बिम्ब रहे नन्दीश्वर में।
उच्च पाँच सौ धनुष रहे जो, रत्नमयी पद्मासन में॥

नीले केश, दांत हीरे सम, ओठ रहे मूंगा जैसे।
श्याम श्वेत हैं नयन मनोहर, हाथ पैर कोयल जैसे॥५॥
बिम्ब रहे यों देख रहे ज्यों, बोल रहे जैसे लगते।
जिनके आगे कोटि-कोटि भी, सूर्य चाँद फीके पड़ते॥
प्रातिहार्य मंगल द्रव्यों मय, सुरा-सुरों से पूजित हैं।
वीतरागता की शिक्षा दें, पुण्य धर्म से संचित हैं॥६॥
जिनके वर्णन कर पाने में, सरस्वती थक जाती है।
इसीलिए तो श्रद्धा अपनी, सादर शीश झुकाती है॥
पाप नष्ट कर पुण्य प्राप्त कर, सुख पाने अरिहंत बनें।
नन्दीश्वर की यात्रा करके, 'सुव्रत' सिद्ध महंत बनें॥७॥

(सोरठा)

नन्दीश्वर जिन धाम, देव भजें त्यौहार कर।
हम भी करें प्रणाम, मोक्ष चलें भव पार कर॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नन्दीश्वर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नन्दीश्वर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

दसलक्षण धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

श्री जिनशासन में रहें, दसलक्षण त्यौहार
पूजा नमोऽस्तु कर करें, आतम का शृंगार॥

(ज्ञानोदय)

उत्तम क्षमा धर्म फिर मार्दव, आर्जव शौच सत्य संयम।
तप त्यागाकिंचन्य धर्म फिर, ब्रह्मचर्य दस पूज्य धरम॥
तीन काल में तीन लोक में, यही मोक्षसुख भवसुख दें।
मन मंदिर में धर्म धार कर, करके नमोऽस्तु हम नाचें॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म अत्र अवतर अवतर... ।अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः... । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्... । (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥
दस धर्मों का जल पाएँ, हम आतम को चमकाएँ।
प्रभु करुणा धार बहा दो, भव-भव के रोग मिटा दो॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं... ।

ये जग के रिश्ते-नाते, ये अनादि से झुलसाते।
सो हुई चेतना काली, दो चंदन सी खुशहाली॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं... ।

हैं धर्म बड़े वरदानी, दें अक्षय मुक्ति रानी।
जग के सब कार्य बनाते, सो हमको धर्म लुभाते॥ दस....

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्... ।

हम ज्यों ही धर्म भुलाए, सो शूल दुखों के पाए।
प्रभु सारी भूल भुला दो, अब आतम पुष्प खिला दो॥

दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

है भूख बड़ी बीमारी, सो भोजन की लाचारी।
इनसे सब दुनियाँ हारी, दो दवा हमें हितकारी॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

है घोर अँधेरा जग में, हम भटक रहे पग-पग में।
दे धार्मिक दीप संभालो, प्रभु हमको शिष्य बनालो॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, सबको तड़पाने वाले।
धर्मों बिन सहे न जाएँ, सो खेकर धूप जलाएँ॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

है धर्म सदा सुखदायी, सो धर्म न त्यागो भाई।
सुख-दुख में धर्म न भूलें, फल मुक्तिवधू को छू लें॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

ये धर्म बड़े अलबेले, सो लगें धर्म के मेले।
हर वस्तु धर्म दे प्यारी, हम चाहें मोक्ष सवारी॥ दस...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय)

तन-रक्षा करने को मुनि जब, भिक्षुक बनकर भ्रमण करें।
तभी दुष्ट यदि निंद्य वचन कह, हँसी उड़ा अपमान करें॥

मरण तुल्य दुख होने पर भी, क्रोध न कर सब सहा करें।
उत्तम क्षमा पूज कर हम भी, क्रोध त्याग कर क्षमा धरें॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ १॥

जाति रूप तप ज्ञान आदि के, आठ मदों में सब फूलें।
वंश कंश रावण कौरव सम, मानी निज-निधियाँ भूलें॥
अहं त्याग कर अर्हम् बनने, मोक्ष द्वार मुनि विनय धरें।
उत्तम मार्दव धर्म पूज कर, मान त्याग हम विनय करें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ २॥

मन में छल वचनों में छल हो, छल परिपूर्ण अगर हो तन।
तो जग के हर काम सरल पर, सरल बनो यह बहुत कठिन॥
जीवमात्र से मैत्री करने, माया छल का गरल तजें।
उत्तम आर्जव धर्म पूजकर, कपट त्याग हम सरल बनें॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ३॥

लोभ पाप का बाप बखाना, जो संतोष न रखने दे।
लोभी और लालची जन को, पूजा भक्ति न करने दे॥
लोभी योगी बन न सके सो, मुनि दुनियाँ की आश तजें।
उत्तम शौच पूजकर हम भी, लोभ त्याग संतोष धरें॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौच-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ४॥

सच्चा व्यक्ति ना हो आस्तिक, वह ना ही नास्तिक होता।
सत्य धर्म हित मित वाणी से, वह केवल वास्तविक होता॥
सदा झूठ पर परदे लटकें, सत्य दिगम्बर मुनि सम हों।
उत्तम सत्य पूजकर हम भी, सत्यं शिवं सुन्दरं हों॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्य-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ५॥

अणुबम महाबमों से जग का, सत्यानाश सदा होता।

अणुव्रत महाव्रतों के द्वारा, जीवमात्र का हित होता॥
जग के काम कराए संयम, संयम से मुनि धर्म रुके।
उत्तम संयम धर्म पूजने, हम भक्तों के शीश झुके॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयम-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ६॥

सब जग की इच्छाओं के तो, बारह तप यमराज रहे।
सबसे बड़े तपस्वी मुनि हैं, जिसे चाह सुर-राज रहे॥
तप से ही यह दुनियाँ चलती, तप से हो कर्मों का क्षय।
उत्तम तप हम भक्त पूजकर, करके नमोऽस्तु बोलें जय॥

ॐ ह्रीं उत्तमतप-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ७॥

ज्ञान अभय आहार औषधी, संयत के जो लायक हो।
चारों दान सात क्षेत्रों में, देना त्याग धर्म समझो॥
त्याग बिना तो चले न जीवन, त्याग बिना हो मोक्ष नहीं।
उत्तम त्याग पूजकर हम भी, पाएँ निज के भोग सही॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्याग-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ८॥

जग जन सिर पर रखे परिग्रह, अतः पतन के पात्र हुए।
आशा तृष्णा थारी-मारी, इससे हर उत्पात हुए॥
चौबीसों परिग्रह के त्यागी, ग्रन्थ रहित निर्ग्रन्थ रहें।
उत्तम आकिंचन्य पूजकर, हम आतम में स्वस्थ रहें॥

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्य-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ ९॥

माँ बहना बेटी के दर्शन, नारी जन में जो कर लें।
नारी त्याग रहें गुरुकुल में, मुक्तिवधू वे ही वर लें॥
भोगे भोग न याद करें मुनि, सबसे बड़े ब्रह्मचारी।
उत्तम ब्रह्मचर्य हम पूजें, बनने को मुनि अनगारी॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य-धर्माङ्गाय अर्घ्यं...॥ १०॥

पूर्णार्घ्य (शंभु)

दस धर्म पुण्य से मिलते हैं, जो लौकिक नहीं, अतः उत्तम।
हर वर्ष यही त्रय शाखा में, आकर करते हैं शमन दमन॥
अध्यात्म दिवाली मना-मना, हम दुखियों के आँसू पौंछें।
हम करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ा, शुद्धात्म धर्म तक भी पहुँचे॥

(दोहा)

धर्म करे संसार सुख, धर्म करे निर्वाण।
सो दसलक्षण धर्म भज, सादर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण-धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

करके नमोऽस्तु धर्म को, हो जग का कल्याण।
दसलक्षण की हम कहें, जयमाला गुणगान॥

(चौपाई)

पर्वराज पर्यूषण की जय।
जो भक्तों के दोष करे क्षय॥

उत्तम क्षमा क्रोध परिहारी, उत्तम मार्दव मान विदारी।
उत्तम आर्जव माया पर जय, पर्वराज पर्यूषण की जय॥१॥

उत्तम शौच लोभ को मारे, उत्तम सत्य वचन जग धारे।
उत्तम संयम कर्म करे क्षय, पर्वराज पर्यूषण की जय॥२॥

उत्तम तप शुद्धात्म प्रदाता, उत्तम त्याग सभी गुण दाता।
उत्तम आकिंचन निज-आलय, पर्वराज पर्यूषण की जय॥३॥

उत्तम ब्रह्मचर्य सुख भरता, कर्म कलंक पाप को हरता।
यही धर्म दस दें मोक्षालय, पर्वराज पर्यूषण की जय॥४॥

भूलों को जो दूर कराए, अपनों को जो गले लगाए।
दे आनन्द हरे सारे भय, पर्वराज पर्यूषण की जय॥५॥

पर्वराज पर्यूषण की जय।
जो भक्तों के दोष करे क्षय॥

(दोहा)

पाप हरें मंगल करें, करें कर्म का नाश।
करके नमोऽस्तु चाहते, निज मैत्री संन्यास॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण-धर्मेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दसलक्षण स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, दसलक्षण गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

भाद्रमास के व्रत जाप्य मंत्र

पुष्पांजली व्रत– ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बंधी असीति-जिनालयेभ्यो नमः।

दसलक्षण व्रत–(ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मांगाय नमः।)

१. ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-धर्मांगाय नमः। २. ॐ ह्रीं उत्तममार्दव-धर्मांगाय नमः।
३. ॐ ह्रीं उत्तमार्जव-धर्मांगाय नमः। ४. ॐ ह्रीं उत्तमशौच-धर्मांगाय नमः।
५. ॐ ह्रीं उत्तमसत्य-धर्मांगाय नमः। ६. ॐ ह्रीं उत्तमसंयम-धर्मांगाय नमः।
७. ॐ ह्रीं उत्तमतप-धर्मांगाय नमः। ८. ॐ ह्रीं उत्तमत्याग-धर्मांगाय नमः।
९. ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्य-धर्मांगाय नमः। १०. ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य-धर्मांगाय नमः।

रत्नत्रय व्रत–ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। (समुच्चय जाप्य)

१. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः। २. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः। ३. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः।

अनन्तचतुर्दशी व्रत–ॐ ह्रीं हं सः अनन्त-केवलिने नमः।

रोट तीज व्रत–ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बंधी अकृत्रिम जिनचैत्य-चैत्यालेभ्यो नमः।

रत्नत्रय पूजन

स्थापना (दोहा)

सम्यग्दर्शन पूज के, पाएँ सम्यग्ज्ञान।
फिर सम्यक्चारित्र भज, रत्नत्रय गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

मिथ्या हर ज्यों सम्यक् पाए, त्यों ही सम्यग्ज्ञान हुआ।
धर चारित्र बनें ज्यों मुनिवर, रत्नत्रय सम्पूर्ण हुआ॥
भेदाभेद ध्यान कर आतम, शुद्धातम सी चमक उठे।
सिद्धों सा रत्नत्रय पाएँ, करके नमोऽस्तु भक्त झुके॥

(सोरठा)

भव जल करने पार, रत्नत्रय नौका रही।
पाए निज त्यौहार, जिनपूजा मौका सही॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रय धर्म अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

आशाओं के जलाशयों ने, डुबा-डुबाकर जब मारा।
हुआ जन्म फिर हुआ मरण फिर, मिला न दुख से छुटकारा॥
रत्नत्रय नौका से मौका, दुख हरने का दो हमको।
सो प्रासुक जल करके अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तीन लोक के हम संसारी, आकुल व्याकुल हो जलते।
रत्नत्रय की छाया के बिन, ताप हमारे कब टलते॥
सारे कष्ट समाप्त करें हम, निज शीतलता दो हमको।
सो चंदन यह करके अर्पित,हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

रत्नत्रय के स्वामी हैं पर, दर-दर की ठोकर खाएँ।
इसीलिए धिक्कार हमें है, अब तो आँखें खुल जाएँ॥
अक्षयपुर का निवास पाने, शुद्धातम सुख दो हमको।
सो अक्षत यह करके अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नित्य वासना की ज्वाला में, शील तथा पुरुषत्व जला।
मृगनयनी माया के छल ने, हम को अनगिन बार छला॥
छले न जाएँ आगे अब हम, मिलें काम-हर्त्ता हमको।
सो पुष्पों को करके अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

एकासन उपवास आदि से, क्यों जीवन को दुखी करो।
रत्नत्रय धर क्या करना है, खाओ पीओ मौज करो॥
यही धारणा क्षुधा रोग दे, इसे तजें पथ दो हमको।
सो नैवेद्य करें यह अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम ने सब कुछ देखा लेकिन, देख सके ना अपने को।
तभी उजाले में रहकर भी, खोज सके ना अपने को॥
रत्नत्रय के दीप जला के, खोज स्वयं की हो हमको।
सो दीपक से करें आरती, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

ईर्ष्या हमको रोज जलाती, कौन जलाए ईर्ष्या को।
रत्नत्रय बिन कोई न सक्षम, अतः धार लें दीक्षा को॥
दीक्षा लेकर कर्म नशाएँ, ध्यान अग्नि दे दो हमको।
सो यह धूप सुगन्धी खेकर, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अशुभ कर्म से होते पापी, शुभ से होते पुण्यात्मा।
पुण्य हमें रत्नत्रय देकर, संत बनाए धर्मात्मा॥
संत बनें अरिहंत सिद्ध यह, रत्नत्रय फल दो हमको।
सो प्रासुक फल अर्पित करके, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सम्यग्दर्शन अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा बिन, तत्त्वों की रुचि हो न सके।
कुल पच्चीस दोष बिन सम्यक्, आत्म मुक्ति भी हो न सके॥
अतः त्याग शंका कांक्षादिक, अष्टगुणी श्रद्धान मिले।
क्षायिक सम्यग्दर्शन करके, सिद्ध स्वरूपी धाम मिले॥

(सोरठा)

मिथ्यादर्शन त्याग, सम्यग्दर्शन पा सकें।
अतः किया अनुराग, जिन से निज को पा सकें॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नमः अर्घ्यं...।

सम्यग्ज्ञान अर्घ्य

तीर्थंकर की जिनवाणी सुन, संशय विभ्रम मोह तजो।
मिथ्याज्ञान त्याग कर सम्यग्ज्ञान आठ गुण शीघ्र भजो॥
आगम चक्खु साहू बनकर, पंच गुणी स्वाध्याय करो।
समयसार के ज्ञानी बनकर, परमानन्दी ध्यान धरो॥

(सोरठा)

पाकर सम्यग्ज्ञान, आत्मज्ञान में लीन हों।
सो हो केवलज्ञान, सोऽहं पा स्वाधीन हों॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं...।

सम्यक्चारित्र अर्घ्य

सम्यग्दर्शन ज्ञान प्राप्त कर, अगर नहीं चारित्र लिया।
ज्ञानं भारं क्रियां बिना तो, निज को कौन पवित्र किया॥
पाप क्रियाओं के त्यागी बन, तेरह विध चारित्र धरें।
परम शुद्ध उपयोग नाँव से, भवसागर को पार करें॥

(सोरठा)

धर्म रहा चारित्र, जीव मात्र का मित्र है।
करता चित्त पवित्र, निज रमणी का चित्र है॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

रत्नत्रय की नाँव बिन, मिले कहाँ से पार।
सो जयमाला कह करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥१॥
रत्नत्रय चिज्ज्योति है, रत्नत्रय जिन मंत्र।
रत्नत्रय प्रभु सिद्ध हैं, रत्नत्रय अरिहंत॥२॥
रत्नत्रय आचार्य हैं, रत्नत्रय उवज्झाय।
रत्नत्रय ही साधु हैं, रत्नत्रय मन भाय॥३॥
रत्नत्रय नवकार हैं, रत्नत्रय नव देव।
मंगल उत्तम शरण हैं, रत्नत्रय स्वयमेव॥४॥
रत्नत्रय में वस रहे, सम्यग्दर्शन ज्ञान।
रत्नत्रय शुद्धात्म दे, रत्नत्रय निर्वाण॥५॥

रत्नत्रय आगम रहा, रत्नत्रय निज ज्ञान।
रत्नत्रय ही धर्म है, रत्नत्रय भगवान्॥६॥
रत्नत्रय पूजा रही, रत्नत्रय कर्त्तव्य।
रत्नत्रय चाहें सभी, धार रहे मुनि भव्य॥७॥
रत्नत्रय आधार है, रत्नत्रय व्यवहार।
रत्नत्रय निश्चय रहा, रत्नत्रय भव पार॥८॥
रत्नत्रय बिन आज तक, कौन बना अरिहंत।
रत्नत्रय बिन सिद्ध ना, रत्नत्रय जयवंत॥९॥
रत्नत्रय बिन जब नहीं, होना है उद्धार।
रत्नत्रय फिर क्यों नहीं, लेते प्राणी धार॥१०॥
इसी भावना से किया, रत्नत्रय गुणगान।
सुख सम्पद त्यौहार दे, रत्नत्रय दो दान॥११॥
रत्नत्रय धर हर सकें, दुख संकट आतंक।
चिदानन्द चिद्रूप बन, हर लें कर्म कलंक॥१२॥

(सोरठा)

ले रत्नत्रय डोर, निज की उड़ा पतंग को।
पाएँ 'सुव्रत' छोर, सिद्धों सम निस्संग हों॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

रत्नत्रय स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, रत्नत्रय मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

क्षमावाणी पूजन

स्थापना (दोहा)

क्षमा धर्म का मूल है, क्षमा धर्म त्यौहार।
करें क्षमा की अर्चना, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

(शंभु)

जय क्षमा धर्म! जय क्षमा धर्म!, जय क्षमा धर्म के अधिकारी।
यह सम्यक् रत्न हृदय में रख, चेतन होती मंगलकारी॥
हर पाप कटें सब बैर टलें, हों दूर सभी भव बीमारी।
फिर मुक्तिवधू हो नत नयना, झट करे स्वयंवर तैयारी॥

(दोहा)

ओम् नमः सबको क्षमा, सबसे क्षमा पुकार।
भक्त क्षमावाणी भजें, करने निज उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रय अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु)

जल क्रोध कषायों का खारा, पीकर पाया भव जल खारा।
हम काश! क्षमा जल पीते तो, चेतन होता प्यारा न्यारा॥
यह भूल जन्म आदिक दुख दे, जो क्षमा नीर से नश जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय जलं...।

जब चढ़े मान के पर्वत पर, तो तुच्छ दिखी दुनियाँ हमको।
हम अहंकार में जल बैठे, शीतल न मिली आतम हमको॥
यह भूल ताप जग का देती, जो क्षमा गंध से नश जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय चंदनं...।

जग कार्य क्षमा बिन बने नहीं, तो मोक्षमार्ग क्या चल पाएँ।
इस बिन अक्षयपद के सपने, सपने बनकर ही रह जाएँ॥
यह भूल भ्रमण जग के देती, जो क्षमा पुंज से नश जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय अक्षतान्...।

विद्वेष वैर के शूलों ने, आतम का बाग जला डाला।
तो फूल क्षमा के खिल न सके, भूलों का बाग उगा डाला॥
यह भूल ब्रह्म का रूप हरे, जो क्षमा पुष्प से खिल जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय पुष्पाणि...।

यह भूख लोभ की तृष्णा दे, तृष्णा में आतम कब झलकी।
सामान रखें हम वर्षों का, है खबर नहीं पल की कल की॥
यह भूल भुलाकर आतम रस, नैवेद्य क्षमा का मिल जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय नैवेद्यं...।

जो माया में अंधे होकर, कर्त्तव्य धर्म पथ से भटकें।
कब क्षमादीप उनके जलते, तिर्यंच नर्क गति वो पहुँचें॥
तज भूल-भुलैया माया की, मैत्री कर आतम दिख जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय दीपं...।

यह मोह करे सारी लीला, हो कर्म-कलुषता आतम में।
पग-पग पर जाल बिछाकर के, सबको रखता दुख बन्धन में॥
कर्मों की लीला क्षमा हरे, आतम परमातम बन जाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय धूपं...।

सब ज्वालामुखी क्रोध की हैं, विस्फोट हुआ कि भभक उठे।
क्षण भर का क्रोध राख कर दे, क्यों महाक्रोध में जगत फँसे॥
क्षण भर की क्षमा भरे खुशियाँ, तो उत्तम क्षमा मोक्ष लाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय फलं...।

हम लाखों गलती करके भी, सब भूल स्वयं से प्यार करें।
फिर खुद का क्रोध उचित ठहरा, क्यों तहस नहस परिवार करें॥
ले क्षमा अर्घ्य हो प्रेम पर्व, तो आतम खुशहाली पाए।
सो करें क्षमावाणी पूजन, हम करके नमोऽस्तु हर्षाए॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय नमः।

जयमाला

(दोहा)

धर्म क्षमावाणी हुई, निज पर को सुखकार।
सो जयमाला कह करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! क्षमा धर्म की, उत्तम क्षमा धुरंधर की।
प्रेम और वात्सल्य धर्म की, जय हो मुनि दिगम्बर की॥
रत्नत्रय की पूर्ण साधना, बाद क्षमावाणी होती।
आओ भक्तों क्षमा माँग लें, जिससे जले आत्म ज्योति॥१॥
रत्नत्रय उन्तीस अंग का, आठ अंग दर्शन के हों।
आठों अंग ज्ञान के होते, कुल तेरह चरित्र के हों॥
जिनशासन में शंका ना हो, निःशंकित यह अंग रहा।
जप तपकर भव सुख ना चाहें, निःकांक्षित यह अंग रहा॥२॥

मुनि तन देख ना करें ग्लानि, निर्विचिकित्सा अंग रहा।
देव-शास्त्र-गुरु को बस भजना, अमूढ़दृष्टि यह अंग रहा।
निज गुण वा पर अवगुण ढंकना, उपगूहन यह अंग रहा।
जिन पथ से डिगते को थामें, स्थितिकरण यह अंग रहा॥३॥

धर्मी से गो-वत्स प्रेम हो, वात्सल्य का अंग रहा।
जिनशासन का ध्वज फहराना, प्रभावना यह अंग रहा॥
अष्ट अंग सम्यग्दर्शन के, आगे सुनो ज्ञान वाले।
सही शुद्ध उच्चारण करना, शब्दाचार अंग पालें॥४॥

सही अर्थ कर अध्ययन करना, अर्थाचार अंग दूजा।
शुद्धोच्चारण शुद्ध अर्थ है, उभयाचार अंग तीजा॥
योग्य समय पर अध्ययन करना, कालाचार अंग पंचम।
शास्त्र विनय पूर्वक ही पढ़ना, विनयाचार अंग षष्टम॥५॥

पढ़ते समय त्याग कुछ करना, यह उपधानाचार रहा।
श्रुत गुरु का आदर कर पढ़ना, यह बहुमानाचार रहा॥
श्रुत के भेद बताकर पढ़ना, अंग अनिह्नवाचार यही।
दर्शन जैसे ज्ञान अंग पर, अब तक किया विचार नहीं॥६॥

पाँच-पाँच व्रत समिति गुप्ति त्रय, तेरह अंग चरित के हों।
प्रथम अहिंसा रहा महाव्रत, रक्षण षट्कायों के हों॥
मन वच तन से झूठ त्यागना, सत्य महाव्रत दूजा है।
नव कोटि से चोरी तजना, अचौर्य महाव्रत तीजा है॥७॥

ब्रह्मचर्य का धार महाव्रत, नारी जन से राग तजें।
अपरिग्रह का धरें महाव्रत, पर मूर्च्छा संपूर्ण तजें॥
पाँच महाव्रत भजकर पूजो, पाँच समितियाँ मनहारी।

चार हाथ भू चलें देखकर, प्रथम समिति ईर्या प्यारी॥८॥
हित-मित आगम योग्य बोलना, सुखमय भाषा समिति यही।
भोजन के छ्यालीस दोष तज, असन ऐषणा समिति रही॥
वस्तु देखकर रखें उठाएँ, निक्षेपण आदान यही।
मल-मूत्रों का विधिमय तजना, प्रतिष्ठापन समिति यही॥९॥

मन के सारे विकल्प तजना, मनोगुप्ति जग क्रांति हरे।
वचन शुभाशुभ पूर्ण त्यागना, वचन गुप्ति सुख शान्ति भरे॥
कायोत्सर्ग ध्यान की मुद्रा, कायगुप्ति सिद्धों जैसी।
इन उन्तीस अंग को भजकर, करें क्षमावाणी ऐसी॥१०॥

अगर क्षमावाणी हो वार्षिक, तो सम्यग्दर्शन न बचे।
चैत माघ भादों से तीनों, अगर करें तो धर्म बचे॥
धर्म करें संसार सुखों को, धर्म करें निर्वाण सुखी।
'सुव्रत' उत्तम क्षमा माँगकर, करें क्षमा हों आत्म सुखी॥११॥

(सोरठा)

भूल चूक सब छोड़, पर्व क्षमावाणी भजें।
हो नमोऽस्तु कर जोड़, शुद्धातम से हम सजें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप-रत्नत्रयाय अर्घ्यं...।

(दोहा)

रत्नत्रय स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, रत्नत्रय मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

नैमित्तिक पूजन खण्ड

दीपावली

अनादिकाल से भरतक्षेत्र में अनन्त चौबीसियाँ होती आई हैं, इसी क्रम में इस युग में ऋषभनाथ से लेकर महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर हुए। तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के २५६ वर्ष साढ़े तीन माह के बाद अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी को कार्तिक सुदी अमावस्या को मोक्ष प्राप्त हुआ था तथा उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को आपराह्णिक काल में उसी दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसी के प्रतीक रूप में कार्तिक वदी अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

विधि—प्रातःकाल सूर्योदय के समय स्नानादि करके पवित्र वस्त्र पहिनकर जिनेन्द्र देव के मन्दिर में परिवार के साथ पहुँचकर जिनेन्द्र देव की वन्दना करनी चाहिए। तदुपरान्त थाली में अथवा मूलनायक की वेदी पर सोलह दीपक चार-चार बाती वाले जलाना चाहिए तथा भगवान महावीर स्वामी की पूजन, निर्वाणकाण्ड पढ़ने के पश्चात् महावीर स्वामी के मोक्षकल्याणक का अर्घ्य बोलकर निर्वाण लाडू अर्घ्य सहित चढ़ाना चाहिए।

घर पर दीपावली पूजन विधि

अपराह्नकाल गोधूली बेला (सायं ४ से ७ बजे तक) में घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में अथवा घर के मुख्य कमरे में पूर्व की दीवार अथवा सुविधानुसार दीवार पर माण्डना (श्री, श्री, वाला) बनाकर चौकी के ऊपर जिनवाणी एवं भगवान महावीर स्वामी की तस्वीर रखनी चाहिए। घर के मुखिया अथवा किसी

अन्य सदस्य को एवं सभी सदस्यों को पूजा के शुद्ध वस्त्र पहनकर दीप मालिका के बायीं तरफ आसन लगाकर बैठना चाहिए तथा सामने वाली चौकी पर सोलह दीपक जो कि सोलहकारण भावना के प्रतीक हैं।(इन्हीं सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकरप्रकृति का बंध भगवान महावीर स्वामी ने किया था, इसी के प्रतीक स्वरूप सोलह दीपक चार-चार ज्योतियों वाले जलाए जाते हैं। (१६X४=६४) यह ६४ का अंक चौंसठ ऋद्धि का प्रतीक है। भगवान महावीर चौंषठ ऋद्धियों से युक्त थे इन्हीं के प्रतीक स्वरूप यह चौंषठ ज्योति जलायी जाती हैं। अतः सोलह दीपक चौंषठ बातियों से जलाकर दीपकों में शुद्ध देशी घी उपयुक्त होता है। घृत की अनुपलब्धि पर यथायोग्य शुद्ध तेलादि का प्रयोग किया जा सकता है।) दीपकों पर सोलह भावना अंकित करनी चाहिए। इन्हें जलाने के पश्चात् दीपावली पूजन, सरस्वती पूजन, चौंषठ ऋद्धि अर्घ्य, धुली हुई अष्ट द्रव्य से चढ़ाना चाहिए। पूजन से पूर्व तिलक एवं मौली बंधन सभी को करना चाहिए।

दुकान पर पूजन—इसी प्रकार दुकान पर भी पूजन करनी चाहिए अथवा लघुरूप में पंचपरमेष्ठी के प्रतीक रूप पाँच दीपक जलाकर पूजन करनी चाहिए।

पूजन विसर्जन—शान्ति पाठ एवं विसर्जन करके तदुपरान्त घर का एक व्यक्ति अथवा बारी-बारी सभी व्यक्ति मुख्य दीपक को अखण्ड जलाते हुए रात भर णमोकार मंत्र का जाप अथवा पाठ या भक्तामर आदि पाठ करते हुए व्यक्ति अनुसार रात्रि जागरण करना चाहिए, यदि रात्रि जागरण नहीं कर सकें तो कम से कम मुख्य

दीपक में यथायोग्य घृत भरकर उसे जाली से ढँककर उसी स्थान पर रात भर जलने देना चाहिए। शेष दीपकों में से एक दीपक मन्दिर में भेज देना चाहिए। यदि निकट में कोई सम्बंधी रहते हैं तो वहाँ भी दीपक भेजा जा सकता है। अथवा शेष दीपकों को घर के मुख्य दरवाजे पर एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर रखे जा सकते हैं। मिष्ठान्न आदि का वितरण करना है तो पूजन समाप्ति के पश्चात् पूजन स्थल से थोड़ा दूर हटकर वितरित कर ग्रहण कर सकते हैं।

पूजा के पश्चात् पूजन निर्माल्य सामग्री पशु-पक्षियों का अथवा मन्दिर के माली को दी जा सकती है।

चौईस पत्तों की आम या आशापाला की बान्दरवाल बनाकर दरवाजे के बाहर बांधनी चाहिए जो चौबीस तीर्थंकरों की प्रतीक है।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिभ्यो नमः।

निर्वाण लाडू चढ़ाने वाले दिन सायं को श्रावकगण अपने-अपने घरों में दीपावली पूजन करते हैं। दीपकों का मनोहर प्रकाश करते हैं। श्री जिनमंदिर जी में व अपनी दुकानों पर दीपकों को सजाते हैं और मुदित होते हैं।

नोट—पटाखे कभी न चलाएँ, अनार, फुल्झड़ी, राकेट, चकरी आदि भी बिल्कुल न छोड़ें। इससे लाखों जीवों का घात होता है। पर्यावरण दूषित होता है। स्वयं को भी हानि हो जाती है।

सामग्री—अष्ट द्रव्य की थाली, दीपक, मंगल कलश, सरसों, श्रीफल, धूप, जिनवाणी, २ चौकी, २ पाटे, रोली, केशर घिसी हुई, कलम-दवात, फूलमाला, नई बही।

विधि—सायंकाल को उत्तम गोधूली बेला में अपने मकान

या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर की तरफ मुँह करके पूजा प्रारम्भ करें।

एक पाटे पर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर महावीर भगवान का मनोहर फोटो, जिनवाणी, दायीं तरफ घी का दीपक, बायीं तरफ धूपदान, मध्य में मंगलकलश स्थापित करें। एक पाटे पर अष्टद्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर द्रव्य चढ़ाने के लिए खाली थाली में स्वास्तिकादि बनाएँ।

पूजा गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया को शुद्ध वस्त्र पहनकर करना चाहिए। मुखिया के अभाव में घर के विशेष व्यक्ति को शुद्ध वस्त्र पहनना चाहिए।

पूजन विधि—पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं॥

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर सभी जनों को शुद्धि के लिए थोड़ा सा जल के हल्के छींटे दें–

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा।

सभी के दाएँ हाथ में निम्न मंत्र बोलकर रक्षासूत्र बाँधें–

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

दीपक प्रज्ज्वलित करते हुए निम्न प्रकार उच्चारें–

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपकं प्रज्ज्वलनं करोमि।

शास्त्रजी विराजमान करते हुए निम्न मंत्र उच्चारें–

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

(बही में अंकित करें)

श्री महावीर स्वामिने नमः

शुभ ॐ लाभ

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्रीऋषभाय नमः। श्री महावीर स्वामिने नमः। श्री गौतम गणधराय नमः। श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै नमः। श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः।

श्री शुभ मिति कृष्ण-अमावस्या वीर निर्वाण संवत्.....विक्रम संवत्.....दिनाँक.....मास.....सन्.....ई.....वार को श्री (दुकान मालिक का नाम)......की (प्रतिष्ठान का नाम).....की बही का शुभ मुहूर्त किया।

(यह विधि करके दुकान के प्रमुख व्यक्ति को बही देवें और पुष्प क्षेपण करें।)

॥ इति शुभम् ॥

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

श्री देव-शास्त्र-गुरु अर्घ्य

(हरिगीतिका)

ले अष्ट द्रव्यों के सुमिश्रण, अर्घ्य ये तैयार हैं।
श्रद्धा समर्पण और भक्ति, भक्त के त्यौहार हैं॥
त्यौहार करके नाँच गा के, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी अर्घ्य

(लय—चौबीसी पूजा)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी-सरस्वती अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, देके भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

ऋद्धिधारी मुनियों का अर्घ्य (अर्द्ध जोगीरासा)

सकल ऋद्धि मय ऋषि हो फिर भी, चहें मोक्षसुख आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सकलऋद्धि-सम्पन्न सर्वमुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्यश्री विद्यासागरजी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

गौतम गणधर स्वामी पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान् को, कर नमोऽस्तु धर ध्यान।
गौतम गणधर को भजें, दीवाली निर्वाण॥

(ज्ञानोदय)

गुरु शिष्य भगवान् भक्त के, भारत से सम्बन्ध रहे।
महावीर गौतम गणधर से, भक्तों के अनुबंध रहे॥
सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, सो लाडू हम चढ़ा लिए।
गौतम बने केवली सो हम, दीप शाम को जला लिए॥
मिलके दीवाली उत्सव के, घर बाहर त्यौहार करें।
ज्ञानलक्ष्मी मोक्षलक्ष्मी, पाने जय-जयकार करें॥
गुरु बिन शिष्य अकेले तड़पें, अतः वेदना हरने को।
गौतम गुरु अब हृदय पधारो, अपने जैसे करने को॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मृत्यु भव दुख सागर को, वीर पार कर मुक्त हुए।
ध्यान नाँव से गौतम गणधर, ज्ञान-चेतना युक्त हुए॥
गुरु शिष्यों की धारा पाने, हम तो जल की धार करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

गुरु शिष्यों के रिश्ते ऐसे, जैसे महके चंदन वन।
विनय प्रेम की छाया में फिर, शीतल हो तन मन चेतन॥
गुरु शिष्यों के रिश्ते पाने, हम तो चंदन धार करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जिनशासन की जिम्मेदारी, गौतम गणधर को देकर।
वीर हुए अक्षय अविनाशी, धर्म तीर्थ सबको देकर॥
नग्न निरम्बर संत न छूटें, सो चरणों में पुंज धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

शिष्य बाग खिलते तो उसके, गुरु माली वा मालिक हों॥
काम कीट फिर क्या कर लें जब, गुरु अपने संरक्षक हों॥
चेतन बाग खिले अपना भी, सो चरणों में पुष्प धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

गुरुवर निज अध्यात्म रसोई, केवल शिष्यों को परसें।
जिसके मुँह में पानी आए, वो दीक्षा लेने तरसें॥
गुरु शिष्यों के रस को चखने, पद में यह नैवेद्य धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सुबह करें पावापुर उत्सव, लाडू चढ़ा के मंदिर में।
गोधूली बेला संध्या में, दीवाली हो घर-घर में॥
गुरु शिष्यों के दर्शन करने, दीप आरती रोज करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

विश्व विजेता भी डर जाते, देख कर्म के भाटों को।
आत्म विजेता कर्म पछाड़ें, खोलें मोक्ष कपाटों को॥
गुरु शिष्यों सा शौर्य दिखाने, धूप जला हम हवन करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

गुरु शिष्यों की करते रक्षा, ज्ञान ध्यान की शिक्षा दे।
शिष्य करें गुरु आज्ञा पालन, गुरु चरणों में दीक्षा ले॥
यही बीज दे महा मोक्षफल, आओ! ऐसी फसल करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

क्या होगा अस्तित्व शिष्य का, यदि गुरु का आशीष नहीं।
शिष्य बिना गुरुदेव अधूरे, उज्ज्वल धर्म भविष्य नहीं॥
गुरु शिष्यों का मिलन अनोखा, इक दूजे का ध्यान धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दिव्य ध्वनि मुख्यश्रोता गौतम गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

केवलज्ञानी महावीर जब, छ्यासठ दिन तक मौन रहे।
क्या कारण है इन्द्र विचारे, गणधर बिन ध्वनि कौन सहे॥
तब गौतम 'त्रैकाल्यं' आदिक, सूत्र अर्थ जब कर न सके।
समवसरण में मान-स्तंभ कर, मिथ्यादृष्टि रह न सके॥

(दोहा)

एकम श्रावण कृष्ण को, गौतम हर कर मान।
शिष्य बने सो ध्वनि खिरी, शासन चला महान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि मुख्यश्रोता गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दिव्य ध्वनि प्राप्त गौतम आदि ग्यारह गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, हमको अतः वियोग मिला।
गौतम गणधर बने केवली, संध्या में संयोग मिला॥

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, दो पर्वों से निज खोजें।
गौतमादि ग्यारह गणधर को, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
भव्य-पुण्य से विहार करके, फिर जीवों को ज्ञान दिए।
क्षेत्र गुणावा पर जाकर के, निज-पर के कल्याण किए॥
मोक्ष बानवें वर्षों में पा, सिद्ध लोक को गमन किए।
गौतम गुरु को अर्घ्य चढ़ा हम, करके नमोऽस्तु नमन किए॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमादि-प्रभासपर्यन्त एकादश गणधरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री गौतम गणधर स्वामिने नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

गौतम गणधर नाँव हैं, भवजल रहा अपार।
कर नमोऽस्तु जयमाल हो, होने को भवपार॥

(ज्ञानोदय)

तीन काल में तीन लोक में, तत्त्वों द्रव्य पदार्थों में।
मानव नित उत्सव प्रेमी है, मंगलमय परमार्थों में॥
दसलक्षण आदिक शाश्वत हैं, दीवाली नैमित्तिक है।
दीवाली की कथा समझ लो, जिसमें निहित आत्महित है॥१॥
वीर बने जब केवलज्ञानी, समवसरण की सभा सजी।
लेकिन छ्यासठ दिन तक प्रभु की, दिव्य देशना नहीं खिरी॥
शीघ्र इन्द्र ने अवधिज्ञान से, गणधर रहित सभा जानी।
कौन बनेगा गणधर प्रभु का, पता चला गौतम स्वामी॥२॥
ज्येष्ठ पुत्र जो पृथ्वी माँ के, ब्राह्मण थे वसुभूति पिता।
अग्निभूति अरु वायुभूति दो, इन्द्रभूति के लघु भ्राता॥

वह विद्वान महा अभिमानी, फिर भी पाँच शतक चेले।
वृद्ध विप्र का भेष इन्द्र धर, गौतमपुर की ओर चले॥३॥
इन्द्रभूति से कहे इन्द्र कुछ, मेरी शंका दूर करो।
'त्रैकाल्यं' का सूत्र अर्थ कह, मुझ पर कृपा जरूर करो॥
इन्द्रभूति जिन सूत्र श्रवण कर, सोचे तीन काल क्या हैं।
द्रव्य काय पदार्थ षट् लेश्या, व्रत गति समिति ज्ञान क्या हैं॥४॥
हुए निरुत्तर इन्द्रभूति तो, बोले गुरु से मिलवाओ।
होगा जब शास्त्रार्थ वहीं पर, समाधान तब तुम पाओ॥
शिष्य पाँच सौ तीनों भ्राता, वीर शरण में ज्यों आते।
देख मानस्तंभ मान हर, सम्यग्दर्शन पा जाते॥५॥
तत्क्षण ज्यों ही बने दिगम्बर, ज्ञान मनःपर्यय पाए।
गौतमपुर के गौतम गणधर, प्रथम शिष्य तुम कहलाए॥
त्रेसठ ऋद्धिधारि शिष्य पा, छ्यासठ दिन के बाद अहा।
मिला वीरशासन हम सबको, दिव्य देशना खिरी महा ॥६॥
शिष्य पाँच सौ मुनिपद धारे, दोनों भाई बने गणधर।
राजगृही के विपुलाचल पर, प्रथम देशना को सुनकर॥
द्वादशांग अंतर्मुहूर्त में, गौतम गणधर गुँथित किए।
कुल ग्यारह गणधर के स्वामी, तीस वर्ष तक धर्म दिए॥७॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः, वीरा को निर्वाण हुआ।
तब गौतम को पावापुर में, संध्या केवलज्ञान हुआ।
सुबह चढ़ा के सब जन लाडू, शाम मनाते दीवाली।
धर्म लक्ष्मी दीपमालिका, पाई सबने खुशहाली॥८॥

क्षेत्र गुणावा में फिर जाकर, योग निरोध कर मुक्त हुए।
गुरु शिष्य के उत्सव पाकर, धन्य-धन्य हम भक्त हुए॥
गुरु शिष्य सिद्धत्व प्राप्त कर, कर्म रोग दुख नाश किए।
हमको मोक्ष घुमाएंगे प्रभु, ऐसा हम विश्वास किए॥९॥
ज्यों कोई अपनी सम्पत्ति, सौंपे नहीं नोकरों को।
यों ही हमको छोड़ न देना, खाने जगत ठोकरों को॥
वैर व्यसन निर्धनता हरकर, दिवस दशहरा कर देना।
वीरा गौतम सम उत्सव दे, रात दिवाली कर देना॥१०॥
गुरु शिष्यों के चरणों में ही, हर तीरथ का दर्शन हो।
सो दीवाली भज नयनों में, निर्मल सम्यग्दर्शन हो॥
सम्यग्ज्ञान पले वाणी में, चरण-चरण चारित्र चले।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, अंग-अंग वात्सल्य झरे॥११॥

(सोरठा)

गौतम प्रभु को ज्ञान, मिला वीर को पूजकर।
हम पाएँ निर्वाण, दीवाली को पूज कर॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं...।

(दोहा)

दीवाली के प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री गौतम गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(इसके बाद यहाँ 'णमो जिणाणं' आदि ६४ ऋद्धियों के अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं)

निर्वाण काण्ड

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदि-अनन्त, भरत बाहुबलि कर्म हनन्त।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१॥
वासुपूज्य चम्पापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥३॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥४॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।
साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥५॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥६॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागढ़ से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥७॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥८॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥९॥

नंग अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१०॥
रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥११॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१२॥
बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुंभकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१३॥
स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदी चेलना पूरव हद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१४॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१५॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१६॥
वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१७॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुए कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१८॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१९॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गए गुणावा पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२०॥

मथुरा से श्री जंबूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२१॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कंवल पहुँचे शिवद्वार।
सुप्रतिष्ठित गोपाचल पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२२॥
यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२३॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२४॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाए जग का उद्धार, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥२५॥

(दोहा)

जो पाए निर्वाण सुख, सिद्ध अनन्तानन्त।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवंत॥

॥ इति ॥

बाहर नहीं
वसंत बहार तो
संत! अंदर....

महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितम्,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भा-जाल-जटिलम्,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥३॥
यदर्चा - भावेन प्रमुदित - मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत-गतिर्-
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥६॥

अनिर्वारोद्रेकस् - त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥७॥
महामोहातङ्क प्रशमन - पराकस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥

(श्लोक)

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥ ९॥

महावीराष्टक स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद)

(ज्ञानोदय)

जिनके ज्ञान रूप दर्पण में, ध्रौव्य नाश उत्पादमयी।
युगपद् प्रतिबिम्बित शोभित हों, जड़ चेतन के अर्थ सभी॥
जग साक्षी जो सूरज जैसे, शिवमग प्रतिपादक ज्ञानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥१॥
बिन लाली अनिमेष नयन हैं, कमल युगल सम जो रहते।
भीतर बाहर क्रोध नहीं है, प्रकट रूप से यह कहते॥
जिनकी मूरत परम शान्त है, अति निर्मल जग कल्याणी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥२॥
जिनके दोनों पद कमलों में, देवों की श्रेणी झुकतीं।
उनके मुकुटों की मणियों की, कांति जिन्हें शोभित करतीं॥
जग जन के भव ताप शांति को, जिनका बस सुमरण पानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥३॥

जिनकी पूजा के भावों से, मेढ़क प्रमुदित मन वाला।
इस जग में क्षणभर में देखो, बना देव सुख गुण वाला॥
तो तव भक्त मोक्ष सुख पाते, क्या इसमें अचरज स्वामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥४॥
चमकित स्वर्ण कान्ति सम तन बिन, एकानेक आत्म ज्ञानी।
सिद्धारथ राजा के सुत जो, जन्म रहित हैं श्रीमानी॥
वीतराग भव राग बिना जो, अद्‌भुत गति है शिवधामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥५॥
जिनकी शुचि वाणी की गंगा, विपुल ज्ञान के जल द्वारा।
जग जीवों को नहलाती है, बहु नय की लहरों द्वारा॥
ज्ञानी हंसों से परिचित यों, जाने जिनकी जिनवाणी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥६॥
जिनने कुमार काल दशा में, चमकित शान्त सदा सुख के।
पूज्य राज्य शिवपद पाने को, अपने आतम के बल से॥
दुर्जय पापी त्रिभुवन जेता, काम-सुभट जीता मानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥७॥
महामोह के रोग शमन को, आकस्मिक जो वैद्य रहे।
बिना अपेक्षा के बंधू जो, मंगल महिमा सहित रहे॥
भव दुख से भयभीत जनों को, उत्तम गुण शरणादानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥८॥

(दोहा)

भागचंद अष्टक रचे, महावीर का स्तोत्र।
पढ़े सुने जो भक्ति से, पाय परम गति मोक्ष॥९॥
'सुव्रत' रचकर पद्य में, महावीर गुण गाय।
महावीर जल्दी बनूँ, सर्वोदय मन लाय॥१०॥

॥ इति शुभम्॥

महावीर जयंती पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर का जन्मदिन, वीर जयंती पर्व।
झूम-झूम हम पूज लें, करके नमोऽस्तु सर्व॥

(शंभु)

जय महावीर! जय महावीर!, जय महावीर! शासन स्वामी।
सिद्धार्थ राज माँ त्रिशला के, सुत महावीर अंतर्यामी॥
जब जन्म लिए कुण्डलपुर में, तो तीन लोक में क्षणिक खुशी।
सुर इन्द्र जन्म उत्सव करते, हम करें अर्चना हँसी खुशी॥

(दोहा)

प्राप्त जन्म कल्याण कर, बने वीर जिनराज।
हृदय कमल आसीन कर, हम भी पूजें आज॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्र अत्र अत्र अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

हम जन्म का उत्सव मनाएँ, मृत्यु का दुख भूल के।
जब मृत्यु आती है निकट तो, शीघ्र सुध-बुध भूलते॥
अतिवीर सम कर जन्म सार्थक, भय मरण का जीत लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

संसार का जो ताप जीते, प्राणियों को छाँव दे।
सचमुच वही हैं वीर जग में, मुक्ति का जो गाँव दे॥
चैतन्य चंदन सा महकने, दें अभय दिल जीत लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कोई सिकन्दर हो भले पर, साथ क्या ले जाएगा।
आया दिगम्बर हो दिगम्बर, राख वह हो जाएगा॥
निधि वीर सम अक्षय मिले सो, धर दिगम्बर रूप लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

विद्वेष के कंटक हटा के, प्रेम का सिंचन करें।
परिवार यह दुनियाँ लगेगी, आत्म का चिन्तन करें॥
चारित्र का उपवन खिला के, वीर सम निज गंध लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कर निरन्तर भोज्य हम तो, आज तक भूखे रहे।
तन पुष्ट तो होता गया पर, तत्त्व से सूखे रहे॥
हो वीर सम आतम रसीली, स्वानुभव का सौख्य लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यह वीरशासन की दिवाली, है दशहरा ज्ञान का।
फिर क्यों अँधेरे में भटकते, नाश कर अज्ञान का॥
सो वीर सम चेतन करें हम, आरती का दीप लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जो जीतता संसार को वह, सैन्य योद्धा वीर है।
जो जीतता साधक स्वयं को, सच! वही महावीर है॥
हम वीर बन महावीर बनने, कर्महारी धूप लें।

प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

प्रभु वीर साक्षात् ना मिले, इसका हमें तो गम रहा।
पर वीरशासन मिल गया यह, पुण्य फल क्या कम रहा॥
इस पुण्य का करके वपन, अरिहंत फल का बीज लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

प्रभु छोड़ हमको मोक्ष पहुँचे, याद में हम रो रहे।
प्रभु के बिना यह भार जीवन, व्यर्थ में हम ढो रहे॥
प्रभु थाम लो अब डोर अपनी, हम पुकारें अर्घ्य लें।
प्रभु वीर को करके नमोऽस्तु, हम जयंती पूज लें॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

वीर जयन्ती पर्व का, कर लें हम त्यौहार।
वीर भक्त बनने करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(जोगीरासा)

जय हो! जय हो! वर्तमान के, वर्धमान जिन स्वामी।
महावीर जिनशासन नायक, प्रभु जी अंतर्यामी॥
पार्श्वनाथ जब मोक्ष गए तब, फैला पाप अंधेरा।
त्राहि! त्राहि! दुनियाँ में फैली, दिखता नहीं सबेरा॥१॥
तब श्रेष्ठी कुण्डलपुर वासी, श्री सिद्धार्थ नरेशा।
धार्मिक रानी त्रिशला देवी, देखी स्वप्न विशेषा॥
सोलह सपनों के फल जाने, रत्नों की हुई वर्षा।
महावीर का जन्म हुआ फिर, सकल विश्व यह हर्षा॥२॥

चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी थी, कंचन जैसी काया।
शचि इन्द्राणी ने माता को, मूर्च्छा नींद सुलाया।
मायामयी एक बालक को, जल्दी वहीं सुलाया।
बालवीर को उठा गोद में, सम्यग्दर्शन पाया॥३॥
बाहर ला सौधर्म इन्द्र को, बाल वीर को सौंपा।
लेकर के सौधर्म इन्द्र फिर, सुमेरु गिरि पर पहुँचा॥
पाण्डुक तल पर शासित करके, क्षीर सिन्धु के जल से।
ढारे एक हजार आठ शुभ, बड़े-बड़े ले कलशे॥४॥
तब सौधर्म इन्द्र शंकित हो, सोच रहे कुछ ऐसे।
इतने सारे कलशों का जल, वीर सहेगा कैसे॥
बालवीर ने अवधि ज्ञान से, इसको जाना जैसे।
तनिक अँगूठा दवा दिया तो, हिला सुमेरु वैसे॥५॥
समझ गया सौधर्म इन्द्र सब, फिर अभिषेक करा के।
वीर नाम रख ताण्डव नाँचे, बाद नगर में आ के॥
इस विध चौदह कोटि रत्न की, प्रतिदिन वर्षा होती।
पन्द्रह माहों तक भक्तों में, दुख दरिद्र सब खोती॥६॥
पर्व जन्म कल्याणक करके, सुर स्वर्गों को जाते।
भक्त मना के वीर जयंती, अपना भाग्य जगाते॥
बदले में बस यही चाहते, बनें जन्म कल्याणी।
बार-बार ना गर्भ जन्म हों, हों कल्याणक स्वामी॥७॥
माँ को अब ना अधिक रुलाएँ, हम ना आँसु बहाएँ।
धर्म अहिंसा परमो धर्मः, सूत्र वीर के गाएँ॥
जियो और जीने दो सबको, दें धार्मिक संदेशा।
'सुव्रत' जीवन सार्थक करने, नमोऽस्तु करें हमेशा॥

(सोरठा)

पर्व जन्म कल्याण, वीर जयन्ती गाइए।
करके नम्र प्रणाम, सार्थक जन्म बनाइए॥

ॐ ह्रीं जन्ममहोत्सव मण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महावीर निर्वाण पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान को, मन मंदिर में धार।
कर नमोऽस्तु निर्वाण का, कर लें हम त्यौहार॥

(शंभु)

हे वीर! तुम्हें जब मोक्ष हुआ तब, पर्व किया था देवों ने।
जब पता चला इस जग को तो, त्यौहार मनाया भक्तों ने॥
हम उसमें शामिल हो न सके, सो यथाशक्ति से आज सजें।
हे वीर! हमारे हृदय वसो, हम महावीर निर्वाण भजें॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जग जन्म-मृत्यु में उलझा है, पर आप जगत के पार गए।
हे मृत्युंजय! जाते-जाते, दे दीवाली त्यौहार गए॥

हम ऋणी रहेंगे जन्मों तक, पर जल तो आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

खुद 'जियो और जीने दो' यह, सिद्धांत तुम्हारा प्रचलित है।
सिद्धांत भुलाकर यह दुनियाँ, नित राग-द्वेष कर विचलित है॥
हम चलें आपके चिह्नों पर, सो चंदन आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय संतारताप-विनाशनाय चंदनं...।

क्यों नाथ! हमें तुम छोड़ गए, क्यों सिद्ध हुए शुद्धातम के।
क्यों आकुल-व्याकुल हम भटकें, हम यही समझने आ धमके॥
हमको भी वीर बना लेना, ये अक्षत आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

ज्यों मोक्ष गए तो तुम अपना, चैतन्य बाग महका डाले।
हम सूख रहे काँटों जैसे, क्यों हमको नाथ! भुला डाले॥
चंदनवाला सम खिलने को, पुष्पों को आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

ज्यों आत्मप्रदेश विशुद्ध किए, त्यों ठोस ज्ञानघन रूप हुए।
सो मीठे लाडू चढ़ा-चढ़ा, निर्वाण महोत्सव खूब हुए॥
नैवेद्य धर्म का चखने को, यह लाडू आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर- जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

तुम कार्तिक घोर अमावस में, सिद्धों की नगरी खोज लिए।
सो पर्व दिवाली मना-मना, हम दीप जलाना सीख लिए॥
हों नगर-नगर घर-घर उत्सव, ये ज्योति से ज्योति जलाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

हे सन्मति तेरे संदेशे, बस पन्नों पर छप जाते हैं।
दीवालों पर लिख जाते हैं, दीवाली पर पुत जाते हैं॥
अब कहो विश्व का क्या होगा, पर हम तो धूप चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

है स्वार्थ बड़ा मजबूत यहाँ, जो सबको बाँधे रखता है।
सो वर्तमान को वर्धमान की, फिर से आवश्यकता है॥
सिद्धांत आपके अपनाने, प्रासुक फल आज चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हे वीर प्रभु! तुम बच निकले, सो मना रहे हम दीवाली।
वरना अस्तित्व हमारा क्या, आते खाली जाते खाली॥
पर मिला वीरशासन हमको, सो सादर अर्घ्य चढ़ाएंगे।
हम करके नमोऽस्तु वीरा को, दीवाली पर्व मनाएंगे॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए **वीर** महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, **वर्धमान** लें जन्म।
सिद्धारथ घर आँगने, सुर-नर हुए प्रसन्न॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, **सन्मति** तज संसार।
बने दिगम्बर सो करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासननायक बन पुजे, **महावीर** भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, मोक्ष गए **अतिवीर**।
दीवाली त्यौहार हो, पावापुर के तीर॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

उत्तम मंगलशरण हैं, णमोकार ओंकार।
शासननायक वीर को, नमोऽस्तु बारम्बर॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शासन नायक, महावीर भगवान की।
जय हो! जय हो! वर्धमान के, दीवाली निर्वाण की॥

दीवाली त्यौहार कथा की, अपनी-अपनी श्रद्धाएँ।
आओ जानें समझें क्या हैं, कैसी प्रचलित निष्ठाएँ॥१॥
हिन्दु कहते आज राम जी, लंका जय कर लौटे थे।
नरकासुर को मार श्याम जी, सिंहासन पर बैठे थे॥
दुर्गाजी अपने पति के घर, आज लौट कर आई थीं।
समुद्रमंथन में लक्ष्मी जी, आज प्रकट हो आई थीं॥२॥
सिक्ख गुरु गोविंदसिंह जी, आज मुक्त हो तन छोड़े।
रामकृष्ण जी परमहंस ने, दयानन्द ने तन छोड़े॥
हुई बोधि की प्राप्ति बुद्ध को, रामतीर्थ भी मुक्त हुए।
आद्य शंकराचार्य गुरु जी, मृत्यु शैय्या युक्त हुए॥३॥
किसकी कैसी आस्था हमने, थोड़ी सी कुछ बतलायी।
दीवाली क्यों जैन मनाते, जो तीर्थंकर अनुयायी॥
चौबीसी अंतिम तीर्थंकर, महावीर को आज सुबह।
मोक्ष हुआ निर्वाण गए सो, लाडू चढ़ते जगह-जगह॥४॥
संध्या को अनुबद्ध रूप में, प्रथम शिष्य गौतम गणधर।
बने केवली अतः दिवाली, भक्त मनाते हैं घर-घर॥
सोलह दीपक चौंषठ ज्योति, जला रोशनी करते हैं।
ज्ञानलक्ष्मी मोक्षलक्ष्मी, पूजा खोजा करते हैं॥५॥
घर आँगन को रोशन करने, दीप जलाते शहर नगर।
आतम घट को रोशन करने, प्रेम बाँटते घर-बाहर॥
तब रत्नत्रय रूपा लक्ष्मी, होती शीघ्र प्रसन्न अहो।
दीवाली पावापुर जैसी, स्वयं मनाकर धन्य रहो॥६॥
महावीर गौतम के जैसे, हम अपना उद्धार करें।
अतः पंचमेवा सेवा कर, दीवाली त्यौहार करें॥

विश्व एक परिवार बनाने, 'सुव्रत' ज्योति जलाओ रे।
जलने के पहले जलने से, बचकर पर्व मनाओ रे॥७॥

ॐ ह्रीं निर्वाण महोत्सव मण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दीवाली के प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अक्षय तृतीया पूजन

स्थापना (दोहा)

अक्षयतीजा पर्व है, जग में पूज्य महान।
आदिप्रभु को नमोऽस्तु कर, पाएँ अक्षय दान॥

(ज्ञानोदय)

इस युग के जब आदि प्रवर्तक, दीक्षित होकर संत हुए।
किन्तु वर्ष भर मिला न भोजन, अंतराय के उदय हुए॥
तब श्रेयांस सोम राजा दे, दान पारणा झूम उठे।
दान तीर्थ का हुआ प्रवर्तन, अक्षय-तीजा पूज झुके॥

(दोहा)

तीज शुक्ल वैशाख की, जग में हुई महान।
आदि प्रभु को हम भजें, हृदय वसो भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

तद्भव मोक्षगामि के भी तो, जन्म मरण आदिक होते।
फिर क्या होगा अपना जीवन, इसे व्यर्थ क्यों हम खोते॥
प्रासुक जल ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

आदिनाथ ने बना अंजुली, पाणिपात्र फैलाया ज्यों।
हुआ मान का मर्दन देखो, शीतल स्वभाव पाया त्यों॥
सो चंदन ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धर्मतीर्थ विच्छेद हुआ पर, दानतीर्थ अक्षय दौड़े।
अक्षय-तीजा पर्व उसी का, सिद्धों से नाता जोड़े॥
सो अक्षत ले अक्षय तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

शील व्रतों का अखण्ड पालन, तीर्थंकर पद दान करे।
फिर भी केवल ज्ञान बिना यह, मुक्तिवधू में नहीं रमे॥
अतः पुष्प ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तीव्र असाता शर्मिंदा कर, भूखे प्यासे भटकाये।
हाय! हाय! यह कैसे छूटे, जिससे कोई न बच पाए॥
ले नैवेद्यक अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

भोगभूमि का हुआ समापन, सूर्य चाँद तब प्रकट हुए।
भव्य जनों के पुण्योदय से, धर्म दीप भी उदित हुए॥
अतः दीप ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मोदय से आदिनाथ भी, विषयों के व्यापार किए।
आत्मज्ञान पा हुए विरागी, कर्मों का संहार किए॥
अतः धूप ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आदिनाथ जी किए तपस्या, मोक्षमार्ग सबने पाया।
पर निमित्त के फल से अपना, उपादान तक सुख पाया॥
सो लेकर फल अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अहो! ज्ञान की महिमा देखो, पंचाश्चर्य प्रकट होते।
जय हो! जय हो! यशोगान कर, पवित्र आतम घट होते॥
अतः अर्घ्य ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

अक्षय तीजा पर्व सा, करके मंगल दान।
अक्षय आतम प्राप्ति को, हो नमोऽस्तु गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! आदिनाथ की, दान तीर्थ की जय-जय हो।
जय हो! जय हो! अक्षय-तीजा, चार दान की जय-जय हो॥
आदिनाथ जब बने तपस्वी, छह मासिक उपवास किए।
तज उपवास गए भोजन को, तो विधि बिन वह लौट लिए॥१॥
वर्धमान चर्या के धारी, पुनः मौन ध्यानस्थ हुए।
विधि का ज्ञान न भक्तों को था, अतः दुखी सब भक्त हुए॥
कैसे हो आहार प्रभु का, भरत सोचते बाहुबली।
तेरह माह नवों दिन गुजरे, कोई युक्ति नहीं चलीं॥२॥
इधर क्षयोपशम अन्तराय का, उधर हस्तिनापुर नृप को।
सात स्वप्न यों क्रमिक दिखे थे, स्वर्णिम मेरु कल्पतरु को॥
सिंह बैल रवि शशि सागर फिर, दिखी देवियाँ द्रव्य लिए।
जान स्वप्न फल पड़गाहन को, द्वाराप्रेक्षण शीघ्र किए॥३॥
श्री श्रेयांस सोम नृप करते, आदि प्रभु का पड़गाहन।
नवधा भक्ति करें खुशी से, दें इक्षुरस कर शोधन॥
वज्रजंघ श्रीमति के भव के, दान पुण्य होते अब धन्य।
पंचाश्चर्य प्रकट होते हैं, दान पात्र दाता हो धन्य॥४॥
रत्नवृष्टि हो, पुष्पवृष्टि हो, ढोल नगाड़े बाज उठे।
पवन सुगंधित सुर-सुर ढुरके, महा दान सब बोल उठे॥

अहो! दान यह धन्य! दान यह, नभ में जय-जय गूँज उठे।
अक्षय-तीजा धन्य हो गयी, सभी भक्त हम पूज उठे॥५॥

औषध-शास्त्र-अभय-आहारा, चार तरह का दान करें।
दाता पात्र द्रव्य विधि जाने, आतम का कल्याण करें॥
जड़ धन वैभव नाशवान है, देकर दान अमर हो लो।
अक्षय-तीजा पर्व मनाकर, आदिनाथ की जय बोलो॥६॥

जोड़-जोड़ के जो रखता है, उसके धन में जंग लगे।
गाढ़-गाढ़ के जो रखता है, उसको सर्प भुजंग लगे॥
खाता-पीता जो रहता है, उसका धन तो अंग लगे।
अपने धन का दान करे जो, भव-भव में वह संग लगे॥७॥

अतः कमाओ धर्म नीति से, खर्च रीति से धन करना।
भोग भोगना सदा भीति से, दान प्रीति से सब करना।
तो जिनशासन तीर्थ चलेगा, ऋद्धि-सिद्धि हो जीवन में।
'सुव्रत' अपना धर्म निभाएँ, सदा रमें निज चेतन में॥८॥

(सोरठा)

अक्षय-तीजा पर्व, देता यह संदेश है।
त्यागो जड़ धन सर्व, सिद्धों सा निज देश है॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्रुतपंचमी पूजन

स्थापना (दोहा)

पूजित श्रुत अवतार की, पूर्ण कथा का पर्व।
हम पूजें श्रुतपंचमी, करके नमोऽस्तु सर्व॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादि धारा, महावीर प्रभु बहा गए।
जिनकी वाणी सुनकर गौतम, सबको दे तत्त्वार्थ गए॥
जो धरसेनाचार्य गुरु ने, षट्खंडागम ज्ञान दिया।
भूतबलि मुनि पुष्पदंत ने, जिसे पूर्ण लिपिबद्ध किया॥

(दोहा)

ज्येष्ठ शुक्ल श्रुतपंचमी, तब से हुई महान।
'जयदु जयदु सुद देवदा', प्रकटा दें निज ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ज्यों अनादि से श्रुत धारा से, जिनशासन सिंचित होता।
उसके आश्रित नहीं हुए जो, जनम मरण उनका होता॥
जन्म मरण की पीड़ा हरने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जलकण हिमकण से भी ज्यादा, शीतलता जिनवाणी की।
जिनवाणी रसपान करे जो, व्यथा मिटे उस प्राणी की॥
निज की ज्वालामुखी शान्ति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

लूट-लूट श्रुतधन श्रद्धालु, निजी खजाना भरते हैं।
पर श्रुत के भंडार अनन्तों, रिक्त हुआ ना करते हैं॥
निज श्रुत वैभव अक्षय पाने, हम श्रुत पंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

श्रुत के बाग बगीचे में ही, तरुवर हों रत्नत्रय के।
जो अरिहंत सिद्ध बन खिलते, पुष्प लगें सिद्धालय के॥
श्रुत की एक पंखुड़ी बनने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुनो! मील के पत्थर जैसे, श्रुत के मंत्र समझना हैं।
शास्त्र द्रव्य श्रुत रहा अचेतन, इससे चेतन चखना है।
अपना शुद्धभाव श्रुत चखने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

केवलज्ञान सूर्य के बिन तो, श्रुत आगम ही दीप रहे।
जो हमको सन्मार्ग दिखाएँ, प्रभु के बहुत समीप रहे॥
आतम दीप प्रज्ज्वलित करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

भले धूल हो शास्त्रों पर वे, बन कर शस्त्र प्रहार करें।
पाप दुखों की धूल हटा के, कर्म शत्रु संहार करें॥
आत्म किले पर विजय प्राप्ति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जिन श्रुत का स्कंध अडिग है, हिले न मिथ्या आंधी से।
जिसके फल तो स्वर्ग मोक्ष दें, जो आतम रस दे मीठे॥
महा मोक्षफल का पथ पाने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

संविधान से देश सुचालित, भक्त चलें जिन-आगम से।
विश्व शान्ति फिर क्यों ना होगी, मुक्ति मिलेगी खुद हमसे॥
ज्ञान देवता प्रसन्न करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः।

जयमाला

(दोहा)

पावन है श्रुतपंचमी, नैमित्तिक त्यौहार।
जो शाश्वत त्यौहार दे, सो नमोऽस्तु बहु-बार॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! श्रुतपंचमी पर्व की, श्रुत की यह अवतार कथा।
जिनशास्त्रों की रचना वाली, सिद्धांतों की सार कथा॥

ऋषभदेव से महावीर तक, दिव्य-देशना तत्त्वों की।
जिनके गणधर ग्रन्थ गूँथते, जिनपर श्रद्धा भक्तों की॥१॥
महावीर निर्वाण गए फिर, गए केवली गणधर भी।
किन्तु बुद्धि जब क्षीण हुई तो, द्वादशांग अंतिम गुरु जी॥
श्री धरसेनाचार्य दुखी थे, कैसे श्रुत की हो रक्षा।
तो गिरिनारी पत्र भेजकर, कही संघ से निज इच्छा॥२॥
मुझ में जो श्रुत ज्ञान भरा है, उसे सौंपना मैं चाहूँ।
अतः भेज दो कुछ शिष्यों को, श्रमण संघ करुणा चाहूँ॥
श्रमणसंघ की सहमति से तब, चन्द्रगिरी दो शिष्य गए।
तब धरसेन स्वप्न देखे दो, तरुण बैल पग चाट रहे॥३॥
सुबह जयदु सुद देवदा कह के, हों श्रुत देव सदा जयवंत।
तभी श्रमण दो आकर करते, नमोऽस्तु सादर नन्तानन्त॥
समाचार कर परीक्षा करने, एक-एक फिर मंत्र दिया।
सिद्धि हेतु दो-दो अनशन का, बेला वाला नियम दिया॥४॥
हीनाधिक मंत्रों के कारण, कानी देवी प्रकट हुईं।
अन्य बड़े दाँतों वाली जो, किए व्यवस्थित शुद्ध हुईं॥
भूतबली वा पुष्पदंत सो, उनके नाम प्रसिद्ध हुए।
जिनको गुरु श्रुत ज्ञान दान दे, अन्य जगह पर भेज दिए॥५॥
षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखे जो, पूर्ण हुए श्रुतपंचमी को।
जिनशासन के भक्त ऋणी हैं, अतः भजें श्रुतपंचमी को॥
वीरसेन कृत धवला टीका, जय-धवला जिनसेन लिखे।
एक लाख बत्तीस हजारी, श्लोक प्रमाणी ग्रन्थ दिखे॥६॥
देवसेनकृत महाधवल जो, है चालीस हजार प्रमाण।

विजय धवल अतिशय धवला के, हैं उपलब्ध न कोई प्रमाण॥
ऐसी श्रुत अवतार कथा ये, रत्नत्रय को पुष्ट करे।
दीन-हीन भूले भटकों को, ऋद्धि-सिद्धि दे तुष्ट करे॥७॥
ज्ञान दान की परम्परा ये, आत्म धर्म भी दान करे।
राग द्वेष जग विभाव हर के, अनन्तकेवल ज्ञान भरे॥
ज्ञान महोत्सव मोक्षमहल में, करने अवसर दो स्वामी।
'सुव्रत' को आशीष दान दे, सिद्ध बना दो आगामी॥८॥

(सोरठा)

हरने को अज्ञान, हम पूजें श्रुतपंचमी।
करके नमोऽस्तु ध्यान, हम हों आतम के धनी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्री जिनवर वाणी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्रुतदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

हमारे दोष
जिनसे फले फूले
वे बंधु कैसे?

मोक्षसप्तमी पूजन

स्थापना (शंभु)

उपसर्ग कमठ का जयकर प्रभु, पारस को केवलज्ञान हुआ।
सावन की घोर घटाओं में, प्रभु पारस का निर्वाण हुआ॥
सो मोक्षसप्तमी पाकर हम, सम्मेदशिखर को ध्याएंगे।
निर्वाण महोत्सव पारस का, हम सादर आज मनाएंगे॥

(दोहा)

हे! पार्श्वप्रभु चिंतामणि, हृदय विराजो नाथ।
करके नमोऽस्तु हम झुकें, दे दो आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मौसम के पावन सावन में, जब लगी मूसलाधार झड़ी।
तो जग के साथ कमठ डूबा, पर पारस नैया पार खड़ी॥
सो करके नमोऽस्तु जलधारा, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

वर्षा में ज्वाला बरसाई, पर ध्यान अग्नि तुम जला-जला।
भय वैर-भाव को राख किया, उपसर्ग कमठ का टला-टला॥
सो करके नमोऽस्तु चंदन से, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

उपसर्ग कमठ करके हारा, तब आजू-बाजू झांका था।
चैतन्य चमत्कारी मुद्रा, का हुआ बाल न बांका था॥
सो करके नमोऽस्तु अक्षत से, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

था कमठ जीव काँटों जैसा, पारस थे फूलों कलियों से।
तो मोक्षमल्लिका ले आई, वरमाला शाश्वत गलियों से॥
सो करके नमोऽस्तु पुष्पों से, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पारस का आत्म बना रस तो, वह चखे बनारस के पारस।
भरपूर प्रयास कमठ का था, पर चख न सका लाडू सा रस॥
सो करके नमोऽस्तु लाडू से, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नरमुण्डों वाले दैत्य किए, जब घोर घटा काली-काली।
तो महावीर बन पारस ने, चेतन की कर दी दीवाली॥
सो करके नमोऽस्तु दीप जला, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के किले उजाड़े थे, संकट उपसर्ग विजेता ने।
जिससे सबका दिल जीत लिया, श्री मोक्षमार्ग के नेता ने॥
सो करके नमोऽस्तु धूप चढ़ा, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

इस दुनियाँ ने किसको छोड़ा, इस दुनियाँ ने किसकी मानी।
पर दुनियाँ को जिसने छोड़ा, ये दुनियाँ उसकी दीवानी॥
सो करके नमोऽस्तु फल लेकर, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

उपसर्ग सहन करके भी तो, पारस ने सबको क्षमा किया।
तब प्राणों से प्यारे तुमने, दुनियाँ को अपना बना लिया॥
सो करके नमोऽस्तु अर्घ्य लिए, निर्वाण महोत्सव पूज रहे।
पारस के पर्व बनारस से, सम्मेदशिखर तक गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण दूज वैशाख में, त्यागे स्वर्ग विमान।
वामा (ब्राह्मी) जी के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण-द्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारसनाथ।
अश्व (विश्वसेन) काशी नचे, दिव्य धर्म के नाँच॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मदिवस में छोड़कर, दुखवर्धक जगवस्तु।
पार्श्वनाथ मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र चतुर्थी कृष्ण को, पार्श्व बने अरिहंत।
कमठ करे प्रभु पार्श्व को, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

मोक्षसप्तमी को गए, पार्श्व मोक्ष के धाम।
सुवर्णभद्र की कूट को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी विभो, पार्श्वनाथ भगवान।
करके नमोऽस्तु हम करें, जयमाला गुणगान॥

(चौपाई)

जय-जय पारसनाथ दयालु, भक्त आपके हम श्रद्धालु।
संकटमोचक अंतर्यामी, थोड़ा हमें निहारो स्वामी॥१॥
अश्वसेन वामा के नन्दन, जिनशासन के तुम हो कुन्दन।
पूज्य पंचकल्याणक धारे, हे! उपसर्ग विजेता प्यारे॥२॥
विघ्न कष्ट भय तारणहारे, हम भक्तों के पालनहारे।
चौबीसी में सबसे न्यारे, सुन्दर-सुन्दर साँवरिया रे॥३॥
सो हर जगह वसे हैं पारस, देखो जहाँ वहाँ पर पारस।
सम्मेदशिखर में पारस-पारस, नगर बनारस पारस-पारस॥४॥
विजौलिया में पारस-पारस, अहिक्षेत्र में पारस-पारस।
कचनेरजी में पारस-पारस, बड़ागाँव में पारस-पारस॥५॥
जिंतूरजी में पारस-पारस, अंतरिक्ष में पारस-पारस।
ऐलोरा में पारस-पारस, महुआजी में पारस-पारस॥६॥
नैनागिरि में पारस-पारस, पटेरियाजी में पारस-पारस।
नेमावर में पारस-पारस, मक्सीजी में पारस-पारस॥७॥
गोपाचल में पारस-पारस, करगुँवाजी में पारस-पारस।
पावागिरि में पारस-पारस, बालाबेट में पारस-पारस॥८॥
अंदेश्वर में पारस-पारस, चँवलेश्वर में पारस-पारस।
अणिंदाजी में पारस-पारस, पटनागंज में पारस-पारस॥९॥
मोक्षसप्तमी पारस-पारस, निर्वाण लाडू पारस-पारस।
तीन लोक में पारस-पारस, मुनि 'सुव्रत' हों पारस-पारस॥१०॥

(सोरठा)

पार्श्वनाथ भगवान, अतिशयकारी ईश हैं।
कर नमोऽस्तु सम्मान, भक्त झुकाते शीश हैं॥

ॐ ह्रीं मोक्षसप्तमी मण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

रक्षाबन्धन पूजन

स्थापना (दोहा)

रक्षाबन्धन पर्व का, करते कुछ गुणगान।
शक्ति मिले वात्सल्य भी, बढ़े धर्म की शान॥

(ज्ञानोदय)

जिन आचार्य अकंपन गुरु का, संघ सात सौ मुनियों का।
हस्तिनागपुर के उपवन में, हुआ विराजित गुणियों का॥
पूर्व वैर से राजा बलि ने, यज्ञ रचा उपसर्ग किया।
आतम साधक गुरु शिष्यों ने, मौन अचल सब सहन किया॥
दौड़े विष्णुकुमार महामुनि, ज्यों जाने उपसर्ग कथा।
निजी विक्रिया ऋद्धि द्वारा, शीघ्र दिया उपसर्ग हटा॥
श्रावण पूनम को मुनियों का, सुखी धन्य आहार हुआ।
रक्षासूत्र बाँध गृहस्थों ने, वत्सलता का द्वार छुआ॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवंअकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

प्रासुक जल यह अर्पित करके, जनम-मरण हम ना चाहें।
जिसकी औषध रत्नत्रय दे, हरो हमारी भी आहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चन्दन द्वारा वन्दन करके, भवाताप हम ना चाहें।
करुणा रस की वर्षा करके, हरलो तम मन की दाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अखण्ड तन्दुल अर्पित करके, कोई उपाधि ना चाहें।
मनोकामना जीत सकें हम, हमें दिखाओ शिवराहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

कोमल पुष्पक अर्पित करके, कामबाण हम ना चाहें।
ब्रह्मचर्य पालन सिखलाके, संज्ञाएँ सब छुड़वाएँ॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सरस मधुर नैवेद्य चढ़ाके, क्षुधारोग हम ना चाहें।
समतारस का पान कराके, हरो भोग की ज्वालाएँ॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती इन दीपों से, मोहतिमिर हम ना चाहें।
सम्यग्ज्ञान दीप जलवा के, हर लो मिथ्या अफवाहें॥

मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

धूप सुगन्धी अर्पित करके, अष्टकर्म मल ना चाहें।
संयम का सौरभ महका कर, हरो असंयम की बाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

यथा शक्तिफल अर्पित करके, लौकिक फल हम ना चाहें।
सम्यक् तप से कर्म झड़ाने, गुरुपद सेवा हम चाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

भाव-भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, नश्वर वैभव ना चाहें।
रुक जाए भव भ्रमण हमारा, इस इच्छा से पद ध्याएँ॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिभ्यो नमः।

जयमाला (दोहा)

रक्षाबंधन पर्व का, आओ जाने हाल।
करके नमोऽस्तु हम सभी, कहें कथा जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

हस्तिनागपुर के राजा जो, महापद्म विख्यात हुए।
पद्मराज विष्णुकुमार जी, जिनके दो-दो पुत्र हुए॥
महापद्म ने पद्मराज को, राज्य दिया वैराग्य धरे।
विष्णुकुमार भी गये साथ में, बनकर मुनि संन्यास धरे॥२॥
उधर सुनो! उज्जयनी राजा, श्री वर्मा के मंत्री चार।
बलि नमुचि प्रहलाद वृहस्पति, जिनशासन के शत्रु अपार॥
तभी अकंपनाचार्य गुरुवर, संघ सात सौ शिष्यों का।
लेकर यहाँ पधारे जाने, सारा हाल मंत्रियों का॥३॥
तब आचार्य संघ से बोले, मंत्री जन से मौन रहें।
किन्तु नहीं थे श्रुतसागर सो, ये सब ज्ञात न हुआ उन्हें॥
मंत्री आकर मौन संघ को, मूर्ख बोलकर लौट गए।
मिले राह में श्रुतसागर सो, काफी वाद विवाद हुए॥३॥
मुनि से हुए पराजित मंत्री, जान दुखी आचार्य हुए।
गुरु आज्ञा से श्रुतसागर जी, वहीं गए ध्यानस्थ हुए॥
आहत मंत्री बदला लेने, ज्यों आए तो मुनि को पा।
किए वार तो वन-देवों ने, कील दिया जड़रूप किया॥४॥
देश निकाला मिला दण्ड सो, गए हस्तिनापुर मंत्री।
पद्मराज ने रखा वचन दे, लेकिन टाले सब मंत्री॥
संघ सात सौ मुनियों वाला, आया तो बदला लेने।
बुरे भाव से राज सात दिन, लिया संघ को दुख देने॥५॥
करने को उपसर्ग संघ पर, किया यज्ञ नरमेघ हवन।
यह उपसर्ग समझ मुनियों ने, त्याग दिया पानी भोजन॥
इसे जान कर मिथिलापुर के, सागरचंद्र अवधिज्ञानी।
गुरु ने क्षुल्लक पुष्पदंत को, भेजा देकर गुरुवाणी॥६॥
धरणी भषूण पर्वत पर मुनि, विष्णुकुमार से विनय करो।
तुम्हें विक्रिया ऋद्धि है सो, मुनियों का उपसर्ग हरो॥
क्षुल्लक जी से सत्य जानकर, हस्तिनागपुर जा पहुंचे।
पद्मराज की देख विवशता, वामन रूप बना पहुंचे॥७॥

देख मंत्रियों ने स्वागत कर, किया निवेदन भिक्षा को।
मुझे तीन पग भूमि चाहिए, दो मंत्री यदि इच्छा हो॥
वामन की इतनी सी इच्छा, सुन मंत्री हैरान हुए।
शीघ्र नाप लो भूमि तीन पग, इतने से क्या दान हुए॥८॥
विष्णुकुमार जी किए विक्रिया, पहुँचे ज्योतिष-पटल डगर।
पहला कदम सुमेरू पर्वत, दूजा मानुषोत्तर पर॥
नाँचा कदम तीसरा नभ में, बोलो रख दें बलि किधर।
रखो पीठ पर मेरी ऐसा, मंत्री बोले घबरा कर॥९॥
पैर पीठ पर रक्खा जैसे, जग में हा-हाकार मचा।
क्षमा याचना कर वामन से, धूर्तों का अभिमान नशा॥
चौदस को उपसर्ग टला फिर,खीर सिमैयों का आहार।
श्रावण पूनम को दे पाए, रक्षाबंधन का त्यौहार॥१०॥
लगे वहाँ चौदह सौ चौके, पर न हुए जिनमें आहार।
रक्षासूत्र बाँध दाता को, उनमें करवाए आहार॥
तब से रक्षाबंधन उत्सव, रक्षा का होता त्यौहार।
सो 'सुव्रत' वात्सल्य कथा से, करें धर्म की जय-जयकार॥११॥

(दोहा)

रक्षाबंधन की कथा, सुनकर त्यागें बैर।
'सुव्रत' की यह भावना, करें सभी सुख सैर॥

ॐ ह्रूं विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतकमुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

आत्मसाधना संत की, करें विश्वकल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत गुरुनाम॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पदलाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कर्मजयी मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती खण्ड

आरती—श्री पंचपरमेष्ठी

(लय—कैसे धरें मन धीरा...)

जिनवर की बोलौ जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
पहली आरति श्री अरिहंता-२, केवलज्ञानी जिन भगवन्ता-२
झूम-झूम गुण गाऔ रे, भाग्य अपनौ सँभारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
दूजी आरति सिद्ध जिनों की-२, मुक्त हुए मुनि तपोधनों की-२
करौ साधना सुमरौ रे, मंजिल खौं निहारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
तीजी आरति आचार्यों की-२, शिव राही-दाता आर्यों की-२
करौ अर्चना पूजौ रे, करनी तौ सुधारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
चौथी आरति उवझायों की-२, ज्ञान चरित पथ के रायों की-२
करौ उपासा सेवा रे, मिलै अपनौ उजारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
पाँचवी आरति साधु जनों की-२, आतम साधक तपोधनों की-२
करौ वन्दना संगत रे, आतम खौं निखारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
छठवीं आरति जिनवाणी की-२, हितकारी जग कल्याणी की-२
चलौ गैल जिनभक्तों रे, आज्ञा उर में धारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....

===

आरती—श्री चौबीसों भगवान

श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुंथू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
निर्मोही निर्ग्रन्थ सभी हैं, किन्तु मोह लें सब संसार।
रहे दिगम्बर पूर्ण निरम्बर, फिर भी जिनके ग्रन्थ हजार॥
धर्म चक्र की धुरी यही तो, धारें तारणतरण जहाज।
भू नभ अम्बर से ऊँचे पर, करें भक्त के दिल पर राज॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
भूल-भुलैया भव की भँवरे, जिनमें हो हमसे भी भूल।
किन्तु हमें ना आप भुलाना, दे देना चरणों की धूल॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, भर-भर झोली दो वरदान।
'सुव्रतसागर' करें नमोऽस्तु, भक्त आरती करें प्रणाम॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

===

आरती—श्री आदिनाथ स्वामी

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥
नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आए,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए।
प्रभु जी, सब जन मंगल गाए॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥
आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराए,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाए।
प्रभु जी, मोक्षमार्ग बतलाए॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥
सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आए,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी, झूम-झूम सिर नाये॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया॥

===

आरती–श्री चन्द्रप्रभ स्वामी

(तर्ज : करें भगत् हो आरती...)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम–झूम के२
झूम–झूम के...४
महासेन माँ – लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम–झूम के२
चन्द्रप्रभु की आरती......॥
ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम–घूम के२
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम–झूम के२
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
जगह–जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन–सुन के२
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम–झूम के२
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

===

आरती—श्री शान्तिनाथ स्वामी

(लय : विद्यासागर की गुण...)

शान्तीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आए।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाए।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥
तीन-तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किए संसारी,
प्रभुजी, सुखी किए संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनाएँ।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शान्ति हम पाएँ,
प्रभुजी, पुण्य शान्ति हम पाएँ।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
शान्तीश्वर की.....॥

===

आरती—श्री पार्श्वनाथ स्वामी

(लय : टन टना टन...)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥
भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[२], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ १॥
तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आए हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[२], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें ....॥ २॥
अश्वसेन वामा के नन्दन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[२], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ ३॥
मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[२], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ ४॥

===

आरती—श्री महावीर स्वामी

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
महावीर जिनशासन स्वामी, केवलज्ञानी अंतर्यामी–२
दीवाली वरदानी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
सिद्धारथ के राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे–२
कुण्डलपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता–२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि–सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ–२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

गुरु कृपा से
बाँसुरी बना मैं तो
ठेठ बाँस था

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

आरती–श्री बाहुबली स्वामी

श्री बाहुबली की, कर्मदली की, शुभ मंगलदीप सजाय हो
हम आज उतारें आरती...।
वृषभनाथ सुनन्दा जी के गर्भ विषें प्रभु आए।
नगर अयोध्या जन्म लिया था सब जन मंगल गाए॥
जिन राजा की, रति राजा की, शुभ मंगलदीप सजाय के,
हम आज...।
तजकर सब दुनियाँ की माया, निज आतम बस ध्याया।
सहकर सब उपसर्ग आपने, मोक्षमहल सुख पाया॥
शिव साधक की, जग पालक की, मन अपना शुद्ध बनाय के,
हम आज...।
तुम सा दूजा सकल जगत में, ना कोई उपकारी।
बल साहस शिव हम जाएँ, पाके कृपा तुम्हारी॥
जग जेता की, शिव नेता की, गुण 'सुव्रत' जिन के गायके,
हम आज...।

जिनवाणी स्तुति

(ज्ञानोदय)

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों कीं।
शास्त्र पठन-पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों कीं॥
आलस भूल कषाएँ मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञान-दीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र नवकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(कायोत्सर्ग...)

आरती-१—आचार्य श्री विद्यासागर जी

(लय : रात मुनि सपने में आए ...)

आओ गुरु की आरति गाएँ । [२] खुशी – खुशी ये पर्व मनाएँ॥ [२]
महिमा गाएँ – धूम मचाएँ [२] अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...
विद्यासागर गुरु हमारे । [२]जग-जीवों के पालन-हारे ॥ [२]
सम्यग्ज्ञानी-गुरुकल्याणी [२]अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...
गुरु ऐसे जैसे प्रभु वीरा । [२]रत्नत्रय के चमकित हीरा ॥ [२]
ममताहारी – समताधारी [२]अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...
सबको देते ज्ञान गुरुजी । [२]हर लेते अज्ञान गुरुजी ॥ [२]
राह बताएँ, पाप छुड़ाएँ [२]अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...
तीर्थंकर से तीर्थ गुरुजी। [२]हरते सबकी पीर गुरुजी॥ [२]
गुरु वैरागी-आतम स्वादी [२]अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...
हम भक्तों पर किरपा कर दो। [२]रत्नत्रय से झोली भर दो ॥ [२]
उर में आओ – गुरु मुस्काओ [२] अरा-रा-रा-रा ... ॥ आओ...

आरती-२ (तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रई जय-जय रे , आरतिया उतारौ। हाँ-हाँ रे आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे , गुरु-चरणा पखारौ, हाँ-हाँ रे आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ, हाँ-हाँ रे आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ, हाँ-हाँ रे आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे , भव दुख सै निकारौ, हाँ-हाँ रे , आरतिया उतारौ॥

===

आरती-३—आचार्य श्री विद्यासागर जी

तुम भी करो हम भी करें, गुरुवर की आरती।
श्री विद्यासागर जी, शिवपुर के सारथी॥
आओ! आओ! हिलमिल के, हम भी पूजें चरणा।
चारों धामों के तीरथ, गुरुवर की शरणा॥
तुम भी गीत गाओ रे, हम भी गीत गाएँ।
गुरुवर की किरपा, भवसागर से तारती॥ तुम भी...
चंदा ने चम-चम ये थालियाँ सजायीं।
सूरज ने झिलमिल ये किरणें भिजायीं॥
तुम भी दीप ले लो रे, हम भी दीप ले लें।
दीपों की ज्योति भी, गुरु को निहारती॥ तुम भी...
सुर-इन्द्र गुरुवर के दर्शन को तरसें।
हम भी करके आरति, मन ही मन हरषें॥
जानें न सुर छन्द, भक्ति न जानें।
फिर भी गुरु-चरणों में, झुकते हम भारती॥ तुम भी...

आरती-४—आचार्य श्री विद्यासागर जी

ओम् जय विद्यासागर, गुरुवर-जय विद्यासागर।
चलते फिरते तीरथ-२, आगम के आगर॥
विद्यासागर जग में, संयम से महके। गुरुवर संयम से...
जो भी करते आरति-२, सूरज से चमके॥ ओम् जय...
हाथ कमण्डल पिच्छी, रूप निरम्बर है। गुरुवर रूप...
भू विस्तर कर तकिया-२, चादर अम्बर है॥ ओम् जय...
ज्ञान सिंधु के अनुचर, महावीरा नन्दा। गुरुवर महावीरा...
वीतरागमय मुद्रा-२, हरते भव फंदा॥ ओम् जय...
ज्ञानी ध्यानी त्यागी, तुम हो वैरागी। गुरुवर तुम हो...
नायक! पालक! रक्षक-२, शिव सुख के रागी॥ ओम् जय...
मेरा क्या सब तेरा, 'सुव्रत' भी तेरा। गुरुवर जग भी तो...
कृपा करो मुस्का के, हर लो अँधेरा॥ ओम् जय...

===

भक्ति खण्ड

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

पंचमहागुरु भक्ति (प्राकृत) (चामर)

मणुय णाइंद–सुर–धरिय–छत्तत्तया, पंचकल्लाण–सोक्खावली–पत्तया।
दंसणं णाण झाणं अणंतं बलं, ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं॥
जेहिं झाणग्गि–बाणेहिं अइ–दड्ढयं, जम्म–जर–मरण–णयरत्तयं दड्ढयं,
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं॥
पंच–आचार–पंचग्गि–संसाहया, बारसंगाइ–सुअ–जलहि–अवगाहया।
मोक्ख–लच्छी महंती महं ते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खंगयासंगया॥
घोर–संसार–भीमाडवी–काणणे, तिक्ख–वियरालणह–पाव–पंचाणणे।
णट्ठ–मग्गाण जीवाण पहदेसिया, वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया॥
उग्ग तव चरण करणेहिं झीणं गया, धम्म वर झाण सुक्केक्क झाणं गया।
णिब्भरं तव सिरी ए समा लिंगया, साहवो ते महं मोक्ख पह मग्गया॥
एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए, गुरुय–संसार–घण–वेल्लि सो छिंदए।
लहइ सो सिद्ध सोक्खाइ बहुमाणणं, कुणइ कम्मिंधणं पुंज पज्जालणं॥

(आर्या)

अरुहा सिद्धा–इरिया उवझाया साहु पंचपरमेट्ठी।
एयाण–णमोयारा भवे भवे मम सुहं दिंतु॥

इच्छामि भंते! पंचमहागुरु–भत्ति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, अट्ठ–महा–पाडिहेर–संजुत्ताणं अरिहंताणं, अट्ठ–गुण–संपण्णाणं उड्ढ–लोय–मत्थयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं, अट्ठ–पवयण–मउ–संजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादि–सुद–णाणो–वदेसयाणं, उवज्झायाणं, ति–रयण गुण पालणरयाणं सव्वसाहूणं, णिच्चकालं, अञ्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण–संपत्ति होदु मज्झं।

आचार्य वंदना

लघु सिद्धभक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक आचार्य-वन्दना-क्रियायां, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलहु-मव्वावाहं,अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तव-सिद्धे, णय-सिद्धे, संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि॥

इच्छामि भंते। सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं-अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीदा-णागद-वट्ठमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, णिच्च-कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं समाहि-मरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

लघु श्रुतभक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक श्री आचार्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्य-शीतिस्-त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाश-दष्टौ च सहस्र-संख्य-मेतच्-छ्रुतं पञ्च-पदं नमामि॥

अरहंत - भासियत्थं - गणहर - देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्ति-जुत्तो, सुद-णाण-महोवहिं सिरसा॥

इच्छामि भंते ! सुद-भत्ति-काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं-अंगोवंग-पइण्णय-पाहुडय-परियम्मि-सुत्त पढमाणि-ओग-पुव्वगय-चूलिया चेव-सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ-मज्झं।

लघु आचार्यभक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्निक/आपराह्निक आचार्य-वन्दना-क्रियायां, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री आचार्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

श्रुतजलधि-पारगेभ्यः,स्व-पर-मत-विभावना-पटुमतिभ्यः।
सुचरित-तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो-गुण-गुरुभ्यः॥१॥
छत्तीस-गुण-समग्गे, पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्सा-णुग्गह-कुसले, धम्मा-इरिये सदा वंदे॥२॥
गुरु-भत्ति-संजमेण य, तरंति संसार-सायरं घोरम्।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण-मरणं ण पावेंति॥३॥
ये नित्यं-व्रत-मंत्र-होम-निरता, ध्यानाग्नि-होत्राकुलाः।
षट्कर्माभिरतास्-तपो-धनधनाः,साधु-क्रियाः साधवः॥४॥
शील-प्रावरणा-गुण-प्रहरणाश्-चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः, प्रीणंतु मां साधवः॥५॥
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः॥६॥

इच्छामि भंते! आइरिय भत्ति-काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, पञ्च-विहाचाराणं, आइरियाणं, आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्वसाहूणं, णिच्च-कालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं-समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(नोट- सुबह १८ बार एवं संध्या आचार्य वंदना में ३६ बार णमोकार मंत्र पढ़े)

विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थसिद्धि-प्रदम्।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं,
साकारं-श्रमणं-विशाल-हृदयं, सत्यं-शिवं-सुन्दरं॥

(शार्दूल विक्रीड़ित)

श्री विद्यामुनि धर्मरूप सुगुरु, र्विद्या नमामि प्रियं।
विद्या नाशति सर्व कर्म दुःखान्, विद्ये नमो भगवते॥
विद्योऽपैति सुखी भवन्ति न जनाः, विद्यो यशो वर्द्धतु।
विद्याद्रौस्वरतिर्ददाति सुपदं, हे विद्य! माम् पालय॥

(यहाँ विद्या शब्द का प्रयोग आकारान्त पुल्लिंग के रूप में किया गया है)

वैरागी विजयी विशाल हृदयी, ज्ञानी महात्मा प्रभु।
तेजस्वी तप त्याग तीर्थ तपसी, त्यागी जितेन्द्री गुरु॥
कल्याणी सदयी उदार विनयी, दाता गुरू को भजूँ।
विद्यासागर श्रेष्ठ संत गुरु को, पूँजू नमोऽस्तु करूँ॥

===

विधान खण्ड

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः।
ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

दिव्य देशना से सुन रक्खा, शास्त्रों से यह जाना।
निज श्रद्धा से सीखा हमने, गुरुओं से पहचाना॥
तीन लोक में तीन काल में, सिद्धों सा ना दूजा।
सो नमोऽस्तु कर सविनय करते, सिद्धचक्र की पूजा॥ १॥ओम्...
मंगलमय प्रभु मंगलकारी, विघ्न अमंगलहारी।
कामधेनु सम कल्पवृक्ष सम, सर्वसिद्धि दातारी॥
चिन्तामणि सम पारसमणि सम, पारस हमें बनाते।
मुक्तिवधू के प्राण वल्लभा, चित् चैतन्य सजाते॥२॥ओम्...
आत्म सिद्धि का लक्ष्य साध्य जो, करें सिद्ध की सेवा।
श्रमण चक्र अरिहंत चक्र में, शामिल हो स्वयमेवा॥
वह देवाधिदेव बन जाते, झुकें चरण में देवा।
कर्म नष्ट कर सिद्धचक्र पा, चखते निज का मेवा॥ ३॥ओम्...
इस विधान से मैनारानी, पति का कुष्ठ मिटाई।
संग सात सौ हुए निरोगी, सबने महिमा गायी॥
निज घर भूले भटके जन को, देता यही सहारे।
सिद्धचक्र के इस वन्दन से, रोग कर्म भय हारे॥४॥ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
सिद्धप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री सिद्धचक्र यंत्र लघु विधान

स्थापना (दोहा)

अर्हं बीजाक्षर महा, ब्रह्म वाच्य भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(शंभु)

ना द्रव्य मनोहर सँजो सके, ना मुनियों सा मन पावन है।
ना नन्दीश्वर हम पहुँच सके, ना सिद्धालय सा आँगन है॥
हम मैना सम मजबूत नहीं, मजबूर नहीं श्रद्धालु हैं।
सो सिद्धचक्र विस्तार रहे, दुख हरिये आप दयालु हैं॥

(दोहा)

यथाशक्ति से द्रव्य ला, लगा चंदोवा चंद।
मंडप मण्डल रच भजें, सिद्धचक्र स्वानन्द॥

(हरिगीतिका)

है रेफ ऊपर और नीचे, बीच में हंकार है।
र्ह्रं बीज अक्षर है कमल सा, अष्ट दल आकार है॥
स्वर और व्यंजन हर दिशा में, संधि पर शुभ तत्त्व हैं।
तट भाग में ओं क्रोम् वेष्टित, ह्रीं शोभित यंत्र है॥

(सोरठा)

भगें कर्म गजराज, सिद्ध यंत्र सिंहनाद सुन।
बनें सिद्ध सरताज, मुमुक्षु ऐसे कर नमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु) (लय—बाबुल की दुआयें...)

जिन माँ बाबुल ने जन्म दिया, फिर मरण तुल्य पति दिए वही।
पर मैना भाग्य भरोसे थी, मिथ्या पथ पर पग बढ़े नहीं॥

पति स्वस्थ हुआ श्री जिनवर का, जब गंधोदक का छिड़का जल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, ले गंधोदक सा श्रद्धा जल॥
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

ज्यों सत्य वचन बोली मैना, तो पिता चिता सम भड़क उठे।
पति तपित रोग जब शमित हुआ, तो लज्जित होकर पिता झुके॥
गुरु मंत्र मिला फिर सिद्ध यंत्र का, छिड़का शीतल सा चंदन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, कर शान्तीधारा का सिंचन॥
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

उपचार रोग का क्या हो सो, मुनि सिद्धचक्र का कहे यतन।
जो आठ वर्ष तक करना है, त्रय अष्टाह्निक में पाठ भजन॥
पर पहली ही अष्टाह्निक में, वह रोग असाध्य हुआ था क्षय।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, पाने को जिन श्रद्धा अक्षय॥
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

फूलों सी मैना थी लेकिन, पति और सात सौ थे रोगी।
दुर्गंध न विचलित कर पाई, बस सेवा में थी सहयोगी॥
परवाह नहीं की काँटों की, सो रोग गया तन महक उठे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, दो धैर्य पुष्प हम झुके-झुके॥
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आहार दान कैसे करती, जब नहीं ठिकाना खुद का हो।
फिर भी आहार सदा दे फिर, पति का भोजन फिर खुद का हो॥
निज धर्म नहीं भूली मैना, सो हुई प्रशंसा के काबिल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस मुनि चर्या में हों शामिल॥
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हैं एक तरफ तो पिता वचन, हैं अन्य तरफ तो धर्म नियम।
जब कुछ ना सूझे मैना को, तो खोज लिए मंदिर भगवन्॥
यह जग तो एक समस्या है, मुनि समाधान सब प्रश्नों के।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, अब लिए सहारे दीपों के॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अपने-अपने कर्मों से यह, सब दुनियाँ संचालित होती।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोया वही फसल होती॥
पति पिता पुत्र तो निमित्त हैं, सो मैना करती पाठ भजन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, यह धूप चढ़ा हों कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

हैं पुण्य पाप के खेल यहाँ, कोई महलों में आराम करे।
कोई सुखी दिखे कोई दुखी दिखे, कोई वन-वन भटके काम करे॥
सब समता से मैना सहती, फल कर्मों के हों शीघ्र शमन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, फल अर्पित कर हो सिद्ध गमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

श्री सिद्धचक्र में श्रद्धा है, पर अष्ट द्रव्य सुविशाल नहीं।
जिन पूजन विधि का ज्ञान नहीं, संगीत गीत सुर-ताल नहीं॥
बस मैना सी दुख दर्द कथा, ना घटे सुखी संसार रहे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस सिद्धों का परिवार मिले॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्ध अनाहत वाचक अर्हं, शब्द रहा प्यारा।
स्वयं सिद्ध अक्षरमाला से, खूब सजा न्यारा॥

आधा मात्रिक अर्हं पूजें, पूर्व दिशा आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ये ऐ ओ औ अं अः वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पूर्व दिशि अर्घ्यं... ।१॥

वर्ग कवर्ग भजें आग्नेयी, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो आग्नेय दिशि अर्घ्यं... ।२॥

वर्ग चवर्ग भजें हम दक्षिण, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो दक्षिण दिशि अर्घ्यं... ।३॥

वर्ग टवर्ग भजें हम नैऋत, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो नैऋत्य दिशि अर्घ्यं... ।४॥

वर्ग तवर्ग भजें हम पश्चिम, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पश्चिम दिशि अर्घ्यं... ।५॥

वर्ग पवर्ग भजें हम वायव, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो वायव्य दिशि अर्घ्यं... ।६॥

भजें अनाहत य र ल व, उत्तर दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो उत्तर दिशि अर्घ्यं... ।७॥

भजें अनाहत श ष स ह, ईशान दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो ईशान दिशि अर्घ्यं... ।८॥

पूर्णार्घ्य

सिद्धयंत्र से हम तो भजते, सिद्ध वर्णमाला।
इस आश्रय से मुक्तिवधू की, होती वरमाला॥
सिद्धचक्र के अवसर में हम, शामिल हों आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्पूर्ण-वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं... ।

सिद्धचक्र अर्घ्यावली

प्रथम पूजन अर्घ्य (लय–पिच्छी रे पिच्छी....)

मुक्ति रे मुक्ति ये तो बता तूने क्या जादू कर डाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥
जड़ चेतन ज्यों अलग किए त्यों, सिद्धचक्र को पाए।
पर जड़ से चेतन पाने हम, अर्घ्य सँजोकर लाए॥
सिद्धचक्र को अर्घ्य चढ़ाकर, खुले मुक्ति का ताला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति..॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं... ।

द्वितीय पूजन अर्घ्य (लय–जीवन है पानी की बूँद)

सिद्धचक्र की सुनकर गूँज, हम गुण गाएँ रे।
सोलह गुण पूजा हाँ हाँ, हम आज रचाएँ रेऽऽऽ॥

अपनों से हम प्यार करें, भव-भव यह अपराध करें।
अपने से ना प्यार करें, कैसे ये अपवाद टलें॥
पापों की पीड़ा....ये अर्घ्य मिटाएँ रेऽऽऽ॥
सिद्धचक्र की सुनकर गूँज हम गुण गाएँ रे। सोलह...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तृतीय पूजन अर्घ्य (हरिगीतिका)

तुम साध्य हम साधक रहे हैं, साधना की राह है।
अब साध्य साधक का मिलन हो, प्रार्थना की चाह है॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, शोक चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥

(दोहा)

अष्ट द्रव्य के अर्घ्य की, भेंट करें उद्धार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥
[कहें हम सिद्धचक्र गाथा, झुकाएँ चरणों में माथा]

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

चतुर्थ पूजन अर्घ्य (शंभु)

अपराध प्रशासन के जग में, ना शासन है ना अनुशासन।
व्रत संयम नियम नहीं तो फिर, क्या चल पाएगा जिनशासन॥
अब आत्मानुशासन पाने को, हम जिनशासन जयवंत करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचम पूजन अर्घ्य

(चौपाई—आँचलीबद्ध) (लय—पाँचों मेरु...)

सिद्धचक्र का करें विधान, करके नमोऽस्तु पूजन ध्यान।
ज्ञान निज होय, विश्वशान्ति निज मंगल होय॥

सिद्धचक्र को अर्पित अर्घ्य, जिनशासन का साँचा पर्व।
करे समृद्ध, हमें बना दे अर्हत् सिद्ध॥
पूज्य एक सौ अट्ठाबीस, गुण पूजें पाने आशीष।
कर्म क्षय होय, जय-जय सिद्धचक्र की होय॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

षष्ठम पूजन अर्घ्य (सखी)

मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।
हम करते नमोऽस्तु ध्यान, सादर जिन पूजा गा के॥
प्रभु देख जगत के मेले, निज रमें अकेले खेले।
हम झेलें सभी झमेले, अब भटकें भक्त न चेले॥
सो शक्ति भक्ति से पाएँ, सिद्धों को भक्त मनाएँ।
अब सिद्धचक्र विस्तारें, हम अपना भाग्य सँवारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

सप्तम पूजन अर्घ्य (लय–देख तेरे संसार की....)

सिद्धचक्र को करके नमोऽस्तु, करते ध्यान विधान।
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्-२
कभी रिझाने कभी दिखाने, कभी कभी लौकिक सुख पाने।
भक्ति समर्पण किए अर्चना, तभी अधूरी रही साधना॥
अर्घ्य भेंट कर यही प्रार्थना, मिले भेद विज्ञान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

अष्टम पूजन अर्घ्य (लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री सिद्धचक्र का नाम, सहसगुण धाम, थाम ले प्राणी,
सो हमने पूजा ठानी।
कुछ नहीं हमारी है इच्छा, तुम सम बनने हो जिनदीक्षा।
अब शीघ्र बनें हम शुद्धातम के ध्यानी। सो हमने पूजा ठानी॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

महासमुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

शब्द छन्द ना कह सकें, सिद्ध गुणों के कोश।
सिद्धचक्र की भक्ति से, मिटें विश्व के दोष॥

(ज्ञानोदय)

सिद्धचक्र की पूजा करके, गूँगे स्वर भरने लगते।
लँगड़े पर्वत पर चढ़ जाते, अंधे जग लखने लगते॥
अभुज सिंधु से पार उतरते, आधि व्याधि संकट टलते।
मंत्र जाप कर होम हवन कर, कर्म कटें आतम खिलते॥
सिद्धचक्र करने वालों को, बस यों आशीर्वाद मिले।
भोज्य पाँच सौ अस्सी विध के, षट् रस तज निज स्वाद मिले॥
मिलें न जब तक सिद्धचक्र में, सिद्धचक्र तब तक पूजें।
जिनशासन 'विद्या' गुरुवर को, नमोऽस्तु 'सुव्रत' के गूँजें॥

(सोरठा)

दो हजार चालीस, भक्त अर्घ्य ले पूजते।
सिद्धों को नत शीश, नमोऽस्तु के स्वर गूँजते॥
गुण कहना सम्यक्त्व, मोक्षतत्त्व दे दान जो।
अतः भक्ति कर भक्त, 'सुव्रत' पर प्रभु ध्यान दो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्त्र गुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये महासमुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

सिद्धयंत्र पहले भजें, फिर दूजा हो कार्य।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोऽस्तु आर्य॥

(चौपाई)

सिद्धयंत्र ही महायंत्र है, न्यारा सा जयवंत तंत्र है।
सिद्धचक्र का महामंत्र है, भक्तों का तो मुक्ति मंत्र है॥१॥

सिद्धचक्र में सिद्ध वर्ण हैं, बीजाक्षरमय स्वर व्यंजन हैं।
अतः सर्व संपन्न यंत्र है, मंत्र तंत्र का जनक यंत्र है॥२॥
मैना ने पूजा जब इसको, अनुष्ठानमय ध्याया इसको।
गंधोदक जब छिड़का इसका, तभी स्वस्थ पति होता उसका॥३॥
कष्ट मिटा है कुष्ठ मिटा है, सात शतक का रोग मिटा है।
क्योंकि यंत्र तो सिद्धयंत्र है, कार्य सिद्धि का सफल यंत्र है॥४॥
शक्ति प्रदायक सिद्धयंत्र है, पाप व्यसन हर सिद्धयंत्र है।
यश-धन दायक सिद्धयंत्र है, संयम दायक सिद्धयंत्र है॥५॥
दुख संकट हर सिद्धयंत्र है, रोग-शोक हर सिद्धयंत्र है।
मोह कर्म हर सिद्धयंत्र है, धर्म मोक्ष दा सिद्धयंत्र है॥६॥
कर्मों को सिंह सिद्धयंत्र है, मुक्तिवधू दा सिद्धयंत्र है।
मुक्ती का धन सिद्धयंत्र है, नमोऽस्तु लायक सिद्धयंत्र है॥७॥
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है।
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है॥८॥

(सोरठा)

सिद्धयंत्र का ध्यान, मंगलमय मंगल करण।
अतः किया गुणगान, नमोऽस्तु कर पूजे चरण॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...॥

(त्रिभंगी)

श्री सिद्धयंत्र से, महामंत्र से, सिद्धचक्र को जो ध्यावें।
वे रोग नशा के, आतम ध्याके, कर्म नशा के सुख पावें॥
हो तुम प्रभु साँचे, जग यश वाँचे, खुश हो नाचें पर्व करें।
सो 'सुव्रत' ध्याएँ, तुम्हें मनाएँ, विद्या पाएँ मोक्ष वरें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

===

श्री सिद्ध विधान प्रारम्भ

स्थापना (सखी)

नहिं भाग्य भरोसे रहकर, पुरुषार्थ किया सब सहकर।
वैराग्य यान पर चढ़कर, फिर जा पहुँचे जो शिवपुर॥
वो चिदानन्द सिद्धातम, सर्वोच्च पूज्य अविनाशी।
जो ज्ञान शरीरी निर्मल, हैं लोक शिखर के वासी॥
चैतन्य शुद्ध अब करने, पूजें सब सिद्ध जिनों को।
हो कृपा सिद्ध प्रभु की तो, हम नाशें भव भ्रमणों को॥

(दोहा)

देह प्राप्त कर देह से, पाए देहातीत।
उन सिद्धों के चरण में, वन्दन हो अगणीत॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा कंचन आतम, सब सिद्ध प्रभुजी पाए।
तज राग-द्वेष मिथ्यामल, पुद्गल के बंध नशाए॥
अब जन्म-मरण के बंधन, अपने सम दूर करा दो।
हम जल से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

तज मोह ताप की लपटें, निज की शीतलता पाई।
अध्यात्म सदन में रमके, निज आत्म विभूति बचाई॥
संयोग-वियोग की ज्वाला, अपने सम दूर करा दो।
चंदन से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

जब छूटे झूठे आश्रय, तब अन्तर्लीन हुए हो।
तज आधि व्याधि उपाधि, चित् खण्ड-अखण्ड छुए हो॥
अब नाथ हमारी भटकन, अपने सम दूर करा दो।
ले पुंज करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

चारित्र गंध से चेतन, हे नाथ आपकी महकी।
तो चेतन सोन चिरैया, चैतन्य बाग में चहकी॥
अब काम शिकारी का भय, अपने सम दूर करा दो।
ले पुष्प करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब ज्ञानामृत सुख रस का, अन्तर से झरना झरता।
फिर उसे न दुनियाँ रुचती, वह भोग स्वयं का करता॥
अब क्षुधा रोग की पीड़ा, अपने सम दूर करा दो।
नैवेद्य करें हम अर्पण, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

खलु चिच्चदेव की ज्योति, जो अन्धकार को खा ले।
वह दिखे जले न बाहर, चैतन्य सदन प्रकटा ले॥
अब मोह अमावस काली, अपने सम दूर करा दो।
हम करें आरती वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जब महका निज सौरभ तो, हर कर्म-कली मुरझायी।
चित् चमत्कार देखा तो, फिर मुक्तिरमा शर्मायी॥

जड़ चेतन का मिश्रण अब, अपने सम दूर करा दो।
हम करें धूप से वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जो खोज चुका हो दुर्लभ, अनुपम निज रूप सुहाना।
वो यहाँ-वहाँ क्यों भटके, जो पाए मोक्ष ठिकाना॥
संकल्प-विकल्प सभी अब, अपने सम दूर करा दो।
फल अर्पित करें नमन हम, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कर नष्ट अष्टकर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द चिद्रूप हैं, चित् चैतन्य विलास।
जिनके गुण गण में बसे, भक्तों का संन्यास॥

(सखी)

जो स्वयं सिद्ध हैं जग में, जो सिद्धधाम के स्वामी।
चैतन्य निलय के वासी, जिन्हें बारम्बार नमामि॥
सब कर्म-समूह नशा के, सुन्दर आतम जो पाए।
वह अनुपम स्वरूप पाने, हम गुण गाने ललचाए॥१॥
ज्यों मिले साध्य साधन तो, कुंदन बन जाता कंकर।
त्यों कृपा आपकी हो तो, हम भक्त बनें शिवशंकर॥

जब सिद्ध दशा मिलती तो, नहिं अभाव हो आतम का।
नहिं नष्ट ज्ञान–दर्शन हो, यह मत है जिनशासन का॥२॥
जो त्याग–तपस्या करके, निज–पर का मंगल करके।
जब कर्मपटल सब हरते, तो प्राप्त आठ गुण करके॥
झट सिद्धालय में वसके, भोगें वो अनन्तसुख को।
हे! सुख–सम्पन्न जिनेश्वर, हम खोजें बस उस सुख को॥३॥
वह सुख उत्पन्न स्वयं से, जो निरुपम है बिन बाधा।
प्रतिपक्ष रहित अविनाशी, ना कम होता ना ज्यादा॥
वह भोग–विषय में न होता, वह रहता अचल सदा जो।
सिद्धों ने जिसको भोगा, हमको भी वही चखा दो॥४॥
प्रभु तुमने रोग हरे तो, औषध से नहीं प्रयोजन।
जब अंध हरा तो तुमको, दीपक से नहीं प्रयोजन॥
जब भूख–प्यास हर ली तो, षट् रस भोजन से क्या हो।
जब तुमने गंध हरी तो, चंदन फूलों से क्या हो॥५॥
जब श्रमण बने तो तुमने, श्रम निद्रा पूर्ण मिटाई।
तब कोमल आसन–शय्या, क्या काम तुम्हारे आई॥
ऐसी वह सिद्ध अवस्था, जो परम सुहानी पाई।
बस उसको पाने हमने, यह पूजन आज रचाई॥६॥
पूजन का यही प्रयोजन, हो नमन सभी सिद्धों को।
हो रहे हुए होंगे जो, यशवान पूज्य सिद्धों को॥
नित तीनों संध्याओं में, हम करते उन्हें नमोऽस्तु।
वह सिद्ध दशा बस पाएँ, 'सुव्रत' की जो प्रिय वस्तु॥७॥

(दोहा)

सिद्ध भक्ति निर्दोष जो, करे नमन वा ध्यान।
सिद्धों जैसा शीघ्र वह, सुखी बने भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

१. क्षायिक सम्यक्त्व गुण

(ज्ञानोदय)

पूर्ण रूप से मोहनीय का, किया जिन्होंने पूरा क्षय।
तत्त्वज्ञान विपरीत हरे जो, वो क्षायिक सम्यक्त्व निलय॥
जीवों का यह दुख हर लेता, सुखी करे निज आतम को।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, नमस्कार सिद्धातम को॥

(दोहा)

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, हो मिथ्या दुःख नाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

२. क्षायिक अनन्तज्ञान गुण

पूर्ण नशा जब ज्ञानावरणी, उदित सूर्य तब ज्ञान हुआ।
सभी द्रव्य गुण पर्यायों के, साथ आत्म का ध्यान हुआ॥
जीवों के अज्ञान अँधेरे, अनन्त केवलज्ञान हरें।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, जिनका हम सम्मान करें॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, अघ अज्ञान विनाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तज्ञानगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

३. क्षायिक अनन्तदर्शन गुण

दर्शन आवरणी नाशा तो, दृष्टि शुद्ध अत्यन्त हुई।
सकल ज्ञेय को युगपत देखे, आत्म ज्योति भी प्रकट हुई॥
दृष्टि दोष आवरण भव्य के, अनन्तदर्शन दूर करें।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, वन्दन उन्हें जरूर करें॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, दर्शन दोष विनाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तदर्शनगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

४. क्षायिक अनन्तवीर्य गुण

अंतराय कर्मों के कारण, विघ्न मिले निज बल न मिले।
अंतराय की शक्ति नशी तो, अतुलशक्ति से आत्म खिले॥
भव्य जनों की हरे पराजय, अतुल्य वीर्य पराक्रम दे।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, उन्हें नमन शुद्धातम से॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, अन्तराय हो नाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तवीर्यगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

५. सूक्ष्मत्व गुण

रूप रंग तन का निर्माता, नाम कर्म जब पूर्ण नशा।
इन्द्रिय मन से हुए अगोचर, रूप अमूर्तिक आत्म वसा॥
नाम काम जगधाम भक्त के, गुण सूक्ष्मत्व हरण करते।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, हम तो उन्हें नमन करते॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, नामकर्म हो नाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सूक्ष्मत्वगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

६. अवगाहनत्व गुण

देव नरक पशु मनुज आयु के, दुखद कर्म जब नश जाएँ।
जिससे एक हि जीव क्षेत्र में, अनन्त सिद्ध समा जाएँ॥
भक्तों के बध-बंधन दुख को, गुण अवगाहनत्व हर ले।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, आतम उन्हें नमन कर ले॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, आयु कर्म विनाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अवगाहनत्वगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

७. अगुरुलघुत्व गुण

उच्च नीच कुल का दाता जो, गोत्र कर्म जब दूर हुआ।
भेद भाव छुटपन बड़पन का, नशने को मजबूर हुआ॥
ऊँच नीच कुल वंश आधियाँ, अगुरुलघुत्व गुण नशा रहा।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए वह, भक्त जिन्हें सिर झुका रहा॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, गोत्र कर्म हो नाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अगुरुलघुत्वगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

८. अव्याबाधत्व गुण

सांसारिक सुख-दुख के दाता, वेदनीय जब घातित हों।
तब न किसी को बाधा देते, तब न किसी से बाधित हों॥
दुख संकट बाधा जो हरता, अव्याबाध परम सुख है।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किए, वह भक्त उन्हीं के सम्मुख है॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, वेदनीय हो नाश।
सुनो! भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अव्याबाधत्वगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पुण्य बढ़ाकर द्रव्य सजाकर, भाव भक्ति से हम नाचें।
सिद्ध प्रभु सर्वोच्च तीर्थ का, आत्मशक्ति से यश वाचें॥
बदले में बस इतना चाहें, सुन लो अरजी चेतन नाथ।
सूर्य चाँद भू नभ जब तक हों, तब तक देते रहना साथ॥
चिदानन्द चिद्रूप है, सिद्धचक्र का धाम।
सिद्धचक्र प्रभु नाम को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणसंयुक्त अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जिनशासन में विश्व में, जो सर्वोच्च महान।
ऐसे सिद्ध समूह को, बारम्बार प्रणाम॥
अनन्त गुण में मग्न जो, पूजनीय भगवान।
वन्दनीय जो नित्य हैं, अतः करें गुणगान॥

(सखी)

शुद्धात्म ब्रह्म वैदेही, हे! अजर अमर अविनाशी।
चिद् ब्रह्मविलासी ज्ञानी, हे! सिद्धालय के वासी॥
हमको तो यही खबर है, सिद्धों का नाम अमर है।
हम सिद्ध शीघ्र बन जाएँ, यह मन में उठी लहर है॥१॥
जब मन में उठी लहर तो, लगती न दूर डगर है।
संसार लगे अब ऐसा, जैसे कि मधुर जहर है॥
जो अमृत देख चुका हो, वह कौन जहर को खाए।
उसकी कीमत हो कुछ भी, बस सिद्धामृत मिल जाए॥२॥

हे! परमपिता परमेश्वर, सामर्थ्य आपमें ऐसा।
कि तुम अपने भक्तों को, कर लेते अपने जैसा॥
आनन्दमयी हे आतम, हे चतुर चिदम्बर चेतन।
है यही प्रार्थना स्वामी, हमको भी अपना लो तुम॥३॥
हे! शुद्ध सिद्ध परमेष्ठी, दुष्कर्म नशाए जैसे।
निर्विघ्न हमें भी कर दो, माँ शिशु को करती जैसे॥
हे! नित्य निरंजन निर्मल, हो पापों का प्रक्षालन।
यों तीर्थ बनाने हमको, तुम रहो हृदय में क्षण-क्षण॥४॥
खलु चिच्चदेव परमातम, तुम हम से दूर न जाना।
हे! ज्ञान ज्योति सिद्धातम, झट हमको पास बुलाना॥
हे! चिदानन्द के रसिया(प्रेमी), तुम हम पर प्रसन्न रहना।
हो भले भिन्न तुम हमसे, पर कभी खिन्न न रहना॥५॥
हे! अखिल विश्व के गुरुवर, दो नूतनमति सन्मति भी।
हे! तेजस्वी ओजस्वी, विश्रान्त करो भव गति भी॥
हे! वीतराग विज्ञानी, विज्ञान नगर अभियंता।
यों रचना करो हमारी, हम बनें सिद्ध भगवंता॥६॥
हे! रत्नत्रय के जोहरी, हे! परमतृप्त शिवज्योति।
अब हमें निखारो ऐसे, ज्यों चमके हीरे-मोती॥
चैतन्य बाग के मालिक, चारित्र गंध रस भर दो।
अब अंतर पुष्प खिला के, चेतनमय सौरभ भर दो॥७॥
हे! चिन्मूरत बिनमूरत, हे! आत्मनगर के शिल्पी।
अब ऐसे हमें तराशो, ज्यों मूरत हो अन्तर की॥

हे! मुक्तिवधू के स्वामी, तुम मोक्षकुँवर कहलाए।
दो हमको वह वरमाला, जो मुक्तिरमा को भाए॥८॥
हे! आत्मकलश निर्माता, हे! सहजानन्द स्वरूपी।
अब हमें बना लो ऐसे, ज्यों नित्यानन्द अरूपी॥
हैं बंधु मित्र न रिश्ते, भय-रोग-शोक नहीं दुख भी।
कुछ ऐसा करो हमारा, संसार बचे न कुछ भी॥९॥
हे! अन्तर्यामी भगवन्, कुछ भी न नित्य यहाँ पर।
नित रहो हमारे मन में, हम जाएँ और कहाँ पर॥
गम्भीर वीर हे धीरा, हे! विश्ववन्द्य अखिलेश्वर।
करो भ्रान्ति दूर हमारी, साम्राज्य ज्ञान सर्वेश्वर॥१०॥
हम सिद्ध दशा कब पाएँ, बस यही हमारी इच्छा।
अब निज से निज को मिलने, दो साँची शिक्षा दीक्षा॥
हे! चिन्मय आश्रय दाता, श्रद्धा से हम भर आए।
जिनदर्शन निजदर्शन दो, 'सुव्रत' जिस पर ललचाए॥११॥

अनन्तगुण भण्डार है, पूर्ण कहे वह कौन।
हम तो श्रद्धा के सुमन, अर्पित कर हों मौन॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्त सिद्ध स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्त सिद्ध जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री भक्तामर विधान

स्थापना (दोहा)

आदिप्रभु की अर्चना, भक्तामर के साथ।
आज रचाएँ भक्त हम, अतः झुकाएँ माथ॥

(चौपाई)

मानतुंग से भाव नहीं हैं, चक्रि इन्द्र से द्रव्य नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः पुकारें हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर द्वन्द्व छोड़कर।
अंदर बाहर जय-जय गूँजे, हर प्रदेश बस तुमको पूजे॥
आह्वानन कर जोड़ें कड़ियाँ, प्रभु मिलन की आईं घड़ियाँ।
चौक रंगोली पुरा रहा मन, हृदय कमल ने दिया सिंहासन॥
विरह वेदना शीघ्र मिटा दो, या तो अपने पास बुला लो।
या अखियों से आओ भगवन्, साथ रहेंगे फिर तो हम-तुम॥

(सोरठा)

मिले मुक्ति का योग, शुद्ध आत्म उपयोग से।
अतः भक्ति का योग, करें शुद्ध त्रय योग से॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मानतुंग सी भक्ति नहीं है, चक्रि इन्द्र सी शक्ति नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः भक्ति को बिना छिपाए, प्रासुक जल पूजन को लाए।
चरण चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, भक्ति शक्ति के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

मानतुंग सी नहीं है समता, चक्रि इन्द्र सा सुख नहीं जमता।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, वन्दन को चंदन हम लाए॥
चरण चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, संकट में समता सिखला तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

मानतुंग सा रूप नहीं है, चक्रि इन्द्र से भूप नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, उज्ज्वल तंडुल हम भी लाए।
पुंज चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, जिन दीक्षा के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

मानतुंग सा त्याग नहीं है, चक्रि इन्द्र सा राग नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, पुष्प अंजली में हम लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, कमलासन के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मानतुंग से योग नहीं हैं, चक्रि इन्द्र से भोग नहीं हैं।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, ये नैवेद्य शुद्ध ले आए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, वीतरागता रस से भर तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मानतुंग सा ध्यान नहीं है, चक्रि इन्द्र का मान नहीं है।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥

अतः शक्ति को बिना छिपाए, पूजन को दीपक हम लाए।
करें आरती करके नमोऽस्तु, समवसरण के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

मानतुंग सी नहीं साधना, चक्रि इन्द्र सी नहीं कामना।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, धूप सुगंधित हम ले आए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, तीर्थंकर के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

मानतुंग सा रत्नत्रय ना, चक्रि इन्द्र से रत्न विजय ना।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, प्रासुक श्रीफल हम भी लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, मुक्ति वधू के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

मानतुंग सा नहीं आचरण, चक्रि इन्द्र सा नहीं समर्पण।
फिर भी पूजन तो करते हैं, आदिनाथ प्रभु को भजते हैं॥
अतः शक्ति को बिना छिपाए, अर्घ्य बनाकर हम भी लाए।
तुम्हें चढ़ाएँ करके नमोऽस्तु, सिद्धालय के योग्य बना तू॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमीं हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमीं दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मानतुंग सम हम भजें, आदिनाथ भगवान।
करके नमोऽस्तु हम करें, जयमाला गुणगान॥

(चौपाई)

जिनशासन की महिमा न्यारी, कह न सकेंगे हम संसारी।
अतः स्तुति का लिया सहारा, ये ही देगा मोक्ष किनारा॥१॥
जितने जो स्तोत्र भजन हैं, सब में प्रभु की भक्ति सृजन है।
लेकिन भक्तामर की पूजा, स्तोत्र पाठ सम कोई न दूजा॥२॥
छन्द-छन्द में काव्य-काव्य में, धर्म भरा है वाक्य-वाक्य में।
और कहें क्या गद्य-पद्य में, मंत्र भरे हैं शब्द-शब्द में॥३॥

इसीलिए तो भक्तामर का, चमत्कार अक्षर-अक्षर का।
अतिशय पाते हैं श्रद्धालु, निज वैभव पाते धर्मालु॥४॥
रोग-शोक भय बंध नशाएँ, ऋद्धि-सिद्धि धन सम्पद पाएँ।
अतः इष्ट है भक्तामर जी, उच्च श्रेष्ठ है भक्तामर जी॥५॥
शान्ति प्रदायक भक्तामर जी, भक्ति विधायक भक्तामर जी।
श्रद्धादायक भक्तामर जी, धर्म सहायक भक्तामर जी॥६॥
पाप विनाशक भक्तामर जी, पुण्य प्रकाशक भक्तामर जी।
आत्म रसिक है भक्तामर जी, स्वर्ग पथिक है भक्तामर जी॥७॥
पूज्य मंत्र है भक्तामर जी, मोक्ष तंत्र है भक्तामर जी।
अतिशयकारी भक्तामर जी, जय हो! जय हो! भक्तामर जी॥८॥

(सोरठा)

भक्तामर को पूज, जिन महिमा चिद्रूप हों।
गूँजें नमोऽस्तु गूँज, 'सुव्रत' शुद्ध स्वरूप हों॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...। (पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

१. सर्वविघ्नविनाशक-जिनपदवन्दन

(वसंततिलका)

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि -प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम्॥

(विष्णु)

भक्त सुरों के नत मुकुटों की, मणि चमकाते जो।
जग में फैला पाप-अँधेरा, पूर्ण मिटाते जो॥

भव-जल-पतितों के अवलंबन, बने युगादिक में।
उन जिन-चरण-कमल को सम्यक्, करूँ नमोऽस्तु मैं॥

(मात्रिक सवैया/आल्हा)

भक्तामर के नत मुकुटों की, मणियों में जो भरें प्रकाश।
जग में पसरौ पाप अँधेरौ, जो कर देवें सत्यानाश॥
भवसागर में डूबे जन खों, जो युगादि में भये जहाज।
नौंने से कर उने नमोऽस्तु, उनके गोड़े पर लूँ आज॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं विश्वविघ्नहारक-क्लीं महाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२. सकलरोग नाशक-स्तुति का संकल्प

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय - तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक- नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत् - त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥

सकल जिनागम तत्त्वज्ञान से, बुद्धि कला पाके।
त्रय जग का चित हरने वाले, गीत रचा गा के॥
सुर पतियों ने जिन जिनवर का, जग में यश गाया।
उन ही प्रथम जिनेश्वर की मैं, स्तुति करने आया॥

सबरे श्रुत की तत्त्व बुद्धि पा, जो खूबई बन गए हुसयार।
तीनंई जग के मन खों मोहें, ऐसे रच स्तोत्र हजार॥
बड्डे बड्डे स्तोत्रों सें सुरपति सें स्तुत जिनराज।
उन आदिबाबा की स्तुति, मोखों भी करनें है आज॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं नानामरसंस्तुत-सकलरोगहारक-क्ली महाबीजाक्षर सहित श्रीवृषभ- जिनाय अर्घ्यं...।

३. सर्वसिद्धिदायक-लघुता अभिव्यक्ति

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्
बालं विहाय जल -संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥

जिनके चरण कमल देवों से, नित अर्चित माने।
मैं निर्लज्ज बुद्धि बिन उनके, उद्यत गुण गाने॥
जैसे जल में चन्द्र बिम्ब जो, लगे ठहरने को।
तो बच्चे बिन कौन? अन्य वह, चले पकड़ने को॥

जैंसें जल में परबे वारी, चन्दा मामा की परछांई।
तन्नक से मौंड़ा मौंड़ी बिन, कौन पकरबे मचलै भाई॥
ऊँसइ मोय कछू नैं आवे, तौ भी सबरी लाज विसार।
सुर अर्चित जो पद उनके मैं, गुण गावे हो गओ तज्जार॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४. जलजन्तु-मोचक-अवर्णनीय जिनवर गुण

वक्तुं गुणान्गुण -समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर - गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त -काल - पवनोद्धत - नक्र- चक्रम्,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥

चारु चन्द्र सम गुण-समुद्र के, गुण-गण कौन कहे?
सुरपति जैसा भी निजमति से, कैसे उन्हें कहें?
मच्छ समूहों के सागर में, जब तूफाँ उठता।
तो वह अपने बाहुबलों से, कौन तैर सकता?॥

जैंसें सागर खों हातों सें, जे में हो मगरा घड़याल।
उत्तई पै तूफान उठैं तौ, पार करै को माई कौ लाल॥
ऊँसइ चन्दा मामा जैंसे, स्वच्छ गुणों के सागर जौन।
उनके गुण गा सकें नें सुरगुरु, तौ गावे में समरथ कौन॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं नानादुःखसमुद्रतारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

५. अक्षिरोग संहारक-उमड़ती हुई भक्ति प्रेरणा

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्॥

हे मुनीश! बस भक्ति भावना, से लाचार हुआ।
शक्ति हीन तुमरी थुति करने, मैं तैयार हुआ॥
जैसे निज बल बिना विचारे, हिरणी कैसे भी।
बस प्रीती से शिशु रक्षा को, लड़े शेर से भी॥

जैंसें अपने शिशु के लाने, लाड़ प्यार सैं राखनहार।
का हिरनी नैं लड़े शेर सैं, अपनी हिम्मत बिना विचार॥
ऊँसइ हिम्मत बिना विचारें, भक्ति भाव सैं मैं मजबूर।
हे मुनीश! आपइ कौ संस्तव, करबे उद्यत भओ भरपूर॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं सकलकार्यसिद्धिकारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

६. सरस्वती-भगवती-विद्या प्रसारक-स्तवन में मात्र भक्ति ही कारण

अल्प- श्रुतं - श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र -चारु -कलिका-निकरैक -हेतुः॥

मैं मूरख तो विद्वानों से, हँसी पात्र देखो।
लेकिन जबरन भक्ति आपकी, कहे बोलने को॥
आम मञ्जरी की ज्यों कोयल, देखे फुलबाड़ी।
तो होकर मजबूर बोलती, कुहु कुहु की वाणी॥

जैंसें जब बसंत में देखें, मधुर गुच्छ आमों कौ मौर।
तौ कोयल जौ बोलै ओ में, जौई एक कारन नैं और॥
ऊँसइ मैं अज्ञानी मोरी, खिल्ली उड़ाएँ जानमकार।
तौ भी मोय तुमारी भक्ति, करै बोलवै खौं लाचार॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसंपन्न-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

७. सर्वदुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक-पापक्षयी जिनवर स्तुति

त्वत्संस्तवेन भव - संतति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त - लोक- मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्॥

भौंरे जैसा रात अँधेरा, जो जग को ढाँके।
सूर्य किरण को देख भागकर, दूर कहीं काँपे॥
वैसे भव-भव में जीवों से, जो भी पाप हुए।
हे प्रभु! तेरे संस्तव से वे, क्षण में नाश हुए॥

ज्यों जग में भौंरे सी करिया, अँधयारे की पसरी रात।
किरन ताक एकइ सूरज की, झट्ट कुजाने कहाँ विलात॥
ऊँसइ दुनियाँ के मान्सों के, भव-भव के एकट्टे पाप।
नाथ! तुमारे संस्तव सैं बस, छिन में छय हों आपई आप॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं सकलपापफलकुष्टनिवारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

८. सर्वारिष्ट योग निवारक-प्रभु की प्रभुता का प्रभाव

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु- धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु ,
मुक्ता-फल - द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः॥

अल्प बुद्धि वाले मैंने यह, शुभ आरम्भ किया।
नाथ! आपका संस्तव मानो, छन्दोबद्ध किया॥
सज्जन जन का मन हर लेगा, कृपा आपकी से।
कमल पत्र पर जैसे जल कण, चमकें मोती से॥

मैं तन्नक सी बुद्धि बारौ, चालू करूँ बखान तुमाव।
एसों मानूँ कै जौ संस्तव, पाकै तुमरौ संग प्रभाव॥
ऊँसइ सबरौं कौ मन हर है, जैंसें साँचउं जल की बूँद।
कमलों के पत्तों पै गिर कैं, मोती सी चमकत है खूब॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं अनेकसंकट-संसारदुःखनिवारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

९. कथा ही पापनाशक है

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥

सूरज दूर रहे बस उसकी, किरणें ही मिलते।
पद्म सरोवर के सब पंकज, विकसित हों खिलते॥
हे! प्रभु विमल आपका संस्तव, उसका कहना क्या?
केवल कथा आपकी जग की, हर ले व्यथा कथा॥

जैंसें सूरज कौ का कैंनें, ओ की एकइ किरन निहार।
तालाबों के सबइ कमल तौ, हँसे खिलें लैं आँये बहार॥
ऊँसइ बिना दोष कौ संस्तव, ओ की का कैंनें है बात।
कथा अकेली हे प्रभु तोरी, जग के सबरे पाप नशात॥

ॐ ह्रीं णमो सभिण्णसोदाराणं सकलमनोवांक्षितफलदायक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

१०. कूकरविषनिवारक-भगवत् पददातृ भक्ति

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण ! भूत-नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः,
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥

भूतनाथ हे! जग आभूषण, इसमें विस्मय ना।
भू पर सद्गुण से थुति करता, तुम सम तुल्य बना॥
आखिर उस स्वामी से क्या? जो, अपने आश्रित को।
अपना वैभव दे अपने सम, कभी न करता हो॥

ये में भौत बड़ों का अचरज, हे जगभूषण! हे जगनाथ!
कै नौंने-नौंने सद्गुण सैं, जो करकैं स्तुति गुण-गात॥
वौ बन जाए तुमारे घांई, पर औ सैं का मतलब होए।
जो नैं बनावै अपने घांई, दे कैं अपनी दौलत मोय॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं अर्हज्जिनस्मरण-जिनसम्भूत-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

११. अभीप्सित आकर्षक-जिनदर्शन की महिमा

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः

पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ?॥

चन्द्र किरण सम क्षीर सिन्धु का, पीकर जल मीठा।
क्षारसिन्धु का कौन चाहता, पीना जल तीखा॥
यों ही बिना पलक झपकाये, दर्शन योग्य तुम्हीं।
तुम्हें देखकर जग की नजरें, टिके न अन्य कहीं॥

जैंसें चन्दा जैंसौ उजरौ, मीठौ क्षार सिन्धु कौ नीर।
पी कैं को चखबौ चाहेगौ, क्षार सिन्धु कौ खारौ नीर॥
ऊँसइ बिन पलकैं झपकायें, तुम तौ हौ दर्शन के लाक।
तुमें देख कैं और कितउँ तौ, टिकै लगै नैं मोरी आँख॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं सकलतुष्टिपुष्टिकारक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१२. हस्ति-मद विदारक, वांछित रूप प्रदायक-अनुपम सौन्दर्य

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि - भुवनैक - ललाम-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥

अद्वितीय जो एक त्रिजग में, तन सुन्दर प्यारा।
जिन शान्तिप्रिय अणुओं से वह, निर्मापित न्यारा॥
भू पर वे अणु बस उतने ही, बने जिन्हें पूजा।
अतः आप सम रूप सलौना, दिखे नहीं दूजा॥

तीन लोक के वे अणु जिनकौ, ठण्डौ पर गऔ सबरौ राग।
और भौत खबसूरत हैं जो, जिनसैं तोय बनाऔ नाथ॥

वे परमाणू ये धरती पै, उत्तइ हते विरागी रूप।
जबइं कोउ नैं तुमरे जैंसौ, खबसूरत चैतन्य सरूप॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं वांछितरूपफलप्रदायक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१३. लक्ष्मी-सुख प्रदायक, स्वशरीर रक्षक-सर्व उपमा विजयी मुख

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम्॥

कहाँ आपका मुख अति सुन्दर, सबके नेत्र हरे?
त्रय जग की सब उपमाओं पर, जो जय-विजय करे॥
और कहाँ वह मलिन चन्द्र जो, दागी कहलाए?
दिन में जिसकी सुन्दरता तो, फीकी पड़ जाए॥

कितै तुमाई सुन्दर सी मुंइयां, सुरासुरों की नजर चुराय।
जीतै तीनंई जग की सबरी, भौतइ खबसूरत उपमांय॥
और कितै बौ बिम्ब चाँद कौ, मैलौ-दागी सौ कहलाए।
जौन छेवले के पत्तों सौ, दिन में फीकौ सौ पर जाए॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं लक्ष्मीसुखविधायक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

१४. आधि-व्याधि नाशक-लोकव्यापी गुण

सम्पूर्ण- मण्डल-शशाङ्क - कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास् - त्रि-भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास् - त्रि-जगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥

पूर्ण चन्द्रमण्डल सम उज्ज्वल, गुण समूह तेरे।
तीन लोक को लाँघे जिनके, कण-कण में डेरे॥
मिलती जिनवर देव आपकी, उत्तम शरण जिन्हें।
जग में मनवांछित विचरण से, रोके कौन उन्हें?॥

पूरे चंदा जैंसे उजरे, स्वच्छ गुणों के कला कलाप।
वे तुमाय गुण तीनंई जग खौं, लांक-लांक जा कैवें बात॥
कै तीनंई जग के ईश्वर के, रहें आसरे बदलें चाल।
उनखौं इच्छा सें फिरवे सें, रोक सकै को माई कौ लाल॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं भूतप्रेतादिभयनिवारक क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१५. सम्मान सौभाग्य सम्बर्द्धक-अचल मेरु के समान प्रभुता की दृढ़ता

चित्रं - किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम्।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥

पर्वत कंपित करने वाले, प्रलयकाल से भी।
सुमेरु पर्वत क्या हिल सकता, कभी जरा सा भी॥
समद अप्सराओं से ऐसे, थोड़ा भी प्रभु मन।
कभी न विकृत होता इसमें, अचरज क्या? भगवन्॥

ये में का कैसों अचरज कै, सुर नटियों के तिरिया चरित्र।
तुमाय मन कौ तनक-मनक सौ, चिगा सकौ नैं सुन्दर चित्र॥
प्रलयकाल की जौन हवा सैं, हल्कौ पर्वत तौ हिल जाए।
पै का ओ सैं मंदर गिरि कौ, शिखर तनक सौ भी हिल पाए॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं मेरुवन्मनोबलकारक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१६. सर्व विजयदायक-प्रभो! आप अनोखे दीपक हो

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय - मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः॥

धूम्र बाति बिन तेल ज्योति बिन, अजब उजाले हो।
फिर भी त्रय जग करो प्रकाशित, जगत उजाले हो॥
जिसे आँधियाँ बुझा न पाएँ, कोई न जान सके।
आप अलौकिक दीपक ऐसे, 'जिन' को शीश झुके॥

धुआँ तेल उर बिना बाति के, तुम तौ आतम जोत जलाए।
ओ सैं सबरे तीनंई जग खौं, परकट करकैं तुमंई दिखाए॥
जौन पहारौं खौं झकझौरे, ऐंसी हवा बुझा नैं पाए।
सब संसार बताबै बारे, तुम तौ अद्भुत दिया कहाए॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं त्रैलोक्यलोकवशकारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१७. सर्वरोग निरोधक-सूर्य से भी अधिक महिमावन्त ज्ञान-भानु

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्- जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा- प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके॥

अस्त कभी ना होता जिसको, राहू डस न सके।
जिसके महा प्रभावों को भी, बादल ढँक न सके॥
एक साथ त्रय जग दिखलाते, जग में हो कैसे?
अधिक सूर्य से महिमा वाले, हो मुनीन्द्र! ऐसे॥

जो कब्भंऊ नैं डूबत होवे, जे खौं राहू ढक नैं पाए।
जे कौ करिया बदरों सैं तौ, कबऊं असर भी घट नैं पाए॥
तीनंई जग खौं सहज दिखावे, संसारी सूरज सैं तेज।
हे मुनीन्द्र! तुम तौ ऍंसे हौ, तुमें नमोऽस्तु होवे सिर टेक॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं पापान्धकारनिवारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

१८. शत्रु-सैन्य-स्तम्भक-अद्‌भुत मुखचन्द्र

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारम्,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्॥

महा मोह का अंध विनाशक, रहता उदित सदा।
कर न सके राहू भी कवलित, ढके न मेघ कदा॥
कान्तिमान मुख-कमल आपका, जगत प्रकाशक जो।
है अपूर्व वह चन्द्रबिम्ब सा, सदा सुशोभित हो॥

सदा उदित जो रैबे बारौ, मोह अँधेरौ जे सैं जात।
राहू मौं कौ कौर बनै नैं, बदरों सें जो छिप नैं पात॥
बेंजंइ तेज चमकबे बारौ, जो सब जग कौं हर कें अंध।
प्रभु! अपूरब चंदामंडल, सौ सोहे तुमाव मौं चंद॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

१९. उच्चाटनादि रोधक-सूर्य चन्द्र की अनुपयोगिता

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमः -सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल-धरै-र्जल-भार-नम्रैः॥

जैसे भू पर खड़ी फसल का, पूरा काम हुआ।
जल से भरे झुके मेघों का, तब क्या अर्थ हुआ॥
ऐसे ही मुखचन्द्र आपका, जब सब तम नाशे।
तो फिर दिन में सूर्य रात में, क्या हो चन्दा से ?॥

जैंसें सोहें फसलें पक कैं, जग में कटवे खों हो जात।
तौ जल के कारे बदरों कौ, कऔ तौ कारज का रै जात॥
ऊँसइ तुमांइ चंदा सी मुंइआ, करै अंध कौ काम तमाम।
तौ रातों में चंदा सैं का, दिन में सूरज सैं का काम॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं सकलकालुष्यदोषनिवारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

२०. संतान-सम्पत्ति-सौभाग्यप्रसाधक-महामणियों जैसा ज्ञान

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजो महा मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच -शकले किरणाकुलेऽपि॥

झिलमिल-झिलमिल मणियों में ज्यों, अतिशय चमक रही।
काँच खण्ड की किरणों में त्यों, चमचम दमक नहीं॥
ऐसे अनन्तज्ञान आप में, हे प्रभु! शोभित हो।
वैसे तुम से पर देवों में, कभी न ज्योतित हो॥

जैंसें जो असली मणियों की,चमक-धमक की फैले जोत।
का ऊँसी कब्भंउ काँचों की, चकाचौंध किरनों में होत॥
ऊँसइ तुममें ज्ञान भरौ जो, ओ की बात नैं सूझै मोय।
ऊँसौ ज्ञान अन्य देवों में, का सोहै! जो झूठौ होए॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं केवलज्ञानप्रकाशक-लोकालोकस्वरूपी-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२१. सर्वसौख्य-सौभाग्य-साधक-अलंकार पूर्वक स्तुति

मन्ये वरं हरि - हरा - दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि॥

पर देवों के दर्शन कर मैं, उनको श्रेष्ठ कहूँ।
जिन्हें देख बस नाथ आप में, मैं संतोष धरूँ॥
प्रभु तेरा दर्शन यह मुझको, क्या-क्या लाभ करे?
परभव में भी भू पर कोई, मेरा मन न हरे॥

मोय लगत है ऐंसों कै प्रभु, जग के सब प्रभु अच्छे होंए।
लेकिन जब सैं तोखों देखौ, साँचउं कोऊ जमे नैं मोय॥
आपई में संतोष मिलत है, और लाभ का तोसैं होए।
ये धरती पै और कोउ तौ, रिझा सकै नैं कब्भंऊ मोय॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं सर्वदोषहर-शुभदर्शक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२२. भूत-पिशाचादि-बाधा निरोधक-अपूर्व माता

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम्॥

जगमग-जगमग तारा-गण तो, धारें सभी दिशा।
पर तेजस्वी सूरज तो बस, जन्मे पूर्व दिशा॥
यूँ ही सौ-सौ सुत को जनती, सौ-सौ नारी माँ।
पर प्रभु सम अनुपम सुत जनती, कहीं न ऐसी माँ॥

सौ-सौ लुगाइएँ सौ-सौ मौंड़ा, जनत रेत हैं सौ-सौ ठौर।
पर तुम सौ जो मौंड़ा जन्में, वा मताई है नंइयां और॥
जैंसें तरइयों की टिमकारें, सबई दिशाओं खौं टिमकांय।
लेकिन पूरब दिशा अकेली, परतापी सूरज जन पाय॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं अद्भुतगुणसंपन्न-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२३. प्रेतबाधा निवारक-मोक्षमार्ग दर्शक

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य - गुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥

परमपुरुष तुमको मुनि मानें, निर्मल नेता हो।
सूरज जैसे आप सुनहरे, तिमिर विजेता हो॥
बस तुमको ही सम्यक् पाकर, मृत्यु पर जय हो।
हे मुनीन्द्र! शिव मोक्ष मोक्षपथ, तुमसे अन्य न हो॥

हे मुनीन्द्र! तुमखों मुनियों नैं, सूरज के रँग को बतलाऔ।
परम पुरुष जैंसे तुम निर्मल, मोह अँधेरौ तुंमई नशाऔ॥
मौत जीत कें मृत्युंजय तौ, बन जावें पाकर कैं तोय।
ये के सिवा मोक्ष पावे को, भलों नैं दूजौ रस्ता होए॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं सहस्त्रनामाधीश्वर-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२४. शिरोरोग शामक-प्रभु के पर्यायवाची नाम

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।

योगीश्वरं विदित - योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति संतः॥

अव्यय अचिन्त्य असंख्य विभु हो, आदिम ईश्वर हो।
अनन्त ब्रह्मा काम-केतु हो, तुम योगीश्वर हो॥
विदित योग शुचि ज्ञान स्वरूपी, एक अनेक तुम्हीं।
संत जनों ने यथा आपकी, नामावली कही॥

सज्जन कहें आप खों अव्यय, विभू असंख्य आद्य अचिन्त्य।
विदित योग योगीश्वर ईश्वर, अनंगकेतू अमल अनन्त॥
एक अनेक ज्ञान स्वरूप भी, और लेत ब्रह्मादि के नाम।
मोय कछू नें सूझै मैं तौ, करकें नमोऽस्तु करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं मनोवांछितफलदायक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२५. दृष्टिदोष निरोधक-बुद्ध शिव शंकर आप ही हो

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय- शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥

सुर अर्चित हो केवलज्ञानी, अतः बुद्ध तुम हो।
त्रय जग को सुख देने वाले, सो शंकर तुम हो॥
मोक्षमार्ग के आदि प्रवर्तक, धीर! विधाता हो।
तुम ही हो भगवन् पुरुषोत्तम, तुमरी जय-जय हो॥

विद्वानों सें पूजित हौ सो, आपई रये बुद्ध भगवान।
तीनंई जग में शान्ति करौ सो, आपई हौ शंकर भगवान॥

मोक्षमार्ग की विधि कैबें से, आपई हौ ब्रह्मा भगवान।
प्रभु! आपई नारायण हौ सो, मैं तौ खूबई करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं षड्दर्शनपारंगत-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभ जिनाय अर्घ्यं...।

२६. अर्द्धशिरः पीड़ा विनाशक-अतः आपको नमस्कार हो

तुभ्यं-नमस् - त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं-नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं - नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं-नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥

त्रिभुवन के दुख हर्त्ता प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो।
भू पर निर्मल भूषण प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो॥
त्रय जग के परमेश्वर प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो।
भवसागर शोषक जिन प्रभु को, सदा नमोऽस्तु हो॥

त्रय जग कौ दुख हरबे बारे, तोखों खूब नमोऽस्तु होए।
धरती के उजरे आभूषण, तोखों खूब नमोऽस्तु होए॥
हे! तीनंइ जग के परमेश्वर, तोखों खूब नमोऽस्तु होए।
हे जिन! भवसागर के शोषक, तोखों खूब नमोऽस्तु होए॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं नानादुःखविलीनक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२७. शत्रु-उन्मूलक-पूर्ण निर्दोष

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोऽसि॥

सभी गुणों को इस जग में जब, आश्रय नहीं मिला।
इसमें क्या आश्चर्य आपका, आश्रय उन्हें मिला॥
किन्तु घमण्डी सभी दोष जो, पर में खूब टिकें।
हे मुनीश! वे दोष आपमें, सपने में न दिखें॥

हे मुनीश! जब सबइ गुणों नें, कितउँ कोनिया लौ नें पाई।
तौ तुमाय लिंगा सब दौरे, तुमखों पाके शान्ति पाई॥
और आसरे भौतइ पाकें, दोष घमण्डी सबरे होए।
वे सपने में दिखे नैं तुममें, ये में अचरज कैंसो मोय॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं सकलदोषनिर्मुक्त-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभ जिनाय अर्घ्यं...।

२८. <u>सर्व-मनोरथ प्रपूरक-अशोकवृक्ष प्रातिहार्य</u>

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् - किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति॥

जिसकी ऊपर उठती किरणें, अंध विनाशक जो।
बादल दल के निकट विराजित, जैसे सूरज हो॥
निर्विकार हो सबसे सुन्दर, प्रभु तन ज्योतित हो।
उच्च अशोक वृक्ष के नीचे, खूब सुशोभित हो॥

ऊँचे अशोक तरु के नेंचें, हे प्रभु! तुमरौ सुन्दर रूप।
ऐंसें सोहै जैंसें सांचउं, जे की फैंलें किरनें खूब॥
जौन अंधेरौ सबइ मिटाबै, बदरों के बाजू में होए।
ऐंसे सूरज बिम्ब सरीखे, लगौ सुहाने तुमतौ मोय॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं अशोकतरु-प्रातिहार्ययुक्त-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

२९. नेत्रपीड़ा विनाशक-सिंहासन प्रातिहार्य

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता-वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्त्र-रश्मेः॥

मणि किरणों से रंग बिरंगा, सुन्दर सिंहासन।
उस पर सोने जैसे चमके, नाथ! आपका तन॥
यों लगता ज्यों उदयाचल की, ऊँची शिखरों से।
नभ में पूरा हुआ प्रकाशित, सूर्य बिम्ब जैसे॥

जड़े खचाखच रत्न जौन में, जो छोड़ें किरनों की छाप।
ओ सिंहासन पै सोने से, सुन्दर ऐंसे चमको आप॥
जैंसे ऊँचे गिरी शिखर पै, नभ में अपनी किरन बिखेर।
सूरज बिम्ब सरीखे सोहौ, मोरी तरफ तनक तौ हेर॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं मणिमुक्ताखचितसिंहासन-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३०. शत्रु-स्तम्भक-चँवर प्रातिहार्य

कुन्दावदात - चल - चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क- शुचिनिर्झर - वारि -धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

दोनों तरफ कुन्द पुष्पों सम, धवल चँवर ढुरते।
और बीच में स्वर्णिम तन सम, प्रभु शोभित रहते॥
यों लगता जैसे सुरगिरि के, स्वर्णिम तट पर से।
चन्दा सम उज्ज्वल झरनों की, धाराएँ बरसें॥

स्वच्छ कुन्द के फूलों जैंसे, भले ढुरत चँवरों के बीच।
तुमाई तौ सोने सी काया, चमकै जी पै दुनियाँ रीझ॥
ऐंसें सोहें जैंसे ऊँचे, मेरु के तट सोने घाँई।
उतईं बैत झरनों सें ऊँगै, चम-चम चंदा की परछाँईं॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं चतुःषष्टिचामर-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

३१. राज्य-सम्मान दायक-छत्रत्रय प्रातिहार्य

छत्र - त्रयं तव विभाति शशाङ्क- कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु - कर - प्रतापम्।
मुक्ता - फल - प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् - त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

रवि किरणों के ताप रोकने, उच्च अवस्थित हैं।
मुक्ता मणियों की लड़ियों से, सुन्दर निर्मित हैं॥
चन्दा जैसे तीन छत्र जो, सबको भाते हैं।
त्रय जग के तुम परमेश्वर हो, यही बताते हैं॥

चंदा जैंसे खूबई सोहें, रोकें सूरज कौ संताप।
मोती की झालर बारे जे, लटकें ऊपर आपई आप॥
तीनंई छतर बताबें जौ कि, तीनंई जग के तुम सम्राट।
मोखों दै दो अपनी छईयां, मैं तौ ताकूं तोरी बाट॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं छत्रत्रय-प्रातिहार्ययुक्त-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३२. संग्रहणी-संहारक-दुन्दुभि प्रातिहार्य

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य - लोक -शुभ - सङ्गम -भूति-दक्षः।
सद्धर्म - राज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥

जिसके गहरे उच्च स्वरों से, गुंजित दसों दिशा।
त्रय जग को सत्संग कराने, में जो निपुण रहा॥
दुन्दुभि बाजा यथा आपका, नभ में गूँज रहा।
मृत्युराज पर धर्मराज की, जय को बता रहा॥

सबई दिशाओं में जो गूँजै, हो-हो कैं खूबई गंभीर।
तीनंई जग खौं धर्म समागम, कौ वैभव दैबे में वीर॥
जैन धर्म के स्वामी जी के, यश की वाँचै जय-जयकार।
बजें ढोल रमतूला नभ में, जोई दुन्दुभी प्रातिहार्य॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभचारीणं दुन्दुभि-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३३. सर्वज्वर संहारक-पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-
संतानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद - बिन्दु- शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥

पारिजात मन्दार नमेरू, संतानक आदि।
सुर पुष्पों के साथ सुगंधित, हों जल कण आदि॥
मिश्रित नभ से मन्द-मन्द हो, दिव्य सुमन वर्षा।
यों लगती ज्यों जिनवर की हो, दिव्य वचन वर्षा॥

महकदार पानी की बूंदें, संगै-संगै मन्द बयार।
सुन्दर पारिजात संतानक, फूल नमेरु हैं मन्दार॥
जे सबरे मिल जब बरसें तौ, साँचउं ऐंसौ लागे मोय।
जैंसें तोरे वचनामृत की, नभ से झर-झर बरसा होए॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं समस्तजातिपुष्पवृष्टि-प्रातिहार्ययुक्त-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३४. गर्भ-संरक्षक-भामण्डल प्रातिहार्य

शुम्भत् - प्रभा- वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक - त्रये - द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्- दिवाकर-निरन्तर - भूरि -संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि-सोम-सौम्याम्॥

बहुत सूर्य हों उदित निरन्तर, जो उज्ज्वल चमके।
लेकिन चन्दा जैसा शीतल, जो सुन्दर दमके॥
जो जीते त्रय जग के सुन्दर, सभी पदार्थों को।
यों उज्ज्वल भामण्डल तेरा, जीते रातों को॥

तीनंई जग में जो चमकत हैं, उन सबरों की चमक लजाय।
सदा ऊगबे बारे लाखों, सूरज जैसों चमकत जाय॥
चन्दा जैसों सुन्दर-सुन्दर, भामण्डल है भौत विशाल।
जे की चमक रात खौं जीते, मोय बना दे चेतन लाल॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं कोटिभास्करप्रभामण्डितभामण्डल-प्रातिहार्य युक्त-क्लींमहाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३५. ईति-भीति निवारक-दिव्यध्वनि प्रातिहार्य

स्वर्गापवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म- तत्त्व - कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य- ध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥

स्वर्ग मोक्ष जाने वालों को, जो दे दिग्दर्शन।
सच्चा धर्म तत्त्व कहने में, त्रय जग में सक्षम॥
सब भाषा में परिवर्तित हो, विशद अर्थ वाली।
यथा दिव्य ध्वनि नाथ! आपकी, ओम्-कार वाली॥

स्वर्ग मोक्ष जाबे बारों खौं, गैल ढूँढ़बे करै सहाय।
तीनंई जग के जीव जन्तु खौं, साँचौ धर्म तत्त्व समझाय॥
साँचौ हितकौ अर्थ बताबै, सब भाषा में घुल मिल जाए।
ऐंसी तोरी दिव्य धुनी है, तन मन के सब रोग नशाए॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं जलधरपटलगर्जित-सर्वभाषात्मकयोजनप्रमाण-दिव्यध्वनि-प्रातिहार्य-युक्त-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३६. लक्ष्मीदायक-स्वर्ण कमलों की रचना

उन्निद्र - हेम - नव - पङ्कज - पुञ्ज-कान्ती,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥

नये सुनहरे कमलों जैसे, चमकदार जो हैं।
जिनके नख की किरण शिखाएँ, कान्त मनोहर हैं॥
नाथ! आपके चरण-कमल यों, जहाँ आप धरते।
वहीं देवगण दिव्य कमल की, शुभ रचना करते॥

नये-नये से खिले खुले से, कुन्दन जैंसे कमल समूह।
जिनके नौं की किरनें चमकें, सबई ओर सें खूबइ खूब॥
ऐंसे चरन तुमारे सुन्दर, जितै धरौ तुम हे भगवान।
उतइं देव कमलों खौं रच कैं, धरती कर दें रतन समान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं पादन्यासे-पद्मश्रीयुक्त-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३७. दुष्टता प्रतिरोधक-अद्वितीय विभूति

इत्थं यथा तव विभूति - रभूज् - जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।

यादृक् – प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्–कुतोग्रह–गणस्य विकासिनोऽपि॥

इस विधि दिव्य देशना वाला, अतिशय वैभव जो।
हे जिनवर! ज्यों हुआ आपका, नहीं अन्य का हो॥
जैसे अंध विनाशक कान्ती, सूरज की होती।
वैसी झिलमिल तारेगण की, कैसे हो ज्योति?॥

जैंसें सूरज जोती सैं हो, अँधयारे कौ सत्यानाश।
टिम–टिम करते और ग्रहों कौ, का ऊँसौ हो सके प्रकाश॥
ऊँसई भयी विभूती तोरी, लगी सभा जब तत्त्व बताए।
का ऊँसी है और कोउ की, तुम सौ कोउ नजर नैं आए॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं धर्मोपदेशसमये–समवसरणादि–लक्ष्मीविभूति–विराजमान–क्लीं–महाबीजाक्षर–सहित–श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३८. वैभववर्धक–हस्ति भय निवारक भक्ति

श्च्यो–तन् – मदाविल–विलोल–कपोल–मूल,
मत्त – भ्रमद् – भ्रमर – नाद – विवृद्ध–कोपम्।
ऐरावताभमिभ – मुद्धत – मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥

मद से मटमैले गालों से, जब मद है झरता।
जिस पर भ्रमर गूँज से जिसका, क्रोध खूब बढ़ता॥
ऐसा ऐरावत जिद्दी गज, जब आगे दिखता।
तो भी तेरे शरणागत को, कभी न डर लगता॥

गण्डस्थल सैं मद झर रऔ है, जे पै भौंरे भी मंडराएँ।
जे सें ओ कौ क्रोध बढ़ै सो, इतै–उतै फिरकैं पगलाएँ॥

खूब ऊधमी सौ ऐरावत-हाथी सामें सैं आ जाए।
ओ खों देख डरै नैं वौ तौ, जो तोरी छइयाँ पा जाए॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं हस्त्यादिसर्वदुर्द्धर-भयनिवारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

३९. सिंह-शक्ति संहारक-सिंह भय से मुक्त जिनेन्द्र भक्ति

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल-शोणिताक्त,
मुक्ता - फल - प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध - क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगाचल-संश्रितं ते॥

जिसने गज के गंडस्थल को, चीर फाड़ डाले।
लाल-लाल गजमुक्ता भू पर, खूब बिछा डाले॥
ऐसा सिंह भी निज पंजों से, उनको क्या मारे?
जिसने जिनवर के चरणों का, लिया सहारा रे॥

फाड़-फूड़ कैं गण्डस्थल खों, हाथी के सिर सैं बगराए।
खून-मांस सैं लतपथ उजरे, मुक्ताओं सैं भू चमकाए॥
खूब छलांगें मार-मार कें, करैं वार पंजों में डार।
ऐंसौ शेर नैं मारे ओखों, जो पाए प्रभु चरन-पहार॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं युगादिदेवनामप्रसादात् केशरिभयविनाशक-क्लीं महाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४०. सर्वाग्नि-शामक-नाम स्मरण से दावानल शमन

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित - मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम -कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम्॥

अंगारों की चिनगारी जो, उज्ज्वल धधक रही।
प्रलयकाल की तेज पवन से, तो जो भड़क रही॥
ऐसी वह वन आग सभी को, जो खाने आए।
उसे आपका प्रभु-कीर्तन जल, शीघ्र बुझा जाए॥

भौत भयंकर प्रलयकाल की, बेहर सें जो भई विकराल।
जे के चिट-चिट तिलगा उचटें, खूबई धधके लालई लाल॥
दुनियाँ खौं खाबे सी दौरै, वन-आगी सामें सैं आए।
तौ भी तोरे नाम गुणों के, कीर्तन जल सैं सब बुझ जाए॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं संसाराग्निताप-निवारक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४१. सर्पभय भंजक-भुजंग भयहारी नाम नागदमनी

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः॥

मतवाली कोयल के कंठों, जैसा हो काला।
क्रोधित उठे हुए फन वाला, लाल नयन वाला॥
ऐसा नाग लांघ जाते वे, पग से निर्भय हो।
प्रभु की नाम नाग-दमनी को, रखें हृदय में जो॥

मतवारी कोयल सी करिया, जे की आँखें लालई लाल।
करकैं क्रोध भऔ उद्दण्डी, तबई उठाकें फन विकराल॥
ऐंसे साँप खों दोई पाँव से, हो कें निडर लाँक वो जाए।
जे के दिल में तुमाय नाम की, दवा नाग दमनी आ जाए॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसंपन्न-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४२. युद्धभय विध्वंसक-संग्रामभय विनाशक जिन-कीर्तन

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम - इवाशु भिदामुपैति॥

जहाँ हिनहिनाहट घोड़ों की, गज की चिंघाड़ें।
यों रणक्षेत्र जहाँ बलशाली, शत्रु ललकारें॥
वहाँ आपके बस कीर्तन से, कष्ट टलें ऐसे।
उगते सूर्य किरण से जल्दी, अंध नशे जैसे॥

जितै खूब घुड़वा उचकत हों, होय हाथियों की चिंघार।
उतईं भयंकर शत्तुर सेना, कर रई होवै खूब दहार॥
युद्धों में तोरे कीर्तन सें, शत्रु कौ भऔ ऐंसौ काम।
जैंसें उगत सूर्य की किरनें, करें अंध कौ काम तमाम॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं संग्राममध्ये-क्षेमङ्कर-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४३. सर्व शान्तिदायक-शरणागत की युद्ध में विजय

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय - पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते॥

योद्धाओं ने भालों द्वारा, फाड़ दिए हाथी।
रक्त वेग में आने-जाने, को आतुर साथी॥
ऐसे क्रूर युद्ध में जो जन, तेरा आश्रय लें।
वे अपराजित दुश्मन पर भी, तुरत विजय पा लें॥

भालों की नोकों से फाड़े, हथियों कौ बै रऔ है खून।
ओई धार खों पार करन खों, जोद्धाओं खों चढ़ौ जुनून॥
ऐंसे महाभयंकर रन में, शत्रु पै जय मुश्कल होए।
तो तोरौ पा चरन कमल वन, शत्रु पै जय पक्की होए॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं वनगजादिभयनिवारक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४४. सर्वापत्ति विनाशक-नाम स्मरण से निर्विघ्न समुद्र यात्रा

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ-भय-दोल्वण - वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग - शिखर - स्थित - यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति॥

जहाँ भयंकर बड़वानल हों, मगरमच्छ भी हों।
बहुत बड़ी पाठीन मीन से, सागर कंपित हों॥
जहाँ फँसे जलयान तरंगित, जिनके हो जाते।
वहीं आपके बस सुमरन से, अभय लक्ष्य पाते॥

जितै भयंकर मगरा होवें, और मछरियों की टकरार।
संगै-संगै बडवानल सैं, भऔ समुन्दर लहरोंदार॥
ओ में फँसौ जहाज होए तौ, यात्री तौ खूबई घबरांए।
लेकिन तोरौ सुमरन करकैं, होकें निडर पार हो जांए॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं संसाराब्धितारक-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४५. जलोदरादिरोग एवं सर्वापत्ति संहारक-व्याधि विनाशक चरणरज

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्-च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद - पङ्कज - रजो - मृत - दिग्ध - देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्यरूपाः॥

हुआ भयंकर रोग जलोदर, जिससे कमर झुकी।
करुण दशा से जीवन आशा, जिनकी बिखर चुकी॥
ऐसे मानव नाथ! आपकी, चरणामृत पाके।
कामदेव सम रोग मुक्त हों, सुन्दर बन जाते॥

भौत भयंकर भऔ जलोदर, जे सें झुक गई हो करहाई।
जे सें भई दयनीय दशा सो, जीवे की सब आश गंमाई॥
असाध्य रोगी भी तौ तोरे, चरनामृत की धूर लगाएं।
कामदेव सें खूबई जादा, स्वस्थ मस्त नौनें हो जाएं॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं दाहतापजलोदराष्ट-दशकुष्टसन्निपातादि-रोगहारक-क्लींमहाबीजाक्षर-सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४६. बंधन विमोचक-नाम जाप से बंधन मुक्ति

आपाद - कण्ठमुरु - शृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढं-बृहन्-निगड-कोटि निघृष्ट - जङ्घाः।
त्वन् - नाम - मंत्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति॥

बड़ी-बड़ी साँकल के द्वारा, बाँधा बहुत कड़ा।
पैरों से सम्पूर्ण कंठ तक, तन जिनका जकड़ा॥
महाबेड़ियों से घिर करके, जिनके पाँव छिले।
तेरे नाम मंत्र से उनके, भय के बंध टले॥

गोड़े सें लै कें घुटकी लौं, बड्डी कसी साँकरें होंए।
जे की नौकों सें तन छिल गऔ, खूबई छिल गईं जांगें होंए॥
ऐंसे मान्स निरंतर सुमरें, तोरे नाम मंत्र कौ जाप।
तौ झट्टईं बंधन के भय सैं, मुक्त होंये वे आपई आप॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं नानाविधकठिनबंधन-दूरकारक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभ-जिनाय अर्घ्यं...।

४७. अस्त्र शस्त्रादि शक्ति निरोधक-सम्पूर्णभय निवारक जिन स्तवन

मत्त-द्विपेन्द्र - मृग - राज - दवानलाहि-
संग्राम - वारिधि - महो - दर - बन्ध -नोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुप - याति भयं-भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमान-धीते॥

जो ज्ञानी जन इस संस्तव को, भक्ति सहित पढ़ता।
उसे शेर पागल हाथी का, कभी न भय रहता॥
युद्ध जलोदर सागर बंधन, दावानल का भय।
बाल न बाँका उनका करले, उनकी होवे जय॥

हे बाबा! तोरौ जौ स्तव, ज्ञानी जो भी पढ़ै पढ़ाय।
वौ तौ शेर नशीले हाँती, साँप युद्ध सैं नैं घबराय॥
ओ कौ सागर और जलोदर बंधन कौ डर ऐंसो जाए।
जैंसें डर खुद डरा-डरा कैं, झट्टइँ गदबद दै भग जाए॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं बहुविधविघ्नविनाशक-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

४८. सर्व-सिद्धिदायक-स्तुति का फल

स्तोत्र-स्त्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता- मजस्त्रम्,
तं मानतुङ्ग-मवशा-समुपैति लक्ष्मीः॥

मैंने यह जो भक्ति-भाव से, गुण तेरे चुनके।
बहुरंगी पुष्पों की माला, गूँथी है बुनके॥
इस संस्तव माला को जो नित, अपने कंठ धरे।
हे जिनवर! वह 'मानतुंग' सम, लक्ष्मी अवश वरे॥

हे जिनेन्द्र! जा मैंने तोरी, भक्ति गुणौ कौ धागौ डार।
माला गूंथी रंग बिरंगी, अक्षर वारी फूलोंदार॥
तोरी जा स्तुति की माला, धरै गरे में जो दिन रात।
'मानतुंग' के घांई बनैं वे, मोच्छ लच्छमी झट्टइँ पात॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सकलकार्यसाधनसमर्थ-क्लीं महाबीजाक्षर सहित-श्रीवृषभजिनाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

लाखों और करोड़ों मुख से, कर न सकेंगे हम गुणगान।
बिना आपके आ न सकेंगे, जहाँ विराजे हो भगवान्॥
परेशानियाँ लाभ-हानियाँ, प्रभू कृपा से हों आसान।
अतः हाथ सिर पर रख दो तो, हम बन जाएंगे भगवान॥

केवल कृपा आपकी पाने, अड़तालीस चढ़ाए अर्घ्य।
फिर भी मन में तृप्ति नहीं तो, हम ले आए हैं पूर्णार्घ्य॥
अर्घ्य चढ़ाकर भाव बनाए, संकट में ना हों हैरान।
आतम परमातम की श्रद्धा, मिले आप से बस भगवान्॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशत्-दलकमलाधिपति-क्लींमहाबीजाक्षरसहित-श्री वृषभ-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(यदि अनुकूलता हो तो ऋद्धि मंत्र के अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं)

ऋद्धि-मंत्रों के अर्घ्य

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।

७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सभिण्णसोदाराणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।

३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसाहूणं झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मानतुंग सी बेड़ियाँ, आदिनाथ से कर्म।
भक्त तोड़ने को धरें, जयमाला का धर्म॥

(ज्ञानोदय)

हमको पंचमकाल मिला तो, चौबीसी तो मिल न सकी।
लेकिन उनके बिम्ब पूजकर, भक्ति भावना जाग उठी॥
उनमें प्रथम वृषभ तीर्थंकर, जन्म अयोध्या में धारे।
तत्त्वज्ञान दे अष्टापद से, मोक्ष पधारे प्रभु प्यारे॥१॥

अतः भरत भारत में शासन, आदिवीर का चलता है।
तत्त्व विरोधी इंसानों को, सही धर्म यह खलता है॥
तभी धर्म धर्मात्मा-जन को, उपसर्गों के शूल मिलें।
पर उसका हो बाल न बाँका, जिसे आदि की धूल मिले॥२॥
ऐसी एक घटी दुर्घटना, जो श्रद्धा मजबूत करे।
जिनशासन का मर्म समझने, हर मत को मजबूर करे॥
राजा भोज बड़ा ज्ञानी था, धर्मालू श्रद्धालू था।
किन्तु एक मंत्री था उसका, जो मानी ईर्ष्यालू था॥३॥
जिनशासन का कट्टर दुश्मन, सबको जिसने भड़काया।
तभी धनंजय कवि की रचना, चुरा 'नाममाला' लाया॥
जिसके कारण कालीदास के, विचलन में न हुई देरी।
रचनाओं को जैन चुराते, नाममाला तो है मेरी॥४॥
बुला धनंजय को ये पूछा, ये रचना क्या तेरी है।
कालीदास कहते यह मेरी, कहें धनंजय मेरी है॥
यह रचना सचमुच किसकी है, यह निर्णय तो मुश्किल था।
जिसे याद हो उसकी है यह, राजा का ऐसा हल था॥५॥
कालीदास तो सुना न पाए, कही धनंजय ने पूरी।
सब समझे पर कुछ न बोले, थी राजा की मजबूरी॥
करके याद सुनाने से क्या, उनकी हो जाती रचना।
कालीदास भड़ककर बोले, यह तो मेरी है रचना॥६॥
ऐसे ही जैनों के मुनि भी, रचना खूब चुराते हैं।
अगर परीक्षा करनी तो मुनि, मानतुंग को लाते हैं॥
जिनको लाने पहुँचे तो वो, आने को तैयार न थे।
जिनशासन की शान घटाने, समझौते स्वीकार न थे॥७॥

तब राजा ने क्रोधित होकर, जंजीरों से बँधवाकर।
अड़तालिस दरवाजे वाले, कारागृह में डलवाकर॥
बड़े-बड़े ताले डलवाये, पहरा खूब लगाया था।
मानतुंग मुनिवर को सबने, झुकने को धमकाया था॥८॥
झुके न टूटे न घबराए, ना ही आतम ध्यान किया।
लेकिन आदिनाथ स्वामी का, भक्तामर ये गान किया॥
ज्यों पद बने खुले त्यों ताले, सब जंजीरें टूट चुकीं।
देख जेल के बाहर मुनि को, प्रजा शर्म से झुकी-झुकी॥९॥
क्रमशः तीन बार मुनिवर को, कारागृह में डलवाये।
लेकिन सुबह देखकर बाहर, राज-प्रजा कवि घबराए॥
इस घटना की खबर हुई तो, लगी गूँजने जय-जयकार।
थे शर्मिंदा राज-प्रजा कवि, खूब हुई फिर हाहाकार॥१०॥
क्षमा याचना कर राजा ने, खुद को दोषी ठहराया।
क्षमा दान कर सबको मुनि ने, जैन धर्म को चमकाया॥
भक्तामर स्तोत्र की रचना, दुनियाँ में विख्यात हुई।
आदिनाथ से मानतुंग की, जग में नई प्रभात हुई॥११॥
चाहे ब्राह्मी सुन्दरी हो या, सोमा सीता रानी हो।
चाहे भरत बाहुबलि हों या, वादिराज सम ज्ञानी हो॥
जो भी तुम्हें पुकारे उसकी, हरो सभी दुख जंजीरें।
आदिप्रभु सम वो प्रकटा ले, निज में जिन की तस्वीरें॥१२॥
अतः बुजुर्गों ने बनवाए, आदिप्रभु के मंदिर हैं।
तभी अयोध्या अष्टापद से, भक्तों के मन मंदिर हैं॥
नजर-नजर में डगर-डगर में, आदिप्रभु के अतिशय हों।
भले जमाना दुश्मन हो पर, जिन भक्तों की ही जय हो॥१३॥

पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, विजय पताका उड़ती है।
कुण्डलपुर के बाबा जैसी, सबमें भक्ति उमड़ती है॥
यदि मुनि 'सुव्रत' मानतुंग सम, भक्तामर का पाठ करें।
मिटें रोग सब हटें उपद्रव, जिनशासन के ठाठ बढ़ें॥१४॥

(सोरठा)

भुक्ति मुक्ति की राह, आदिप्रभु की भक्ति है।
सो नमोऽस्तु की चाह, रखते जब तक शक्ति है॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वकर्मविनाशनाय आगतविघ्नभयनिवारणाय श्रीवृषभ-जिनाय अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

षोडशकारण व्रत जाप्य मंत्र

(समुच्चय जाप्य- ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारण भावनायै नमः।)

१. ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-भावनायै नमः। २. ॐ ह्रीं विनयसंपन्नता-भावनायै नमः। ३. ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतीचार-भावनायै नमः। ४. ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै नमः। ५. ॐ ह्रीं संवेग-भावनायै नमः। ६. ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग-भावनायै नमः। ७. ॐ ह्रीं शक्तितस्तप-भावनायै नमः। ८. ॐ ह्रीं साधुसमाधि-भावनायै नमः। ९. ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरण-भावनायै नमः। १०. ॐ ह्रीं अर्हत्भक्ति-भावनायै नमः। ११. ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै नमः। १२. ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै नमः। १३. ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै नमः। १४. ॐ ह्रीं आवश्यकअपरिहाणि-भावनायै नमः। १५. ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै नमः। १६. ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्व-भावनायै नमः।

कल्याणमंदिर विधान

स्थापना (हरिगीतिका)

कल्याणमंदिर को नमन कर, पार्श्वप्रभु को पूज लें।
दुख संकटों को दूर करके, चेतना सुख खोज लें॥
इस भाव से हम द्रव्य लेकर, पूरते रंगोलियाँ।
यदि आप के चरणा पड़ें तो, हों दिवाली होलियाँ॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान को, मन मंदिर में धार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

कल्याणमंदिर का सरस जल, जन्म मृत्यु दुख हरे।
जिनभक्ति की महिमा दिखाकर, चेतना में सुख भरे॥
चैतन्य जल की प्राप्ति हेतु, भेंट जल हम कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कल्याणमंदिर से मिलेगी, छाँव पारसनाथ की।
जिससे मिलेगी शान्ति निज की, फिक्र फिर किस बात की॥
संसार का संग्राम तजने, भेंट चंदन कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कल्याणमंदिर से रुकेगी, दुखद यात्रा मोह की।
विश्राम आतम को मिलेगा, प्राप्ति होगी मोक्ष की॥

अब कमठ जैसी भूल तजने, भेंट अक्षत कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कल्याणमंदिर काव्य माला, गूँथना जो सीख ले।
खुद भेंट हों प्रभु चरण में तो, पुष्प आतम का खिले॥
इस काम का आतंक तजने, पुष्प अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कल्याणमंदिर के पदों की, चार पंक्ति जो पढ़ें।
वे चार अंगुल रूप रसना, पर विजय निश्चित करें॥
अध्यात्म का रस लें अतः, नैवेद्य अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

कल्याणमंदिर की करें जो, आरती दीपक जला।
दुख संकटों पर कर विजय वो, विश्व का करते भला॥
प्रभु पार्श्व जैसे पथ चुनें सो, दीप अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कल्याणमंदिर की सुगंधी, हर दिशा महका रही।
जो भव भवों की कर्म कड़ियाँ, पार्श्व सम चटका रहीं॥

इस कर्म के हर खेल तजने, धूप अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

कल्याणमंदिर से खुलेंगीं, सफलता की खिड़कियाँ।
विश्वास अपना कह रहा कि, प्राप्त होंगी मुक्तियाँ॥
फल पाप का हम त्याग लें सो, फल समर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कल्याणमंदिर का हवन कर, होम जो भी कर रहे।
जप मंत्र माला के सहारे, पार्श्व प्रभु वो भज रहे॥
हम पार्श्व प्रभु सम पूज्य बनने, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
नमोऽस्तु पार्श्व प्रभु जो वसे, वामा माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

कल्याणमंदिर के प्रभु, पार्श्वनाथ भगवान।
जिनको नमोऽस्तु कर करें, जयमाला गुणगाण॥

(ज्ञानोदय)

जब तक यह जीवन है तब तक, दुख संकट उपसर्ग रहें।
जो इन पर जय विजय करें वे, पार्श्वनाथ भगवान बनें॥
पर इनसे जो हुए पराजित, उनका कौन सहारा है।
सो कल्याण रूप मंदिर का, हमको मिला इशारा है॥१॥

जी हाँ ये कल्याण नाम का, वही पूज्य मंदिर स्तोत्र।
कुमुदचन्द्र आचार्य पूज्य ने, जिसे रचा भक्ति का स्रोत॥
जिसकी महिमा प्रभाव से तो, अतिशय हो ही जाते हैं।
जिससे देव देवियाँ मिलकर, चमत्कार दिखलाते हैं॥२॥

उज्जयनी के विक्रम राजा, कुशल प्रजा संचालक थे।
तब ही गंगा में स्नान को, आए तपसी साधक थे॥

योग्य शिष्य की तलाश करने, एक युवा को देख लिया।
धक्का दे फिर वाद विवाद कर, निर्णय सुन्दर एक लिया॥३॥
लेकिन तपसी हुए पराजित, कुमुदचन्द्र फिर नाम रखा।
जिनशासन अनुगामी क्षपणक, उनका यह उपनाम रखा॥
चित्तौड़गढ़ पहुँचकर जिनने, पार्श्वनाथ के दर्शन कर।
कीर्तिस्तंभ के संकेतों से, एक गुफा खोली जाकर॥४॥
मात्र एक ही पृष्ठ पढ़ा कि, तुरत द्वार वह बंद हुआ।
अदृशवाणी हुई वहाँ पर, बस इतना ही पुण्य हुआ॥
एक बार इक योगी ने जब, कुमुदचन्द्र को ललकारा।
तेरा ज्ञानहीन है मुझसे, वरना कर अतिशय न्यारा॥५॥
राजा कपिल तभी यह बोला, इक पत्थर को करो नमन।
कुमुदचन्द्र तत्क्षण स्वीकारे, किए पार्श्व प्रभु का चिंतन॥
तब कल्याण महा मंदिर का, कर डाला स्तोत्र सृजन।
ज्यों ही 'आकर्णितोऽपि' वाले, किए छंद का पाठ भजन॥६॥
तो चित्तौड़गढ़ वाले प्रभू, पार्श्वनाथजी प्रकट हुए।
ज्यों ही जय-जयकार हुई तो, हाथ जोड़ सब विनत हुए॥
कुमुदचन्द्र गुरु चमक उठे तब, योगी जी को क्षमा किया।
तब से अब तक अतिशय दिखते, जिनने सबको धर्म दिया॥ ७॥
अपनी केवल यही प्रार्थना, पार्श्वनाथ प्रभु भगवन से।
श्री कल्याण महा मंदिर से, जुड़े रहें जिनशासन से॥
सो होगी सुख शान्ति विश्व में, दुख उपसर्ग न आएंगे।
'सुव्रतसागर' पाठ भजन कर, मोक्ष महल झलकाएंगे॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसंपन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

१. अभय प्रदायी स्तुति

(वसंततिलका)

कल्याणमन्दिर मुदार मवद्य-भेदि
भीताभय प्रद-मनिन्दित मङ्घ्रि-पद्मम्।
संसार-सागर निमज्ज दशेष-जन्तु
पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य॥

(मात्रिक सवैया/आल्हा)

जो कल्याणों के मंदिर हैं, पापों के भी नाशनहार।
भयभीतों को अभय दान दें, रहें अनिंदित बड़े उदार॥
भवसागर में गिरते जन को, जो जिनेन्द्र बन रहे जहाज।
जिनके चरण कमल को भजकर, सादर करूँ नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तु-तारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. सिद्धिदायक स्तुति

यस्य स्वयं सुरगुरु र्गरिमाम्बुराशेः
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय धूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥२॥

जो खुद गरिमा के सागर हैं, तीर्थंकर जो रहे महान।
धूम केतु सम कमठ-मान का, मिटा दिया था नाम निशान॥
विशाल मति वाला सुरगुरु भी, कर न सका जिनका गुणगान।
अल्प बुद्धि वाला होकर भी, करूँ उन्हीं का आज बखान॥

ॐ ह्रीं अनन्त गुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. असमर्थ को समर्थ करने की शक्ति प्रदायी स्तुति

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर्यदि वा दिवान्धो
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः॥

नाथ! आपका स्वरूप कैसा, कितना सुन्दर बोले कौन।
मुझ सा वह सामान्य रूप से, कह न सके धर सके न मौन॥
ज्यों उल्लू का बच्चा दिन में, होकर भी अंधा भयभीत।
होकर जिद्दी क्या नहिं गाए, सुन्दर सूर्य रूप के गीत॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. अतिगहन आत्म गुणों की प्राप्तिदायक स्तुति

मोह-क्षया-दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः॥

मोह नष्ट कर देव आपने, गुण भोगे जो अपरम्पार।
कौन माई का लाल जगत में, उनको गिनने करे विचार॥
प्रलयकाल में सागर का जल, जब हो जाता सीमा पार।
तो भी रत्न राशि को गिनने, कौन समर्थ यहाँ सरकार॥

ॐ ह्रीं गहन-गुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. उत्कृष्ट पद प्रदायी स्तुति

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि
कर्तुं स्तवं लस-दसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज बाहु-युगं वितत्य
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः॥

जड़मति मैं भी देख आपके, असंख्य गुण का गुण-भंडार।
रोक न पाया खुद को तो फिर, हुआ स्तवन को तैयार॥
जैसे बालक सागर का जब, देख बड़ा भारी विस्तार।
अपने हाथों को फैलाकर, कहे न क्या निज मति अनुसार॥

ॐ ह्रीं परमानन्त गुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. असाध्य कार्य साधक गुण स्तुति

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव - मसमीक्षित-कारितेयं
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि॥

ईश! आपके निज गुण गण का, कर न सके योगी गुणगान।
तो फिर उन्हीं गुणों को गाने, कैसे सक्षम मेरा ज्ञान॥
फिर भी उनको गाने का यह, बिना विचारे मेरा काम।
ज्यों निश्चय से निज वाणी से, पक्षी चहकें करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अगम्य-गुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

७. अपवाद-अपमान निवारक स्तुति

आस्ता-मचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत - पान्थ - जनान्निदाघे
प्रीणाति पद्म-सरसः सरसोऽनिलोऽपि॥

अचिन्त्य महिमा वाले जिन के, संस्तव की तो छोड़ो बात।
नाम मात्र संसारी जन को, सुखी करे दुख दूर भगात॥
ज्यों गर्मी में तेज धूप से, तपते जन दुख से हों खिन्न।
पद्म सरोवर मिले न पर वो, सरस हवा पा हुए प्रसन्न॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

८. बिच्छु,सर्पादि विष नाशक स्तुति

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली - भवन्ति
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजंगममया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य॥

जैसे चंदन वन में जब भी, आ जाने पर कोई मोर।
चंदन तरु से लिपट रहे जो, नाग पाश तत्क्षण कमजोर॥
वैसे ही जिनदेव आप भी, जिसके दिल को करो निहाल।
उसके कठोर कर्म बन्ध भी, हो जाते ढीले तत्काल॥

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध-विनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

९. भूत-प्रेत बाधा निवारक स्तुति

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रैरुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥

ज्यों बलशाली गो पालक को, तेजी से बस आता देख।
चोर छोड़कर सब पशुओं को, तुरत भागता प्राण समेट॥
ऐसे ही संसारी जन के, रौद्र उपद्रव शतक अनेक।
हो जाते हैं शीघ्र नष्ट वे, हे जिनेन्द्र! बस तुमको देख॥

ॐ ह्रीं दुष्ट-अपवर्ग-विनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१०. महान् आपत्तियों से छुटकारा दिलाने वाली स्तुति

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।

यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥

चर्म पात्र जो जल पर तैरे, और गया नदिया के पार।
उसमें भरी हवा ही उसको, ले जाती है परले पार॥
ऐसे कैसे आप जगत के, हो सकते प्रभु तारणहार।
आप हमारे दिल में हो सो, जब हम पार तभी तुम पार॥

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

११. मिथ्या अन्धकार को दूर करने की सामर्थ्य

यस्मिन्हर प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः
सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन॥

जिस जल ने ही महाअग्नि को, बुझा दिया करके अभिमान।
उसे भयंकर बड़वानल क्या, नहीं सुखाती करके मान॥
इसी तरह जिस कामदेव ने, सब पर-देवों को दी मात।
हे प्रभु! तुमने क्षण भर में बस, मार भगाया वह रतिनाथ॥

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१२. महा आश्चर्यकारी स्तुति

स्वामिन्न-नल्प गरिमाण-मपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥

गरिमा गौरव वाले स्वामी, तुम्हें हृदय में जो ले धार।
और शरण में आकर वे जन, तुरत गए भवसागर पार॥

कैसे जल्दी वे तिर जाते, करता यह आश्चर्य जहान।
इसमें केवल प्रभु पुरुषों की, अचिन्त्य होती कृपा महान॥

ॐ ह्रीं अतिशय-गुरुवे क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१३. क्रोध विनाशक स्तुति

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके
नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥

नाथ! आपने जब पहले ही, क्रिया क्रोध का सत्यानाश।
कर्म चोर फिर ध्वस्त कर दिए, कैसे? कहो करें विश्वास॥
जैसे बर्फ हुई शीतल जब, जग में गिरकर बनी तुषार।
तो उससे फिर हरे-भरे वन, जलें नहीं क्या करो विचार॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१४. कामविकार नाशक स्तुति

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भव-पदं ननु कर्णिकायाः॥

जैसे निर्मल पावन उज्ज्वल, कमल-बीज का जन्म स्थान।
कमल फूल की छोड़ कर्णिका, अन्य कहीं क्या मिले मुकाम॥
ऐसे ही प्रभु योगी अपने, हृदय कमल के बीचोंबीच।
नित परमातम पारस प्रभु के, दर्शन पा तजते भव कीच॥

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१५. विशुद्धि वर्धक जिन स्तुति

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल भाव-मपास्य लोके
चामीकरत्व-मचिरादिव धातु-भेदाः॥

जिस विध जग में धातु भेद सब, पाकर तीव्र आग संस्कार।
पत्थर पना छोड़कर जल्दी, बने शुद्ध सोने का हार॥
ऐसे ही संसारी प्राणी, हे प्रभु! तेरा करके ध्यान।
देह त्याग क्षण में बन जाते, पारस परमातम भगवान॥

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१६. खोई हुई वस्तु प्रदायक स्तुति

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूप मथ-मध्य-विवर्तिनो हि
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥

जिन भव्यों के अन्तर मन से, ध्याए जाते निःसंदेह।
उन जीवों के कैसे तुम तो, हे प्रभु! नष्ट करो दुख देह॥
सच में ऐसा स्वरूप है जो, मध्यवर्ति है पुरुष महान।
सभी विवादों की जड़ हर ले, निश्चित बनता वह भगवान॥

ॐ ह्रीं देह-देहि-कलह निवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं...।

१७. विषविकारनाशक स्तुति

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद - बुद्ध्या
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।

पानीयमप्यमृत - मित्यनु - चिन्त्यमानं
किं नाम नो विष-विकार-मपाकरोति॥

ज्यों जल को अमृत समान कर, जो कोई वह पिए जरूर।
तो फिर उसकी विष की बाधा, तुरत नहीं होती क्या दूर॥
अपनी आतम पारस जैसी, ज्ञानी यदि करता यों ध्यान।
तो वह कृपा आपकी पाकर, बने नहीं क्या आप समान॥

ॐ ह्रीं संसार विष-सुधोपमाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१८. मिथ्या अभिप्राय नाशक स्तुति

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण॥

जिसे पीलिया रोग हुआ वह, रंग करे उल्टे स्वीकार।
श्वेत शंख भी पीला-पीला, क्या? नहिं देखे वह बीमार॥
इसी तरह पर मत अनुयायी, तुम्हें कहें अपने भगवान।
जबकि आप तो पारस प्रभु हो, सच्चे वीतराग विज्ञान॥

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१९. अशोकवृक्ष प्रातिहार्य - वैभव वर्द्धक स्तुति

धर्मोपदेश समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि
किं वा विबोध-मुपयाति न जीव-लोकः ॥

ज्यों ही दिनपति के उगने पर, फल-फूलों की छोड़ो बात।
दुनियाँ भी क्या पुलकित ना हो, पाकर मंगलमयी प्रभात॥

त्यों ही दिव्य देशना के क्षण, निकट आप के जब हो लोक।
तो भक्तों की बात छोड़िये, सच में बनते वृक्ष अशोक॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२०. <u>पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य - स्त्री सम्बन्धी समस्त रोग नाशक स्तुति</u>

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव
विष्वक्पतत्य-विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि॥

पुष्प वृष्टि सुर सघन करें तो, चमत्कार हों भाव विभोर।
नीचे डण्ठल ऊपर कलियाँ, यों क्यों पुष्प गिरे चहुँ ओर॥
इसका मतलब सुमन पुरुष जो, हे प्रभु! तुझसे रहे न दूर।
उसके बंधन गिर ही जाते, फूलों सा वह खिले जरूर॥

ॐ ह्रीं सुर-पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२१. <u>दिव्यध्वनि प्रातिहार्य - मूक-बधिर-अन्ध नाशक स्तुति</u>

स्थाने गभीर हृदयोदधि सम्भवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम-सम्मद-संग-भाजो
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्॥

प्रभु के जो गंभीर हृदय के, महा सिन्धु से हो उत्पन्न।
वाणी वह जिनवाणी गंगा, अमृत जैसी करे प्रसन्न॥
जिसका कर जल-पान भव्य जन, चिदानन्द में कर विश्राम।
अजर अमर बनते सिद्धातम, जिनको बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२२. चामर प्रातिहार्य – शत्रु को अनुकूल करने वाली स्तुति

स्वामिन्! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय
ते नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः॥

नाथ! आपके अगल-बगल में, नीचे से ऊपर की ओर।
देवों ने जो चँवर ढुराये, वो क्या शिक्षा दें चितचोर॥
मैं मानूँ जो शुद्ध-भाव से, मुनि पुंगव को करे प्रणाम।
बाल न बाँका उसका होगा, सबसे ऊँचा जग में नाम॥

ॐ ह्रीं सुर-चामर-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२३. सिंहासन प्रातिहार्य – राजादि पद प्रदायी स्तुति

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-
सिंहासनस्थ-मिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्॥

बहुत सुनहरा रत्न जड़ित जो, सिंहासन उज्ज्वल विख्यात।
जिस पर हैं गंभीर वचन-मय, श्याम सलोने पारसनाथ॥
यों लगते सुरगिरी शिखर पर, श्याम मेघ गरजे ज्यों दूर।
लगा टकटकी ताक रहे हों, पारसप्रभु को भव्य मयूर॥

ॐ ह्रीं सिंहासन-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२४. भामण्डल प्रातिहार्य – कान्ति नीरोग शरीर प्रदायक स्तुति

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक - तरुर्बभूव।

सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥

उज्ज्वल चम-चम भामण्डल जब, चमके प्रभु में हो तल्लीन।
जिसके आगे अशोक तरु भी, शरमा जाए हो छवि हीन॥
तब फिर ऐसा कौन सचेतन, जिसने तेरा पाया साथ।
क्या वह वीतरागी न होगा, होगा! होगा! होगा! नाथ॥

ॐ ह्रीं भामण्डल-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२५. देवदुन्दुभि प्रातिहार्य - नेतृत्व शक्ति प्रदायक स्तुति

भोः भोः प्रमाद-मवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
येतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुर-दुन्दुभिस्ते॥

नाथ! आपकी सुर दुंदुभि से, गूँजे धरा गगन सब ओर।
कहे त्रिजग से अरे! अरे! सब, प्रमाद को छोड़ो झकझोर॥
मोक्षपुरी को जाने वाले, मिले सारथी पारसनाथ।
इन्हें पूज अपना हित कर लो, आश्रय पाकर टेको माथ॥

ॐ ह्रीं देव-दुन्दुभि-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२६. छत्रत्रय प्रातिहार्य - कालसर्प योग भय निवारक स्तुति

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता कलाप-कलितोल्ल सितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुव-मभ्युपेतः॥

प्रभु तुमने जब दिव्य ज्ञान से, किया प्रकाशित सब संसार।
तभी सितारों से घिर करके, पहन मोतियों का श्रृंगार॥

अपने पथ से भ्रष्ट चन्द्रमा, बना तीन छत्रों सी देह।
सेवा में वह हाथ जोड़कर, तत्पर हाजिर निःसंदेह॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय-प्रातिहार्ययुक्त क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२७. कान्ति-प्रताप यश प्रदायी स्तुति

स्वेन प्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन
कान्ति-प्रताप-यशसा मिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥

तीन-तीन ऊँचे परकोटे, नाथ! आपके चारों ओर।
सोने चाँदी माणिक से जो, हुए सुशोभित हैं चितचोर॥
यों लगते ज्यों पारसप्रभु की, यशकीर्ति से हों भरपूर।
तीनों लोक समाएँ जिसमें, भक्तों को सुख दिए जरूर॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२८. असमय निधन निवारक स्तुति

दिव्य-स्त्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वाऽपरत्र
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव॥

हे प्रभु! तुम्हें झुके इन्द्रों के, रत्नजड़ित मुकुटों का माथ।
दिव्य पुष्प की मालाएँ तज, चाहें तव चरणों का साथ॥
सच ही है यह सुमन सु-मन जो, आ पहुँचा हो तेरे गाँव।
कहीं नहीं वह रम सकता फिर, पाकर पारसप्रभु की छाँव॥

ॐ ह्रीं भक्त-जनानवन-पतिराय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२९. संकटमोचन स्तुति

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव
चित्रं विभो! यदसि कर्म -विपाक-शून्यः॥

पार्श्वनाथ प्रभु भवसागर से, पूर्ण विमुख होकर भी आप।
अपने अनुयायी जीवों को, तारो हरकर उनके पाप॥
उचित किन्तु आश्चर्य यही कि, कर्म शून्य होकर भी ईश।
उल्टे पके घड़े सम तारो, भक्तों को देकर आशीष॥

ॐ ह्रीं निजपृष्ट-लग्नभय-तारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३०. सर्व कार्य विकासक स्तुति

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञान-वत्यपि सदैव कथंचिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास हेतुः॥

जनपालक! जगपति होकर भी, दुर्गत हो तुम निर्धन रूप।
अक्षर स्वभाव के होकर भी, कौन करे लिपिबद्ध स्वरूप॥
अज्ञानी जन के संरक्षक, हे! पारसप्रभु हो अविराम।
विश्व प्रकाशी केवलज्ञानी, तुमको बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३१. दुष्टजन संयोग निवारक स्तुति

प्राग्भार - सम्भृत - नभांसि-रजांसि रोषा
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥

दुष्ट कमठ ने वैर क्रोध से, कर उपसर्ग महा संत्रास।
ऐसी धूल उड़ाई तुम पर, जो ढकती पूरा आकाश॥
लेकिन उससे नाथ! आपकी, छाया भी ना हुई मलीन।
किन्तु कमठ तो उसी धूल से, ग्रस्त हुआ मैला अतिदीन॥

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित-धूलि-उपद्रव-जिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३२. पीड़ा पहुँचाने वाले दुर्जनों से रक्षा करने वाली स्तुति

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम
भ्रश्यत्तडिन्मुसल - मांसल - घोर - धारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन! दुस्तर-वारि कृत्यम्॥

तत्पश्चात कमठ ने प्रभु पर, बिजली खूब गिरायी तेज।
मूसलधार नीर बरसाकर, बहुत-बहुत गरजाए मेघ॥
किन्तु भयंकर अथाह वह जल, बना कमठ को तीर कमान।
उससे प्रभु का कुछ ना बिगड़ा, जय-जय-जय पारस भगवान॥

ॐ ह्रीं कमठ-कृत-जलधारा-उपसर्ग निवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३३. अग्नि भूकम्पादि भय निवारक स्तुति

ध्वस्तोर्ध्व - केश - विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड
प्रालम्ब - भृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः॥

फिर उसने बिखरे बालों के, भूत भिजाए बहु विकराल।
नर मुण्डों की माला वाले, मुख से उगलें ज्वाला लाल॥

ऐसे प्रेतवर्ग से प्रभु जी, हुए न चंचल रहे अडोल।
बने कमठ को वे दुख दायक, ऐसे प्रभु की जय-जय बोल॥

ॐ ह्रीं कमठ-कृत-पैशाचिक-उपद्रव जितशीलाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३४. असाध्य रोग विनाशक स्तुति

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य—कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल-देह-देशाः
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥

नाथ! आपकी विनय भक्ति से, जिनका पुलकित हुआ शरीर।
खुशी-खुशी वे अन्य कार्य तज, विधिवत अर्पें श्रद्धा नीर॥
हे! त्रयजग के नाथ आपके, चरण कमल जो भजें त्रिकाल।
धन्य-धन्य हैं वे इस भू पर, वही भक्त हों मालामाल॥

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३५. सर्व विपत्ति निवारक स्तुति

अस्मिन्नपार-भव-वारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥

हे मुनीश! मैं यूँ मानूँ कि, भवसागर जो रहा अपार।
इसमें मैंने वचन आपके, सुने नहीं ना किया विचार॥
अगर आपका नाम मंत्र जो, पावन सुनकर बनता दास।
तो आपत्ती रूप नागनी, क्या आ सकती मेरे पास॥

ॐ ह्रीं पवित्रनाम-ध्येयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३६. विजेता बनाने वाली स्तुति

जन्मान्तरेपि तव पाद युगं न देव!
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥

यही मानता मैं स्वामी कि, पर जन्मों में मैंने देव।
तेरे चरण कमल ना पूजे, इच्छित फल जो दें स्वयमेव॥
इसीलिए तो इस भव में भी, मनोरथों का जो हर्त्तार।
पराजयों का धाम बना हूँ, कैसे हो मेरा उद्धार॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३७. अनर्थ निवारक स्तुति

नूनं न मोह तिमिरावृत-लोचनेन
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथमन्यथैते॥

मोह अंध से ढके हुए हैं, मेरे दोनों नयन विशाल।
जिससे मैंने एक बार भी, तुझे न देखा ओ! जिनलाल॥
यदि दर्शन तेरे करता तो, कर्मशत्रु अतिशय बलवान।
मुझे नहीं दुख दे सकते फिर, मैं खुद बनता आप समान॥

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३८. भगवान् बनाने वाली स्तुति

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव! दुःखपात्रं
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः॥

यद्यपि मैंने दिव्य मंत्र भी, सुने आपके बहुतों बार।
दर्शन किए रचाई पूजन, खूब लगायी जय-जयकार॥
किंतु भक्ति से धरा न मन में, अतः बना मैं दुख का धाम।
क्योंकि क्रियाएँ भाव शून्य जो, होती हैं निष्फल निष्काम॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीन-जनबान्धवाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३९. दुःखीजनों के रक्षक श्री जिन

त्वं नाथ! दुःखि-जन-वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि॥

हे! जनपालक दुखी जनों पर, आप बहाते प्रेम फुहार।
दीन हीन पर हे! योगीश्वर, तुम बरसाते करुणाधार॥
झुके भक्ति से विनम्र मुझ पर, दया करो हे! दयानिधान।
दुख अंकुर जल्दी नशवा दो, हे! महेश पारस भगवान॥

ॐ ह्रीं भक्तजन-वत्सलाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४०. सौभाग्य वर्धक स्तुति

निःसंख्य सार शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु-प्रथितावदानम्
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन-पावन हा हतोऽस्मि॥

मित्र बंधु के अभाव में तो, आश्रय के प्रभु हो दातार।
पूज्य भुवन पावन पारस प्रभु, हे! शरणागत पालनहार॥

कर्म विनाशी धर्म प्रकाशी, चरण प्राप्त कर उनका ध्यान।
यदि न किया तो मरा अभागा, कैसे हो अपना कल्याण॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक-पदकमलयुगाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४१. सर्वग्रह निवारक स्तुति

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तुसार!
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!।
त्रायस्व देव! करुणा-हृद्! मां पुनीहि
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बुराशेः॥

हे! इन्द्रों के वन्दनीय विभु, विश्वतत्त्व के जाननहार।
हे! भवसागर तारक प्रभु जी, करुणा सरवर की जलधार॥
हे! त्रय जग के नाथ मुझे भी, महा दुखी भव जल से आज।
शीघ्र बचाओ शुद्ध बनाओ, सुखी करो पारस जिनराज॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४२. अचिन्त्य फल प्रदायक स्तुति

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां
भक्तेः फलं किमपि संतत-संचितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य! भूयाः
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि॥

मेरी एक हि शरण आप हो, शरणभूत हे! पारसनाथ।
तभी आपके चरण कमल की, भक्ति रचाई टेका माथ॥
यदि कुछ भी उससे संचित हो, तो चाहूँ बस इतना दाम।
इस भव में भी परभव में भी, दिल में हो बस पारसनाम॥

ॐ ह्रीं पुण्य-बहुजन-सेव्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४३. अमंगल-अनिष्ट निवारक स्तुति

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कंचुकितांग - भागाः।
त्वद्बिम्ब - निर्मल - मुखाम्बुज - बद्धलक्ष्या
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः॥

हे! जिनवर प्रभु भव्य जीव जो, सावधान धर बुद्धि विवेक।
निर्मल प्रभु मुख कमल निहारे, अपलक सादर घुटने टेक॥
बहुत-बहुत पुलकित तन मन से, करके प्रभु पारस से राग।
विधिवत् भक्ति गीत रचते वो, जगा रहे अपना सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं जन्म-मृत्यु-निवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४४. क्रमशः मोक्षफल प्रदायी स्तुति

जन-नयन 'कुमुदचन्द्र' प्रभास्वराः स्वर्ग सम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥

नेत्र कमल उन भक्त जनों के, चंदा जैसे करें प्रकाश।
उज्ज्वल उज्ज्वल स्वर्गलोक का, वैभव भोगें भोग विलास॥
शीघ्र अन्त में कर्म नशाकर, मोक्ष-महल में करें निवास।
तो दुख संकट उनको हों क्या, जो हैं पारस प्रभु के खास॥

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्र-यतिसेवित-पादाय क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कल्याणमंदिर स्तोत्र से, पार्श्वनाथ के नाम।
श्रेष्ठ धर्म जिन भक्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

(चौपाई)

कुमुदचन्द्र आचार्य प्रवर की, श्री कल्याण महा मंदिर की।
आओ! महिमा गीत सुनाएँ, पार्श्वनाथ प्रभु के गुण गाएँ॥१॥
ये ऐसे स्तोत्र पाठ हैं, जिनके जग में ठाठ-बाठ हैं।
जो भी इनके आश्रित होते, जीवन में वो कभी न रोते॥२॥
इच्छित कार्य उन्हीं के पूरे, जग में रहते नहीं अधूरे।
उनको रोग शोक दुख पीड़ा, कभी न हो सकती भवक्रीड़ा॥३॥
असमय उनका निधन न होगा, दीन हीन जीवन न होगा।
विष बाधा भय नहीं किसी का, वैर विरोध न रहे किसी का॥४॥
इसके अनुयायी यश पाते, सुख सम्मान महापद पाते।
और कहें क्या उनकी गाथा, होता स्वयं स्वयं से नाता॥५॥
रत्नत्रय के बनते स्वामी, ज्ञानी ध्यानी शुद्ध विरामी।
जग पूजित अरिहंत बनेंगे, मुक्तिवधू के कंत बनेंगे॥६॥
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, सदा धर्म की करें जयोऽस्तु।
तेरा मंगल मेरा मंगल, हे प्रभु करना सबका मंगल॥७॥
यही भावना नाथ! हमारी, हम भी पाएँ छाँव तुम्हारी।
'सुव्रतसागर' पर हो करुणा, मिलती रहे गुरु प्रभु शरणा॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लींमहाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भवदु:खों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री एकीभाव विधान

स्थापना (शंभु)

जब घोर उपद्रव होते तब, जिनभक्ति नयी रच जाती है।
त्यों एकीभाव की महिमा है, जो अतिशय खूब दिखाती है॥
सो आदिनाथ से वादिराज तक, हम तो नमोऽस्तु कर लेंगे।
प्रभु! हृदय हमारे आओ तो, हम सादर पूजन कर लेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव स्तोत्र आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल बिना मरें हम गर्मी में, हम अस्त-व्यस्त वर्षा से हों।
ठण्डी में बर्फ प्राण ले ले, फिर यह जल देव कहाँ से हों॥
इस जल के दूर उपद्रव हों, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जब हम ठण्डे पड़ जाते हैं, तो दुनियाँ हमें जलाती है।
जो आग हमें जीवन देती, वो आग हमें खा जाती है॥
भव आग बने चंदन जैसी, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पद पैसा मान प्रतिष्ठा का, लालच दुनियाँ में खूब दिखे।
हैं मूल्य कहाँ मानवता के, विश्वास कहीं भी नहीं टिके॥
यह क्षत-विक्षत जग अक्षत हो, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जो भ्रमर फूल पर मँडराते, वे भ्रमर फूल से छले गए।
जो जीव रमें इस दुनियाँ में, वे निश्चित जग से ठगे गए॥
यह फूल-शूल का खेल मिटे, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इस एकीभाव की भक्ति में, बस चार पंक्ति के छन्द रहे।
जो जीभ चार अंगुल वाली, पर विजयों के अनुबंध रहे॥
निज आतम का नैवेद्य चखें, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

जड़ दीप दिखाता पथ जग को, पर कभी जला दे आँचल को।
विश्वास करें कैसे इस पर, जो दे जाता है काजल को॥
यह दीप सदा अनुकूल रहे, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहांऽधकार-विनाशनाय दीपं...।

इन कर्म कलंक मिटाने को, हर यत्न किया हर द्वार गए।
पर हाय! कर्म तो मिट न सके, ये हमसे बाजी मार गए॥
अब कर्म कलंक धूप हर ले, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

इन भावों का फल क्या होगा, इस पर तो अपना ध्यान नहीं।
सो आकुल-व्याकुल भटक रहे, शुभ शुद्ध बिना कल्याण नहीं॥
शुभ फल से शुद्ध मिले हमको, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

इस एकीभाव की महिमा को, हम कैसे पूर्ण सुनाएंगे।
उपकार अनन्तों हैं हम पर, हम सादर गाथा गाएंगे॥
यह अर्घ्य अनर्घ हमें कर दे, सो आदिनाथ को हम ध्याएँ।
अब एकीभाव स्तोत्र भजें, हम करके नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव-स्तोत्र-आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

आदिनाथ भगवान को, वादिराज गुरु पूज।
जिन महिमा दर्शा रहे, कर नमोऽस्तु की गूँज॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें रोग दुख बहुत सताएँ, जिन्हें पराजय का डर हो।
जिन्हें धर्म पर श्रद्धा ना हो, जिन्हें सजाना निज घर हो॥
ऐसे जन भयभीत नहीं हों, खेद खिन्न ना चिंतित हों।
एकीभाव पर श्रद्धा रखकर, आदिनाथ के आश्रित हों॥१॥

जैसे वादिराज मुनिवर को, कर्मोदय से कुष्ट हुआ।
समता से सब सहते मुनिवर, पर विद्रोही रुष्ट हुआ॥

तब जयसिंह चौलुक्य सभा में, उसने मुनि उपहास किया।
'जैन साधु कोढ़ी होते हैं', ऐसा कुछ अपमान किया॥२॥
पर राजा यह सह न सके सो, गुरु को व्यथा सुना डाली।
एकीभाव की रचना तब तो, गुरु ने शीघ्र रचा डाली॥
आदिप्रभु की पूज्य भक्ति कर, निज काया चमका डाली।
हुआ रातभर में यह अतिशय, सुबह सुनहरी सी लाली॥३॥
राजा ने द्वेषी को डाँटा, कहो कहाँ से कुष्ट दिखे।
द्वेषी हुआ शर्म से लज्जित, पर गुरु ना संतुष्ट दिखे॥
मेरा तन तो कोढ़ी ही था, किंतु इसे चमका डाले।
थोड़ा बचा कनिष्ठा में सो, अँगुली शीघ्र दिखा डाले॥४॥
एकीभाव से आदिनाथ का, वादिराज यह फल पाए।
सबने जैनधर्म स्वीकारा, जिनशासन सब चमकाए॥
मुनि 'सुव्रत' की यही प्रार्थना, धर्म ध्वजा हम फहराएँ।
रोग शोक हर विश्व शान्ति हो, मंगल गीत सभी गाएँ॥५॥

(दोहा)

एकीभाव स्तोत्र से, बढ़े धर्म की शान।
नमोऽस्तु का फल सुख मिले, आदिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव स्तोत्र आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

१. दुख कर्मबंधन नाशक

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो
घोरं दुःखं भवभव गतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽपरस्तापहेतुः॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

(हाकलिका)

एकमेक खुद मुझ से हो, कठिनाई से हटते जो।
कर्म बंध मम सह रहते, घोर दुखी भव-भव करते॥
भक्ति आपकी गुण वाली, कर्मबंध हरने वाली।
अन्य ताप फिर कौन रहा?, जिसे जीतना कठिन महा॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं बहुदुःख-कर्मबंधननाशक-एकीभावपन-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. पाप समूह नाशक

ज्योतीरूपं दुरितनिवहध्वान्तविध्वंसहेतुं
त्वामेवाहुर्जिनवर ! चिरं तत्त्व-विद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान-
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

पापवर्ग का अँधयारा, चिर से हरते तुम सारा।
यथा तत्त्वज्ञानी कहते, ज्ञान-जोतमय तुम रहते॥
मेरे मन मन्दिर में हो, सदा प्रकाशित रहते हो।
जहाँ आप रहते ऐसे, अघतम वहाँ रुके कैसे ?॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं पापसमूहनाशक-केवलज्ञानज्योति-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. रोग नाशक

आनन्दाश्रु-स्नपितवदनं गद्गदं चाभिजल्पन्
यश्चायेत त्वयि दृढमनाः स्तोत्रमंत्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्-
निष्कास्यन्ते विविध-विषमव्याधयः काद्रवेयाः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

हर्ष आँसुओं से मुख धो, अन्तर्मन से गद्गद् हो।
थिर मन जो तुममें रखते, स्तोत्र मंत्र से थुति करते॥
चिर परिचित उनके सारे, साँप-रोग बहु विष धारे।
तन-वामी से भग जाएँ, भक्त निरोगी बन जाएँ॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं बहुरोगकारणनाशक-दृढ़भक्तियुत्-मनलाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. सुन्दर रूप कारक

प्रागेवेह त्रिदिवभवनादेष्यता भव्यपुण्यात्-
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव! निन्येत्वयेदम्।
ध्यानद्वारं ममरुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्टस्-
तत्किं चित्रं जिन! वपुरिदं यत्सुवर्णी-करोषि॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

भव्य जनों के पुण्यों से, आए धरा पर स्वर्गों से।
आने से पहले धरती, सोने सी तुमने कर दी॥
ध्यान-द्वार से आने से, मन मन्दिर वस जाने से।
यदि काया हो कंचन सी, रही बात क्या विस्मय की॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कायाकंचनमयकारक-सद्भक्तिपुण्य-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. सर्व हितकारक

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन् ! निर्निमित्तेन बन्धुस्-
त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

स्वार्थ बिना सारे जग के, एक बंधु तुम हम सबके।
और शक्ति जो जग ज्ञाता, रहे आपमें बिन बाधा॥
तो भक्तीमय मन मेरा, उस पर प्रभु का है डेरा।
मुझमें जन्मे चिर दुख-घर, कैसे सहो आप उस पर॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं जगत्-हितैषी-अकारण-बंधुसम श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. संसार भय नाशक

जन्माटव्यां कथमपि मया देव! दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूषवापी।
तस्या मध्ये हिमकर हिमव्यूहशीतेनितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःख-दावोपतापाः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

चिर से भव-वन में भटका, फिर मुझको नय रूप कथा।
सुधा-वापिका भरी हुई, कठिनाई से प्राप्त हुई॥
चन्द्र बर्फ से शीतल यह, सदा डूबकर उसमें रह।
ज्वाला मुझको भव-दुख की, आखिर क्यों ना वह तजती॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भववन-भ्रमणनाशक-अमृतवाणी-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

७. सौभाग्य दायक

पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्नमामभ्युपैति॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

विहार से जग शुद्ध किए, जहाँ मात्र पद न्यास किए।
कंचन से सब कमल खिले, सुरभित श्री के धाम मिले॥

तब फिर तुमको हे भगवन्!, छूकर मेरा सब तन-मन।
स्वयं कौन सा श्रेय यथा, मुझे प्राप्त ना होय सदा॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं अनियतगगनविहारी-त्रैलोकीनाथ श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

८. अनुपम सुख दायक

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्-पुरुष-मसमानन्दधाम प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैक भूमिं,
क्रूराकाराः कथमिवरुजा कण्टका निर्लुठन्ति॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
भव-वन तज सुख प्राप्त किया, दुर्जय रति को नाश किया।
ऐसे भगवन को लखकर, भक्ति-पात्र को फिर कर करा॥
तव वचनामृत जो पीते, तव प्रसाद पाकर जीते।
रोग भयंकर डंक उसे, पीड़ा दे सकते कैसे?॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं कामदेव-मदनाशक-अनुपमसुख-धामाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

९. दृष्टि विकार नाशक

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्ति-
र्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः।
दृष्टि-प्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां,
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्तिहेतुः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
मानस्तंभ पत्थर का जो, अन्य पत्थरों जैसा वो।
रत्नमयी पर-रत्नों सा, मानस्तंभ होता एसा॥
अगर आपका रूप वहाँ, शक्ति हेतु ना होय वहाँ।
उसके दर्शन लोगों के, मान-रोग हरता कैसे?॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं मानरोगनाशक-निर्मलदृष्टि-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१०. परम-उपकारक

हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही,
सद्यः पुंसां निरवधिरुजा धूलिबन्धं धुनोति।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्-
तस्याशक्यः क इह भुवने देव! लोकोपकारः॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
तव-तन-गिरि के पास रही, पवन मनोहर प्राप्त बही।
रोग धूल बिन सीमा की, पुरुष बंध हरती जल्दी॥
तुम्हें ध्यान में लाते जो, उर में तुम्हें वसाते जो।
उन्हें जगत में कौन यहाँ, जग उपकार अशक्य रहा॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं भव्यजीवोपकारी-ममहृदये-स्थित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१९. आश्रय दायक

जानासि त्वं मम भव भवे यच्च यादृक्च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या,
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम्॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

मुझे मिले दुख भव-भव जो, उन्हें जानते हो तुम तो।
याद मात्र उनकी मुझको, शस्त्रों सी दुख दे मुझको॥
हो सर्वेश दयालू तुम, शरण भक्तिवश आए हम।
इसमें करना जो कर दो, हो प्रमाण जिनवर तुम तो॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भव्यजीव-शरणागत-परमदयालु-जगस्वामी श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१२. परम-उद्धारक

प्रापद्दैवं तवनुतिपदै र्जीवकेनोपदिष्टैः,
पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यम्।
कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं,
जल्पन् जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम्॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

नमस्कार जिनपद प्यारा, जीवन्धर वह उच्चारा।
मरण समय पापी सुनकर, कुत्ता पाया सुर-सुख-घर॥

तो शुचि मणिमाला द्वारा, महामंत्र जपकर प्यारा।
सुरपति का वैभव पाए, तो संदेह रहा क्या ये॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं पतितोद्धारक-शतामरेन्द्र-वन्दनीय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१३. ऋद्धि-सिद्धि दायक

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधि-सुखा वञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्ति-कामस्य पुंसो-
मुक्तिद्वारं परिदृढ़-महामोह-मुद्रा-कवाटम्॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
ज्ञान चरण निर्मल होवे, श्रेष्ठ भक्ति यदि ना होवे।
बिन सीमा सुख की ताली, पूज्य आपकी गुणवाली॥
तो शिव-द्वारे का ताला, बंद मोह-दृढ़ता वाला।
पाने वाले मोक्ष उसे, कैसे खोलें शीघ्र उसे॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं रत्नत्रयरूप-मोक्षलक्ष्मीप्रदायक-सद्भक्तिलाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१४. ज्ञान ज्योति प्रदायक

प्रच्छन्नः खल्वय-मघ-मयै-रन्धकारैः समन्तात्-
पन्था मुक्तेः स्थपुटित-पदः क्लेश-गर्तैरगाधैः।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव! तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्-भारतीरत्न-दीपः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

सभी ओर से शिव पथ को, ढके हुए हैं अघ-तम तो।
गहरे दुख गर्त्तों द्वारा, विषम बना है वह प्यारा॥
वाणी दीपक तत्त्व अगर, अग्र-अग्र ना होवे फिर।
मोक्षमार्ग यों होने पर, सुख से कौन चले उस पर॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं पापतिमिरनाशक-जीवादितत्त्वोपदेशीवाणी-प्रदायक श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१५. आनन्द दायक

आत्मज्योति - र्निधि - रनवधि - र्द्रष्टुरानन्दहेतुः
कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः परेषाम्।
हस्ते कुर्वन्त्यनति चिरतस्तं भवद् भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बंध-प्रकृति- परुषोद्दाम-धात्री-खनित्रैः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

निज वैभव जो छिपा हुआ, विधि पटलों से ढका हुआ।
सुख का कारण ज्ञानी को, पाते ना अज्ञानी वो॥
किन्तु भक्त जो जिनवर के, स्तोत्र कुदाली को लेके।
खोदें सब विधि ठोस धरा, पाएँ वैभव आत्म खरा॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं आत्मज्योतिर्निधि-आनन्दहेतु श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१६. विशुद्धि प्रदायक

प्रत्युत्पन्ना नय-हिमगिरेरायता चामृताब्धेर्,
यादेव त्वत्पद-कमलयोः सङ्गता भक्ति-गङ्गा।
चेतस्तस्यां मम रुचि-वशादाप्लुतं क्षालितांहः
कल्माषं यद् भवति किमियं देव! सन्देहभूमिः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

ज्ञान हिमालय से जन्मीं, मोक्ष सिन्धु तक जो लम्बी।
चरण कमल तव भक्तिमयी, हमको गंगा प्राप्त हुई॥
जिसमें श्रद्धा से मम मन, पूरा डूबा जो अघतम।
सब कल्मष धुलता जिसमें, क्या संदेह धाम इसमें॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं पापमलनाशक-स्याद्वादनयगंगा-प्रदायक श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१७. मनोकामना पूरक

प्रादुर्भूत - स्थिर - पद - सुख त्वामनुध्यायतो मे
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्ति-मभ्रेषरूपाम्
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद् भवन्ति॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

अचल मोक्ष सुख जो पाए, वीतराग प्रभु कहलाए।
तुमको ऐसा मैं ध्याऊँ, जो तुम वह मैं मति लाऊँ॥

यद्यपि ऐसा सत्य नहीं, फिर भी थिर सुख करे यही।
कृपा सदोषी जन को भी, इच्छित फल देती वो ही॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अभिमतफल-मोक्षसुख-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१८. निर्मलता दायक

मिथ्यावादं मल - मपनुदन् - सप्तभङ्गीतरङ्गैः-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव! पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाचलेन,
व्यातन्वन्तः सुचिर-ममृता-सेवया तृप्नुवन्ति॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
वचन रूप सागर प्यारा, व्याप्त सभी जग में न्यारा।
सप्तभंग लहरों वाला, मिथ्यामल धोने वाला॥
अपने मन को पर्वत कर, उसका मन्मथ सुरगण कर।
अमृत सेवन झट करके, चिर तक तुष्ट-पुष्ट रहते॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं मिथ्यामलनाशक-अनेकान्तवाणी-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१९. सर्व-सौख्य दायक

आहार्य्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्र-ग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषावसनकुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
जो खुद से सुन्दर ना हो, अलंकार से सजता वो।
जो शत्रू से भय खाए, वह शस्त्रों को अपनाये॥
सुन्दर तुम सर्वांग रहे, तुम्हें शत्रु ना जीत सके।
सो आभूषण वस्त्रों से, अर्थ रहा क्या शस्त्रों से॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं सर्वाङ्ग-सुभग-परमवीतरागी श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२०. भय-संकट हारक

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भव-लय-करीं श्लाघ्यता-मातनोति।
त्वं निस्तारी जनन-जलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम्॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
इन्द्र श्रेष्ठ सेवा करता, उससे प्रभु को क्या मिलता।
पर वह भव को नशा रही, इन्द्र प्रशंसा बढ़ा रही॥
भवसागर से तुम तिरके, पार हमें भी तुम करते।
मुक्तिरमा के तुम स्वामी, स्तोत्र आपका जगनामी॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं भवोदधितारक-सिद्धिकान्तापति श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२१. दीक्षा प्रदायक

वृत्तिर्वाचा - मपर - सदृशी न त्वमन्येनतुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततः त्वय्यमी नः क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्-भक्ति-पीयूष-पुष्टास्-
ते भव्यानामभिमत-फलाः पारिजाता भवन्ति॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

वचन हमारे अन्यों से, किन्तु आप ना अन्यों से।
थुति उद्गार हमारे सो, तुम तक पहुँचे कैसे वो॥
नहीं पहुँचने पर भी वो, भक्ति सुधामय पूरित जो।
कल्पवृक्ष सम मंगल वे, भव्यों को इच्छित फल दें॥

वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भव्यानाम्-अभिमतफलदायक-कल्पवृक्षसम श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२२. वैर-भाव नाशक

कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव! प्रसादो,
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधि-वैर-हारी,
क्वैवंभूतं भुवन-तिलकं! प्राभवं त्वत्परेषु॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥

नहीं किसी पर क्रोध कृपा, स्वार्थ रहित तव चित्त रहा।
परम उपेक्षामय वह है, फिर भी आज्ञावश जग है॥

तीन लोक के तिलक रहे, शरण आपकी वैर हरे।
नाथ! आपकी महिमा ज्यों, कहाँ रही अन्यों में त्यों॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं कषायभाव-नाशक-त्रैलोकतिलक श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२३. शुद्धात्म प्रदायक

देव! स्तोतुं त्रिदिव गणिका-मण्डलीगीत-कीर्तिं,
तोतूर्ति त्वां सकल-विषय-ज्ञान-मूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जोहूर्ति पन्था-
स्तत्त्वग्रन्थ-स्मरण-विषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
यश देवीगण नित गाएँ, जग ज्ञाता जो कहलाएँ।
तव थुति जल्दी जो करता, और मुक्ति पाने चलता॥
वह शिव-पथ पर चले जहाँ, टेड़ा पथ ना होय वहाँ।
तत्त्व ग्रन्थ के चिन्तन में, मूर्च्छित ना हो भव वन में॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥
ॐ ह्रीं सकलविषय-ज्ञानमूर्ति श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२४. कल्याण-कारक

चित्ते कुर्वन् निरवधिसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपं,
देव! त्वां यः समय - नियमादादरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्गं स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधापञ्चितानाम्॥

वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
वीर्यज्ञान दर्शन सुखमय, नाथ! अनन्त चतुष्टयमय।
रूप आपका हृदय धरें, यथा समय थुति विनय करें॥
बस इतना जो जन करते, शिवपथ वे पूरा करके।
और पंचकल्याणक के, पात्र बनें शिव साधक वे॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकसंयुक्त-अनन्तचतुष्टय-शोभित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२५. अनन्त स्वरूप प्रदायक

भक्ति -प्रह्वमहेन्द्र - पूजित-पद! त्वत्कीर्तने न क्षमाः-
सूक्ष्म - ज्ञान - दृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा वयम्।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते,
स्वात्माधीन-सुखैषिणां स खलु नः कल्याण-कल्पद्रुमः॥
वीतराग प्रभु के चरणों में, सविनय शीश झुकाते हैं।
'एकीभाव' से जिनवन्दन की, महिमा के गुण गाते हैं॥
इन्द्र पूज्य 'जिन' गुण गाने, समर्थ ना योगी माने।
सूक्ष्म ज्ञानदृग जो पावें, खेद! मन्द मति क्या गावें॥
फिर भी थुति के छल से जो, श्रेष्ठ विनय हम करते वो।
निज सुख के इच्छुक हमको, मंगल कल्पवृक्ष सम हो॥
वादिराज मुनि की रचना को, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
आदिप्रभु को करके नमोऽस्तु, सब जग को महकाते हैं॥

ॐ ह्रीं स्वकीय-आत्मिकसुख-लाभाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वादिराजमनु शाब्दिक-लोको, वादिराजमनु तार्किकसिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्य-सहायः॥

(त्रिभंगी सम ३२ मात्रिक)

जो शाब्दिक ज्ञाता, जग विख्याता, वादिराज से हीन सभी।
जो तार्किक ज्ञाता, जग विख्याता, वादिराज से हीन सभी॥
जो काव्य रचाते, श्रेष्ठ कहाते, वादिराज से हीन सभी।
भवि मित्र कहाते, साथ निभाते, वादिराज से हीन सभी॥

ॐ ह्रीं प्रसिद्धकवि-आचार्य वादिराज वन्दित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मुनियों के संसर्ग से, एकीभाव के गान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, जयमाला गुणगान॥

(चौपाई)

एकीभाव स्तोत्र निराला, जिन महिमा दर्शाने वाला।
आदिप्रभु को हम भी ध्याएँ, वादिराज मुनि के गुण गाएँ॥१॥
सदी ग्यारवीं की यह गाथा, किंतु आज भी इससे नाता।
रोग भयंकर बीमारी हों, यदि मरने की तैयारी हों॥२॥
तो भक्तो! यह पाठ रचाना, एकीभाव से मिले खजाना।
पूज्य शान्तिसागर की छाया, एक कुष्ट रोगी जब आया॥३॥
उसने अपनी व्यथा सुनाई, गुरुवर बोले डरो न भाई।
एकीभाव पर श्रद्धा रखना, दिन में तीन बार यह पढ़ना॥४॥
अनुष्ठान श्रद्धा से करना, बुरी संगती कभी न रखना।
फिर तो अतिशय होता आहा, कुष्ट हुआ था जल्दी स्वाहा॥५॥

केवल एक माह में पाया, जिनशासन की अद्भुत माया।
लाखों अतिशय इसके ऐसे, कौन कहेगा पूरे कैसे॥६॥
इसके जो जन हुए सहारे, उनके जग में वारे-न्यारे।
मनवांछित फल वो पा जाते, रत्नत्रय से देह सजाते॥७॥
हों अरिहंत सिद्ध आगामी, सुख-सम्पत्ति के आसामी।
इसी भाव से 'सुव्रत' पूजें, नमोऽस्तु के स्वर गूँजें-गूँजें॥८॥

(दोहा)

भक्ति की शक्ति बड़ी, अतिशय करे महान।
आतम परमातम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं एकीभाव स्तोत्र आराध्य श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

===

उजाले में हैं
उजाला करते हैं
गुरु को बंदू

श्री चौबीसी विधान

स्थापना (मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

(लय : चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने।
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जो दें दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।

हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो।
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बंध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को।
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिले निज मुक्ति सों॥
भवचक्र निवारी, नवग्रहहारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधि नाँव, जय शीतलप्रभु दें आत्म छाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश,जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित् बसंत, जय जय अनन्तप्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्तियान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो।
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥

प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

अर्घ्यावली

(लय—माता तू दया करके.....)

जिनवर की पूजा से, सबका मंगल होता।
हम करें नमोऽस्तु तो, हर कार्य सफल होता॥
जब धर्म बिना प्राणी, कर्मों के दुख पाए।
तब वृषभनाथ स्वामी, सुख शान्ति धर्म लाए॥
उसने वो सब पाया, जिसने जो कुछ चाहा।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, तुमसे तुमको चाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१॥

जो अजितनाथ प्रभु की, बहु भक्ति करता हो।
जग मित्र बने उसका, कभी बाल न बाँका हो॥

हम अंतर बाहर के, रिपु की जय चाह रहे।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, तुमसे ही माँग रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२॥

दुनियाँ का वैभव तो, शम्भवप्रभु त्याग चुके।
जब निज में लीन हुए, तो त्रय जग आन झुके॥
फिर त्रय जग के सिर पर, प्रभु की छत्रच्छाया।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, माँगें तेरी छाया॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शम्भवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥३॥

पर के अभिनन्दन से, निज खोते पर पाते।
प्रभु के अभिनन्दन से, पर खोते निज पाते॥
प्रभु सा बन जाने को, प्रभु वन्दन करते हैं।
सो अर्घ्य चढ़ा प्रभु का, अभिनन्दन करते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥४॥

हम रखें मोह मति को, सो राग-द्वेष होता।
तब रत्नत्रय के बिन, कब आत्म ध्यान होता॥
हे! सुमतिनाथ जिनवर, प्रभु हमें सुमति देना।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तो, हमको सद्गति देना॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥५॥

दुनियाँ के दलदल से, प्रभु दूर हुए ऐसे।
दुनियाँ में रहकर भी, हो खिले कमल जैसे॥
सो पद्मप्रभु जैसा, बनने जग ललक रहा।
यह अर्घ्य चढ़ाया तो, परमातम झलक रहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥६॥

प्रभु दया भाव धरके, निज आतम श्रृंगारें।
सो छोड़ दिया जग पर, हम तुमको स्वीकारें॥
हे! सुपार्श्व प्रभु हमको, तुम नहीं भूल जाना।
हम अर्घ्य चढ़ा चाहें, बस चरण धूल पाना॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥७॥

नभ के चंदा से तो, सरवर के कमल खिलें।
लेकिन चंदाप्रभु से, भव्यों के कमल खिलें॥
सो नभ का चंदा तज, हम तुमको पूज रहे।
यह अर्घ्य चढ़ाकर के, निज में जिन खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥८॥

जग के रिश्ते नाते, ज्यों फूल और काँटे।
जिनमें आतम उलझी, तो मिले कर्म चाँटे॥
पर पुष्पदंत प्रभु ने, काँटे चाँटे छोड़े।
सो अर्घ्य चढ़ा सबने, सिर झुका हाथ जोड़े॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥९॥

निज कुल सिद्धि को तुम, जिन कुल के सिद्ध बने।
हम भी गुरुकुल पाके, तुम जैसे सिद्ध बनें॥
हे शीतल! प्रभु हमको, जिनकुल का दान करो।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, भक्तों का ध्यान रखो॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१०॥

हर मुश्किल का हल हो, हाँ! आज नहीं कल हो।
जो चुने आपका पथ, उसका चित् उज्ज्वल हो॥
हे! श्रेयांसनाथ हर लो, हम संकट दुख को भी।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, प्रभु थामो हमको भी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥११॥

जो बाल ब्रह्म व्रत ले, वो निज से प्रेम करे।
अरिहंत महन्त बने, तो मुक्तिवधू भी वरे॥
सो वासुपूज्य जैसा, अपना भी स्वयंवर हो।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, यह चमत्कार कर दो॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१२॥

जो देह मैल धोकर, तन को चमकाते हैं।
वो अपनी आतम को, संसारी बनाते हैं॥
पर विमलनाथ प्रभु ने, तन तज चेतन पाया।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, निज चेतन चमकाया॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं... ।॥१३॥

संसार अनन्त रहा, जिसमें हैं पाप अनन्त।
इन सबको तज तुमने, पाया चैतन्य अनन्त॥
सो अनन्तनाथ स्वामी, हमको भी करो अनन्त।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, महका दो आत्म बसंत॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१४॥

बस एक धर्म ही हो, लेकिन बहु-मत होते।
यह तथ्य समझकर ही, संसार विगत होते॥
प्रभु धर्म धारकर ये, निज आत्म धर्म पाए।
सो अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम बनने आए॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१५॥

संसार शान्ति खोजे, पर कहाँ मिली शान्ति।
जब दर्श किया प्रभु का, तो तनिक मिली शान्ति।
हे! शान्तिनाथ स्वामी, अपने सम शान्ति भरो।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, भक्तों की अशान्ति हरो॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१६॥

सब द्रव्य पदार्थों में, बस जीव मुख्य होता।
उस पर करुणा करके, निज आत्म सौख्य होता॥
वह कुन्थुप्रभु पाए, जिसकी अपनी इच्छा।
सो अर्घ्य चढ़ाएँ हम, तुम दे देना दीक्षा॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१७॥

नभमण्डल के जैसे, अरनाथ असीमित हैं।
गुणगान करें कैसे, क्योंकि शब्द तो सीमित हैं॥
फिर भी अंतिम क्षण तक, गुणगान न छोड़ेंगे।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, सिद्धों तक दौड़ेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१८॥

संसार जीतने को, हर व्यक्ति चाह रहा।
पर आत्म विजय करना, जिन सेवक माँग रहा॥
सो मल्लिनाथ अपना, तुम भक्त बना लेना।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, शुद्धात्म दान देना॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥१९॥

हो भले जन्म छोटा, पर रहे सु-व्रती का।
सागर जैसा जीवन, व्रत बिना रहा तीखा॥
सो सुव्रतनाथ हमें, अपने सु-व्रत दे दो।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, चरणों की रज दे दो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२०॥

जिसके मन में रहते, नमिनाथ चिदानन्दी।
वह ऋद्धि-सिद्धि पाके, बनता परमानन्दी॥
सो भक्तों के मन में, अपना डेरा डालो।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तुम, चैतन्य सजा डालो॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२१॥

दुख जीवों के सुनकर, संसार-भोग छोड़े।
सो करुणानिधि तुमको, जग रोज हाथ जोड़े॥
हे! नेमिनाथ तुम सम, हम अपना व्याह रचें।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम गिरनार चढ़ें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२२॥

जय किया कमठ का मठ, उपसर्ग सहन करके।
सो अंदर बाहर के, रिपु झुके नमन करके॥
दो वही वज्र पौरुष, जो पारसमणि कर दे।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ तू, कुछ ध्यान इधर कर दे॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२३॥

जो पर से सुलझ गए, वे बाजी मार गए।
जो निज में उलझ गए, वे भव से पार गए॥
वे महावीर हो तुम, प्रभु पूज्य वीतरागी।
यह अर्घ्य चढ़ा तुमसे, जिन संपत्ती माँगी॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...॥२४॥

पूर्णार्घ्य

प्रभु हाथ पकड़ लो तुम, है जगत भीड़ भारी।
हम खो न कहीं जाएँ, ये तेरी जबाबदारी॥
यह चौबीसों प्रभु से, नित रही प्रार्थना है।
हम अनर्घ बनें तुम सम, बस यही भावना है॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
उसे नमोऽस्तु जिससे हुए, चौबीसों भगवान॥

(ज्ञानोदय)

वृषभनाथ से महावीर तक, तीर्थंकर चौबीस रहे।
वर्तमान की चौबीसी को, भक्त झुकाते शीश रहे॥
क्योंकि इन्होंने दुनियाँ तजकर, वीतराग विज्ञान लिया।
वही रहा रत्नत्रय साँचा, धार दिगम्बर रूप लिया॥१॥

फिर अरिहंत दशा को पाकर, समवसरण में तत्त्व दिए।
कर्म ध्यान से नष्ट किए तो, नमोऽस्तु सारे भक्त किए॥
हम भी बनें उन्हीं के जैसे, अपना आतम प्रकटाएँ।
रागद्वेष को छोड़ सकें हम, निज अरिहंत रूप पाएँ॥२॥

सिद्धालय सी छाया पाएँ, दुनियाँ का भव भ्रमण तजें।
विषय विकारों भोग नजारों, मोह बहारों में न फँसे॥
कर्म कटारों में नहिं उलझें, बस आतम में रमण करें।
वसें शीघ्र लोकाग्र शिखर पर, सिद्धों जैसे गमन करें॥३॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, अतः आपको खोज लिया।
सभी सहारों से क्या लेना, मात्र आपको पूज लिया॥
नहीं जरूरत कुछ करने की, लिया सहारा जब तेरा।
चरणों में बस करें गुजारा, देख नजारा अब तेरा॥४॥

ज्ञान उजाला मिला आपका, यही गुजारा काफी है।
भवसागर से तिरने तेरा, एक इशारा काफी है॥

मिले ठिकाना मात्र आपका, फिर हर चीज पराई है।
'सुव्रत' ने अंतस में ऐसी, 'विद्या' ज्योति जलाई है॥५॥

(सोरठा)

आत्म बने सिद्धात्म, यही हमारी आश है।
सो भजने परमात्म, नमोऽस्तु अपने पास है॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अष्टाह्निका व्रत जाप्य मंत्र—

(ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे-द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः।)

१. ॐ ह्रीं नन्दीश्वर-संज्ञाय नमः। २. ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति-संज्ञाय नमः।
३. ॐ ह्रीं त्रिलोकसार-संज्ञाय नमः। ४. ॐ ह्रीं चतुर्मुख-संज्ञाय नमः।
५. ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण-संज्ञाय नमः। ६. ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान-संज्ञाय नमः।
७. ॐ ह्रीं सिद्धचक्र-संज्ञाय नमः। ८. ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज-संज्ञाय नमः।

समवसरण व्रत जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशाय सकल गुणकरण्डाय श्री सर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

सर्व शान्तिमंत्र जाप्य मंत्र— (ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।)

१. ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।
२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि सा उ सा नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ विदेह के, तीर्थंकर प्रभु बीस।
विद्यमान रहते सदा, उन्हें झुकाएँ शीश॥

पंचचामर (नाराच)

विदेहक्षेत्र में जिनेश, बीस विद्यमान हैं।
वही हमें सहाय हैं, वही हमारी शान हैं॥
विराजमान जो सदा, समो-समाज में रहें।
नमोऽस्तु है उन्हें सदैव, जो स्वरूप में रहें॥
विदेहक्षेत्र की सुतीर्थ, वन्दना न पा सकें।
न पुण्य है न भाग्य है, अतः न दर्श पा सकें॥
न शब्द हैं न द्रव्य हैं, न अर्चना रचा सकें।
उन्हें यहीं पुकार रोज, शीश ही झुका सकें॥

(दोहा)

पूर्ण काम हमने किया, जप कर तेरा नाम।
मन में आकर आप भी, पूर्ण करो निज काम॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकर जिनसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

मलीन कर्म से रहे, अतः न शुद्ध हो सके।
न क्षीर नीर ला सके, न जन्म मृत्यु धो सके।
नशाए जन्म आदि जो, जिनेन्द्र वो समुद्र दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

सराग हो सभी सहें, विराग से न राग है।
जला रही अतृप्त मोह, राग-द्वेष आग है।
बुझाए राग आग जो, जिनेन्द्र साम्य भाव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

झुकाव अन्य पै रहा, किए न आत्म साधना।
घुमाव विश्व में हुआ, मिली न शुद्ध चेतना।
निवास मोक्ष में मिले, अतः जिनेन्द्र छाँव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

गुलाब काम का प्रतीक, त्याग का सरोज है।
गुलाब में फँसे खिला न, आत्म का सरोज है।
स्वभाव पुष्प सी खिलाइए, विदीर्ण आत्म को।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

न शान्त हो सकी क्षुधा, न तृप्त चित्त हो सका।
न हो सके विरक्त सो, अभक्ष्य-भक्ष्य को भखा।
अशेष कामना तजें, स्वभाव ज्ञान वस्तु दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रकाश के प्रभाव से, पदार्थ अन्य ही दिखें।
न दीप वो कभी जला, जहाँ जिनेन्द्र ही दिखें।
जिनेन्द्र पूजने चले, निजात्म तत्त्व प्राप्त हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

चिदात्म के विलास के, विकास तो हुए नहीं।
चली विभाव आधियाँ, स्वभाव जो छुए नहीं।
जिनेन्द्र गंध में रमें, विनाश कर्म गंध हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

कि पाप नर्क दें कि पुण्य, स्वर्ग भोग मोक्ष दें।
चुनाव क्या करें यही, जिनेन्द्र भक्त सोच लें।
अभाव पाप पुण्य का, जिनेन्द्र के बिना न हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

त्रिलोक में त्रिकाल में, जिनेन्द्र धर्म मात्र है।
उदार दृष्टिकोण भक्त, मात्र धर्म पात्र है।
विशुद्ध है दयामई, क्षमादि धर्म धारता।
स्वरूप वस्तु का यही, अनन्त भव्य तारता॥

न भेदभाव ये करे, कि भेदज्ञान तो करे।
न वित्त राग ये करे, कि वीतरागता तो करे।
जिनेन्द्र देव से सदैव, धर्म चक्र तो चले।
पदारविन्द से हुए न?, कौन-कौन के भले॥

कि शंखनाद ज्यों हुआ, त्रिलोक में ध्वजा उड़ी।
पतंग भक्ति की उड़ी, कि डोर आप से जुड़ी।
सँभालिए पतंग तंग, कीजिये न भक्त को।
तभी विदेह के सभी जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दुर्लभ जिन-दर्शन रहा, दुर्लभ जिन-आशीष।
दुर्लभ जिन-महिमा कहें, अतः झुकाएँ शीश॥

(ज्ञानोदय)

अनादिकाल से धर्मतीर्थ बिन, भव-सागर में डूब रहे।
किन्तु अभी तक मिले न भगवन्, चेतन पाने जूझ रहे॥
बड़ी-बड़ी दुर्लभता से अब, जिन-दर्शन जिन-धर्म मिला।
साक्षात् प्रभु तो मिल न पाए, जिन-बिम्बों से हृदय खिला॥१॥

हृदय खिला लेकिन हम उसमें, प्रभु आसीन न कर पाए।
भूत भविष्यत और आज भी, चिदात्म शोध न कर पाए॥
कभी भूत की याद में रोए, कभी भविष्य की चिंता में।
कुछ न मिला सो यह मन लागा, विद्यमान भगवंता में॥२॥

अनन्त है आकाश बीच में, लोक जहाँ प्राणी रहते।
मध्यम त्रसनाली में त्रस हों, लोकालोक इसे कहते॥
लोकशिखर पर सिद्ध विराजें, ऊर्ध्वलोक में देव रहें।
अधोलोक में देव नारकी, मध्यलोक हम लोग रहें॥३॥

एक राजु के मध्यलोक में, असंख्यात हैं सागर द्वीप।
जम्बूधातकी पुष्करार्द्ध ये, ढाई द्वीप है बीचों-बीच॥
पाँचमेरुमय पाँच विदेह के, एक क्षेत्र में हैं बत्तीस।
पूर्ण एक सौ साठ जहाँ पर, चौथाकाल विहरते ईश॥४॥

पाँच भरत ऐरावत पाँचों, कर्म भूमियाँ दस जिनमें।
सभी एक सौ सत्तर होतीं, इतने तीर्थंकर इनमें॥

एक विदेह के पूरब पश्चिम, कुल होते बत्तीस नगर।
जिनमें कम से कम आठों में, मिलें एक बस तीर्थंकर॥५॥
इस विध पाँच विदेह क्षेत्र के, हुए बीस तीर्थंकर जी।
पाँच-पाँच सौ धनुष ऊँचाई, पूर्व कोटि की आयु भी॥
आयु पूर्ण कर मोक्ष पधारें, विद्यमान जो तीर्थंकर।
उसी नाम के मुनि तब बनते, केवलज्ञानी तीर्थंकर॥६॥
सीमंधर युगमंधर बाहु, सुबाहु सुजात स्वयंप्रभ जी।
श्री ऋषभनाथ अनन्तवीर्य जी, सौरीप्रभु विशालकीर्ति॥
वज्रधर चन्द्रानन चन्द्रबाहु, भुजंगम ईश्वर नेमि जी।
वीरसेन प्रभु महाभद्रजी, देवयश अजितवीर्य जी॥७॥
विद्यमान बीसों तीर्थंकर, विदेह क्षेत्र में यही रहें।
वहाँ देह से जा न सकें हम, पुण्य कथा हम यहीं कहें॥
निजी वज्र पौरुष से ये प्रभु, पाँचों कल्याणक पाते।
वीतराग विज्ञान चरित से, निज का स्वरूप प्रकटाते॥८॥
नाम मात्र हर काम बनाता, पाप ताप संताप हरे।
पुण्य वर्गणा शीश झुकाएँ, आतम भवदधि पार करे॥
'सुव्रत' साक्षात् प्रभुदर्शन कर, निजानन्द रस पान करें।
इसीलिए तो विदेह क्षेत्र के, प्रभुओं का सम्मान करें॥९॥

(सोरठा)

विदेहक्षेत्र के बीस, तीर्थंकर जो उर धरें।
पा उनका आशीष, ऋद्धि-सिद्धि पा भव तरें॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

विद्यमान के प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विद्यमान जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली (चौपाई)

सीमंधर प्रभु श्री मन धर के, आतमधन पाए भव तर के।
सुख-सम्पत्ति मिले अविनाशी, हम तो नमोऽस्तु के अभिलाषी॥

ॐ ह्रीं जिनसुखसम्पत्तिदायक श्री सीमंधर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

युगमंधर स्वामी युग मनधर, युगपत् जानें देखें निज-पर।
अंतरंग बहिरंग गुणी हों, सो नमोऽस्तु कर भक्त धनी हों॥

ॐ ह्रीं कालदुष्प्रभावनाशक श्री युगमंधर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

बाहु बाहु-निज पौरुष बल से, दूर हुए जग के दल-दल से।
दल-दल तजने पौरुष पाएँ, सो नमोऽस्तु करके गुण पाएँ॥

ॐ ह्रीं बाहुबलदुष्प्रभावनाशक श्री बाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

जय अरिहंत सुबाहु सुभावी, तजे विभावी बने स्वभावी।
हम अभिमान व्यर्थ का छोड़ें, सो नमोऽस्तु करने सिर मोड़ें॥

ॐ ह्रीं सुबाहुबलदायक श्री सुबाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

यथाजात प्रभु सुजात स्वामी, यथाख्यात चेतन के धामी।
बालक सम अविकारी हम हों, सो नमोऽस्तु कर शुद्धातम हों॥

ॐ ह्रीं यथाजातभावदायक श्री सुजात जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

पूज्य स्वयंप्रभ बने स्वयंभू, जिससे गूँजे जग अम्बर भू।
स्वयं प्रतिष्ठित समकित पाने, करते नमोऽस्तु हम गुण गाने॥

ॐ ह्रीं स्वयंभूभावदायक श्री स्वयंप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

धर्म ध्वजा थामें ऋषभानन, हुए धर्ममय भक्त रु भगवन।
तजें अधर्म ज्ञानगुण पाएँ, सो नमोऽस्तु कर शीश झुकाएँ॥
ॐ ह्रीं अधर्मकर्मनाशक श्री ऋषभानन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥
अनन्तवीर्य शक्ति प्रकटा के, मोहजाल तोड़े अकुला के।
बंध हरण को चरित शक्ति दो, सो नमोऽस्तु कर प्रभु भक्ति हो॥
ॐ ह्रीं मोहजालहर्त्ता श्री अनन्तवीर्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥
परम पूज्य सौरीप्रभ सुखिया, समवसरण के सुन्दर मुखिया।
त्यागें दुख दुख के कारण हम, सो नमोऽस्तु को पड़ें चरण हम॥
ॐ ह्रीं दुःखविघ्नहर्त्ता श्री सौरिप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥
विशाल कीर्ति का यश जब फैला, जो हर लेता तत्त्व विषैला।
हम बन जाएँ प्रभु के चेले, सो नमोऽस्तु को लगते मेले॥
ॐ ह्रीं कीर्तिविस्तारक श्री विशालकीर्ति जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥
पूज्य वज्रधर वज्र सरीखे, जिनसे वज्र कठिनता सीखे।
हम तो दया सीखने आए, सो नमोऽस्तु करने ललचाए॥
ॐ ह्रीं चारित्रदृढ़तादायक श्री वज्रधर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥
चन्द्रानन चन्दा से सुन्दर, फिर भी रखें न वस्त्राडम्बर।
चंदा तारे करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु करें वन्दना॥
ॐ ह्रीं चन्द्रमुखीआत्मदायक श्री चन्द्रानन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥
चन्द्रबाहु प्रभु चाँद चकोरे, पूर्ण दिगम्बर गोरे-गोरे।
पाप पुण्य दुनियाँ के त्यागी, हम तो नमोऽस्तु के अनुरागी॥
ॐ ह्रीं अविकारीभावदायक श्री चन्द्रबाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥
भोग भुजंग का जहर उतारे, अतः भुजंग नाम प्रभु धारे।
हम चिद्रूप बनें भगवन्ता, सो नमोऽस्तु हैं नन्तानन्ता॥
ॐ ह्रीं विषयवासनाहर्त्ता श्री भुजंग जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥
ईश्वर निज में जो प्रकटाए, जगत्-पूज्य ईश्वर कहलाए।

हम मिथ्यात्व हरें व्रत पालें, तब ही नमोऽस्तु कर गुण गा लें॥

ॐ ह्रीं आज्ञाप्रभाववर्धक श्री ईश्वर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

धर्मधुरी जो तत्त्व विचारें, वही नेमिप्रभु सबको तारें।
ग्रन्थ हरें निर्ग्रन्थ बनें हम, सो नमोऽस्तु कर भजन करें हम॥

ॐ ह्रीं सदासहायस्वरूप श्री नेमिप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

वीरसेन प्रभु वीरसिंह हैं, भव सागर के तीरसिंह हैं।
हमको भव से पार उतारें, हम नमोऽस्तु कर भाग्य सँवारें॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियपराजयभावहर्त्ता श्री वीरसेन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

महाभद्र जो सभ्य सभी से, भक्त नाम सुन झुके तभी से।
संयम अंगीकार करें हम, सो नमोऽस्तु कर भद्र बनें हम॥

ॐ ह्रीं अभद्रव्यवहारहर्त्ता श्री महाभद्र जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

पूज्य देवयश निज यश बाँटें, कर्म कालिमा सबकी छाँटें।
हम यशवान बनें ओजस्वी, सो नमोऽस्तु कर बनें यशस्वी॥

ॐ ह्रीं अपकीर्तिविनाशक श्री देवयश जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

अजितवीर्य प्रभु अजित विश्व में, अजितवीर्य हम बनें भविष्य में।
शुद्ध विशुद्ध भावना करना, रोज नमोऽस्तु प्रार्थना करना॥

ॐ ह्रीं आत्मबलवीर्यवर्धक श्री अजितवीर्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

पूर्णार्घ्य

कर्मोदय मिथ्यात्व भाव से, फँसी चेतना दुष्प्रभाव से।
समकित अंगीकार करें हम, सम्यग्ज्ञान चरित्र धरें हम॥
आतम के सब विभाव हरके, निर्विकल्प परमातम भजके।
चेतन का चिद्रूप सजाएँ, अतः आपको अर्घ्य चढ़ाएँ॥

(दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भले दूर हैं देह से, किन्तु हृदय से पास।
अंतस का अंतर हरें, अतः बने हम दास॥
भक्त दास संन्यास को, पाने को बेचैन।
अतः कहें जयमालिका, बनकर साँचे जैन॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सपने टूट रहे हों, जीवन रेखा टूटी हो।
जिनके अपने छूट गए हों, किस्मत गगरी फूटी हो॥
जीवन से जो ऊब चुके हों, व्यसन पंथ में डूबे हों।
धर्म कर्म पर नहीं भरोसा, दौड़ धूप में जूझे हों॥१॥
ऐसे जीव भले बिन मन से, अगर नाम प्रभु का लेते।
इसी भाव से भक्तजनों को, प्रभु नजदीक बुला लेते॥
देकर चरण शरण प्रभु अपनी, नजर दया की करते ज्यों।
मनचाही फिर मिलें वस्तुएँ, निज को जिनसम करते त्यों॥२॥
प्रथमदेव सीमंधर भजलो, जो भवसागर पार करें।
युगमंधर प्रभु की यादों से, भक्त निजी उद्धार करें॥
पूज्य बाहुप्रभु को सुमरें फिर, जो सम्यक् पुरुषार्थ कहें।
नमन करें सुबाहु जिनवर को, जो भक्तों के साथ रहें॥३॥
हो नमोऽस्तु सुजात स्वामी को, जो जीवन को धन्य करें॥
पूज्य स्वयंप्रभु को झुककर के, अपनी आत्म प्रसन्न करें॥
ऋषभानन प्रभु की अर्चा से, धर्मचक्र का रथ पाओ।
पूज्य अनन्तवीर्य की चर्चा, गाकर निज सत्ता पाओ॥४॥
सौरीप्रभु की करें वन्दना, सर्व कर्म संहार करें।
विनय विशालकीर्ति की करके, निज का निज श्रृंगार करें॥

पैर वज्रधर प्रभु के पड़के, वैर हरो शिव सैर करो।
चन्द्रानन के चित् चंदन से, चिदानन्द में धैर्य धरो॥५॥
चन्द्रबाहु चैतन्य चन्द्र का, उदय करें भय भूत हरें।
प्रभु भुजंग के चरणामृत से, विषय भोग के विष उतरें॥
ईश्वर प्रभु दें गीत आत्म स्वर, नमस्कार इसलिए करें।
पूज्य नेमिप्रभु को नतमस्तक, दस्तक दें कल्याण करें॥६॥
वीरसेन को करें नमामि, जैन चिह्न स्वीकार करें।
महाभद्र की महा-अर्चना, वैभाविक परिहार करें॥
पूज्य देवयश का यश वांचे, नांचें आत्मिक आंगन में।
अजितवीर्य से विजय प्राप्ति को, पहुँचे मंदिर प्रांगण में॥७॥
यथाशक्ति से भावभक्ति से, श्रद्धा से दूरी कम की।
घर से प्रभु प्रभु से शुद्धातम, राह मिले निज आतम की॥
अंतर बाह्य सुमंगल छाए, विश्व अमंगल टल जाएँ।
विद्यमान साक्षात् मिलें प्रभु, 'सुव्रत' निज मंदिर पाएँ॥८॥

(सोरठा)

प्रक्षालित हो देह, मनोवचन चैतन्य भी।
बनती देह विदेह, गुण गाकर हों धन्य भी॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं..।

(दोहा)

विद्यमान के प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, विद्यमान जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री शान्तिनाथ विधान

स्थापना (शंभु)

हे! शान्ति प्रदाता शान्ति प्रभु, चैतन्य शान्ति के अधिवासी।
हो जीव मात्र के इष्ट तुम्हीं हम विश्व शान्ति के अभिलाषी॥
सुख शान्ति शीघ्र तुम सम पाएँ सो शान्ति प्रभु को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो भक्तों के नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक-सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

है जन्म सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नव यौवन में।
है मरण दुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस जीवन में॥
दुख मातम रोग अशान्ति हरो, जल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

है भव भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग माया में।
रिश्तों-नातों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस काया में॥
धन पद गृह युद्ध अशान्ति हरो, चंदन सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

है स्वर्ग सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सिंहासन में।
चौरासी लाख योनियों में, है शान्ति कहाँ भव भटकन में॥
जग भागमभाग अशान्ति हरो, अक्षत सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

है घर गृहस्थी में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सुर कन्या में।
है स्त्री सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष कन्या में॥
स्त्री पुरुषों की अशान्ति हरो, पुष्पों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय कामवाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

है भूख प्यास में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष अमृत में।
छप्पन भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ रस व्यंजन में॥
रस भोजन भोग अशान्ति हरो, नैवेद्य सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

है अंधकार में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ उजयारों में।
बिजली बल्बों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नभ तारों में॥
दैनिक जीवन की अशान्ति हरो, दीपक सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

है दौड़ धूप में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ कर्मों में।
है राग-द्वेष में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नो-कर्मों में॥
परिषह उपसर्ग अशान्ति हरो, धूपों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

खोने-पाने में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ घर भरने में।
निन्दा ईर्ष्या में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ कुछ करने में॥
भय वैर विरोध अशान्ति हरो, फल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम ह्रीं शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथाय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहंत को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (अनन्त चतुष्टय) (हाकलिका)

कर्म हरे ज्ञानावरणी, पूज्य बनें अनन्तज्ञानी।
धर्म दान शुभ वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मसम्बंधी उपद्रवनिवारकाय अनन्तज्ञानप्राप्ताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

हरे दर्शनावरणी जो, अनन्त दर्शन स्वामी वो।
निज दर्शन की वस्तु दो शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मसम्बंधी उपद्रवनिवारकाय अनन्तदर्शनप्राप्ताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

मोहनीय को नष्ट किए, अनन्त सम्यक् प्राप्त किए।
श्रद्धा सुख की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मसम्बंधी उपद्रवनिवारकाय अनन्तसुखप्राप्ताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

अंतराय नाशे पाँचों, अनन्तवीर्य का यश वाँचों।
आत्म शक्ति की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मसम्बंधी उपद्रवनिवारकाय अनन्तवीर्यप्राप्ताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

(अतिशय)

हुए जन्म के दस अतिशय, क्षणिक शान्ति मिलती जय-जय।
अतिशयकारी वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मसम्बन्धी कर्मोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

दसों ज्ञान के अतिशय हों, शान्ति ज्ञान के आलय हों।
ज्ञान-ध्यान की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानसम्बंधी कर्मोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

हुए देवकृत अतिशय जो, शान्तिविधायक चौदह वो।
विघ्न विनाशक वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं चतुर्विध-उपसर्गसम्बन्धी कर्मोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

(त्रयपद)

सोलम तीर्थंकर चक्री, कामदेव त्रय पदधारी।
रत्नत्रय की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकसम्बन्धी-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

(अष्टप्रातिहार्य)

अशोक तरुवर हरे भरे, शान्तिप्रभु सम शोक हरे।
हं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं बीजसहित अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

दिव्य सुमन सुर बरसाते, शान्तिप्रभु सम सुख लाते।
भं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित पुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०॥

दिव्य ध्वनि ओंकारमयी, सुख संपद दे नयी-नयी।
मं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं बीजसहित दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११॥

चँवर ढुराएँ चौसठ देव, उर्ध्वगमन होता स्वयमेव।
रं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं बीजसहित चामरसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२॥

शान्तिप्रभु सिंहासन पर, ऋद्धि-सिद्धि दें मोहित कर।
घं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित सिंहासनसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१३

सात भवों को भामण्डल, दर्शाकर करता मंगल।
झं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१४॥

देव दुंदुंभि वाद्य बजें, दसों-दिशा तक गूँज उठें।
सं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं बीजसहित देवदुंदुभिसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१५॥

तीन लोक के अधिपति जो, तीन छत्र से शोभित सो।
खं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं बीजसहित छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य (अर्द्ध जोगीरासा)

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

(दोहा)

ओम् ह्रीं बीजाक्षर सहित, ह भ म र घ झ स ख आठ।
शान्तिप्रभु को हम भजें, करके शान्तिपाठ॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशत् गुणसहित अष्टबीजमण्डित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

जिनके चरणों में बहे, विश्वशान्ति की धार।
ऐसे शान्तिनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक में तीन काल में, विश्वशान्ति की चाह हमें।
देश शान्ति की हमें कामना, राज्य शान्ति की आश हमें॥
नगर शान्ति के हम प्रेमी, हैं हम गृह शान्ति सदा पाएँ।
आत्म शान्ति के हम इच्छुक सो, शान्तिप्रभु के गुण गाएँ॥१॥
जी हाँ ये वो शान्तिनाथ हैं, जो सोलहवें तीर्थंकर।
बारहवें जो कामदेव हैं, तथा पाँचवें चक्रेश्वर॥
विश्वसेन-ऐरा के नन्दन, समवसरण के नाथ रहे।
तत्त्वज्ञान दे रोग शोक दुख, हरने को विख्यात रहे॥२॥
नाथ! हमारी सुनो प्रार्थना, हम पर कृपा जरूर करो।
जीव मात्र की हरो अशान्ति, विश्वशान्ति भरपूर करो॥
कर्म उपद्रव शान्ति करो प्रभु, मन-वच-तन के रोग हरो।
योग-वियोग की हरो वेदना, त्रस थावर भव भोग हरो॥३॥
जैसे शान्ति नाम के यश हैं, वैसे कार्य आपके हैं।
तब ही चौबीसी में सबसे, ज्यादा भक्त आपके हैं॥
स्वामी हम बस शान्ति चाहते, शान्ति शान्ति सुख शान्ति मिले।
कूट कुन्दप्रभ सम्मेदाचल, जैसी आत्मिक शान्ति मिले॥४॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायक सर्वोपद्रवशान्तिकारक-त्रयपदधारक श्री शान्ति-नाथाय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्ति शान्ति धारा करें, पुष्पांजलि कर जाप।
'सुव्रत' करें नमोऽस्तु अब, भूल चूक हो माफ॥

(शान्तये शान्तिधारा...पुष्पांजलिं...)

आरती-१

ओम् जय शान्तिनाथ देवा, जय शान्तिनाथ देवा।
करके नमोऽस्तु आरति, भक्त करें सेवा॥ ओम्...
कामदेव चक्रेश्वर, तीर्थंकर ज्ञानी। स्वामी....
तीन तीन पद धारी, कल्याणक स्वामी॥ ओम्...
मोक्षमार्ग के नेता, दुख संकट हर्त्ता। स्वामी....
आत्म शान्ति के भोक्ता, विश्वशान्ति कर्ता॥ ओम्...
दुख कर्मों का क्षय हो, बोधि लाभ पाएँ। स्वामी...
मरण समाधि करके, जिन गुण धन पाएं॥ ओम्...
हम तो करते वंदन, जिनवर स्वीकारो। स्वामी...
हर कर विघ्न अशान्ति, 'सुव्रत' को तारो॥ ओम्...

आरती-२

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. विश्वसेन के राज दुलारे, ऐरा माँ के नयन सितारे।-२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. कामदेव चक्री तीर्थंकर, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर।-२
विश्वशान्ति के सहारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. धर्मधार को आप बहाते, कर्मों के ग्रह रोग नशाते।-२
शान्तिधारा वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. आत्मशान्ति के हम अभिलाषी, विद्या गुरु के हम विश्वासी।२
'सुव्रत' के प्रत्याशी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री बाहुबली विधान

मंगलाचरण

(सखी)

श्री बाहुबली जिनन्दा, माता तुम्हारी सुनन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥ (ध्रुव)

हैं नीलकमल सम नयना, नासा चम्पा की बहना।
प्रभु मुखड़ा चाँद का टुकड़ा, हैं गाल नीर सम गहना॥
गजराज सूँड़ सम बाहु, दो कर्ण छू रहे कन्धा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥१॥

है कण्ठ शंख से प्यारा, कटिभाग अचल दृढ़ मन्दर।
प्रभु वक्ष हिमालय जैसा, तन कामदेव से सुन्दर॥
हैं सबसे सुन्दर अपने, प्रभु बाहुबली जिनन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥२॥

हैं दिव्य देह पर बेलें, जिस पर सर्पादिक खेलें।
फिर भी जो कभी न डरते, कब उनके चरणा छू लें॥
जो कल्पवृक्ष भव्यों के, सुखदाता पूरण चन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥३॥

खड्गासन पूर्ण दिगम्बर, निर्मोही शुद्ध निरम्बर।
उपवास वर्षभर करके, निश्शल्य हुए गोम्मटेश्वर॥
प्रभु दर्शनीय 'सुव्रत' को, दो निज सम जिन कलाकन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥४॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री बाहुबली पूजन

स्थापना (दोहा)

बाहुबली कामदेव हैं, जिनशासन के धाम।
सबसे ऊँची मूर्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

(शंभु)

जय बाहुबली जय गोम्मटेश, जय कायोत्सर्ग प्रणेता की।
जय वृषभ सुनन्दा नन्दन की, परिषह उपसर्ग विजेता की॥
जैनासन में हे! निर्मोही, तुम सबको मोहित खूब करो।
हम मोहित तेरी मुद्रा पर, तुम हम पर दया जरूर करो॥
माँ पिता भाई बंधु छोड़े, धन राज्य प्रजा से मुख मोड़े।
प्रभु! अर्जी हमारी सुनकर के, चित् ज्ञान छींटे मारो थोड़े॥
तो आत्म हमारी जाग उठे, फिर तजे मोह की निद्रा को।
अब करके नमोऽस्तु पूज रहे, प्रभु बाहुबली की मुद्रा को॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस दुनियाँ के रिश्ते नाते, हैं कच्ची माटी के कलशा।
ये साथ दूर तक दे देंगे, विश्वास नहीं इनका पलका॥
ये मतलब के रिश्ते तजने, प्रासुक जल सादर अर्पित हैं।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जब चक्र चला अपने मारें, तो किन पर हम विश्वास करें।
इसलिए त्यागकर दुनियाँ को, वैराग्य धरें संन्यास धरें॥
हम बनें तपस्वी तुम जैसे, सो चंदन सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

तुम किए तपस्या ऐसी कि, पग से सिर तक लिपटी बेलें।
तब बने घौंसले बाँबी भी, तब तन पर सर्पादिक खेलें॥
तुम डरे नहीं हम डरें नहीं, सो अक्षत सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

धन दौलत नारी के खातिर, जब भाई-भाई को मार रहा।
यह अहं ब्रह्म की शल्य रही, किसको अर्हम् से प्यार यहाँ॥
हम ब्रह्म बिहारी तुम सम हों, सो पुष्पांजलि ये अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

उपवास वर्षभर कर तुमने, आहार किया न पिया पानी।
जो तीर्थंकर भी कर न सके, वो किए साधना तूफानी॥
हम भूख-प्यास तुम सम त्यागें, नैवेद्य तभी तो अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

जल मल्ल नेत्र युद्धों में भी, अग्रज चक्रेश्वर टिक न सके।
यह घोर स्वार्थ का अँधियारा, जिसमें निज पर कुछ दिख न सके॥
तज स्वार्थ जलाएँ निज ज्योति, सो दीप आरती अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अपनों ने सगा बना करके, फिर दगा दिया फिर दाग दिया।
उपसर्ग परीषह सहकर भी, तुमने अपने से राग किया॥
संकल्प आप सम डिग न सके, सो धूप दशांगी अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

उपकार करोगे ना जब तक, तब तक तो चरण न हम छोड़ें।
तुम ठुकराओ या अपनाओ, विश्वास कभी न हम तोड़ें॥
हम चलें आपके कदमों पर, सो श्रीफल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर से पूर्व जो, पाए पद निर्वाण।
दुनियाँ में यशवान हैं, बाहुबली भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ की, यशस्वती पटरानी थी।
तथा दूसरी रही सुनन्दा, सुन्दर बड़ी सयानी थी॥
दिया भरत को जन्म प्रथम ने, पहले हुए चक्रवर्ती।
तथा सुनन्दा बाहुबली को, जन्मी तो पूजे धरती॥१॥
राज्य भरत को दिया प्रभु ने, बाहुबली युवराज बने।
आदिनाथ ने दीक्षा ली फिर, मुक्तिवधू के राज बने॥
चक्ररत्न पा भरतेश्वर फिर, करने को दिग्विजय चले।
जब लौटे तो नगर द्वार पर, चक्र रुका जो खूब खले॥२॥

जिसका मतलब शेष रहा है, वश करना भ्राताओं को।
उनको आज्ञा मान्य नहीं सो, तजें सभी बाधाओं को॥
सबने ले ली जिन दीक्षा पर, बाहुबली प्रतिकार किए।
हम परतन्त्र बनें क्यों अब जब, पिता बराबर राज्य दिए॥३॥
दूतों को फटकारा ज्यों ही, तभी युद्ध की हवा चली।
एक तरफ तो भरत सैन्य था, एक तरफ थे बाहुबली॥
तभी मंत्रियों ने समझाया, लड़ते हो क्यों आपस में।
बिगड़ेगा तो कुछ न तुम्हारा, प्रजा पड़ेगी आफत में॥४॥
श्रेष्ठ यही कि युद्ध टालकर, बचिये जन-धन हानि से।
या फिर नेत्र मल्ल जल वाले, युद्ध करो आसानी से॥
विजय सुनिश्चित हो जाने पर, होगी फिर टकरार नहीं।
हुआ फैंसला युद्ध देखने, मंत्र मुग्ध तैयार सभी॥५॥
तब जल मल्ल नेत्र युद्धों में, बाहुबली जब विजित हुए।
तभी उन्हीं पर चक्रेश्वर जी, चक्र चलाकर कुपित हुए॥
हुआ चक्र से बाल न बाँका, बाहुबली पर आहत थे।
हाय! हाय! यह दुनियाँ जिसमें, रिश्ते नाते स्वारथ के॥६॥
भैया का व्यवहार देख यों, बनें विरागी बाहुबली।
दीक्षा लेकर बने तपस्वी, खड़े हुए मुनि बाहुबली॥
लता घौंसले सर्पादिक से, सत्कारे मुनि बाहुबली।
एक वर्ष उपवास देखकर, चक्री पूजे बाहुबली॥७॥
ज्यों भरतेश्वर ने पूजा तो, शल्य मिटाए बाहुबली।
मुझसे भैया दुखी हुआ ये, बात भुलाए बाहुबली॥
जैसे ही निश्शल्य हुए तो, बने केवली बाहुबली।
कर विहार कैलाश अचल से, मोक्ष गए प्रभु बाहुबली॥८॥

भले मोक्ष प्रभु चले गए पर, दिखें सामने बाहुबली।
इसीलिए तो जग मंदिर में, खूब पुजें प्रभु बाहुबली॥
गोम्मट राजा ने बनवाए, सबसे ऊँचे बाहुबली।
तभी गोम्मटेश्वर कहलाए, सबसे सुन्दर बाहुबली॥९॥

मुक्तिवधू संग मस्त हुए वो, दृश्य हमें कब झलकेंगे।
तुम बिन हम ना रह पाएंगे, सो चरणों में धमकेंगे॥
हमें बुला लो या आ जाओ, अर्जी यही हमारी है।
हमने अपना फर्ज निभाया, अब तो आपकी बारी है॥१०॥

फर्ज निभाते हैं हम अपना, चरणों में सर रखने का।
क्या तेरा भी फर्ज नहीं है, हाथ शीश पर रखने का॥
सदा रहे आशीष शीश पर, रात दिना बस बाहुबली।
बाहुबली बनने को 'सुव्रत', पूज रहे प्रभु बाहुबली॥११॥

(दोहा)

सवा पाँच सौ धनुष की, बाहुबली की देह।
महा बिम्ब के गीत गा, हमको मिले विदेह॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

बाहुबली स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बाहुबली जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

युद्ध दशा वर्णन

(लय–माता तू दया करके...)

भक्तों के सपनों में, प्रभु बाहुबली झूलें।
अब करो कृपा हम पर, हम शीघ्र चरण छू लें॥

जल युद्ध

है राग द्वेष ज्वाला, जो घर–घर में होती।
कैसे यह त्याग सकें, कब जले आत्म ज्योति॥
जल युद्ध विजेता जी, यह राग द्वेष हर लो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं पारिवारिक-कलह-विनाशन-समर्थ जलयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

मल्ल युद्ध

अब खेल अखाड़े का, घर–घर में होता है।
यह मल्ल युद्ध कैसा, जिससे दिल रोता है॥
तुम सम यह जीत सकें, ऐसा कुछ तो कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं मल्लाखेट-विनाशन-समर्थ मल्लयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

दृष्टि युद्ध

नजरों से ही नफरत हो, नजरों से ही होता प्यार।
सब खेल नजर के हैं, नजरों से हो जय हार॥
जय नजर करें तुम सम, नजरें हम पर कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥

भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं समस्त दृष्टि-विकृति-विनाशन-समर्थ दृष्टियुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

<u>अस्त्र युद्ध</u>

जो चक्र तीर भाले, तज अस्त्रों के संग्राम।
फिर ध्यान चक्र धरके, पाए निज में विश्राम॥
हम अस्त्र तजें तुम सम, बस इतना साहस दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं अस्त्रभय-विकृति-विनाशन-समर्थ अस्त्रयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

<u>शस्त्र युद्ध</u>

तलवार चाकू आदि, वो शस्त्र युद्ध त्यागे।
फिर जैन साधना कर, तुम निज से अनुरागे॥
हम शस्त्र तजें तुम सम, यों आत्मशक्ति भर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं शस्त्रभय-विकृति-विनाशन-समर्थ शस्त्रयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

<u>गृह युद्ध</u>

जब भाई ललकारे, जब मिले चुनौती तो।
तज अंतर युद्ध यही, पाए तुम मुक्ति को॥
गृह युद्ध तजें तुम सम, इतनी समता भर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं गृह-विकृति-विनाशन-समर्थ गृहयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

देश युद्ध

जब देश-देश लड़ते, तो वही युद्ध होता।
जन धन की हानि करें, जिससे धर्मी रोता॥
हे देश युद्ध त्यागी!, बस विश्वशान्ति कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं देश-विकृति-विनाशन-समर्थ देशयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

शब्द युद्ध

जग में सबसे ज्यादा, बस शब्द बाण चलते।
सो मौन तपस्वी के, हम चरणों में रमते॥
अब बनें मौनप्रिय हम, तुम कोलाहल हर लो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं शब्द-विकृति-विनाशन-समर्थ शब्दयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

विचार युद्ध

संग्राम विचारों की, दुनियाँ में आँधी चली।
जो उनको शुद्ध करे, वह सच्चा बाहुबली॥
यह तज तुम स्वस्थ हुए, अब हमें स्वस्थ कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं मानसिक-विकृति-विनाशन-समर्थ विचारयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

युद्ध का मूल

जड़ जोरु जमीनों से, सब युद्ध यहाँ ठनते।
जो इन्हें त्याग देते, वे बाहुबली बनते॥
हम तजें यही मूर्च्छा, वह मंत्र दान कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

ॐ ह्रीं युद्धमूल-विनाशन-समर्थ युद्धमूल-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

सप्त परम स्थान वर्णन/ कर्त्रन्वय क्रिया

(लय–भक्ति बेकरार है...)

भक्ति बेशुमार है, आनन्द अपार है।
बहुबली भगवान की, हो रही जय जयकार है॥

सज्जाति क्रिया

दीक्षा योग्य वेश को पाके, धन्य किए तुम सज्जाति।
तुम सम हम भी बनें दिगम्बर, रत्नत्रय की दो ज्योति॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं सज्जाति-दीक्षायोग्य कुल-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

सद्गृहित्व क्रिया

गृहस्थ दशा के सदाचार को, आप धरे फिर ली दीक्षा।
तुम सम आश्रम शुद्ध करें हम, ऐसी हमको दो शिक्षा॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं सद्गृहित्व-दीक्षायोग्य पर्याय-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

पारिव्राज्य क्रिया

तज संसार देह भोगों को, आप दिगम्बर रूप धरे।
तुम सम पारिव्राज्य बनें हम, सो चरणों में आन पड़े॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं पारिव्राज्य-दीक्षानुबंधी-पुण्य-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

सुरेन्द्र क्रिया

तुम तो मोक्ष गए हो स्वामी, हम समाधि को तरस रहे।
हमको स्वर्ग नहीं पाना बस, तुम सम बनने हरष रहे॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रता-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

साम्राज्य क्रिया

चक्र रत्न के साथ-साथ में, दुनियाँ के सारे पद भी।
हमें न पाना हमको केवल, मिले आप जैसी पदवी॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं साम्राज्य-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

आर्हन्त्य क्रिया

पाँच महाकल्याणक वाली, तीर्थंकर की मिले गली।
वो आर्हन्त्य क्रिया को करने, हमें बना लो बाहुबली॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं आर्हन्त्य-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

परिनिर्वृत्ति क्रिया

जब अरिहंत मोक्ष पाते तो, परिनिर्वाण वही होता।
जिसको तुम तो कर ही चुके हो, हम भी कर लें मन होता॥
भक्ति बेशुमार है...

ॐ ह्रीं परिनिर्वृत्ति-क्रिया-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

केवली के प्रकार

तीर्थंकर केवली

(विष्णु)

अंतर बाहर की लक्ष्मी के, साँचे जैन धरम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

पाँच तीन दो कल्याणक के, गुण छ्यालीस धरें।
वो तीर्थंकर पूज्य केवली, जग कल्याण करें॥
समवसरण के प्रभु की पूजा, बाहुबली उन सम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वैभव-संपन्न-तीर्थंकर-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

सामान्य केवली

कल्याणक जिनके ना हों पर, बने केवली जो।
वो सामान्य केवली भगवन्, बाहुबली जी हो॥
जिनकी पूजा मोक्षमार्ग दे, दे समृद्धि धन।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं विशेष-सामान्यकेवली-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

अन्तकृत केवली

उपसर्गों के होने पर यदि, मृत्यु निकट होती।
तब लघु अंतर्मुहूर्त में ही, जले ज्ञान ज्योति॥
बनें अन्तकृत वही केवली, बाहुबली आतम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समस्त संकट-उपसर्ग-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

उपसर्ग केवली

हर उपसर्ग सहन कर मिलता, केवलज्ञान जिन्हें।
गंधकुटी में शोभित होकर, दें सद्ज्ञान हमें॥
पूज्य वही उपसर्ग केवली, बाहुबली भगवन।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समस्त-अवरोध-विरोध-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

मूक केवली

जिनको केवलज्ञान हुआ पर, खिरे नहीं वाणी।
मोक्ष प्राप्ति तक मौन रहे जो, सबके कल्याणी॥
मूक कवेली वही आप सम, हरते संकट गम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समस्त-अशान्ति-हेतु-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

अनुबद्ध केवली

तीर्थंकर या अन्य केवली, जिस दिन मोक्ष गए।
तब बनते जब अन्य केवली, अंतर नहीं पड़े॥
वो अनुबद्ध केवली होवें, बाहुबली सम हम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं संस्कार-परम्परा-विधायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

समुद्घात केवली

आयु कर्म को छोड़ अन्य को, आयु योग्य करते।
आत्म प्रदेशों को फैला जो, कर्म हरण करते॥
समुद्घात वह कहे केवली, बाहुबली प्रियतम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समानता-अधिकार-विधायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

पूर्णार्घ्य

पर द्रव्यों की चिन्ता से तो, सुलझे बाहुबली।
किन्तु इन्हीं में सिद्ध बुद्ध सम, उलझी आत्मकली॥
अतः छुपा लो चेतन गृह में, पाएँ मोक्ष परम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समस्तविध-संकट-उपद्रव-विनाशन-समर्थ श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

चित् चैतन्य मुकाम हैं, जो अतिशय बलवान।
श्रद्धा के आधार हैं, बाहुबली भगवान्॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरिहंत जिनेश्वर, बाहुबली गुणवान तुम्हीं।
सिद्ध स्वरूपी परमानन्दी, भक्तों के भगवान तुम्हीं॥
अहो भाग्य है नाथ हमारा, मिला आपका दर्शन है।
अब तो हमको ऐसा लगता, क्षणभंगुर जग जीवन है॥१॥

अतुलवीर्य ऐसा तुम पाए, जिसे कोई न तौल सके।
उसका सम्यक् प्रयोग करके, शीघ्र मोक्ष पट खोल सके॥
ऐसा नहीं सुना ना देखा, धर्म भंग चक्री का हो।
पर तुमने वह किया कि जिससे, मान भंग चक्री का हो॥२॥

सचमुच निज के चक्री बनकर, जिन-चक्री तुम कहलाए।
देख तुम्हारी कठिन साधना, तूफाँ के दिल भर आए॥
सिद्ध प्रसिद्ध हुए तुम स्वामी, युद्ध सभी तुम जीते हो।
होकर देही बने विदेही, चिदानन्द रस पीते हो॥३॥

संस्कारों की ये सब महिमा, परम धाम को पाए हो।
चर्म चक्षु के हुए अगोचर, भक्त हृदय को भाए हो॥
तुम तो स्वामी मोक्ष गए पर, हम वियोग में तड़फ रहे।
हाय! हाय! कुछ कर न सके पर, आँसू झर-झर टपक रहे॥४॥

अजब-गजब ये कठिन समय है, चारों ओर निराशा है।
भाई-भाई का दुश्मन बनकर, लहू पीने को प्यासा है॥

जग में माता-पिता खो रहे, घर मंदिर अब रहे कहाँ।
जीवन का अब मूल्य नहीं कुछ, वृद्धाश्रम खुल रहे यहाँ॥५॥

पूज्य महापुरुषों की गाथा, शेष बची बस शास्त्रों में।
सूख गया करुणा का पानी, जग उलझा बस शस्त्रों में॥
रिश्तों में छल कपट भरा है, खुशियों का अब अंत हुआ।
लगता है अब प्रलय निकट है, पाप अधर्म अनन्त हुआ॥६॥

अतः विश्व को दुष्कर्मों का, दुख हरने शिक्षित कर दो।
आत्म किले में ज्ञान सैन्य से, भक्तों को रक्षित कर दो॥
हम भी तुम सम बाहुबली हों, अतुलवीर्य बाहुबल दो।
'सुव्रत' तुम सम जय पाएँ बस, वह तीर्थंकर सा बल दो॥७॥

(दोहा)

पर भावों के भाव सब, हैं दुख के संसार।
बाहुबली उनके जयी, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

बाहुबली स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बाहुबली जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

आस्था व बोध
संयम की कृपा से
मंजिल पाते

गोम्मटेस-थुदि

(उपेन्द्रवज्रा)

विसट्ट - कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद - समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ १॥
अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ २॥
सुकण्ठ-सोहा जियदिव्व संखं, हिमालयुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठुमज्झं,तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ३॥
विंज्झाय लग्गे पविभासमाणं, सिहामणि सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥४॥
लयासमक्कंत - महासरीरं, भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ५॥
दियंबरो जो ण च भीइ जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ६॥
आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि, सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं।
विराय भावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ७॥
उपाहि मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं।
वस्सेय पज्जंतमुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ८॥

गोम्मटेश अष्टक-१ (भावानुवाद)

(चौपाई)

नीलकमल दल जैसे नयना, चन्दा जैसा मुखड़ा है ना।
नासा लख चम्पा हुई पानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥१॥
नभ जल जैसे गाल चमकते, कंधों तक तो कान लटकते।
भुजा दंड गज सूँड समानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥२॥
कंठ शंख जैसा अनुपम है, वक्ष विशाल हिमालय सम है।
कटि प्रदेश अचल अभिरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥३॥

विंध्यगिरी पर चमक रहे जो, सब चैत्यों के प्रमुख रहे जो।
जग को सुख दें चंदा स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥४॥
जिनके तन पर चढ़ी लताएँ, जिन्हें कल्पतरु भव्य बताएँ।
जिन पद में सुर भी प्रणमामि, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥५॥
जिन्हें न भय जो शुद्ध दिगम्बर, जिनके मन को रुचे न अम्बर।
सर्प आदि से कपित न स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥६॥
आश रहित समदर्शनधारी, सुख नहिं चाहें दोष निवारी।
भरत भ्रात में शल्य विरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥७॥
तजे उपाधी समता पाए, वित्त धाम मद मोह नशाए।
किए वर्ष भर अनशन स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥८॥

(दोहा)

प्राकृत में अष्टक रचे, 'नेमिचन्द्र' गुण गाए।
बाहुबली के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाए॥

===

गोम्टेश अष्टक—२ (दोहा)

नील कमल दल से नयन, मुख शशि समा विशेष।
चम्पा जय नासा करे, नित नत उन गोम्टेश॥१॥
कर्ण लटकते काँध तक, गज सूँडा कर भेष।
गाल नीर सम गगन से, नित नत उन गोम्टेश॥२॥
कंठ जीतता शंख को, बहु शुभ मध्यप्रदेश।
सीना हिमगिर सा अचल, नित नत उन गोम्टेश॥३॥
विंध्याचल पर चमकते, चैत्य श्रेष्ठ परमेश।
पूर्ण चन्द्र जग-हर्ष को, नित नत उन गोम्टेश॥४॥
बेल महातन पर चढ़ीं, पूजित चरण सुरेश।
कल्पवृक्ष भविवर्ग को, नित नत उन गोम्टेश॥५॥

अभय दिगम्बर शुद्ध जो, वस्त्र राग ना लेश।
सर्पादिक से कंप ना, नित नत उन गोम्टेश॥६॥
विमल दृष्टि आशा बिना, सुख वांछा ना शेष।
भरत शल्य बिन राग बिन, नित नत उन गोम्टेश॥७॥
घर-पद-धन-मद-मोह बिन, समता सहित महेश।
एक साल उपवासमय, नित नत उन गोम्टेश॥८॥
प्राकृत में अष्टक रचे, नेमिचन्द्र गुण गाय।
गोम्मटेश के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाय॥९॥

===

श्री बाहुबली जिनंदा-भजन

श्री बाहुबली जिनंदा, माता तुम्हारी सुनंदा।
हम तुमको करें नमोस्तु, मेंटो भव-भव के फंदा॥
हैं नीलकमल से नयना, नासा चंपा की बना।
प्रभु मुखड़ा चाँद का टुकड़ा, हैं गाल नीर सम गहना॥
गजराज सूँड़ सम बाहु, दो कर्ण छू रहे कंधा। हम तुमको...॥१॥
है कंठ शंख से प्यारा, कटिभाग अचल दृढ़ मन्दर।
प्रभु वक्ष हिमालय जैसा, तन कामदेव से सुंदर॥
हैं सबसे सुंदर अपने, प्रभु बाहुबली जिनंदा। हम तुमको...॥२॥
हैं दिव्य देह पर बेलें, जिस सर्पादिक खेलें।
फिर भी जो कभी न डरते, कब उनके चरणा छू लें॥
जो कल्पवृक्ष भव्यों के, सुखदाता परण चंदा। हम तुमको...॥३॥
खड्गासन पूर्ण दिगम्बर, निर्मोही शुद्ध निरम्बर।
उपवास वर्ष भर करके, निश्शल्य हुए गोम्मटेश्वर॥
प्रभु दर्शनीय सुव्रत को, दो निज सम जिन कलाकंदा। हम तुमको...॥४॥

===

श्री निर्वाण क्षेत्र विधान

स्थापना (दोहा)

वीतराग विज्ञान को, कर नमोऽस्तु धर ध्यान।
श्री निर्वाणी क्षेत्र की, करें अर्चना गान॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन के आश्रय से जो, मुक्तिवधू से व्याह किए।
मोक्षमहल में हुए महोत्सव, जब प्रभु निज निर्वाण किए॥
ढाईद्वीप के कण-कण तब ही, पूजित सिद्ध प्रसिद्ध हुए।
मोक्षमहल से हृदय-कमल पर, आओ! प्रभु नत भक्त हुए॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्ध गीता)

जिन्होंने कर्म दल-दल धो, निजातम को निखारा है।
हमें समकित उन्हीं सा हो, अतः उनको निहारा है।
बने हम सिद्ध सम कंचन, अतः जल-धार अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिन्होंने द्वन्द्व के हेतु, सभी सम्बन्ध तोड़े हैं।
वही निज-ज्ञान के सेतु, निजी अनुबन्ध जोड़े हैं॥
मिले वह सिद्ध सम चंदन, अतः यह धार अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

हुआ जब प्रेम निज से तो, मचलते आत्मदर्शन को।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन, हुई है तृप्ति चेतन को॥

मिले वह सिद्ध का दर्शन, अतः यह पुंज अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों की, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान्...।

गुलाबों की सजी शैय्या, दुखों का ताज भव काटो।
खिलाते ब्रह्म-बगिया जो, उन्हें साम्राज्य शिव का हो॥
मिले बल-वीर्य सिद्धों सा, अतः यह पुष्प अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

क्षुधा से जो दुखी जग में, क्षुधा वो क्या करें उपशम।
जिन्होंने की क्षुधा जय है, उन्हीं के रस चखेंगे हम॥
बनें हम सूक्ष्म सिद्धों सम, अतः नैवेद्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

उजाला बाँटने जिसकी, भली सी भावना होती।
जलाते आत्म-ज्योति वो, उन्हीं की आरती होती॥
करें अवगाह सिद्धों सम, अतः यह दीप अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

बड़ी है कर्म की माया, इसी ने भव घुमाया है।
बड़ी है धर्म की छाया, इसे हमने भुलाया है॥
अगुरुलघु हो सिद्धों सम, अतः यह धूप अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

किए श्रद्धा की खेती तुम, फसल निज-ज्ञान की पाई।
लगे चारित्र फल मीठे, रसीली आत्म झलकाई॥
हो अव्याबाध सिद्धों सम, अतः फल-गुच्छ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

उसी-मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

अष्टापद से अनन्तकीर्ति, आदिनाथ भगवन जी।
भरत बाहुबलि नाग बाल मुनि, महाबाल अंजन जी॥
छह हजार खलु चिच्च देव हो, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अष्टापद निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त वृषभनाथादि षट्सहस्त्र मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

चम्पापुर मन्दारगिरि पर, चलो भक्ति में नाँचो।
प्रथम बालयति वासुपूज्य के, कल्याणक हों पाँचों॥
एक हजार यहीं से मुनि जन, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चम्पापुर निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त वासुपूज्यादि सहस्त्र मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

गिरनारी से नेमिनाथ सह, पाँच शतक छत्तीसों।
प्रद्युम्न शंबु अनिरुद्धादि, जाए मिले मुक्ती सों।

कोटि बहत्तर तथा सात सौ, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं गिरनारी निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त नेमिनाथादि सप्तशताधिक-द्विसप्तदशकोटि मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

पद्म सरोवर पावापुर से, महावीर शिव पाए।
साथ-साथ छत्तीस साधु भी, निज आतम प्रकटाए॥
शासननायक दीवाली दे, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पावापुर निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त महावीरस्वामी सह षट्त्रिंशत् मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

शाश्वत श्री सम्मेदशिखर से, शेष बीस तीर्थंकर।
और अनन्तानन्त संत भी, गए यहीं से शिवपुर॥
चलो शिखर जी भजो उन्हें जो, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त विंश् तीर्थंकरादि-अनन्तानन्त मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

नगर तारवर सिद्धक्षेत्र से, श्री वरदत्त मुनिन्दा।
सागरदत्त वरांग आदि मुनि, पाए निज आनन्दा॥
पूरे साढ़े तीन कोटि मुनि, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोले स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तारवर निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त श्री वरदत्त-सागरदत्त-वरांगाश्चाद्यः त्रिकोटिः-पंचाशतलक्ष मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

गजपंथा के उच्च शिखर से, बजा आत्म की बंसी।
सात-सात बलभद्र और मुनि, आठ कोटि यदुवंशी॥
राजा आदिक कर्म विजेता, मोक्ष पधारे आहा।

अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं गजपंथा निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त सप्त बलभद्राद्यः अष्टकोटिः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

सोनागिरि के उच्च शिखर से, नंगानंग कुमारा।
आदिक साढ़े पाँच कोटि मुनि, पार किए भव खारा॥
सोनागिरि पर सोना-सोना, आतम सोना आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सोनगिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त नंगानंगकुमाराद्यः पंचकोटिः-पंचाशतलक्ष मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

तुंगीगिरि से रामचन्द्र मुनि, हनु सुग्रीव पधारे।
गवय गवाक्ष नील महनीला, निज चेतन श्रृंगारे॥
इत्यादिक निन्यानवे कोटि, आत्म निखारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तुंगीगिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त राम-हनु-सुग्रीव-सुडील-गवय-गवाक्ष-नील-महानीलाश्चाद्यः नवाधिक-नवत्रिंशतकोटि मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

पावागढ़ से लवकुश आदिक, रामचन्द्र के बेटे।
लाट देश के पाँच करोड़ी, राजा शिव वर लेते॥
आतमराम प्राप्त करने को, राम राज्य हो आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पावागढ़ निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त लव-कुशाश्चाद्यः पंचकोटिः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

बड़वानी के दक्षिण में थित, चूलगिरी चोटी है।
कुम्भकर्ण मुनि इन्द्रजीत की, मुक्ति यहीं होती है॥
उन्हें नमन जो संत यहाँ से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं बड़वानी तीर्थस्थ चूलगिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त कुंभकर्ण-इन्द्रजीताद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

रेवातट पर सिद्धोदय है, सिद्धक्षेत्र नेमावर।
रावण के सुत मुक्त यही से, हुए मोक्ष को पाकर॥
साढ़े पाँच करोड़ यहीं से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं रेवातटस्थ सिद्धोदय निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त रावणस्य पुत्राश्चाद्यः अष्टकोटिः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

रेवा नदी के तीर सिद्धवर, कूट वसा पश्चिम में।
दो चक्री दस कामदेव मुनि, यहीं रमे चेतन में॥
साढ़े तीन करोड़ यहीं से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूट निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त द्वयचक्री-दशकामदेवाश्चाद्यः त्रिकोटि पंचाशत् लक्ष मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

नदी चेलना के पूरब तट, पावागिरी निहारो।
स्वर्णभद्र-मणि-वीरभद्र-गुण, मुक्त यहाँ से चारों॥
चख पावा के बाबा मावा, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पावागिरी (पवाजी) निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त स्वर्ण-वीर-मणि-गुणभद्रश्चाद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

फलहोड़ी के पश्चिम भू में, द्रोणगिरी है न्यारी।
गुरुदत्तादिक रत्नत्रय की, पाए मोक्ष सवारी॥
बन चैतन्य चमत्कारी प्रभु, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं द्रोणगिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त गुरुदत्तश्चाद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

अचला पुर ईशान दिशा में, मुक्तागिरि की चोटी।
साढ़े तीन करोड़ यहीं मुनि, पाए आतम ज्योति॥
मुक्तागिरी से आत्म मुक्त कर, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मुक्तागिरी (मंदारगिरि) निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त त्रिकोटिपंचाशतलक्ष मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

वंशस्थल के पश्चिम भू में, कुन्थलगिरि सुहाई।
यहाँ देशभूषण कुलभूषण, मुनि को मुक्ति रिझाई॥
जग दूषण तज निज भूषण सज, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कुन्थलगिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त कुलभूषण-देशभूषणाद्यौ मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

कोटिशिला या तारंगा जो, कलिंग या गुजराती।
यहीं यशोधर राजा के सुत, पाँच शतक की ख्याति॥
और यहाँ से एक कोटि मुनि, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तारंगा (कोटिशिला) निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त एककोटि-पंचशत् मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

नैनागिरि में पार्श्वनाथ का, समवसरण जब आया।
गुरु-वरदत्तादिक पाँचों को, तब शुद्धातम भाया॥
खोल यहीं से निज नैनों को, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं नैनागिरि निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त गुरुदत्त-वरदत्ताद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

राजगृही से विद्युत नामक, चोर त्याग कर चोरी।
आतम धन की रक्षा करने, बाँधे संयम डोरी॥

मालामाल मुक्ति से होने, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं राजगृही निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त विद्युतचोराद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

गौतम गणधर क्षेत्र गुणावा, पाकर मोक्ष पधारे।
पूज्य सुधर्माचार्य नवादा, तीरथ से दुख हारे॥
जम्बूस्वामी मथुरा से ही, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं गुणावा-नवादा-मथुरा निर्वाणक्षेत्रेभ्यो मुक्तिप्राप्त गौतमगणधर-सुधर्माचार्य-जम्बूस्वामी-अन्याश्चाद्यो मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

सेठ सुदर्शन शील धर्म के, ज्यों ही बने विहारी।
मुक्तिवधू नत नयना होकर, त्यों ही चरण पखारी॥
पटना में गुलजारबाग से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पटना निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त सेठसुदर्शनाद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

मध्यप्रदेश दमोह जिले में, कुण्डलपुर के बाबा।
मुक्त यहाँ से श्रीधर स्वामी, चखते निज के मावा॥
तीर्थ बना बुन्देलखण्ड को, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कुण्डलपुर (कुण्डलगिरि) निर्वाणक्षेत्रात् श्रीधरस्वामी-अन्याश्चाद्यः मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

गोपाचल है ग्वालियर में, सिद्ध क्षेत्र मनहारी।
सुप्रतिष्ठित मुनि पाए यहाँ से, सुनलो मोक्ष सवारी॥
गोपाचल से सिद्धाचल पा, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं गोपाचल निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त सुप्रसिष्ठिताद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

अहार जी से कामदेव जो, मुक्त हुए नलराजा।
महावीर शासन से पाए, विस्कंवल शिवराजा॥
पंच पहाड़ी सिद्धशिला से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अहार निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त नल-विस्कंवलाद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

ऊन क्षेत्र है मोक्षस्थली, स्वर्णभद्र मुनिवर की।
किंचित ऊन यहाँ से होकर, राह चले शिवपुर की॥
सार्थक संज्ञा करके मुनिवर, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ऊन निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त स्वर्णभद्राद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

यमुना तट पर है शौरीपुर, तीर्थ बटेश्वर प्यारा।
यहाँ धन्य यम निर्मल सुत मुनि, पाए सौख्य अपारा॥
नेमिनाथ की जन्म भूमि से, मोक्ष पधारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं शौरीपुर वटेश्वर निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त यम-धन्य-निर्मल-सुताद्यः मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त सर्व मुनीन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जिस धरती से सिद्ध हों, जिनवर संत महंत।
सिद्ध क्षेत्र निर्वाण की, जयमाला जयवंत॥

(शेर चाल)

जय-जय श्री निर्वाण क्षेत्र पूज्य भूमियाँ।
हैं पाप काटने को यही सिद्ध भूमियाँ॥

जो ढाई द्वीप का विशाल क्षेत्र जानिए।
सम्पूर्ण सिद्ध क्षेत्र है यथार्थ मानिए॥१॥
इस हेतु से विशुद्ध पूज्य पूर्ण क्षेत्र है।
निर्ग्रन्थ रूप ने किया इसे पवित्र है॥
फिर भी विशेष रूप से जो सिद्ध धाम हैं।
उनको पृथक्-पृथक् व साथ में प्रणाम हैं॥२॥
ये सिद्ध क्षेत्र पृथ्वीकाय के निकाय हैं।
फिर धर्म ध्यान में हुए कैसे सहाय हैं॥
चूँकि जिनेन्द्र का इन्होंने आसरा लिया।
सो कार्य कारण रूप से पावन बना लिया॥३॥
सम्मेदशिखर तीर्थ तो भक्तों के प्राण हैं।
कैलाश चम्पा-पावापुर गिरनार धाम हैं॥
हम चार-धाम के पुजारी हो न सकेंगे।
ये पाँच धाम पूज के निर्वाण भजेंगे॥४॥
सो पाँच पाप त्याग के धरेंगे व्रत महा।
फिर सिद्ध जैसे ध्यान से हो शुद्ध आत्मा॥
चैतन्य चेतना चिदेश मोक्ष दिला दो।
एक सौ सत्तर शिखर जी के दर्श करा दो॥५॥
हमने तो एक शिखर जी भी ढँग से न भजी।
इस वेदना से अर्चना निर्वाण की रची॥
ले टूटे फूटे द्रव्य भाव सिर को टेकते।
दिन-रात अपने नाथ को हृदय से पूजते॥६॥

इस भाँति शब्द पुष्प की जो भक्ति माल ले।
चौबीस नाथ की निर्वाण भूमियाँ भजे॥
लगा-लगा परिक्रमा जो पुण्य लूटते।
वे कर्म भार को उतार भव से छूटते॥७॥
हो सिद्ध तीर्थ यात्रियों की यात्रा सफल।
ये यात्रा दिलाए हमें मोक्ष का महल॥
प्रभु मुक्ति का इशारा आसरा भी दीजिये।
'सुव्रत' की अर्ज सुन के निज शरण में लीजिये॥८॥

(दोहा)

सिद्ध क्षेत्र की सिद्धि से, हुए सिद्ध हर काम।
अतः सिद्ध पद प्राप्ति को, करें नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त सर्व मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मुक्तिप्राप्त मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुक्ति प्राप्त जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

दर्पण कभी
न रोया न हँसा हो
ऐसा संन्यास

श्री सम्मेदशिखर विधान

मंगलाचरण (लय- माता तू दया...)

सम्मेदशिखर जी का, अभिनन्दन करते हैं।
श्रद्धा से नमोऽस्तु कर, हम वन्दन करते हैं॥
है शाश्वत तीर्थ यही, तीर्थंकर मोक्ष धरा।
निर्वाण भूमि न्यारी, कण-कण में धर्म भरा॥
हम सिद्धालय पाने, प्रभु दर्शन करते हैं।
श्रद्धा से...

यह तीर्थ निराला है, दे मोक्ष अनन्तों को।
संसार भ्रमण हरकर, दे आश्रय संतों को॥
इसकी रज लेकर के, चित पावन करते हैं।
श्रद्धा से....

यह तीर्थ वन्दना तो, बस भव्यों को मिलती।
इसकी पूजन करके, शुद्धातम सी खिलती॥
कर परिक्रमा इसकी, पुण्यार्जन करते हैं।
श्रद्धा से...

जो भाव सहित इसकी, यात्राएँ करते हैं।
वे नरक पशु गति के, दुख बंधन हरते हैं॥
फिर नर गति में संयम, धरकर शिव वरते हैं।
श्रद्धा से.....

जब तक ना मोक्ष मिले, तब तक सम्मेद शिखर।
बस हृदय हमारे हो, तो फिर काहे का डर॥
सब मिले खिले जीवन, यों भाव उभरते हैं।
श्रद्धा से.....

चारित्र धारकर हम, सम्मेद शिखर पूजें।
कर भाव सहित वन्दन, हम निजानन्द खोजें॥
सुख ऋद्धि-सिद्धि पाने, 'सुव्रत' सिर धरते हैं।
श्रद्धा से......

(पुष्पांजलिं...)

श्री सम्मेदशिखर पूजन

स्थापना (दोहा)

श्री सम्मेदशिखर रहा, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
करके नमोऽस्तु अर्चना, हम चाहें कल्याण॥

(शंभु)

जय सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर, कुल रहे एक सौ सत्तर जो।
निर्वाण तीर्थ शाश्वत इससे, प्रभु गए अनन्तों शिवपुर को॥
हम वहाँ नहीं तुम यहाँ नहीं, फिर कैसे दर्श तुम्हारा हो।
सो हम पूजें सम्मेदशिखर, अब चेतन तीर्थ हमारा हो॥

(सोरठा)

हम करते आह्वान, सिद्ध भूमि हर सिद्ध को।
हृदय वसो भगवान्, भक्तों को सान्निध्य दो॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु)

सम्मेदशिखर गिरि पर पाते, जो जन्म मरण के शुभ अवसर।
कल्याण सुनिश्चित हैं उनके, जिनके दिल में सम्मेदशिखर॥
वे जन्म मृत्यु के दुख हरके, शुद्धातम का जल खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

सम्मेदशिखर की भाव सहित, जो करें वन्दना यात्राएँ।
तिर्यंच नरक गति दुख न उन्हें, नर देव सुखों को वे पाएँ॥
संसार ताप का चक्र हरें, शीतल शुद्धातम खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

सम्मेदशिखर को तहस–नहस, कितना करलो ये हिल न सकें।
हैं मिट्टी पत्थर के अक्षत, सचमुच मिट्टी में मिल न सकें॥
ले इसकी रज तन मिट्टी में, हम चेतन मूरत खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

सम्मेदशिखर के मण्डप में, कई हुए स्वयंवर आतम के।
सो मुक्तिवधू की चाहत में, सम्मेदशिखर हम आ धमके॥
लेकर पुष्पों की वरमाला, चारित्र पुष्प हम खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सम्मेदशिखर के कण–कण को, मुनि उपवासों से शुद्ध करें।
कुछ लोग न चढ़ते सो इस पर, कुछ भूखे–प्यासे तीर्थ करें॥
सम्मेदशिखर के भोजन में, हम स्वाद मोक्ष का खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...

सम्मेदशिखर के दर्शन तो, बस भव्य प्राणियों को होते।
कुछ इस पर चढ़ने के पहले, अंधे से होकर के रोते॥
हम करें आरती चरणों की, निज नयना–दीपक खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...

सम्मेदशिखर की धूल करे, जग–पर्यावरण विशुद्ध सदा।
हों कर्मभूत सब दूर यहाँ, दुख रोग शोक ना टिकें कदा॥
हर एक शिला में सिद्धशिला, हम धूप चढ़ाकर खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सम्मेदशिखर के भाव सहित, जो दर्शन पूजन तीर्थ करें।
कई उपवासों का फल पाके, घर ऋद्धि-सिद्धि से पूर्ण भरें॥
फल-फूल यहाँ सब औषध हैं, हम स्वस्थ चेतना खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

है सम्मेदशिखर महा, तीर्थराज गुणधाम।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, भक्त कहें धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक के मध्य भाग में, मध्यलोक विख्यात रहा।
जम्बु-धातकी पुष्करार्द्ध ये, जिनको ढाईद्वीप कहा॥
जहाँ अधिकतम रहे शिखरजी, पूरे एक शतक सत्तर।
शाश्वत इस निर्वाण धरा से, गए अनन्तों मुनि शिवपुर॥१॥
तथा अनन्तों तीर्थंकर भी, तीन काल में शिव जाते।
सो तीर्थों का तीर्थ इसी को, देव-शास्त्र-गुरु बतलाते॥
इनके अणु-परमाणू के तो, सीधे सिद्धों से रिश्ते।
अतः यहाँ पर्वत झरनों से, सिद्ध गीत जैसे रिसते॥२॥
बियावान जंगल में पक्षी, कलरव करके सिद्ध भजें।

नीची घाटी ऊँचे पर्वत, वृक्ष लताएँ सिद्ध भजें॥
हाथी बन्दर लंगूरों से, तहस–नहस यों पर्वत हो।
ज्यों मुनियों के योग ध्यान से, कर्मों का वन आहत हो॥३॥
वर्तमान के बीस जिनेश्वर, मोक्ष यहाँ से जा बैठे।
तभी भक्त हम टोंक वन्दना, करने भाव सजा बैठे॥
सूर्योदय सम कुन्थुनाथ की, टोंक ज्ञानधर कूट रही।
नमिनाथ की कूट मित्रधर, अर की नाटक कूट रही॥४॥
संवरकूट मल्लि जिनवर की, श्रेयांस प्रभु की संकुल है।
पुष्पदंत की सुप्रभ प्यारी, पद्मप्रभू की मोहन है॥
मुनिसुव्रत की निर्जर न्यारी, ललितकूट प्रभु चन्द्र की।
शीतल प्रभु की विद्युतवर है, कूट स्वयंभू अनन्त की॥५॥
धवल कूट है शम्भव प्रभु की, अभिनन्दन प्रभु की आनन्द।
सुदत्तवर है धर्मनाथ की, सुमतिनाथ की अविचल कूट॥
शान्तिनाथ की कूट कुंदप्रभ, प्रभास है सुपार्श्व प्रभु की।
विमलनाथ की सुवीर सुन लो, सिद्धवर कूट अजित प्रभु की॥६॥
संध्या जैसी पार्श्वनाथ की, स्वर्णभद्र ये अंतिम है।
दर्शन कर यों लगता जैसे, कष्टों का दिन अंतिम है॥
यहीं आदि की वासुपूज्य की, वीर नेमि की कूट रही।
काल दोष से अन्य जगह से, मोक्ष गए पर टोंक यहीं॥७॥
श्री सम्मेदशिखर के वैभव, कोई भी ना बाँध सके।
कौन माई का जाया है जो, इसके वैभव वाँच सके॥
फिर भी जो गुणगान किए हम, इसका केवल यह उद्देश्य।
जो भी मोक्ष यहाँ से पहुँचे, उन जैसे हम पाएँ देश॥८॥

श्री सम्मेदशिखर पूजा कर, मात्र पुण्य ये अर्जित हों।
'पुण्यफला अरिहंता' हों हम, सारे पाप विसर्जित हों॥
योग त्याग फिर बने अयोगी, फिर सम्मेदशिखर पर आ।
'सुव्रत' सिद्धालय को पाएँ, निज सम्मेदशिखर को पा॥९॥

(सोरठा)

सम्मेदाचल पूज, धन्य किए निज पुण्य को।
सिद्ध स्वपद हम खोज, पाएँ निज चैतन्य को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय)

१. गणधर कूट

आदिप्रभु से वीरप्रभु के, चौदह सौ उनसठ गणधर।
वृषभसेन से प्रभासस्वामी, गए यहीं से लोक शिखर॥
गणधर कूट अतः प्रसिद्ध है, जिनके पद पूजें आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-गणधरकूटात् मुक्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरसम्बंधी-समस्त गणधरेभ्यो अर्घ्यं...।

२. ज्ञानधर कूट

प्रथम ज्ञानधर कूट यहीं से, कामदेव चक्री जिननाथ।
कुन्थुनाथ जी मोक्ष पधारे, जब शुक्ला एकम वैसाख॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, बने भेद ज्ञानी आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-ज्ञानधरकूटात् मुक्त श्री कुन्थुनाथादि छ्यावने कोड़ाकाड़ी छ्यानवे-करोड़ बत्तीसलाख छ्यानवे हजार सात सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

३. मित्रधर कूट

कूट मित्रधर से नमि जिनवर, ध्यान धार निर्ध्यान हुए।
चतुर्दशी वैसाख कृष्ण को, आतम शुद्ध स्वभाव छुए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध स्वपद पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-मित्रधरकूटात् मुक्त श्रीनमिनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

४. नाटक कूट

नाटक कूट यहाँ से चक्री, कामदेव अर-जिन तीर्थेश।
चैत्र अमावस को शिव पाए, शुद्ध बना निज आत्म प्रदेश॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध शिला पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-नाटककूटात् मुक्त श्री अरनाथादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

५. संवल (संवर) कूट

संवलकूटधाम से जिनवर, मल्लिनाथ जी मुक्त हुए।
फाल्गुन कृष्ण पंचमी पाकर, भक्त भक्ति में युक्त हुए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, मोहमल्ल मारे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-संवलकूटात् मुक्त श्रीमल्लिनाथादि छ्यानवे करोड़ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

६. संकुल कूट

संकुल पूज्य कूट से पाए, श्री श्रेयांसनाथ जी मोक्ष।
श्रावण पूनम धन्य हो गयी, वीतरागियों का सुन सौख्य॥

कोटि–कोटि मुनि इसी कूट से, पा बैठे शिवकुल आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर–सिद्धक्षेत्र–संकुलकूटात् मुक्त श्री श्रेयांसनाथादि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी छ्यानवे करोड़ छ्यानवे लाख नौ हजार पाँच सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

७. <u>सुप्रभ कूट</u>

सुप्रभकूट से सुविधि प्रभु जी, मोक्षमार्ग की सुविधि बता।
शुक्ल अष्टमी भाद्रपक्ष में, हरे कर्म की व्यथा–कथा॥
कोटि–कोटि मुनि इसी कूट से, ज्ञान महल पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर–सिद्धक्षेत्र–सुप्रभकूटात् मुक्त श्री पुष्पदंतादि एक कोड़ाकोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार सात सौ अस्सी मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

८. <u>मोहन कूट</u>

मोहन कूट यहीं से जिनवर, पूज्य पद्मप्रभु सिद्ध हुए।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी पाकर, शुद्ध–बुद्ध अविरुद्ध हुए॥
कोटि–कोटि मुनि इसी कूट से, कुन्दन से चमके आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर–सिद्धक्षेत्र–मोहनकूटात् मुक्त श्रीपद्मनाथादि निन्यानवे करोड़ सत्तासी लाख तैंतालीस हजार सात सौ सत्तावन मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

९. <u>निर्जर कूट</u>

नौवीं निर्जर कूट यहीं से, मुनिसुव्रत प्रभु मोक्ष गए।
फाल्गुन कृष्णा बारस के दिन, मुक्तिवधू के लोक गए॥
कोटि–कोटि मुनि इसी कूट से, संकट कष्ट हरे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-निर्जरकूटात् मुक्त श्रीमुनिसुव्रतनाथादि निन्यानवे कोड़ाकोड़ी निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१०. ललित कूट

ललित कूट से चन्द्रप्रभु जी, चित् चैतन्य चिदेश हुए।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को प्रभु, अष्टम भू के देश छुए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, चन्द्र शिला पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-ललितकूटात् मुक्त श्रीचन्द्रप्रभ-आदि नौ सौ चौरासी अरब बारह करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पंचानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

११. सर्वसिद्धवर कूट

अष्टापद से मुक्त आदि जिन, माघ कृष्ण की चौदश को।
फिर भी कूट शिखर पर शोभित, पूज्य सिद्धवर पूजित हों॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, जग जंजाल हरे आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापदकैलाश-सिद्धक्षेत्र-सर्वसिद्धवरकूटात् मुक्त श्रीवृषभनाथ-बाल-महाबाल-नागकुमारादि दस हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१२. विद्युतवर कूट

विद्युतवर की पूज्य कूट से, शीतलनाथ गए शिवधाम।
आश्विन शुक्ल अष्टमी पाकर, तीर्थवन्दना करें प्रणाम॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, बने निजानन्दी आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-विद्युतवरकूटात् मुक्त श्रीशीतलनाथादि अठारह कोड़ाकोड़ी ब्यालीस करोड़ बत्तीस लाख ब्यालीस हजार नौ सौ पाँच मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१३. स्वयंभू कूट

कूट स्वयंभू से अनन्तप्रभु, अनन्त कर्मों को त्यागे।
चैत्र अमावस को पा निज रस, सिद्ध चासनी में पागे॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, निजानुभव पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-स्वयंभूकूटात् मुक्त श्रीअनन्तनाथादि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१४. धवल कूट

धवलकूट से शम्भवप्रभु जी, निजरमणी के राज बने।
चैत्र शुक्ल छठ को निजघट पा, तारणतरण जहाज बने॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, भव जल पार किए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-धवलकूटात् मुक्त श्रीशम्भवनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी बारह लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१५. वासुपूज्य कूट

चम्पापुर मंदार गिरी से, प्रथम बालयति ईश हुए।
भाद्रशुक्ल चौदस के दिन को, वासुपूज्य सिद्धीश हुए॥
अनेक मुनि भी यहीं मुक्त हो, मुक्तिमहल पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर-सिद्धक्षेत्र-मंदारगिरि-कूटात् मुक्त श्रीवासुपूज्यादि एक हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१६. आनन्द कूट

शुभ आनन्द कूट से जिनवर, अभिनन्दन प्रभु मोक्ष गए।
छठ वैसाख शुक्ल को अनुपम, सहजानन्दी धाम गए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, निजानन्द पाए आहा।

अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-आनन्दकूटात् मुक्त श्रीअभिनन्दन-नाथादि बहत्तर कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१७. सुदत्तवर कूट

सुदत्तवर की धर्मकूट से, धर्मनाथ दुख कर्म हरे।
चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन, सुखदायक निज धर्म वरे॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, धर्म धुरी पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुदत्तवरकूटात् मुक्त श्रीधर्मनाथादि उन्तीस कोड़ाकोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पैंसठ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१८. अविचल कूट

अविचलकूट टोंक से पाए, सुमतिनाथ पंचम गति को।
चैत्र शुक्ल ग्यारस हुई पावन, जब पाई निज परिणति को॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, हुए अचल अविचल आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-अविचलकूटात् मुक्त श्रीसुमतिनाथादि एक कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ इक्यासी मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१९. कुंदप्रभ कूट

कूट कुंदप्रभ से शान्ति प्रभु, ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस को।
राजचक्र तज धर्म चक्र धर, सिद्धचक्र पा निज वश हो॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, महाशान्ति पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-कुंदप्रभकूटात् मुक्त श्रीशान्तिनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२०. महावीर कूट

पावापुर के पंकज वन से, शासननायक मुक्त हुए।
चढ़ा-चढ़ा निर्वाण लाडू हम, दीवाली से युक्त हुए॥
अनेक मुनि भी यहीं मुक्त हों, बंधन मुक्त हुए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त श्रीमहावीरजिनेन्द्रादि छब्बीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२१. प्रभास कूट

प्रभासकूट से सुपार्श्वप्रभु जी, फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को।
बाह्य लक्ष्मी तजकर पाए, अंतस आतमलक्ष्मी को॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध सदन पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-प्रभासकूटात् मुक्त श्रीसुपार्श्वनाथादि उनंचास कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२२. सुवीर कूट

पूज्य सुवीर कूट से जिनवर, विमलनाथ प्रभु विमल हुए।
शुक्ल अष्टमी आषाढ़ी को, विभाव मल तज निकल हुए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्धचक्र पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुवीरकूटात् मुक्त श्रीविमलनाथादि सत्तर कोड़ाकोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२३. सिद्धवर कूट

पूज्य सिद्धवर कूट टोंक से, अजितनाथ शिवधाम गए।
चैत्र पंचमी शुक्ला के दिन, सुख स्वरूप निर्वाण गए॥

कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, मृत्युंजयी हुए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सिद्धवरकूटात् मुक्त श्रीअजितनाथादि अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२४. नेमिनाथ कूट

ऊर्जयन्त गिरनार कूट से, नेमिनाथ को सिद्धि मिली।
शुक्ल अष्टमी (सप्तमी) आषाढ़ी को, मुक्तिवधू की ऋद्धि मिली॥
शंबु आदि मुनि इसी कूट से, निजरमणी पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनारि-सिद्धक्षेत्र-ऊर्जयंतगिरिकूटात् मुक्त श्रीनेमिनाथ-शंबु-प्रद्युम्न-अनिरुद्धादि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२५. सुवर्णभद्र कूट

सुवर्णभद्र कूट है अंतिम, जहाँ आत्म सोना होती।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाके, मोक्षसप्तमी नित होती॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, पारस मणि पाए आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुवर्णभद्रकूटात् मुक्त श्रीपार्श्वनाथादि व्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

शाश्वत सिद्ध क्षेत्र है शाश्वत, कण-कण में कल्याण यहाँ।
तीन काल के तीर्थकरों के, होते हैं निर्वाण यहाँ॥
और यहाँ से तप करके जो, मोक्ष पधारे मुनि आहा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त असंख्यात मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय महाऽर्घ्य

रहे एक सौ सत्तर पूरे, श्री सम्मेद शिखर अक्षय।
पाँचों तीर्थधाम या जो भी, सिद्धक्षेत्र निर्वाण निलय॥
अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-सदन।
तीन काल के तीन लोक के, भजें मोक्ष बनने भगवन॥

(दोहा)

वीतराग विज्ञान ही, हम भक्तों का पर्व।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, 'सुव्रत' बने अनर्घ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक-त्रिकाल सम्बन्धिनः मुक्त अनन्तानन्त मुनिवरेभ्यो समुच्चय महाऽर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

श्री सम्मेदशिखर यहाँ, गिरियों का गिरिराज।
कण-कण पावन की कहें, जयमाला हम आज॥

(जोगीरासा)

जय हो! श्री सम्मेदशिखर की, जो निर्वाण धरा है।
तीर्थवन्दना ऐसी जैसे, सिद्धालय उतरा है॥
जिसका यश सर्वत्र फैलकर, चुंबक जैसा खींचे।
अतः भक्त भी दर्शन करने, कभी न रहते पीछे॥१॥
किंतु वन्दना कर ना सकें यदि, दर्शन ना मिल पाएँ।
तो भक्तों की श्रद्धा देखो, कभी नहीं घबराएँ॥
अपने जैन जिनालय में ही, रचा अर्चना प्यारी।
श्री सम्मेदशिखर की पूजा, करते मंगलकारी॥२॥

द्रव्य अर्चना भाव वन्दना, करके पुण्य कमाएँ।
सिद्धपुरी के सिद्ध जिनों को, सिद्ध भक्ति कर ध्याएँ॥
जो जो हैं निर्वाण भूमियाँ, इतनी अतिशयकारी।
जिनमें श्री सम्मेदशिखर की, महिमा सबसे न्यारी॥३॥
इसी अनादि तीर्थ के दर्शन, अहो! भाग्य भक्तों के।
करके तीर्थ वन्दना होते, जन्म सफल भव्यों के॥
इस प्रभाव से उन्हें न मिलते, पचास भव भी पूरे।
वे उन्चास भवों में ही निज, कर्म शिलाएँ चूरें॥४॥
फलतः अपनी निर्मल आतम, उन्हें प्राप्त हो जाती।
जिससे मुक्तिवधू बाहों में, उनको सदा बुलाती॥
'सुव्रत' का अपना सपना कि, हमको मुक्ति बुलाए॥
सो सम्मेदशिखर के गुण गा, सिद्ध गुणों को ध्याए॥५॥

(सोरठा)

तीार्थराज सम्मेद, क्षेत्र शिखर जी पूजते।
कर्म शिला कर भेद, लोक शिखर हम खोजते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त असंख्यातमुनिवरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मुक्ति प्राप्त मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुक्ति प्राप्त जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री गणधर विधान

मंगलाचरण

जय गुरुदेव-जय गुरुदेव, नग्न दिगम्बर जय गुरुदेव।
जय गुरुदेव-जय गुरुदेव, गणधर ऋषिवर जय गुरुदेव॥

(विष्णु)

जन्म मरण में सभी दिगम्बर, आडम्बर फिर क्यों।
पापों का क्यों भरो समन्दर, करो वबण्डर क्यों॥
इन बिन्दू पर अन्तस चिन्तन, सो वैरागी हो।
हुए दिगम्बर मुक्तिवधू में, आतम रागी हो॥ जय गुरुदेव...
खोज आतमा की करने को, वैरागी निकले।
किस साधन से मिले आतमा, मनमयूर मचले॥
अतः दिगम्बर सम्यक् गुरु की, करने खोज चले।
तीर्थंकर के समवसरण में, चरणा पूज चले॥ जय गुरुदेव...
चरण पूज आचरण भजे फिर, हुए दिगम्बर जी।
गुरु शिष्य की जय से गूँजे, धरती अम्बर भी॥
गणधर का संयोग देखकर, दिव्य देशना हो।
शुद्धातम को मुख्य बनाकर, तत्त्व देशना हो॥ जय गुरुदेव...
तत्त्व देशना सुनकर प्राणी, भव के रोग हरें।
गणधर ज्ञानी जिनवाणी सुन, श्रुत संयोग करें॥
ऐसे गणधर गुरु की सेवा, सांसारिक सुख दे।
संकट रोग शोक सब हर के, महामोक्ष सुख दे॥जय गुरुदेव...

(जोगीरासा)

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥

कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
गणधर गुरु को करके नमोऽस्तु , जग का मंगल होवे॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री गणधर पूजन

स्थापना (दोहा)

वृषभसेन को आदि ले, गणधर अंत प्रभास।
चौदह सौ बावन भजें, कर के नमोऽस्तु दास॥

(ज्ञानोदय)

वृषभनाथ से महावीर के, चौदह सौ बावन गणधर।
दिव्य देशना प्रभु से सुनकर, हमें सुनाएँ करुणा कर॥
गुरु तो इतना देते हमको, हम उनको क्या दान करें।
यथा शक्ति गुरु भक्ति करें हम, गुरु सान्निध्य प्रदान करें॥

(दोहा)

हृदय वेदिका पर वसें, ज्ञानी गुणी गणेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, करुणा करो जिनेश॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरा अत्र अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अष्टपदी-आँचलीबद्ध चौपाई) (लय–चौबीसी पूजा वत्)

जल से कर शुद्ध शरीर, दुख मिथ्यात्व हरें।
सो लाए प्रासुक नीर, आतम शुद्ध करें॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन की खिली बहार, जग में हो मंगल।
फिर पाएँ चेतन सार, ताप करें शीतल॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्य: संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अक्षय जिनशासन तीर्थ सबको तार रहा।
दो शुद्धातम का तीर्थ, भक्त पुकार रहा॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का पुष्प पराग, तुम सम चाह रहे।
खिल जाए आतम बाग, पुष्प चढ़ाय रहे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

षट् रस के लेकर स्वाद, निज रस भूल रहे।
अब चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य, निज रस खोज रहे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

लेकर पुद्‌गल के दीप, हो दीपावलियाँ।
जा बैठे आत्म समीप, दो सुख की गलियाँ॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

खेकर यह धूप दशांग, धूम्र उड़ाएँ रे।
अब कर्म जलें अष्टांग, निज चमकाएँ रे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

श्रद्धा के फल हों ज्ञान, ज्ञान वही साँचे।
जो दें संयम निर्वाण, पाने हम नाँचें॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

श्रद्धालु लाए अर्घ्य, भेंट कृपालु को।
दो मुक्तिवधू का पर्व, आप दयालु हो॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

हे! ज्ञानमूर्ति गणधर ज्ञानी, तुम तीर्थंकर के पुत्र रहे।
हम अज्ञानी जन के स्वामी, तुम ही तो साँचे मित्र रहे॥
अज्ञान अँधेरे से तारो, दो समवसरण का धाम हमें।
हम आतम ज्ञानी ध्यानी हों, हो विश्वशान्ति निर्वाण हमें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधिनः सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली (विष्णु)

वृषभनाथ के रहे हजारों, चौरासी मुनिराज।
चौरासी गणधर में पहले, वृषभसेन ऋषिराज॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथस्य वृषभसेनादि-चतुरशीति-गणधरेभ्यो चतुरशीति-सहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

अजितनाथ के सिंहसेन से, नब्बे गणधर हों।
एक लाख मुनि समवसरण में, प्रभु के अनुचर हों॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादि-नवति-गणधरेभ्यो लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

चारुसेन हैं पहले गणधर, सभी एक सौ पाँच।
शम्भवप्रभु के दोय लाख मुनि, दर्शन कर मन नाँच॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथस्य चारुषेणादि-पंचाधिकशत-गणधरेभ्यो द्विलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

अभिनन्दन प्रभु के मुनिवर हैं, तीन लाख निज लीन।
गणधर वज्रनाभि हैं पहले, सभी एक सौ तीन॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथस्य वज्रनाभ्यादि-त्रयाधिकशत-गणधरेभ्यो त्रिलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

तीन लाख बत्तीस हजारों, सुमतिनाथ के संत।
गणधर रहे एक सौ सोलह, चमरादि निर्ग्रन्थ॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य चमरादि-षोडशाधिक-शत-गणधरेभ्यो द्वात्रिंशत-सहस्राधिक-त्रिलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

पद्म प्रभु के तीन लाख अरु, मुनिवर तीस हजार।
गणधर रहे एक सौ दस कुल, वज्रचमर भव पार॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य वज्रचमरादि-दशाधिकशत-गणधरेभ्यो त्रिशंत-सहस्राधिक-त्रिलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

सुपार्श्व प्रभु के तीन लाख मुनि, समवसरण में हों।
पंचानवें पूज्य कुल गणधर, बलदत्तादिक हों॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादि-पंचनवति-गणधरेभ्यो त्रिलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

चन्द्रप्रभु के ढाई लाख मुनि, निज अध्यात्म चखें।
दत्तादि तेरानवें गणधर, जिनको भक्त भजें॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथस्य दत्तादि-त्रिनवति-गणधरेभ्यो सार्द्धद्विलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

सुविधिनाथ के समवसरण में, मुनि दो लाख विशेष।
चेतन रस के रसिक अठासी, विदर्भ आदि गणेश॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथस्य विदर्भादि-अष्टाशीति-गणधरेभ्यो द्विलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

शीतलप्रभु के एक लाख मुनि, निज के विश्वासी।
परम पूज्य अनगार आदि हैं, गणधर इक्यासी॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य अनगारादि-एकाशीति-गणधरेभ्यो लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

श्रेयांसप्रभु के समवसरण में, मुनि चौरासी हजार।
कुन्थु आदि हैं सत्तर गणधर, जिनकी जय-जयकार॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथस्य कुंथ्वादि-सप्ततिः-गणधरेभ्यो चतुरशीतिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

रहे बहत्तर हजार मुनिवर, वासुपूज्य-प्रभु के।
सधर्म आदिक रहे छ्यासठ, गणधर सद्गुरु से॥

अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य सुधर्मादि-षट्षष्ठि-गणधरेभ्यो द्वासप्ततिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

विमलनाथ के पचपन गणधर, मंदिर आदि हुए।
अढ़सठ हजार मुनिवर जिनके, हम तो चरण छुए॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य मंदिरादि-पंचपंचाशत्-गणधरेभ्यो अष्टषष्ठिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

अनन्तप्रभु के पचास गणधर, जय आदिक प्यारे।
सभी छ्यासठ हजार मुनिवर, दुनियाँ से न्यारे॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य जयादि-पंचाशत्-गणधरेभ्यो षट्षष्ठिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

धर्मनाथ के अरिष्ट आदि, गणधर तेतालीस।
चौसठ हजार मुनिवर साँचे, जिन्हें झुकाएँ शीश॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य अरिष्टादि-त्रिचत्वारिंशत्-गणधरेभ्यो चतुःषष्ठिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

शान्तिनाथ के चक्रायुध से, गणधर मुनि छत्तीस।
बासठ हजार मुनिवर जिन का, मिला हमें आशीष॥

अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथस्य चक्रायुधादि-षट्त्रिंशत्-गणधरेभ्यो द्विषष्ठिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

कुन्थुनाथ के स्वयम्भू आदि, गणधर यति पैंतीस।
साठ हजार रहे मुनिवर भी, चिदानन्द के ईश॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य स्वयंभू-आदि-पंचत्रिशत्-गणधरेभ्यो षष्ठिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

अरहनाथ के कुम्भु आदि, गणधर ज्ञानी तीस।
पचास हजार मुनिवर हमको, लगते हैं जगदीश॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथस्य कुम्भादि-त्रिंशत्-गणधरेभ्यो पंचाशतसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

मल्लिनाथ के विशाख आदि, गणधर अट्ठाईस।
मुनि चालीस हजार पूज्यवर, चाह रहे जगशीश॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य विशाखादि-अष्टाविंशति-गणधरेभ्यो चत्वारिंशत-सहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

सुव्रत प्रभु के मल्ली आदि, अष्टादस गणधर।
तीस हजार महा ज्ञानी मुनि, चाह रहे शिवपुर॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य मल्ल्यादि-अष्टादश-गणधरेभ्यो त्रिंशत्सहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

नमिनाथ के सुप्रभ आदि, सत्रह गणधर हों।
बीस हजार महा ऋषिवर जी, सुख रत्नाकर हों॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्लीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथस्य सुप्रभादि-सप्तदश-गणधरेभ्यो विंशतिसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

नेमिनाथ के वरदत्तादि, ग्यारह ऋषि गणधर।
रहे अठारह हजार मुनिवर, जिन्हें भजें सिर धर॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्लीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथस्य वरदत्तादि-एकादश-गणधरेभ्यो अष्टादशसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

पार्श्वनाथ के स्वयंभू आदि, दस गणधर साँचे।
सोलह हजार मुनि दर्शन कर, मन मयूर नाँचे॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्लीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य स्वयंभू-आदि-दश-गणधरेभ्यो षोडशसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

महावीर के गौतम आदि, ग्यारह गणधर जी।
चौदह हजार मुनियों के बिन, क्या हो रहकर भी॥
अर्घ्य चढ़ा मुनि ऋषिराजों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्लीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथस्य गौतमादि-एकादश-गणधरेभ्यो चतुर्दशसहस्त्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

पूर्णार्घ्य

वृषभ-वीर चौबीसी प्रभु के, कुल गणधर मुनिजन।
वृषभसेन से प्रभास गणधर, चौदह सौ बावन॥
अठविस लख अड़तालिस हजार, मुनिजन हों आहा॥
ओम् ह्रीं गणधर ऋषिवरेभ्यो, नमो नमः स्वाहा॥

(शंभु)

हम देव-शास्त्र-गुरु के अनुचर, जिन बिन अस्तित्त्व हमारे क्या।
जिनदेव हमें तो मिल न सके, जानें ना शास्त्र तत्त्व हैं क्या॥
निर्ग्रन्थ संत गुरुदेव मिले, वह गणधर जैसे हम पूजें।
सान्निध्य मिला अध्यात्म मिला, सो चरणों में आतम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी वृषभसेनादि-प्रभासपर्यंत द्विपंचा-शदाधिक-शतचतुर्दश-गणधरेभ्यो अष्टचत्वारिंशत्-सहस्राधिक-अष्टा-विंशतिलक्ष मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र— ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभसेनादि सकल गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला (दोहा)

तीर्थंकरों की देशना, जो सुनकर दें ज्ञान।
गणधर गुरु निर्ग्रन्थ का, हम करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! तीर्थंकर प्रभु की।
जय हो! जय हो! श्रमण धर्म की, जय हो! मुनि गणधर गुरु की॥
गुरु शिष्य की परम्परा का, अद्‌भुत यह सम्मेलन है।
जो जयवंत रखें जिनशासन, झलकाता निज चेतन है॥१॥
तीर्थंकर अरिहंत बने ज्यों, समवसरण में शोभित हों।
भरे खचाखच भव्यजनों से, तीन लोक में पूजित हों॥
कोठों के सब जीव चाहते, जल्दी सुन लें दिव्य ध्वनि।
पर जब तक गणधर गुरु ना हो, खिर ना सकती दिव्यध्वनि॥२॥

ज्यों ही दीक्षित हों गणधर त्यों, दिव्यध्वनि खिरने लगती।
नभ भू में ओंकार ध्वनि की, दिव्यनाद होने लगती॥
सात तत्त्व षट् द्रव्य आदि के, प्रभु सम्यक् उद्‌गार कहें।
द्वादशांग जिन गंगा माँ के, गणधर गुरु विस्तार करें॥३॥
गणधर ज्ञानी गंधकुटी की, दूजी कटनी पर शोभें।
जिनशासन का राज बताकर, हम भक्तों के मन मोहें॥
प्रभु के तत्त्व भक्त को सीधे, ग्राह्य कभी ना हो सकते।
नग्न दिगम्बर गणधर गुरु बिन, मन का मैल न धो सकते॥४॥
अतः कहें जिसके जीवन में, यदि निर्ग्रन्थ गुरु ना हो।
उन्हें दिगम्बर जैन न समझो, उनके जीवन शुरु ना हों॥
सो 'सुव्रत' की यही प्रार्थना, हर पल गुरु का सुमरण हो।
गुरु 'विद्या' को रहें समर्पित, गुरु चरणों में सु-मरण हो॥५॥

(सोरठा)

गणधर गुरु के नाम, चौदह सौ बावन भजें।
करके नमोऽस्तु ध्यान, चेतन के आंगन सजें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बंधी वृषभसेनादि-प्रभासपर्यंत द्विपंचाशदाधिक-शतचतुर्दश-गणधरेभ्यो अष्टचत्वारिंशत्-सहस्त्राधिक-अष्टाविंशतिलक्ष मुनिवरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ऋद्धिधारी मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, ऋद्धिधारि ऋषिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री गणधर विधान आरती

(लय-बाहुबलि की आरति उतारो मिलकर...)

श्री गणधर गुरु की आरती उतारो मिल के।
उतारो मिल के, छवि निहारो मिल के। श्री गणधर गुरु...

तीर्थंकर के समवसरण में, हुए न जब तक गणधर।
तब तक प्यारी दिव्य देशना, खिरा सके ना जिनवर॥
गणधर पा के झरे देशना, देखो खुल के...देखो खुल के...।श्री...

समवसरण की दूजी कटनी, जिस पर गणधर शोभें।
भक्त-शिष्य भगवान देख कर, अपने तो मन मोहें॥
सूरज चंदा जैसी जोड़ी, चमके मिले के...चमके मिल के...। श्री...

केवल ज्ञानसूर्य के स्वामी, प्रभु अरिहंत जिनेशा।
गणधर स्वामी ज्ञानज्योति के, तत्त्व पुंज परमेशा॥
समवसरण का देख नजारा, आतम झलके.. आतम झलके..। श्री...

हम अज्ञान अंधेरे में हैं, ज्ञान रोशनी देना।
तुमसे तुमको मांग रहे हम, अपने सम कर लेना॥
द्वार तुम्हारे, हम भी आएँ, देखो चल के... देखो चल के...। श्री...

मुँह माँगा वरदान दिया है, अपने श्रद्धालु को।
थोड़ी नजर करो अब हम पर, तुम तो धर्मालु हो॥
'सुव्रत' को यों स्वीकारो ज्यों, टुकड़े दिल के-टुकड़े दिल के। श्री...

===

नोट—भगवान महावीर स्वामी के गौतम आदि सहित ग्यारह गणधर थे। जिनके नाम इस प्रकार हैं—
१. इन्द्रभूति (गौतम) २. अग्निभूति ३. वायुभूति ४. शुचिदत्त ५. सुधर्म ६. मांडव्य ७. मौर्यपुत्र ८. अकंपन ९. अचल १०. मेदार्य ११. प्रभास।

श्री चौंषठ ऋद्धि विधान

मंगलाचरण

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः –४
मंगलमय मंगल के कर्त्ता, नग्न दिगम्बर संत रहे।
जीव हितैषी निर्ग्रन्थों से, जिनशासन जयवंत रहे॥
जिनके रूप सदा मंगलमय, विघ्न अमंगल हरते हैं।
ऐसे ऋषियों साधुगणों को, हम तो नमोऽस्तु करते हैं॥१॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः –४
विश्वशान्ति से आत्मशान्ति को, भोग विषय सुख जो छोड़े।
और कहें क्या अपने तन से, ममता–मूर्च्छा को तोड़े॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' वाली, श्रेष्ठ भावना अपनायी।
इसी साधना के प्रभाव से, अपनी आतम झलकायी॥२॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः –४
स्वार्थ त्याग की यही साधना, ऋद्धि–सिद्धि विद्याएँ दे।
चमत्कार फिर अतिशय होते, निज की शुद्ध कलाएँ दे॥
ऐसे परम महाऋषियों से, धरा धर्म का रथ चलता।
इनकी महा कृपा को पाकर, भक्त जनों का पथ मिलता॥३॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः –४
औषध मंत्र रसायन सेवा, ऋषियों से ही प्राप्त हुए।
रोग कठिन से कठिन इन्हीं की, करुणा पाए समाप्त हुए॥
कार्य कठिन से कठिन इन्हीं की दृष्टि से आसान हुए।
'सुव्रत' जग के भोग कहें क्या, चेतन तक के ज्ञान हुए॥४॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः –४
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण–कण मंगल क्षण–क्षण मंगल, जन–जन मंगल होवे।
ऋषि मुनियों को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री चौंषठ ऋद्धि पूजन

स्थापना (दोहा)

भोग विषय सब त्याग कर, तप करते मुनिराज।
चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, प्रकटाते ऋषिराज॥

(ज्ञानोदय)

इस संसार शरीर भोग के, जालों में सब उलझ रहे।
इन्हें त्याग जो करें तपस्या, वे ऋषिवर ही सुलझ रहे॥
चौंषठ-चौंषठ पूज ऋद्धियाँ, जिन में निज को हम खोजें।
आत्म प्रदेशों को गुंजित कर, करके नमोऽस्तु पद पूजें॥

(दोहा)

ऋद्धि-ऋद्धिधर पूज ने, करते नमोऽस्तु आज।
हे प्रभु! हम पर कर दया, करें हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनीन्द्र अत्र अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सभी रसों का राजा जल है, जल बिन जीवन टिक न सके।
जल बिन कैसे पूजा होगी, जल बिन चेतन मिल न सके॥
सो प्रासुक जल रस लेकर हम, चेतन रस को खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिनशासन की ऋद्धि देखकर, चमत्कार जग के भागें।
ऋद्धीश्वर की चरण धूल ले, अपने भाग्य कमल जागें।
चंदन जैसी शीतल चेतन, हम भी अपनी खोज रहे॥
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

रंग बिरंगे दुनियाँ वाले, आकर्षण को क्यों चाहें।
ऋद्धि धारियों की अर्चा से, मिलती शाश्वत सुख राहें॥
अपने घर में ऋद्धि-सिद्धि हो, अक्षय छाया खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

बाग बिना ना पुष्प खिलेंगे, पुष्प बिना क्या गंध मिले।
गंध बिना आनन्द न मिलता, तो क्या परमानन्द मिले॥
भाव भक्ति के पुष्प खिलाकर, आत्मपुष्प हम खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वादु जनों का स्वाद छोड़कर, साधु तपस्याएँ करते।
इसी साधना से दुनियाँ की, सभी समस्याएँ हरते॥
फिर भी जिन रस कभी न छोड़ें, वही स्वाद हम खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्य: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

ऋषियों बिन फैला अंतरतम, सोचो! किसका दूर हुआ।
दीप आरती उनकी करने, अत: हृदय मजबूर हुआ॥
चेतनगृह को रोशन करने, ज्ञान दीप हम खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

तपोधनों ने दौड़-धूप कर, दीप धूप को बचा रखा।
कर्मों के खेलों पर जयकर, चेतन घट को सजा रखा॥
बुद्धि भ्रष्ट हो नहीं हमारी, संत-मंत्र हम खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

कर्म रहित श्री सिद्ध अवस्था, त्याग तपस्या के फल हैं।
व्रत संयम बिन मोक्ष न मिलता, मिलते नरकों के बिल हैं॥
कर्मों के दुख विपाक हरके, महामोक्ष फल खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

नग्न दिगम्बर ऋषियों के बिन, रत्नत्रय-जिनशासन क्या।
जिनशासन बिन शुद्धातम सुख, किसके पाया कहो सखा॥
अत: सभी दरबार छोड़कर, अनर्घ तीरथ खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु) (बुद्धि-ऋद्धि के १८ भेद)

बुद्धिऋद्धि के भेद अठारह, अवधिज्ञान पहला।
रूपी पुद्गल महास्कंध तक, जाने जो उजला॥
तीनों अवधिज्ञान पूजकर, आत्म चखें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नम: स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अवधि-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

ढाईद्वीप में मूर्त-द्रव्य जो, जीवों के मन में।
ज्ञान मन:पर्यय वह जाने, रमता चेतन में॥
दोनों तरह **मन:पर्यय** भज, मोक्ष मिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नम: स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन:पर्यय-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

घाति हरण कर बने केवली, अद्भुत ज्ञान गहे।
सभी द्रव्य-गुण-पर्यायों को, युगपत जान रहे॥

स्व-पर प्रकाशी **केवलज्ञानी**, अर्हत् हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केवल-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

कोष्ठों में ज्यों मिले धान्य हों, ऐसे द्रव्य मिले।
तो भी अलग-अलग जो जाने, निज सुख को मचले॥
कोष्ठबुद्धि को आत्म शुद्धि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोष्ठ-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

एक बीज से बढ़े फसल ज्यों, एक शब्द से ज्ञान।
संत तपस्या कर हों ज्ञानी, पा लेते निर्वाण॥
बीजबुद्धि की महाऋद्धि से, मुक्ति मिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बीज-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

गुरु से मात्र एक पद पढ़कर, श्रुत समझें पूरा।
पदानुसारिणी-बुद्धिऋद्धि वह, धारें मुनि शूरा॥
सभी भेद इसके भज पाएँ, भेद ज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पदानुसारिणी-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

नर पशुओं के मिश्र वचन सुन, अलग-अलग बोलें।
संभिन्नस्त्रोतृ-बुद्धिऋद्धिधर, ज्ञान चक्षु खोलें॥
जड़ चेतन का बन्ध मिटाने, हम पूजें आहा॥
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संभिन्नस्त्रोतृ-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

पर-उपदेश बिना अपने से, होकर वैरागी।
करें तपस्या तो हो जाती, मुक्तिवधू रागी॥

यह **प्रत्येक-बुद्धि**ऋद्धि भज, ध्यानी हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्येक-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

बन के नगन दिगम्बर मुनि जो, करें तपस्याएँ।
सुरगुरु परमत सब पर जय कर, हरें समस्याएँ॥
तत्त्वज्ञान **वादित्व-ऋद्धि** से, हम पाएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वादित्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

दसपूर्वों को ध्याकर तपसी, अन्तर्मुखी हुए।
तो विद्याएँ दिव्य शक्तियाँ, आकर पाँव छुए॥
जिन विद्या से निज विद्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दशपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

चौदहपूर्वों के ज्ञानी हो, तजें मान ज्वाला।
तभी मुक्ति नत नयना होकर, कर ले वरमाला।
चौदह राजू उच्च पहुँचने, हम पूजें आहा॥
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चौदहपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

अंग भौम आदिक ज्योतिष के, आठ निमित्तों से।
भविष्य में क्या होने वाला, कहते शब्दों से॥
यह **अष्टांगनिमित्त** हम पूजें, उज्ज्वल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्त-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

नव योजन सीमा के बाहर, स्पर्शन करना
फिर भी निज का स्पर्शन कर, आतम में रमना।

दूरस्पर्शत्व-ऋद्धि भजें हम, छुएँ मुक्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरस्पर्श-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

नव योजन की मर्यादा से, बाहर रस चख लें।
शुद्धातम में लीन हुए तो, आतमरस चख लें॥
दूरास्वादन-ऋद्धि भजें हम, मिले स्वरस आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरस्वादित्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

नव योजन की सीमा से भी, बाह्य सूँघ लेते।
निज आतम के पुष्प खिला के, मोक्ष घूम लेते॥
भजें **दूरघ्राणत्व**-ऋद्धि हम, लें स्वगंध आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरघ्राणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

सैंतालीस हजार और दो-, सौ त्रेसठ के योजन।
इससे दूर दृश्य के दृष्टा, कर लें निजशोधन॥
ऋद्धि **दूरदर्शित्व** भजें हम, दर्शन हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शित्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

बारह योजन के बाहर भी, सुनने की क्षमता।
दूरश्रवण की ऋद्धि प्राप्त कर, निज की उद्यमता॥
हम भक्तों की अर्जी सुनकर, तारो तो आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरश्रवणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

बिना पढ़े ही सकल जिनागम, जो ऋषि खुद समझें।
कर्मों के सिद्धांत समझ के, जग में ना उलझें॥

ऋषिवर **प्रज्ञाश्रमण** हमें भी, प्रज्ञा दें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

(चारण-ऋद्धि के ९ भेद)

नव प्रकार चारण-ऋद्धि में, जलचारण पहले।
जल जीवों को कष्ट दिए बिन, जल पर संत चले॥
जलचारण की ऋद्धि पूजकर, प्यास मिटे आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

जंघा बल से धरती तल से, चउ अंगुल ऊँचे।
चाहें तो योजन बहु योजन, क्षण भर में पहुँचे॥
जंघाचारण-ऋद्धि पूजकर, उन्नति हो आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जंघा-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

नभ में चले किसी आसन से, जिन आज्ञा पालें।
भक्तों का कल्याण करें ऋषि, निज आतम ध्या लें॥
ऋद्धि **नभश्चारण** को भजकर, सिद्धासन आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नभः-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

मकड़ी के जालों पर चलना, बिन बाधाओं के।
तन्तु न टूटे जन्तु न रूठे, मुनि ऋषिराजों से॥
ऋद्धि **तन्तु-चारण** भजकर के, जन्तु सुखी आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तन्तु-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

पुष्पों पर ऋषि कभी ना चलते, किन्तु अगर चलते।
तो जीवों को दुख ना होता, कभी न मर सकते।
ऋद्धि **पुष्पचारण** को भजकर, पुष्प खिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्प-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

पत्रों पर ऋषियों को चलना, इष्ट नहीं होता।
अगर चले तो उन जीवों को, कष्ट नहीं होता॥
यही **पत्रचारण** को भजकर, मित्र बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पत्र-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

बीजों पर चलकर जीवों को, अगर न कष्ट हुए।
ऋद्धि **बीजचारण** यह भज के, सुखिया भक्त हुए॥
मोक्षबीज पाने हम पूजें, बीज फले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बीज-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

श्रेणी पर चल श्रेणी माड़ें, किन्तु न जीव मरें।
श्रेणीचारण-ऋद्धि यही भज, आतम भी निखरें॥
हम भी ऋषियों की श्रेणी में, आ जाएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेणी-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

अग्निशिखा पर चलने पर भी, मरे नहीं प्राणी।
फिर भी ध्यान अग्नि से ऋषिवर, बनते कल्याणी॥
ऋद्धि **अग्निचारण** को भजकर, कर्म जलें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अग्नि-चारणऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

(विक्रिया-ऋद्धि के ११ भेद)

ग्यारह विध की विक्रिया ऋद्धि, अणिमा है पहली।
परमाणु सी काया जिनकी, छिद्रों से निकली॥
अणिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, सूक्ष्म बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अणिमा-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

महादेह मेरु जैसी कर, जग के कष्ट हरें।
विष्णुकुमार सरीखे ऋषिवर, महिमा रूप धरें।
महिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, महा बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महिमा-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

करें पवन सा हल्का तन फिर, हल्का करते मन।
आतम हल्का करके पायें, सुख का मोक्ष भवन॥
लघिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, लघु होवें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लघिमा-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

मेरु से भी भारी अपनी, काया को करना।
ऐसी गरिमा पाकर हमको, आत्म मुक्त करना॥
गरिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, गुणी बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गरिमा-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

भू पर रहकर सूरज चंदा, जो ऋषिवर छू लें।
आत्म गुणों में घुलें मिलें तो, मुक्ति चरण छू लें॥
प्राप्ति-ऋद्धि को करके नमोऽस्तु, भव समाप्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राप्ति-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

जल में थल सम थल में जल सम, जो ऋषि खेल सकें।
तरह-तरह की देह बना कर, भव की जेल तजें॥
भजें यही **प्राकाम्य**-ऋद्धि हम, देह तजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राकाम्य-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

महातपस्वी महामनस्वी, सब जग को जीते।
निर्मोही सबका मन मोहें, निज रस को पीते॥
हम **ईशत्व**-ऋद्धि को पूजें, ईश बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ईशत्व-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

तप का ऐसा प्रभाव हो कि, सब जग वश में हो।
पर ऋषिवर निज वश होते सो, ना पर वश में हो॥
वशित्व-ऋद्धि को भजकर हम भी, निज वश हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वशित्व-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

पर्वत चट्टानें भी जिनको, रोक नहीं पाते।
बिना खेद के बिना छेद के, संत पार जाते।
पूजें **अप्रतिघात**-ऋद्धि हम, निर्बाधा आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघात-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

दीक्षा लेकर तप करके जो, हो जाते अदृश्य।
आतम के जो दृश्य देखकर, उज्ज्वल करें भविष्य॥
अंतर्धान-ऋद्धि हम भजकर, शिष्य बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अंतर्धान-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

तप के प्रभाव से मनवांछित, तन का रूप करें।
कामरूपिणी इस विद्या से, दुख का कूप हरें॥
इसको हम भी करके नमोऽस्तु, काम तजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कामरूपित्व-विक्रियाऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

(तप-ऋद्धि के ७ भेद)

तपो ऋद्धि के सात भेद में, प्रथम उग्र तप हों।
दीक्षा से समाधि तक बहुविध, जिसमें अनशन हों॥
उग्र भाव तज **उग्र**-ऋद्धि भज, मिले शान्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उग्र-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

तरह-तरह उपवास करें पर, दुर्बल ना होते।
किन्तु देह दिन प्रतिदिन चमकें, पाप तिमिर खोते॥
ऋद्धि **दीप्ततप** भज हम पाएँ, आत्म ज्योति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्त-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

तप से भोजन यों सूखे ज्यों, तप्त लौह पर जल।
अतः नहीं मल मूत्र हुए सो, पाएँ मोक्षमहल॥
ऋद्धि **तप्ततप** हम भी पूजें, शीतल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तप्त-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

महा-महा उपवास करें जो, सिंहनिष्क्रीडन से।
फिर भी त्रस नाली के ज्ञाता, मिलते चेतन से॥
यही **महातप**-ऋद्धि भजें हम, मिले शान्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महा-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

रोग व्यथा हो तन में फिर भी, घोर तपा करसी।
विश्वशान्ति करने को जिनकी, खूब कृपा बरसी॥
भजें **घोरतप**-ऋद्धि भक्त हम, हों निरोग आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोर-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

सिन्धु सुखा दें लोक पलट दें, तप बल के द्वारा।
किन्तु अहिंसक करें न यों सो, जग पूजे सारा॥
घोरपराक्रम-ऋद्धि भजें हम, ऊर्ध्व वसें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री घोरपराक्रम-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

दुनियाँ की नारी त्यागें पर, मुक्तिवधू रागी।
डिगा न सकते जगत प्रलोभन, जय हो! वैरागी।
अघोरब्रह्मचर्य हम पूजें, मंगल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अघोरब्रह्मचारित्व-तपऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

(बल-ऋद्धि के ३ भेद)

बल ऋद्धि के तीन भेद में, प्रथम मनोबल लें।
जिससे ऋषि बस एक घड़ी में, जिनश्रुत को मथ लें॥
ऋद्धि **मनोबल** भजकर हम हों, विजित मना आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन-बलऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

द्वादशांग को एक घड़ी में, जो पूरा पढ़ लें।
महातपस्वी इन ऋषियों के, चलो पैर पड़ लें॥
ऋद्धि **वचनबल** भज कर होते, वचन सिद्ध आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वचन-बलऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

तप के प्रभाव से उँगली पर, लोक जमा लेवें।
कायोत्सर्ग वर्ष भर करके, मुक्ति रिझा लेवें॥
ऋद्धि **कायबल** भजकर हम भी, हों विदेह आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री काय-बलऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

(औषध-ऋद्धि के ८ भेद)

आठ भेद औषध ऋद्धि के, है आमर्ष प्रथम।
जिनका तन छू छूमंतर हों, रोग व्याधियाँ गम॥
आमर्ष-औषध को भजकर के, निज छू लें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आमर्ष-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

खेल्ल-औषधी ऋद्धिधर के, लार-नाक मल को।
इत्यादि छू पवन चले तो, हरे रोग दुख को॥
ऐसी ऋद्धि पूज-पूज हम, मल हर लें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खेल्ल-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

ऋषि के तन के बाह्य मैल जो, तप से औषध हों।
जिनको छूकर टलें व्याधियाँ, सुख से प्रोषध हों॥
जल्ल-औषधी भजकर तैरें, भव जल हम आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल्ल-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

दाँत कान आदिक मल तप से, औषध निश्चित हों।
इनको छूकर भक्त जनों के, कार्य सुनिश्चित हों॥
मल्ल-औषधी भज हम जीतें, मोह मल्ल आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मल्ल-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

ऋषि के मल मूत्रादिक तप से, दवा हुए आहा।
जिसको छूकर पवन चले तो, रोग करें स्वाहा॥
विप्रुष-औषध-ऋद्धि भजें हम, निर्मल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विप्रुष-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

तपसी की सम्पूर्ण देह यह, जब औषध होती।
जिसको छू के पवन चले तो, रोग व्यथा खोती॥
सर्व-औषधी-ऋद्धि पूज हम, सर्व सुखी आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

तप से जिनकी वाणी अमृत, जैसी हो जाती।
जहर उतर जाते जिसको सुन, निज को चमकाती॥
मुखनिर्विष यह ऋद्धि पूजकर, जहर नसे आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुखनिर्विष-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

तप के कारण जिनकी नजरें अमृत हो जाएँ।
जहाँ पड़ें नजरें तो विष खुद, निर्विष हो जाएँ॥
दृष्टिनिर्विष-ऋद्धि भजें हम, निर्विकार आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दृष्टिनिर्विष-औषधऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

(रस-ऋद्धि के ६ भेद)

रस ऋद्धि के छह भेदों में, आशीर्विष पहला।
मर जा कहने पर मर जाएँ, कहें न, करें भला॥
आशीर्विष को करके नमोऽस्तु, भला करें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आशीर्विष-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

कोप दृष्टि जिन पर कर देते, वो तत्काल मरें।
परम दयालु करें ना यों सो, हम त्रय काल भजें॥
दृष्टिर्विष गुरु हरें समस्या, सुख देवें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दृष्टिर्विष-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

अरस भोज्य कर-पात्रों में आ, तप से सरस हुए।
भोजन त्याग भजन करते ऋषि, सो हम चरण छुए॥
क्षीरस्त्रावि-रसऋद्धि पूजकर, क्षीरामृत आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षीरस्त्रावि-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

कटुक भोज्य भी पाणि पात्र में, तप से मधुर हुए।
भोजन रस के त्यागी ऋषिवर, आतम रसिक हुए॥
मधुस्त्रावी-रसऋद्धि पूजकर, निजरस हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधुस्त्रावि-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

सरस अरस सब भोज्य करों में, अमृत स्वाद झरे।
तप से ऋषि यह गुण पाएँ पर, निज रस चाह रहे॥
अमृतस्त्रावि-ऋद्धि पूज कर, ज्ञानमृत आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अमृतस्त्रावि-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

रूखा सूखा कटुक भोज्य भी, घृत सम हो तप से।
भोज्य रसों के त्यागी ऋषि को, हम खोजें कब से॥
सर्पिस्त्रावि-ऋद्धि पूज हम, पुष्ट बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्पिस्त्रावि-रसऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

(अक्षीण-ऋद्धि के २ भेद)

दो विध की अक्षीण ऋद्धि में, पहला यह कहता।
मुनि चौके में चक्रि सैन्य को, भोज्य न कम पड़ता॥
यह **अक्षीणमहानस**-ऋद्धि, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण-महानस ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

मुनि आसन पर चक्रि सैन्य, भी यदि चाहे रुकना।
तब तो सुख से सब रुक जाएँ, हम चाहें झुकना॥
यह **अक्षीणमहालय**-ऋद्धि, हम ध्याएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी ऋषिवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण-महालय ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

पूर्णार्घ्य (शंभु)

हैं चमत्कार को नमस्कार, जिनको अपना माना करते।
यह राग-आग है अपनों की, इनसे हम दुख पाया करते॥
फिर भी यह राग न छूट सका, सो चौषठ ऋद्धि मंत्र भजें।
हम करके नमोऽस्तु ऋषियों को, बस मुक्तिवधू के कंत बनें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

पंचम कालिक गुरु मुनि अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

महावीर के मुक्ति गमन के, पीछे बासठ सालों में।
गौतम-सुधर्म-जम्बू स्वामी, हुए पाँचवे कालों में॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म नशाने, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वीरशासने द्विषष्टिवर्षमध्ये गौतम-सुधर्म-जम्बूस्वामि त्रय-केवलिभ्यो अर्घ्यं...।

तीन केवली प्रभु के पीछे, सौ वर्षों के शासन में।
विष्णु-नंदिमित्र-अपराजित-गोवर्धन जिनशासन में॥
भद्रबाहु सब श्रुत धारी को, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं त्रय केवली-उपरान्ते शतवर्षमध्ये विष्णु-नंदिमित्र-अपराजित-गोवर्धन-भद्रबाहु पंचश्रुत केवलिभ्यो अर्घ्यं...।

पाँच-पाँच श्रुत हुए केवली, फिर ग्यारह दस पूर्व धरा।
वर्ष एक सौ तेरासी में, विशाख आदिक मुनीश्वरा॥
हैं धरसेन अंत में उनको, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पंचश्रुतकेवलि-उपरान्ते विशाख-प्रौष्ठिल-क्षत्रिय-जय-नागसेन-सिद्धार्थ-वृतसेन-विजय-बुद्धिलिंग-अंगदेव-धरसेनादि एकादश दश-पूर्वधारक श्रुतकेवलिभ्यो अर्घ्यं...।

वर्ष एक सौ तेईस में फिर, ग्यारह अंगों के धारी।
नक्षत्रादिक पाँच हुए गुरु, जिनशासन के अधिकारी॥
आचार्यों की करके पूजा, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं एकादश-दशपूर्वधारक-उपरान्ते शताधिक त्रयोविंशतिवर्ष मध्ये-नक्षत्र-जयपाल-पांडव-ध्रुवसेन-कंसादिक एकादशांग श्रुतधारक पंच ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

पुनः तीन कम सौ वर्षों में, सुभद्र-यशोभद्र स्वामी।
भद्रबाहु-लौहार्य चार गुरु, हुए आचारांग ज्ञानी॥
संयम और संयमी पूजें, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं एकादशांग श्रुतधारक-उपरान्ते त्र्यूनशत वर्ष मध्ये-सुभद्र-यशोभद्र-यशोबाहु (भद्रबाहु)-लौहार्यादि आचारांगधारक चतुः ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

वर्ष एक सौ अष्टादश में, श्रुत के एकदेश ज्ञानी।
ऐलाचार्य माघनन्दी गुरु, धरसेन पुष्पदन्त स्वामी॥
हुए भूतबलि सूरि भजें नित, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्वसाहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आचारांगधारक उपरान्ते शताधिक-अष्टादश वर्ष मध्ये ऐलाचार्य-माघनन्दी-धरसने-पुष्पदंत-भूतबलि आदि एकादशांगधारक ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

इस विध कुल छह सौ तेरासी, वर्षों में जो संत हुए।
क्रमशः क्रमशः हीन धरे श्रुत, उसके जो उपरान्त हुए॥
कुन्दकुन्द गुरु उमास्वामि फिर, समन्तभद्र शिवकोटि हुए।
पुनः शिवायम पूज्यपाद मुनि, ऐलाचार्य अमृतचन्द्र हुए॥१॥
वीरसेन जिनसेन नेमिचन्द्र, रामसेन जयसेन हुए।
अकलंक स्वामी बौद्ध जितारी, विद्यानन्द मणिकनन्द हुए॥
प्रभाचन्द्र मुनि बासवचन्दा, गुणभद्र वीरनन्दि हुए।
मुनि आचार्य उपाध्यायों ने, सम्यग्ज्ञानी छन्द छुये॥२॥
फिर ईशा की सदी बीसवीं, वीर निर्वाणी पच्चीसों।
शान्तिसागराचार्य हुए फिर, हुए वीर गुरु भक्ति सों॥
शिवसागर आचार्य हुए फिर, हुए ज्ञानसागर गुरुवर।
ज्ञानी ध्यानी विद्वानी ने, प्रभावना की जीवन भर॥३॥
और अन्त में वृद्धदशा में, अद्वितीय मुनि दीक्षा दी।
विद्याधर से विद्यासागर, शिष्य बना श्रुत शिक्षा दी॥

फिर आचार्य बनाकर जिनको, समाधि तक के ज्ञान दिए।
वर्तमान के वर्धमान सम, हम सबको भगवान दिए॥४॥
वर्तमान शासन में जितने, पुलाक वकुश निर्ग्रन्थ हुए।
कुशील स्नातक पाँच तरह के, नग्न दिगम्बर संत हुए॥
इन सबको हम साथ-साथ में, अलग-अलग पूजें आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥५॥

(दोहा)

ग्रन्थ रहित हमको करें, हे गुरुवर निर्ग्रन्थ।
हम भी शिवपंथी बनें, दिखला दो वह पंथ॥

ॐ ह्रीं एकादशांगधारक-उपरान्ते कुन्दकुन्द-विद्यासागरादि सर्वनिर्ग्रंथ ऋषि-मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

समुच्चय पूर्णार्घ्य

(शंभु)

मुनिराज बिना जिनशासन की, जिनधर्म धार तो बह न सके।
सो जैन दिगम्बर अनुयायी तो, मुनियों के बिन रह न सके॥
ऋषिराजों की इस पूजा का, हम फल चाहें मुनि धर्म मिले।
हों नग्न दिगम्बर पिछी कमण्डल, लेकर आतम धर्म मिले॥

(दोहा)

जिनशासन की शरण में, ऋषि मुनियों को पूज।
'सुव्रत' चाहे मोक्ष तक, गूँजे नमोऽस्तु गूँज॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल संबंधिनः सर्व ऋषि-मुनिभ्यो समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी ऋषि-मुनिभ्यो नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

हृदय वसें ऋषिराज तो, खुले ज्ञान के नेत्र।
सो कहके जयमालिका, मिले मोक्ष का क्षेत्र॥

(चौपाई)

जय-जय-जय ऋषि संत महंता, जिन से जिनशासन जयवंता।
तारण-तरण जहाज सहारे, ऐसे हैं ऋषिराज हमारे॥१॥
आओ! इनकी कथा वाँच लें, छाया में हम आज नाँच लें।
इन जैसी पाएँ निज वस्तु, आओ! मिलकर करें नमोऽस्तु॥२॥
जब कोई संसारी प्राणी, रखे भावना निज कल्याणी।
सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पूजे, साँचा सम्यग्दर्शन खोजे॥३॥
फिर संसार सुखों से डरकर, जीवन जिये विरागी बनकर।
रत्नत्रय के भाव बनाए, गुरु पद में दीक्षा अपनाये॥४॥
करें तपस्याएँ तूफानी, बनकर साँचे ज्ञानी ध्यानी।
तभी ऋद्धियाँ पैर पखारें, सभी सिद्धियाँ राह निहारें॥५॥
लेकिन ऋषिवर निज में रमते, अतः भक्त चरणों में नमते॥
ऋषिराजों की करुणा पाके, दुनियाँ खुश है पर्व मना के॥६॥
ऋषियों का कण-कण है पावन, रत्नत्रय का रिमझिम सावन।
इसमें जो भी भक्त नहाएँ, रोग शोक दुख दर्द नशाएँ॥७॥
और कहें क्या इनकी महिमा, झलकाते शुद्धातम गरिमा।
मुक्तिवधू फिर नतनयना हो, करे मोक्ष में वरमाला हो ।८॥
यही स्वयंवर हम भी देखें, सो ऋषियों को माथा टेकें॥
'सुव्रत' को ऐसा वर देना, योग्य स्वयंवर के कर देना॥९॥

(सोरठा)

ऋद्धि-सिद्धि साम्राज्य, होते हैं गुणगान से।
भक्त भजें ऋषिराज, करके नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल संबंधिनः सर्व ऋषि-मुनिभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ऋद्धिधारी मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, ऋद्धीश्वर मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

आरती

ओम् जय चौंषठ ऋद्धि, स्वामी जय चौंषठ ऋद्धि।
हम सब करके आरती-२, चाह रहे सिद्धि॥ ओम् जय...
१. चौंषठ-चौंषठ ऋद्धि, ऋषि जिनके स्वामी। स्वामी ऋषि...
करके तपस्या पाएँ-२, मुक्तिवधू रानी॥ ओम् जय...
२. ऋद्धि और ऋषिवर, साथ-साथ ऐसे। स्वामी साथ...
जैसे गुण गुणी होते-२, दूर रहें कैसे॥ ओम् जय...
३. ऋषि बिन धर्म न टिकता, पाप ना हो रित्ता। स्वामी पाप...
कौन शास्त्र को लिखता-२, मोक्ष नहीं दिखता॥ ओम् जय...
४. रोग शोक दुख संकट, कर्म हरें संता। स्वामी कर्म...
पाप श्राप विधि हरके-२, करते भगवंता॥ ओम् जय...
५. हम जग से घबराके, ऋद्धि पूज रहे। स्वामी ऋद्धि...
'सुव्रत' ऋषि को पाके-२, सिद्धि खोज रहे॥ ओम् जय...

===

विद्यागुरु बुंदेली विधान

स्थापना (ज्ञानोदय)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आए, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापौ फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गए, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कामदेव तौ तुमसैं हारौ, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥

हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लड्डुआ पेड़ा सब चाने।
लुचई ठडूला खीच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रऔ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया कौ, तुमने करिया मौं कर दऔ।
ऊँसई जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दऔ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौंनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कौंनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
ओई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाए, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥

एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौंन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, प्यांरौ चारौ और चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥

तुम बैरागी हौ निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गय, ये में का कैंसौ अचरज।
गुरु के संगै मात-पिता के, गुरु बन गय जौ है अचरज॥३॥

मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नैं जावै।
कहूँ रमैं नैं जौ बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥
कबउँ-कबउँ जौ मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्‌दी॥५॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शोभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गए छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥
कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौंने-नौंने ग्रन्थ रचा दय, भौत बना दय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरत हैं॥८॥
ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥

इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥९॥

अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँई मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टई-झट्टई तिरवा दो॥१०॥

ॐ ह्वूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

(पुष्पांजलिं)

अर्घ्यावली

पंचाचार (ज्ञानोदय)

बालपने सें प्रभु दर्शन कौ, तुम पै रंग चढ़ौ ऐंसौ।
सम्यग्दर्शन पाकें गुरु सें, रूप बना लऔ प्रभु जैंसौ॥
तन्नक सौ तौ तकौ नांय खों, दर्शन दै दइऔ हमखों।
हे! दर्शन आचारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं दर्शनाचार-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

ज्ञानगुरू नें कैसी घुट्टी, तुमें पिला दई ज्ञानइं की।
भोले भाले हम भक्तों में, जोत जगा दई ज्ञानइं की॥

अठ पहरी घी अष्टांगी सौ, ज्ञान देत रइऔ हमखों।
ज्ञानाचारी हे! विद्यागुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं ज्ञानाचार-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

मोय लगत कै चंदा सूरज, तोये देखबे खों निकरें।
तेरा विध चारित्र देख कें, भाग्य हमौरों के निखरें॥
कंजूसी तन्नक सी तजकें, अपनौ धन दइऔ हमखों।
हे! चारित्राचारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं चारित्राचार-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

सहौ अमरकण्टक में जाड़ौ, कुण्डलपुर में गर्मी खों।
हरयाइ गुरयाइ नौन मिठाई, भा नईं रइ इन धर्मी खों॥
मस्कइं मस्कइं तप के रसखों, लै कें दै दइऔ हमखों।
तपाचार के हे! भण्डारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं तपाचार-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

तुम तौ अपने दम सें जादा, करौ तपस्या तूफानी।
जबईं तुमारे इन चरनों में, भरें सुरासुर नर पानी॥
वीर्यशक्ति जब बांटौ तब तौ, बिसरा नें दइऔ हमखों।
वीर्याचारी हे! विद्या गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं वीर्याचार-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

<u>बारह तप</u>

ढूँढ तनक सी कहूँ कौनियाँ, खाबौ पीवौ सब तज कें।
उपवासों की लैन लगा दइ, आतम परमातम भज कें॥
फिर भी आलस करौ नें ये कौ, राज बता दइऔ हमखों।
हे! अनशन तपधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं अनशनतपो-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

तन्नक–मन्नक एकइ बिरियाँ, रूखौ सूखौ सौ खाऔ।
फिर भी कबउँ करौ नें गुस्सा, कबउं पेट भर नें खाऔ॥
लें के तनक बांटवौ मुतकौ, जौइ सिखा दइऔ हमखों।
हे! ऊनोदरतपधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं अवमौदर्यतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

एकइँ बिरियाँ खात ओइ पै, बन्न–बन्न के लेत नियम।
निजी पुण्य की जाँच परख खों, आसक्ती खों त्यागौ तुम॥
खूबई करौ परीक्षा लेकिन, फैल नें कर दइऔ हमखों।
वृत्ति परिसंख्यान धरौ सौ, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं वृत्तिपरिसंख्यानतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

खट्टे मीठे खारे चिपरे, कड़वे आदि छै रस खों।
बखत–बखत पैं तजकें तुमतौ, लेत–रेत आतमरस खों॥
अपने जैसों सरस रसीलौ, जीवन दे दइऔ हमखों।
हे ! रसत्यागी विद्या गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं रसपरित्यागतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

कित्तउ लुकलौ छुपलौ फिर भी, बच नें सकौ तुम भक्तों सें।
सो क्षेत्रों पै जाकें बैठौ, तन्नक सोत करौटों सें॥
रहौ भीड़ में आप अकेले, दूर भगइऔ नें हमखों।
विविक्त शैयासन तप धारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं विविक्तशैय्यासनतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

जड़कारे में बिना चटाई, गर्मी में बिन हरयाई।
खड़गासन शीर्षासन करकैं, खुद में खोऔ सुखदाई॥

बन्न–बन्न सें तपा–तपा तन, निजसम चमकइऔ हमखों।
कायक्लेश तपधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥
ॐ ह्रूं कायक्लेशतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥
वैसें तो निर्दोष रहौ तुम, फिर भी दोष लगें कौनउं।
तौ खुद खौं, खुद के सिस्सौं खों, दै कें मौन रहौ मोनउं॥
निन्दा गर्हा आलोचन से, शुद्ध बनइऔ अब हमखों।
तुम तप प्रायश्चित्त धरौ सौ, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥
ॐ ह्रूं प्रायश्चित्ततपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥
पूज्य जनों की चार बन्न की, झुक कें भौत विनय करते।
भक्तों की जब सुनौ नमोऽस्तु, दै आशीष प्रेम रखते॥
अब तौ खोलौ मोक्ष किवाड़े, तीर्थंकर घांईं हमखों।
विनय तपोगुण धारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥
ॐ ह्रूं विनयतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥
आलस तज कें जैन धरम के, जब तुम समझौ शास्त्रों खों।
तब तौ नांय–मांय नें हेरौ, पढ़ौ पढ़ाऔ सिस्सों खों॥
तोखों पढ़वें बारी विद्या, सिस्स बना दइऔ हमखों।
हे ! स्वाध्याय तपो गुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥
ॐ ह्रूं स्वाध्यायतपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥
जो भी तोखों हेरै टेरै, ओकी खबर रखौ तुम तौ।
त्यागी व्रतियों के रखवारे, टेरें हेरें अब हम तौ॥
खबर हमारी भी लँय रइयौ, चरण शरण दइयौ हमखों।
वैयावृत्त तपोगुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥
ॐ ह्रूं वैयावृत्ततपो–गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥
बाप मतारी भाई बन्धु तज, दुनियाँदारी भी छोड़ी।

और कहें का तुमने अपनी, काया सें ममता मोड़ी॥
जब बारात मोक्ष लै जइऔ, संगै लै चलियौ हमखों।
हे ! व्युत्सर्ग तपो गुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं व्युत्सर्गतपो-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

जग कौ सार दिगम्बर मुद्रा, तप कौ सार ध्यान धरते।
जब तुम ध्यान धरौ सौ साँचउं, सिद्धों के जैंसे लगते॥
जित्तौ ध्यान धरत हौ अपनों, उत्तई तारौ गुरु हमखौं।
ध्यान तपो गुणधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं ध्यानतपो-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

दसलक्षण धर्म

चौका में मौका खों पाके, कौनउं कछू सुना देवै।
अथवा उल्टी सुल्टी कै कें, उपसर्गों सौ कर लेवै॥
फिर भी मुस्काऔं सो ऐंसे, लच्छन दै दइऔ हमखों।
उत्तम क्षमा धरमधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं उत्तमक्षमाधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

तुमसौ नें खबसूरत कौनउं, नें त्यागी ज्ञानी ध्यानी।
हीरे सें मजबूत तुमइं हौ, फिर भी हौ नंईयां मानी॥
चर्या में मुलाम मक्खन से, नरियल सौ करियौ हमखों।
उत्तम मार्दव धर्मधुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं उत्तममार्दवधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

माया ठगनी छल कपटों से, तुम तौ कोशों दूर रहौ।
एक नजर में टेड़े-टाड़े, छलियों खों भी ठीक करौ॥
सीधी सादी गैल तुमारी, तन्नक तौ तकियौ हमखों।
उत्तम आर्जव धर्मधुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्वूं उत्तम-आर्जवधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

कैंसे हो तुम तौ निर्लोभी, जौ नें कोनउँ समझ सकै।
लोभ त्याग कें धरम रतन कौ, तुममें खूबई लोभ दिखै॥
कंजूसी अब तनक त्याग कें, धरम बाँट दइऔ हमखों।
उत्तम शौच धरमधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमशौचधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

झूठी मों से कबउँ नें निकरै, साँचउं-साँचउं तुम बोलौ।
सबके दिल पै राज करौ तुम, कानों में मिसरी घोलौ॥
बानी पै जिनबानी बैठी, जबइ खूब मोहौ हमखों।
उत्तम सत्य धर्मधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमसत्यधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

इन्द्री संयम प्राणी संयम, जब सें तुमनें ओढ़े हैं।
तब सें वौ तीरथ सौ बन गऔ, जितै जमा दय गोड़े हैं॥
सुनकैं अब तौ अरज हमारी, दीक्षा दे दइऔ हमखों।
उत्तम संयम धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमसंयमधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

रखौ नें इच्छा फिर भी सबकी, इच्छा पूरी करौ भली।
देख तुमारी कठन तपस्या, हल्ला हौ रऔ गली-गली॥
सफल साधना करौ हमारी, तनक निहारौ तौ हमखों।
उत्तम तपधारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमतपधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

मुठी भरौ तौ खाऔ पीऔ, बांटौ झोली भर-भर कें।
त्यागी तोरौ त्याग देख कें, मनवा नांचै सर धर कें॥
परिग्रह जैसौ हमें नें छोड़ौ, वैरागी करियौ हमखों।
उत्तम त्याग धर्मधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमत्यागधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५॥

कित्तौ तौ उपकार करत हो, फिर भी अपनौ नें मानौ।
तन्नक-मन्नक राग रखौ नें, अपनौ बस आतम जानौ॥
अपने जैंसौ नगन दिगम्बर, झट्ट बना लइऔ हमखों।
हे ! आकिंचन धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तम-आकिंचनधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६॥

तुमें देख कें ऐंसौ लागै, परम वीतरागी मिल गए।
जबइँ हजारौ भाई बैन खौं, ब्रह्मचर्य के पथ मिल गए॥
जल में कमल सरीखे तुम तौ, ब्रह्म रमण दइऔ हमखों।
ब्रह्मचर्य व्रत धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७॥

षट्-आवश्यक

नें तौ सुख में सुखी होत तुम, नें दुख में तुम होत दुखी।
बहिर्मुखी कौ भाव त्याग जौ, बन गए अंतर मुखी-सुखी॥
देख तुमारी सामायिक खों, सिद्धशिला झलकै हमखों।
हे ! सामायिक कर्ता गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं सामायिक-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८॥

कोउ एक तीर्थंकर प्रभु की, तीनइं बिरियाँ जाप करौ।
भक्ति भाव सें तन्मय होकें, करकें नमोऽस्तु पाप हरौ॥
भक्त और भगवान मिलन को, दृश्य दिखा दइऔ हमखों।
पूज्य वन्दना गुणधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं वन्दना-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९॥

तीनइं बिरियाँ बड़ौ स्वयंभू, करकें जब भगवान भजौ।
तबतौ ऐंसौ लगै हमें कै, चौबीसी कौ धाम सजौ॥
आदिनाथ सें महावीर के, दर्श करा दइऔ हमखों।
हे ! आवश्यक स्तुतिकर्ता, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं स्तवन-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०॥

आंगे को अनुमान लगा कें, तुमतौ अपने काम करौ।
मस्कईं मस्कईं करौ साधना, तनक भौत आराम करौ॥
लगबै से पैलें दोषों कौ, त्याग सिखा दईयौ हमखों।
प्रत्याख्यान कर्म गुण धारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं प्रत्याख्यान-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१॥

वैसें तौ हुशयार भौत हौ, फिर भी कौनउं दोष लगें।
तौ निन्दा आलोचन करकें, साँचे गुरु निर्दोष बनें॥
तुम सौ शुद्ध दिखै नै कौनउँ, शुद्ध बना दइऔ हमखों।
प्रतिक्रमण के कर्ता गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं प्रतिक्रमण-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२॥

जित्ते सुन्दर उत्ते कोमल, फिर भी तन सें मोह नहीं।
छाले फोले आएँ तौ भी, मन में तन्नक क्षोभ नहीं॥
खड़गासन में बाहुबली से, शोभ रहे हौ गुरु हमखों।
कायोत्सर्ग ध्यानधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं कायोत्सर्ग-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३॥

<u>तीन गुप्तियाँ</u>

तुमरे मन की कोउ नें जानें, तुम सबके मन की जानौ।
अपने मन की कबउं करौ नें, अरज कोउ की नें मानौ॥
फिरभी मन की करा लेत तुम, मन की कै दइयौ हमखों।
मनोगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं मनोगुप्ति-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४॥

या तौ मौन रहौ तुम या फिर, बोलो तन्नक-मन्नक सौ।
वचनों खों ऐंसें बरसाऔ, जैंसें बरसै अमृत सौ॥
कित्तउ सुनलौ बचन आपके, होए नें संतुष्टि हमखों।
वचनगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं वचनगुप्ति-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५॥

देख तुमारी कोमल काया, सांचउं हमें लगै ऐंसौ।
चलते फिरते तीरथ हौ तुम, कौनउ नंइयां तुम जैंसौ॥
देख ध्यान मुद्रा खों तोरी, सिद्धालय झलकै हमखों।
कायगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं कायगुप्ति-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६॥

पूर्णार्घ्य

एड़ी और चुटइया तक लौं, मूलगुणों सें तुम सोहौ।
मन्द-मन्द मुस्कान बाँट कें, बुन्देली खों तुम मोहौ॥
भाग्य तुमईं बुन्देलखण्ड के, तनकथाम लईओ हमखों।
तुमईं सरीखौ अनरघ बनबे, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंश-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥
जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ये की महिमा न्यारी।
तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥१॥
लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥
जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥२॥

जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥३॥

महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भये हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
साँची कै दउं ये माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥४॥

भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावडों से जड़ माया, चेतन धन का कईये।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइये॥५॥

बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥६॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंश-गुणधारी आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फिर भी नमोऽस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

===

बुंदेली आरती

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रई जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

===

स्तुति खण्ड

स्वयंभू स्तोत्र (हिन्दी)

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! **वृषभनाथ** की, हुए प्रथम जो तीर्थंकर।
सागर तक वसुधा को तजकर, बने स्वयंभू क्षेमंकर॥
परम दयालु निर्दय बनकर, किए भस्म मोहादिक को।
निकट आपके आने हम भी, करें नमोऽस्तु चरणादिक को॥ १॥

जय हो! जय हो! **अजितनाथ** की, रिपु-विजयी मृत्युंजय की।
जिन-प्रभाव से बंधुवर्ग ने, शत्रु धरा निज-पर जय की॥
सार्थक नाम अमंगल हर्त्ता, भव्य कमल विकसित करते।
अपराजित! अपराजित बनने, तुमको नमोऽस्तु हम करते॥ २॥

जय हो! जय हो! **शम्भवप्रभु** की, दुखहारक सुखकारक की।
भोग-विषय तृष्णा रोगों के, हर्त्ता आत्म चिकित्सक की॥
गुण गाने में दक्ष न कोई, तो गुणगान करें क्या हम?
अहंकार ममकार मिटाने, करते नमोऽस्तु फिर भी हम॥ ३॥

जय हो! जय हो! **अभिनन्दनप्रभु**, अंतर-बाह्य निरम्बर की।
क्षमा सखी सह दया-वधू ले, चुन ली राह दिगम्बर की॥
नश्वर तन में कुछ ना अपना, आसक्ति तज हित होता।
तत्त्वज्ञान को शाश्वत सुख को, नमोऽस्तु करने मन होता॥ ४॥

जय हो! जय हो! **सुमतिनाथ** की, ऋद्धि-सिद्धि के दायक की।
परम भेद-विज्ञानी सार्थक, आत्म ज्योति के नायक की॥
तजे अपेक्षा और उपेक्षा, दिशा-दशा को जो बदलें।
अन्तर दीप जलाने हम तो, जिनको नमोऽस्तु भी कर लें॥ ५॥

जय हो! जय हो! **पद्मनाथ** की, सुन्दर निर्मल सूरत की।
हुए भव्य कमलों में शोभित, सूरज सी चिन्मूरत की॥
सरस्वती लक्ष्मी शान्ति के, योग सर्व हित जो धरते।
चरण कमल भज, मोक्षमहल को, पल पल नमोऽस्तु हम करते॥ ६॥

जय हो! जय हो! **सुपार्श्वनाथ** की, जो अविनाशी स्वस्थ हुए।
भोग प्रयोजन नहीं हमारा, भोगों से तो कष्ट हुए॥
सभी मृत्यु से डरते लेकिन, माँ सी तुम करते रक्षा।
निजी प्रयोजन सिद्ध करें हम, इससे नमोऽस्तु की इच्छा॥ ७॥

जय हो! जय हो! **चन्द्रनाथ** की, जिनसा तप-धन त्याग नहीं।
चंदा जैसे शीतल हैं पर, चंदा जैसा दाग नहीं॥
रहे सूर्य से बहु तेजस्वी, पर सूरज सम आग नहीं।
आग दाग हर वीतराग को, नमोऽस्तु करना राग नहीं॥ ८॥

जय हो! जय हो! **सुविधिनाथ** की, सुविधि कहें जो शिवपथ की।
अनेकान्त का दया धर्म दे, शुद्धातम उद्घाटित की॥
क्रोध वैर एकान्त धर्म तज, जिन-शासन जीवंत किया।
शत्रु विरोध त्यागने हमने, नमोऽस्तु जय-जयवंत किया॥ ९॥

जय हो! जय हो! **शीतलप्रभु** की, करें चराचर शीतल जो।
जो शीतलता प्रभु से मिलती, चंदन चंदा में ना वो॥
विषय काम धन सुत तृष्णा की, ज्वाला गंगाजल न हरे।
सम्यक् श्रम से आत्मप्रीति को, नमोऽस्तु कर भी मन न भरे॥ १०॥

जय हो! जय हो! **श्रेयनाथ** की, विघ्न हरें जो राह करें।
मधुर वचन से मोक्षमार्ग दें, ज्ञानावरणी आह हरें॥

न्याय-बाण के ब्रह्म-अस्त्र से, आतम के सम्राट हुए।
कष्ट विघ्न बाधाएँ हरने, नमोऽस्तु कर निज ठाठ हुए॥ ११॥

जय हो! जय हो! **वासुपूज्य** की, इन्द्र-पूज्य जग नायक की।
जिन्हें न पूजा निन्दा से कुछ, किन्तु शुद्धि हो पूजक की॥
सिन्धु पुण्य में बिन्दु पाप सम, पूजक की सावद्य क्रिया।
फिर भी 'पुण्यफला' बनने को, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥ १२॥

जय हो! जय हो! **विमलनाथ** की, जो निज-पर उपकारक हैं।
अंतरंग बहिरंग दोष के, जो निष्पृह हो हारक हैं॥
विमल ज्योति से कर्म पटल को, पूर्ण हटाने के अवसर।
आत्म सूर्य को उदित कराने, करते नमोऽस्तु हम झुककर॥ १३॥

जय हो! जय हो! **अनन्तनाथ** की, अनन्त गुण भण्डार भरे।
तन की श्रम जल भोग नदी को, तप रवि से परिहार करे॥
भक्त-पुरुष भव पार उतरते, अभक्त जन भव दुखी हुए।
दुखी न हों भव पार उतरने, कर नमोऽस्तु हम सुखी हुए॥ १४॥

जय हो! जय हो! **धर्मनाथ** की, धर्म-तीर्थ प्रतिपादक की।
भव्य सितारों के जो चंदा, कर्म-भर्म संहारक की॥
नाथ! आपकी चेष्टाओं के, दर्शन हुए प्रसन्न हुए।
देही हम भी बनें विदेही, सो नमोऽस्तु कर धन्य हुए॥ १५॥

जय हो! जय हो! **शान्तिनाथ** की, प्रजा सुरक्षक राज हुए।
धार सुदर्शन चक्र विजय कर, चक्रवर्ति अधिराज हुए॥
धर्मचक्र धर समाधिचक्र से, कर्मचक्र हर शुद्ध हुए।
विश्वशान्ति को आत्मशान्ति को, हम नमोऽस्तु करबद्ध हुए॥ १६॥

जय हो! जय हो! **कुन्थुनाथ** की, तीन-तीन पद धारी की।

विषयाशा तज बने तपस्वी, लोकालोक निहारी की॥
जीव मात्र के परम हितैषी, कष्ट निवारक शिवधामी।
करुणा कर करुणाकर! बनने, है नमोऽस्तु है प्रणमामि॥ १७॥

जय हो! जय हो! **अरहनाथ** की, तृष्णा जल जो सुखा दिए।
मोह पाप यम गर्व सैन्य का, डमरू बाजा बजा दिए॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, रत्नत्रय धर मुक्त हुए।
विद्यारथ से मुक्तिपथ को, हम नमोऽस्तु में युक्त हुए॥ १८॥

जय हो! जय हो! **मल्लिनाथ** की, चमत्कार उद्धार किए।
कर्मेन्धन को ध्यान अग्नि से, जला आत्म श्रृंगार किए॥
सर्व जगत् सर्वज्ञ-भक्त बन, नम्रीभूत शरण आगम।
मोहमल्ल की शल्य हरण को, करें चरण में नमोऽस्तु हम॥ १९॥

जय हो! जय हो! **मुनिसुव्रतप्रभु**, नाथ अनाथों के स्वामी।
मुनिपुंगव जो नक्षत्रों के, बीच चाँद सम कल्याणी॥
मोरकण्ठ सम देह सुगंधित, गए मोक्ष शाश्वत सुख में।
मोह शनीश्चर संकट हरने, नमोऽस्तु करके हम खुश हैं॥ २०॥

जय हो! जय हो! **नमिनाथ** की, भक्तों के आराध्य रहे।
चित्परिणाम शुद्ध करने को, साधक के शिव साध्य रहे॥
श्रायस पथ पर बने दयालु, निःश्रेयस निर्वाण रहे।
आप सुनो या नहीं सुनो पर, हम तो नमोऽस्तु कर हि रहे॥ २१॥

जय हो! जय हो! **नेमिनाथ** की, नीलकमल से नैन रहे।
णमो जिणाणं, णमो जिणाणं, चरण ताकते जैन रहे॥
राजुल राज-रमा के त्यागी, आत्म रसिक गिरनार चढ़े।
निज अरिहंत अवस्था पाने, कर नमोऽस्तु हम पाँव पड़ें॥ २२॥

जय हो! जय हो! **पार्श्वनाथ** की, अद्वितीय पौरुष जिनका।
वज्रपात आधी तूफां से, बाल न बाँका हो जिनका॥
लोहा स्वर्ण बनाते पारस, पर पारस पारस करते।
कर्म कीच हर पारस बनने, नमोऽस्तु सादर हम करते॥ २३॥

जय हो! जय हो! **महावीर** की, जो जग में विख्यात हुए।
जिनके सूत्र जियो जीने दो, अब भी तो जयवंत हुए॥
प्रातिहार्य पा जिनशासन का, शंख फूँक ऐलान करें।
आप रहो या नहीं रहो हम, कर नमोऽस्तु सम्मान करें॥ २४॥

ये चौबीसों तीर्थंकर प्रभु, मुक्ति वल्लभा कहलाते।
नवग्रह उनका क्या कर लें जो, कर्म परिग्रह नशवाते॥
सो '**सुव्रत**' जग कार्य छोड़कर, चौबीसी को नमन करो।
अब तक जो शुभ कार्य किया ना, वो करके निज रमण करो॥ २५॥

===

गुरु वन्दना

यूँ तो अपनी गुरु भक्ति का, इस दुनियाँ में अंत नहीं।
और सुनो धरती अम्बर में, जिनवाणी सम ग्रन्थ नहीं॥
णमोकार सम मंत्र नहीं है, मोक्षमार्ग सम पंथ नहीं।
संयमस्वर्ण महोत्सव धारी, **विद्यागुरु** सम संत नहीं॥

(दोहा)

माथ रहे गुरु पाद में, हिय में गुरु का ध्यान।
हाथ करें गुरु वन्दना, वचन करें गुरु गान॥

===

लघु प्रतिक्रमण

हे भगवन्!, हे जिनेन्द्र देव!, हे अरिहंत प्रभु! हे पंचपरमेष्ठी! हे नव देवता भगवन्! आपके श्री चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!

हे भगवन्! मैंने अब तक जितने भी पाप, अपराध, दोष किए हों या जाने-अनजाने में हो गए हों उन सभी दोषों का क्षमायाचनापूर्वक प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ।

हे भगवन्! पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक रूप एकेन्द्रिय, द्वि-इन्द्रिय, त्रि-इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-संज्ञी पंचेन्द्रिय आदि त्रस-स्थावर किसी भी जीव का घात किया हो, कराया हो, करने वाले की अनुमोदना की हो, मन-वचन-काय से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह रूप पाँच पापों में, जुआ-माँसभक्षण-मद्यपान-शिकार-चोरी-परस्त्रीसेवन-वेश्यागमन रूप सप्त व्यसनों में, क्रोध-मान-माया-लोभपूर्वक, मन-वचन-काय-समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ-कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मद्य-माँस-मधुत्याग एवं पंच उदम्बर फलों के त्याग रूप अष्टमूलगुण का पालन करते हुए मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! तीन कुलाचार का पालन करते हुए देवदर्शन करने में-रात्रिभोजन त्याग में, पानी छानने की विधि में मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! वीतरागी देव-जिनशास्त्र-दिगम्बर गुरु, पंचपरमेष्ठी, नवदेवताओं की विनय करने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मेरे द्वारा दिन भर में आने-जाने में, उठने-बैठने में, खाने-पीने में, बोलने-चालने में, रखने-उठाने में, लेने-देने में, सोने-जागने में, पढ़ने-लिखने में, घर-गृहस्थी के कार्यों में, नौकरी-धंधे में, खेती-वाड़ी में, भवन-वास्तु में, टी.व्ही.-मोबाइल-कम्प्यूटर आदि भौतिक साधनों के प्रयोग में और भी जो जाने-अनजाने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश, मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

मैं अपने समस्त प्रत्यक्ष-परोक्ष दोषों की आलोचना करता हूँ, निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, प्रतिक्रमण करता हूँ, प्रायश्चित्त करता हूँ, कायोत्सर्ग करता हूँ। (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

हे भगवन्! जब तक मुझे मोक्ष की प्राप्ति ना हो तब तक आपके चरणकमल मेरे हृदय में मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे ऐसी भावना भाता हूँ।

हे भगवन्! मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, सुगति गमन हो, समाधिमरण हो, जिनगुण की प्राप्ति हो, ऐसी मेरी भावना है।

अंत में यही भावना भाता हूँ-

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निज मंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥

===

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥२॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥३॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निन्दा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥४॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥५॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में॥६॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुए व्यसन अंधे में॥७॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥८॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥९॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय [1]कुलाचार न जाना॥१०॥
जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।
या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥११॥

१. तीन कुलाचार—नित देवदर्शन, रात्रिभोजन त्याग, बिना छने पानी का त्याग।

मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥१२॥
या पर से पाप कराए, या अनुमोदन मन भाए।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जाएँ कषाय सारे॥१३॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥१४॥
जो पाप हुए हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको॥१५॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ॥१६॥
बस बोधि-समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी॥१७॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===

बारह भावना

(शुद्ध गीता)

चलो चेतन यहाँ क्या है?, हमें अब मोक्ष पाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

१. अनित्य भावना

गए राजा गए राणा, सभी को एक दिन मरना।
अमर कोई नहीं जग में, अथिर संसार का झरना॥
हमें फिर मौत न लूटे, भरम ये तो मिटाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

२. अशरण भावना

गुरु चेला सखा बंधु, किला सेना सुरक्षाएँ।
दवा विद्या हवन वैभव, नहीं कुछ काम में आएँ॥
बचाएँ ना मरण से ये, धरम साँचा ठिकाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

३. संसार भावना

महासंसार वन में हम, शुभाशुभ कर्म-फल पाते।
भटकते चार गतियों में, कहीं सुख लेश ना पाते॥
मिले सुख पाँचवी गति में, वही सत्सार धामा है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

४. एकत्व भावना

मरें जन्में अकेले हम, भटकते हैं अकेले ही।
अकेले कर्म सब करते, सहें सुख दुख अकेले ही॥
अकेली आतमा जग में, अकेले मोक्ष जाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

५. अन्यत्व भावना

पराई चीज को अपनी, कहें अज्ञान से मोही।
इन्हीं से कष्ट पाते वे, इन्हीं को त्यागते योगी॥
कहें किसको सगा अपना, सगा जब तन गँवाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

६. अशुचि भावना

मनोहर देह बाहर पर, पिटारा मैल का अन्दर।
बहे नव द्वार से मैला, लगे फिर भी हमें सुन्दर॥
तजें अनुराग तो सुख का, यहीं बनता खजाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

७. आस्रव भावना

शुभाशुभ भाव योगों से, शुभाशुभ कर्म आते हैं।
शुभाशुभ कर्म आतम को, दुखी करके घुमाते हैं॥
शुभाशुभ को समझ खुद को, निरास्रव बुध बनाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

८. संवर भावना

रही छेदों सहित नैय्या, भरे पानी डुबाती है।
लगे गर डाँट मोरी में, वही भव पार जाती है॥
शुभाशुभ आगमन रोके, धरम संवर सुहाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

९. निर्जरा भावना

पकाते पाल से फल ज्यों, सुखाते ताप से पानी।
सकल जब निर्जरा हो तो, मिले मुक्ति महारानी॥
हमें भी कर्म तप द्वारा, पकाकर के झड़ाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

१०. लोक भावना

नहीं कर्त्ता नहीं धर्त्ता, नहीं कोई चलाता है।
पुरुष के कर कटी पर ज्यों, सहज यों लोक गाथा है॥
अनादि से इसी में ही, भटकते जीव नाना हैं।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

११. बोधिदुर्लभ भावना

महासागर में ज्यों हीरा, बड़े सौभाग्य से मिलता।
हमें वैसे मनुज जीवन, धरम साधन यहाँ मिलता॥
इसी से रत्न दुर्लभ पा, हमें आतम सजाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

१२. धर्म भावना

कुदेवों को सदा त्यागो, तजो भव पाप हिंसा को।
कहा सर्वज्ञ देवों ने, धरम सच्ची अहिंसा को॥
अरे! 'सुव्रत' धरम-रथ से, हमें शिव साध्य पाना है।
नहीं संसार में फँसना, सही वैराग्य बाना है॥

सामायिक पाठ (द्वात्रिंशतिका)

(सखी)

मैं मैत्री कर लूँ सबसे, गुणियों को लख हर्षाऊँ।
माध्यस्थ रहूँ दुर्जन पर, दुखियों पर करुणा लाऊँ॥१॥
मैं भिन्न करूँ तन चेतन, तलवार म्यान के जैसे।
निर्दोष नन्तगुण आतम, झट पाऊँ प्रभु कृपा से॥२॥
सुख दुख शत्रु मित्रों में, वन भवन मिलन विछुड़न में।
पर ममत्व बुद्धि तज के, प्रभु! समता हो मम मन में॥३॥
प्रभु! चरण दीप तमहर सम, मम हृदय वसें कुछ ऐसे।
थिर लीन सदा कीलित हों, उत्कीर्ण बिम्ब के जैसे॥४॥
प्रभु! यहाँ-वहाँ चलने में, जो जीव हुए क्षत मुझसे।
या छिन्न-भिन्न पीड़ित हों, वह पाप मिटे प्रभु पद से॥५॥
जिनपथ प्रतिकूल प्रवर्तन, जो हुआ कर्मवश मुझसे।
या चर्या लोप हुई हो, वह पाप मिटे प्रभु पद से॥६॥
ज्यों वैद्य मंत्र विष हर्त्ता, त्यों जो आलोचन करता।
या निन्दा गर्हा कर वो, भव दुख से पार उतरता॥७॥
यदि प्रमाद से चर्या में, अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारा।
अनाचार हुआ तो शुद्धि, मैं कर लूँ प्रतिक्रम द्वारा॥८॥
मन-शुद्धि का क्षय अतिक्रम, व्यतिक्रम है शील बिगारा।
है विषय रमण अतिचारा, अति आसक्ति अनाचारा॥९॥

यदि अर्थ वाक्य पद मात्रा, कुछ कहा प्रमाद से कम हो।
वह क्षमा सरस्वती देवी, कर केवलज्ञान दो मुझको॥१०॥
हे चिंतामणि सम देवी! मुझको दो बोधि समाधि।
परिणाम विशुद्धि शिवसुख, हो आत्मोपलब्धि की सिद्धि॥११॥
जिनको सुर नर मुनि ध्याएँ, जिनके गुण ग्रंथ सुनाएँ।
अरिहंत देव श्री जिनवर, वह मेरे हिय वस जाएँ॥१२॥
सुख दर्शन-ज्ञानमयी जो, जो बाह्य विकार नशाएँ।
जो समाधिगम्य परमात्मा, वो मेरे हिय वस जाएँ॥१३॥
जो भव दुख जाल नशाएँ, भव अंतराल लख पाएँ।
अंतस्थ योगि अवलोकी, वो मेरे हिय वस जाएँ॥१४॥
जो जन्म मृत्यु दुख हर्त्ता, जो मोक्षमार्ग दिखलाएँ।
अकलंक विकल जगदृष्टा, वो मेरे हिय वस जाएँ॥१५॥
जो राग आदि जग जन में, वो जिनमें कभी न पाएँ।
अनपाये अतिन्द्रिय ज्ञानी, वो मेरे हिय वस जाएँ॥१६॥
जो व्याप्य सिद्ध ज्ञायक हैं, चिंतन दुर्भाव नशाएँ।
निष्कर्म विश्वकल्याणी, वो मेरे हिय वस जाएँ॥१७॥
निकलंक सूर्य सम निर्मल, जो आप्त कर्ममल हर्त्ता।
जो एक अनेकी नित्यं, वह शरण प्राप्त मैं करता॥१८॥
यह जगत प्रकाशी सूरज, जो आप्त अग्र ना टिकता।
यों निजथित ज्ञान प्रकाशी, वह शरण प्राप्त मैं करता॥१९॥
शिव शान्त शुद्ध जिन-दर्शन, कर जगत-पृथक ही दिखता।
जो आप्त अनादि अनन्ता, वह शरण प्राप्त मैं करता॥२०॥
रति मान शोक भय मूर्च्छा, या विषाद निद्रा चिंता।
जो आप्त अग्नि सम हरते, वह शरण प्राप्त मैं करता॥२१॥

पाषाण काष्ठ तृण भूमि, ये नहीं समाधि के आसन।
बिन विषय कषाय चिदातम, वह ज्ञानी कहते साधन॥२२॥
क्योंकि लोकपूजा या आसन, या संघों के सम्मेलन।
ये नहीं समाधि के साधन, सो बाह्य त्याग भज चेतन॥२३॥
ये बाह्य जगत ना मेरा, ना मैं हूँ बाह्य जगत का।
यह निश्चय कर भद्रातम, तज बाह्य ध्यान कर निज का॥२४॥
तुम निज को निज में देखो, हो शुद्ध ज्ञान दर्शन से।
यों जहाँ कहीं बन ध्यानी, तो हो समाधि निश्चय से॥२५॥
मम आतम ज्ञान स्वभावी, एकाकी निर्मल शाश्वत।
यह कर्म जनित जग सारा, ना अपना है ना शाश्वत॥२६॥
तन भी जब जिसका ना तो, क्या पुत्र मित्र तिय साथी।
ज्यों चर्म दूर होने पर, क्या रोमकूप हों साथी॥२७॥
इस संसारी प्राणी को, संयोग दुखों के द्वारे।
सो इच्छुक निज मुक्ति के, संयोग त्याग दें सारे॥२८॥
संसार रूप दुख वन में, हर विकल्प पतन का हेतु।
सो इन्हें त्यागकर केवल, निज को लख निज में रम तू॥२९॥
जो पहले कर्म किए हैं, शुभ अशुभ वही फल पाएँ।
सुख दुख दें अगर पराये, तो निजकृत निष्फल जाएँ॥३०॥
अपने कर्मों बिन कोई, देता न किसी को किंचन।
यों चिंतन कर हे! आत्मन्, पर बुद्धि त्याग परमातम॥३१॥
हैं वंद्य 'अमितगति' द्वारा, निर्दोष मुक्त परमातम।
जो इनको मन से ध्याते, वे पाते मोक्ष महल धन॥३२॥

(दोहा)

इन बत्तीस पदों सहित, 'सुव्रत' हो एकाग्र।
परमातम दर्शन करे, वह पाए लोकाग्र॥

===

समाधि भावना

१.जिनेन्द्र प्रभु को करके नमोऽस्तु, भाव हमारा
हो।
नाथ आपके चरण-शरण में, मरण हमारा हो॥
सदा आपकी छत्र-छाँव को, हम ललचाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
२. संवेदनमय श्रुत नचनों से, ध्याएँ भगवन् जी।
सदा शास्त्र अभ्याय करें हम, सन्त समागम भी ॥
साधुजनों के गुण गाकर हम, दोष नशाते हैं। पुनः...
३. सबसे हित मित प्रिय हम बोलें, आतम को ध्याएँ।
मोक्षमार्ग से प्रेम बढाएँ, प्रभु के गुण गाएँ॥
जब तक मोक्ष न पाएँ तब तक, तुमको ध्याते हैं। पुनः...
४. गुरु प्रभु चरणों में जिनवाणी माँ की गोदि में।
हो संन्यास मरण भव-भव में, सम्यक् बोधि में ॥
जनम मरण के पाप नशाने, तुम्हें बुलाते हैं। पुनः...
५. कल्पवृक्ष सम जिन-चरणों की, बचपन से सेवा।
अब तक जो की उसका फल यह, हम चाहें देवा॥
मरण समय तक णमोकर को, भूल न पाते हैं। पुनः...
६. नाथ! आपके चरण हमारे, रहें हृदय मन में।
हृदय हमारा नाथ! आपके, नित हो चरणन में॥
जब तक हम निर्वाण न पाएँ, ये ही ध्याते हैं। पुनः...
७. नाथ! आपकी भक्ति अकेली, सारे पाप हरे।
पुण्य सम्पदा मुक्ति प्रदाता, तन मन स्वस्थ करे॥
हे! जिनवर बस भक्त आपके, कर्म नशाते हैं। पुनः...
८. नाथ! आपके चरणकमल तो, भव का भ्रमण हरें।
अतः हमें भी शरण दीजिए, हम यह विनय करें॥

वीतराग सम हुए न हों सो, शीश झुकाते हैं। पुनः...
९. नाथ! आपके चरण-शरण हम, भव-भव में पाएँ।
भले दुखी दारिद्र रहें पर, तुम्हें न विसराएँ॥
तुमको पाने दुनियाँ के पद, हम ठुकराते हैं। पुनः...
१०. नाथ! आपकी छत्र छाँव तो, हमको प्यारी है।
चरण शरण में मरण समाधि, की तैयारी है॥
करें समाधि मरण यही हम, आश लगाते हैं। पुनः...
११. कष्ट दूर हों कर्म चूर हों, रत्नत्रय पाएँ।
सुगति गमन हो वीर मरण हो, जिनगुण धन पाएँ
'सुव्रत' बोधि-समाधि कारण, भाव बनाते हैं। पुनः...

आत्म भावना

(लय-दिन रात मेरे स्वामी...)

दिन-रात सिद्ध स्वामी, हम भावना ये भाएँ।
शुद्धात्म आप जैसा, हम अपना शीघ्र पाएँ॥
१. जो भाव हैं विकारी, वो राग द्वेष सारे।
सुख शान्ति अपनी छीनें, दुर्भाव ज्यों हुआ रे।
वो राग-द्वेष तुम सम, हम अपने जीत पाएँ॥ शुद्धात्म...
२. बचपन में खेल खेले, फिर तो जवानी भोगी।
खोया बुढ़ापा तो फिर, निज प्राप्ति कैसे होगी।
इस देह में रहें पर, ज्योति विदेही पाएँ॥ शुद्धात्म...
३. हम सोचते सदा हैं, तुमसे ना दूर जाएँ।
भव कर्म रोक लेते, कैसे तुम्हें मनाएँ।
हम काश! आप जैसे, कर्मों को जीत पाएँ॥ शुद्धात्म...
४. श्रृंगार हो हमारा, अलंकार हो तुम्हारा।
उज्ज्वल स्वरूप पाने, अध्यात्म हो तुम्हारा।
आतम के रत्न तुम सम, बोलो कहाँ से पाएँ॥ शुद्धात्म...
५. तुम शक्ति पिण्ड घन हो, चैतन्य में मगन हो।
दर्शन तुम्हारा करने, 'सुव्रत' का भाव मन हो।
तुम एक अंक बनना, हम शून्य रूप पाएँ॥ शुद्धात्म...

जिनवाणी स्तुति

(शुद्ध गीता) (लय—दयाकर दान भक्ति का...)

दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन सरस्वती माता॥

कही अर्हन्त देवों ने, वही है पूज्य जिनवाणी।
रही है अंग बारहमय, रचे गणधर महाज्ञानी॥
हरें मन के अँधेरे हम, हमें श्रुत-दीप दो माता।
तिमिर अज्ञान...।

यही पैनी रही छैनी, जुदा जिय कर्म करती है।
हरे भव ताप दुख जड़ता, यही सुख शान्ति करती है॥
हमारी दूर भटकन हो, दिला दो राह जिनमाता।
तिमिर अज्ञान...।

रहें हम बाल अज्ञानी, नहीं कोई हमारा है।
शरण आए तुम्हारी माँ, यही साँचा सहारा है॥
भुलाकर भूल 'सुव्रत' की भला कर तार दो माता।
तिमिर अज्ञान...।

(दोहा)

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान।
जग कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम॥
माँ जिनवाणी जो भजे, पाले उसकी बात।
पहले सुख दोनों मिलें, बाद मोक्ष मिल जात॥
परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र नवकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

===

श्री भक्तामर स्तोत्र

(वसन्ततिलका)

भक्तामर – प्रणत – मौलि – मणि –प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित – पाप – तमो – वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन – पाद – युगं युगादा–
वालम्बनं भव – जले पततां जनानाम्॥१॥

यः संस्तुतः सकल–वाङ्मय – तत्त्व–बोधा–
दुद्भूत–बुद्धि – पटुभिः सुरलोक – नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्– त्रितय – चित्त – हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित – पाद – पीठ!
स्तोतुं समुद्यत – मतिर्विगत – त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल –संस्थित–मिन्दु–बिम्ब–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान्गुण – समुद्र ! शशाङ्क–कान्तान् ,
कस्ते क्षमः सुर – गुरु–प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त–काल – पवनोद्धत – नक्र–चक्रम्,
को वा तरीतुमलमम्बु–निधिं भुजाभ्याम्॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति – वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत – शक्ति – रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म – वीर्य – मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज–शिशोः परिपालनार्थम्॥५॥

अल्प– श्रुतं – श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्–भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र–चारु – कलिका–निकरैक –हेतुः॥६॥

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोक - मलि -नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्॥७॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु ,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः॥८॥

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥९॥

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण! भूत-नाथ!,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ?॥११॥

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि-भुवनैक - ललाम-भूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुर – नरोरग–नेत्र–हारि,
निःशेष – निर्जित – जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क – मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश–कल्पम्॥१३॥

सम्पूर्ण– मण्डल–शशाङ्क – कला–कलाप–
शुभ्रा गुणास्–त्रि–भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्–त्रि–जगदीश्वर नाथ–मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥१४॥

चित्रं – किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग–नाभिर्–
नीतं मनागपि मनो न विकार – मार्गम्।
कल्पान्त – काल – मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि–शिखरं चलितं कदाचित्॥१५॥

निर्धूम – वर्ति – रपवर्जित – तैल–पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय–मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्–जगन्ति।
नाम्भोधरोदर – निरुद्ध – महा– प्रभावः,
सूर्यातिशायि–महिमासि मुनीन्द्र ! लोके॥१७॥

नित्योदयं दलित – मोह – महान्धकारम्,
गम्यं न राहु – वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज–मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्–जगदपूर्व – शशाङ्क–बिम्बम्॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमः -सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल - धरै-र्जल-भार-नम्रैः॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजो स्फुरन् मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥२३॥

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय- शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥२५॥

तुभ्यं नमस्-त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥२७॥

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्- किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति॥२८॥

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता-वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र-रश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदात - चल - चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारि -धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्र–त्रयं तव विभाति शशाङ्क–कान्त–
मुच्चैः स्थितं स्थगित – भानु–कर–प्रतापम्।
मुक्ता–फल – प्रकर–जाल–विवृद्ध–शोभं,
प्रख्यापयत्–त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥३१॥

गम्भीर – तार–रव–पूरित – दिग्विभागस्–
त्रैलोक्य–लोक – शुभ–सङ्गम–भूति–दक्षः।
सद्धर्म – राज – जय – घोषण – घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि–र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥३२॥

मन्दार – सुन्दर – नमेरु – सुपारिजात–
सन्तानकादि – कुसुमोत्कर – वृष्टि–रुद्धा।
गन्धोद – बिन्दु– शुभ – मन्द – मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥३३॥

शुम्भत्–प्रभा – वलय – भूरि – विभा–विभोस्ते,
लोक – त्रये – द्युतिमतां द्युति–माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्–दिवाकर – निरन्तर – भूरि–संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सौम्याम्॥३४॥

स्वर्गापवर्ग – गम–मार्ग – विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म–तत्त्व – कथनैक – पटुस्–त्रिलोक्याः।
दिव्य– ध्वनि–र्भवति ते विशदार्थ–सर्व–
भाषा–स्वभाव – परिणाम–गुणैः प्रयोज्यः॥३५॥

उन्निद्र – हेम – नव–पङ्कज – पुञ्ज–कान्ती,
पर्युल्–लसन्–नख – मयूख – शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूति- रभूज् - जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् - प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्-कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि॥३७॥

श्च्यो-तन् - मदाविल-विलोल - कपोल-मूल,
मत्त- भ्रमद्- भ्रमर - नाद - विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३८॥

भिन्नेभ-कुम्भ- गल-दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ता - फल- प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते॥३९॥

कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्॥४०॥

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥४१॥

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम - इवाशु भिदामुपैति॥४२॥

कुन्ताग्र–भिन्न – गज – शोणित – वारिवाह,
वेगावतार – तरणातुर – योध – भीमे।
युद्धे जयं विजित – दुर्जय – जेय – पक्षास्–
त्वत्पाद–पङ्कज – वनाश्रयिणो लभन्ते॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभित – भीषण – नक्र – चक्र–
पाठीन–पीठ–भय–दोल्वण – वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग –शिखर–स्थित – यान – पात्रास्–
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्–व्रजन्ति॥४४॥

उद्भूत – भीषण – जलोदर – भार – भुग्नाः,
शोच्यां दशा–मुपगताश्–च्युत–जीविताशाः।
त्वत्पाद–पङ्कज – रजो–मृत – दिग्ध – देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर–ध्वज–तुल्यरूपाः॥४५॥

आपाद – कण्ठमुरु – शृङ्खल – वेष्टिताङ्गा,
गाढं–बृहन्–निगड – कोटि निघृष्ट – जङ्घाः।
त्वन्–नाम – मन्त्र – मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत – बन्ध–भया भवन्ति॥४६॥

मत्त–द्विपेन्द्र – मृग–राज – दवानलाहि–
संग्राम–वारिधि–महोदर – बन्ध –नोत्थम्।
तस्याशु नाश – मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव–मिमं मतिमान–धीते॥ ४७॥

स्तोत्र–स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर–वर्ण – विचित्र–पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ – गता– मजस्रम्,
तं मानतुङ्ग–मवशा–समुपैति लक्ष्मीः॥४८॥

===

तत्त्वार्थसूत्रम्

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये॥

(स्त्रग्धरा)

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं, नव-पद-सहितं जीव षट्काय-लेश्याः।
पञ्चान्ये चास्ति-काया, व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्र-भेदाः॥
इत्ये-तन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन-महितैः प्रोक्त-मर्हद्-भिरीशैः।
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्ध-दृष्टिः॥ १॥

(आर्या)

सिद्धे जयप्प-सिद्धे, चउव्विहारा-हणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो॥२॥
उज्जोवण-मुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण-णाण चरित्तं, तवाण-माराहणा भणिया॥३॥

प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥२॥ तन्-निसर्गा-दधिगमाद् वा॥३॥ जीवा-जीवास्त्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा मोक्षास्-तत्त्वम्॥ ४॥ नाम-स्थापना-द्रव्य-भाव-तस्तन्न्यासः ॥ ५॥ प्रमाण-नयै-रधिगमः ॥ ६॥ निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः॥ ७॥ सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च॥८॥ मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम्॥९॥ तत्प्रमाणे॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्ष-मन्यत्॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ता-भिनिबोध इत्य-नर्थान्तरम्॥१३॥ तदिन्द्रिया-निन्द्रिय-निमित्तम्॥१४॥ अवग्रहे-

हावाय-धारणाः॥१५॥ बहु-बहुविध-क्षिप्रा-निःसृता-नुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम्॥१६॥ अर्थस्य॥१७॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः॥१८॥ न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम्॥१९॥ श्रुतं मति-पूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम्॥२०॥ भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम्॥२१॥ क्षयोपशम-निमित्तः षड्-विकल्पः शेषाणाम्॥२२॥ ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः॥२३॥ विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः॥२४॥ विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ॥२५॥ मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्-वसर्व-पर्यायेषु॥२६॥ रूपिष्-ववधेः॥२७॥ त-दनन्त-भागे मनः पर्ययस्य॥२८॥ सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः॥३०॥ मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च॥३१॥ स-दसतो-रवि-शेषाद्-यदृच्छोप-लब्धे-रुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्द-समभि-रूढैवंभूता नयाः॥३३॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायः॥

द्वितीयोऽध्यायः

औप-शमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च॥१॥ द्वि-नवाष्टा-दशैक-विंशति-त्रि-भेदा यथा-क्रमम्॥२॥ सम्यक्त्व-चारित्रे॥३॥ ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणि च॥४॥ ज्ञाना-ज्ञान-दर्शन-लब्धयश्-चतुस्त्रि-त्रि पञ्चभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमा-संयमाश्च॥५॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शना-ज्ञाना-संयता सिद्ध-लेश्याश्-चतुश्-चतुस्त्र्ये-कै-कै-कैक-षड्भेदाः॥६॥जीव-भव्या-भव्यत्वानि च॥७॥ उपयोगो लक्षणम्॥८॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च॥१०॥ सम-नस्का-मनस्काः॥११॥ संसारिणस्-

त्रस-स्थावराः॥१२॥ पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः॥१३॥ द्वीन्द्रिया-दयस्त्रसाः॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युप-करणे द्रव्येन्द्रियम्॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः श्रोत्राणि॥१९॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः॥२०॥ श्रुत-मनिन्द्रियस्य॥२१॥ वनस्पत्यन्ताना-मेकम् ॥२२॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीना-मेकैक-वृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः॥२४॥ विग्रह-गतौ कर्म-योगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः॥२८॥ एक-समया-विग्रहा॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वाना-हारकः॥३०॥ सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म॥३१॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्‍-चैकशस्-तद्योनयः॥३२॥ जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः॥३३॥ देव-नारकाणा-मुपपादः॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम्॥३७॥ प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं प्राक् तैजसात् ॥३८॥ अनन्त-गुणे परे॥३९॥ अप्रतीघाते॥४०॥ अनादि-सम्बन्धे च॥४१॥ सर्वस्य॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः॥४३॥ निरुप-भोग-मन्त्यम्॥४४॥ गर्भ-सम्मूर्च्छनज-माद्यम्॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम्॥ ४६॥ लब्धि-प्रत्ययं च॥४७॥ तैजस-मपि॥४८॥ शुभं विशुद्ध-मव्याघाति चाहारकं प्रमत्त-संयतस्यैव॥४९॥ नारक-सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्-त्रिवेदाः॥५२॥ औपपादिक-चरमोत्तम-देहा-संख्येय-वर्षायुषोऽनप-वर्त्यायुषः ॥५३॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः॥

तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा-भूमयो घनाम्बु-वाता-काश-प्रतिष्ठाः सप्ता-धोऽधः॥१॥ तासु त्रिंशत्-पञ्च-विंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शत-सहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम्॥२॥ नारका नित्या-शुभतर-लेश्याः परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः॥३॥ परस्परो-दीरित-दुःखाः॥४॥ संक्लिष्टा-सुरो-दीरित-दुःखाश्च प्राक्-चतुर्थ्याः॥५॥ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्-त्रिंशत्-सागरो-पमा सत्त्वानां परा स्थितिः॥६॥ जम्बूद्वीप-लवणो-दादयः शुभ-नामानो द्वीप-समुद्राः॥७॥ द्वि-र्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलया-कृतयः॥८॥ तन्मध्ये मेरु-नाभि-र्वृत्तो योजन-शत-सहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः॥९॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्य-वतैरा-वत-वर्षाः क्षेत्राणि॥१०॥ तद्-विभाजिनः पूर्वा-परायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः॥११॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः॥१२॥ मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः॥१३॥ पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका-ह्रदास्-तेषा-मुपरि॥१४॥ प्रथमो योजन-सहस्रायामस्-तदर्ध विष्कम्भो ह्रदः॥१५॥ दश-योजना-वगाहः॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम्॥१७॥ तद्-द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च॥१८॥ तन्-निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्यो-पमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः॥१९॥ गङ्गा-सिन्धु-रोहि-द्रोहि-तास्या-हरिद्-धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्-तन्मध्यगाः॥२०॥ द्वयो-र्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः॥२१॥ शेषास्-त्वपरगाः॥

२२॥ चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः॥२३॥ भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजन-शत-विस्तारः षट्चैकोन-विंशति-भागा योजनस्य॥२४॥ तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः॥२५॥ उत्तरा दक्षिण तुल्याः॥२६॥ भरतै-रावतयो-र्वृद्धि-ह्रासौ-षट्समयाभ्या-मुत्सर्पिण-यवसर्पिणीभ्याम्॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः॥२८॥एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैव-कुरवकाः॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येय-कालाः॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः॥ ३२॥ द्विर्धातकी-खण्डे॥३३॥ पुष्करार्द्धे च॥३४॥ प्राङ्-मानुषोत्तरान्-मनुष्याः॥३५॥ आर्या-म्लेच्छाश्च॥३६॥ भरतै-रावत-विदेहाः कर्म-भूमयोऽन्यत्र देव-कुरूत्तर-कुरुभ्यः॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्यो-पमान्त-र्मुहूर्ते॥३८॥ तिर्यग्योनि-जानां च॥३९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायः॥

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्-चतुर्णिकायाः॥१॥ आदितस्-त्रिषु पीतान्त-लेश्याः॥ २॥ दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोप-पन्न-पर्यन्ताः॥३॥ इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्म-रक्ष-लोकपाला-नीक-प्रकीर्णका-भियोग्य-किल्विषि-काश्चैकशः॥४॥ त्रायस्-त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः॥५॥ पूर्वयो-र्द्वीन्द्राः॥६॥ काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्॥७॥ शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः प्रवीचाराः॥८॥ परेऽप्रवीचाराः॥९॥ भवन-वासिनोऽसुरनाग-विद्युत्-सुपर्णाग्नि-वातस्-तनितो-दधि-द्वीप-दिक्कुमाराः॥१०॥ व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः॥ ११॥ ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्र-मसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तार-

काश्च॥१२॥ मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके॥१३॥ तत्कृतः काल-विभागः॥१४॥ बहि-रवस्थिताः॥१५॥ वैमानिकाः॥१६॥ कल्पोप-पन्नाः कल्पा-तीताश्च॥१७॥ उपर्युपरि॥१८॥ सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रा-रेष्वानत-प्राणतयो-रारणा-च्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्ता-परा-जितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च॥ १९॥ स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्-धीन्द्रिया-वधि-विषयतोऽधिकाः॥२०॥ गति-शरीर-परिग्रहाभि-मानतो हीनाः॥२१॥ पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि शेषेषु॥२२॥ प्राग्-ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः॥२३॥ ब्रह्म-लोकालया लौकांतिकाः॥२४॥ सारस्वता-दित्य-वह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषि-ताव्या-बाधा-रिष्टाश्च॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः॥२६॥ औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्-तिर्यग्-योनयः॥२७॥ स्थिति-रसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्यो-पमार्द्ध-हीन-मिताः॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे-अधिके॥२९॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त॥३०॥ त्रि-सप्त-नवैका-दश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि तु॥३१॥ आरणा-च्युता-दूर्ध्व-मेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च॥३२॥ अपरा पल्योपम-मधिकम्॥३३॥ परतःपरतः पूर्वा-पूर्वा-नन्तरा॥ ३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु॥३५॥ दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम्॥३६॥ भवनेषु च॥३७॥ व्यन्तराणां च॥३८॥ परा पल्योपम-मधिकम्॥३९॥ ज्योतिष्काणां च॥४०॥ तदष्ट-भागोऽपरा॥४१॥ लौकान्तिका-नामष्टौ सागरो-पमाणि सर्वेषाम्॥ ४२॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः॥

पंचमोऽध्यायः

अजीव-काया-धर्मा-धर्मा-काश-पुद्गलाः॥१॥ द्रव्याणि॥२॥ जीवाश्च॥३॥ नित्या-वस्थितान्यरूपाणि॥४॥ रूपिणः पुद्गलाः॥५॥ आ आकाशा-देक-द्रव्याणि॥६॥ निष्क्रियाणि च॥७॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्मा-धर्मैक-जीवानाम्॥८॥ आका-शस्या-नन्ताः॥९॥ संख्येया-संख्ये-याश्च पुद्गलानाम्॥१०॥ नाणोः॥११॥ लोका-काशेऽवगाहः॥१२॥ धर्मा-धर्मयोः कृत्स्ने॥१३॥ एक-प्रदेशा-दिषु भाज्यः पुद्गलानाम्॥१४॥ असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्॥१५॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्॥१६॥ गति-स्थित्यु-पग्रहौ धर्मा-धर्मयो-रुपकारः॥१७॥ आकाशस्या-वगाहः॥१८॥ शरीर-वाङ्मनः प्राणा-पानाः पुद्गलानाम्॥१९॥ सुख-दुःख-जीवित-मरणो-पग्रहाश्च॥२०॥ परस्परो-पग्रहो जीवानाम्॥२१॥ वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वा-परत्वे च कालस्य॥२२॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः॥२३॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छाया-तपोद्योत-वन्तश्च॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च॥२५॥ भेद-संघातेभ्यः उत्पद्यन्ते॥२६॥ भेदा-दणुः॥२७॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः॥२८॥ सद् द्रव्य-लक्षणम्॥२९॥ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत्॥३०॥ तद्-भावाव्ययं नित्यम्॥३१॥ अर्पिता-नर्पित-सिद्धेः॥३२॥ स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः॥३३॥ न जघन्य-गुणानाम्॥३४॥ गुण-साम्ये सदृशानाम्॥३५॥ द्व्यधिकादि-गुणानां तु॥३६॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च॥३७॥ गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्॥३८॥ कालश्च॥३९॥ सोऽनन्त-समयः॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः॥४१॥ तद्भावः परिणामः॥४२॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे पंचमोऽध्यायः॥

षष्ठोऽध्यायः

काय-वाङ्-मनः-कर्म योगः॥१॥ स आस्त्रवः॥२॥ शुभः पुण्यस्या-शुभः पापस्य॥३॥ सकषाया-कषाययोः साम्परायि-केर्या-पथयोः॥४॥ इन्द्रिय-कषाया-व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः॥५॥ तीव्र-मन्द-ज्ञाता-ज्ञात-भावाधि-करण-वीर्य-विशेषेभ्यस्-तद्-विशेषः॥६॥ अधिकरणं जीवा-जीवाः॥७॥ आद्यं संरम्भ-समा-रम्भा-रम्भ-योग-कृत-कारितानु-मत-कषाय-विशेषैस्-त्रिस्-त्रिस्-त्रिश्-चतुश्-चैकशः॥८॥ निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम्॥९॥ तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्-तराया-सादनोप-घाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः॥१०॥ दुःख-शोक-तापा-क्रन्दन-वध-परिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्य-सद्-वेद्यस्य॥११॥भूत-व्रत्यनु-कम्पा-दान-सराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौच-मिति सद्-वेद्यस्य॥१२॥ केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवा-वर्णवादो दर्शन-मोहस्य॥१३॥ कषायो-दयात्तीव्र-परिणामश्-चारित्र-मोहस्य॥ १४॥ बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः॥१५॥ माया तैर्यग्योनस्य॥१६॥ अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मानुषस्य॥१७॥ स्वभाव-मार्दवं च॥१८॥ निः शील-व्रतत्वं च सर्वेषाम्॥१९॥ सराग-संयम-संयमासंयमा-कामनिर्जरा-बाल-तपांसि दैवस्य॥२०॥ सम्यक्त्वं च॥२१॥ योग-वक्रता विसंवादनं चा-शुभस्य नाम्नः॥२२॥ तद्-विपरीतं शुभस्य॥२३॥ दर्शन-विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शील-व्रतेष्वनती-चारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधु-समाधि-वैयावृत्त्य - करण - मर्हदा-चार्य बहुश्रुत-प्रवचन भक्ति-रावश्यका-परि-

हाणि-र्मार्ग-प्रभावना-प्रवचन-वत्सलत्व-मिति तीर्थकरत्वस्य॥ २४॥ परात्म-निन्दा-प्रशंसे स-दसद्-गुणोच्छादनोद्-भावने च नीचै-र्गोत्रस्य॥ २५॥ तद्-विपर्ययो नीचै-र्वृत्त्य-नुत्सेकौ चोत्तरस्य॥ २६॥ विघ्नकरण-मन्तरायस्य॥२७॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे षष्टोऽध्याय:॥

सप्तमोऽध्याय:

हिंसा-नृतस्तेया-ब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरति-र्व्रतम्॥१॥ देश-सर्वतोऽणु-महती॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावना: पञ्च पञ्च॥३॥ वाङ्मनो-गुप्तीर्या-दान-निक्षेपण-समित्या-लोकित-पान-भोजनानि पञ्च॥४॥ क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्-यनुवीचि-भाषणं च पञ्च॥५॥ शून्यागार विमोचिता-वास-परो-परोधा-करण-भैक्ष्य-शुद्धि-सधर्मा-विसंवादा: पञ्च॥६॥ स्त्री-राग-कथाश्रवण-तन्मनो-हरांग-निरीक्षण-पूर्व-रतानुस्-मरण-वृष्येष्ट-रस-स्व-शरीर-संस्कार-त्यागा: पञ्च॥७॥ मनोज्ञा-मनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च॥८॥ हिंसा-दिष्विहा-मुत्रा-पाया-वद्य-दर्शनम्॥९॥ दु:ख-मेव वा॥१०॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्य-माना-विनयेषु॥११॥ जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्॥१२॥ प्रमत्त-योगात्प्राण- व्यपरोपणं हिंसा॥१३॥ अस-दभिधान-मनृतम्॥ १४॥ अदत्ता-दानं स्तेयम्॥१५॥ मैथुन-मब्रह्म॥१६॥ मूर्च्छा परिग्रह:॥ १७॥ नि:शल्यो-व्रती॥१८॥ अगार्य-नगारश्च॥१९॥ अणुव्रतोऽगारी॥ २०॥ दिग्देशा-नर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणा-तिथि-संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च॥२१॥ मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता॥२२॥ शङ्का-कांक्षा-विचिकित्-

सान्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतिचाराः॥२३॥ व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्॥२४॥ बन्ध-वधच्छेदाति-भारारोप-णान्न-पान-निरोधाः॥२५॥ मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान - कूटलेख-क्रिया-न्यासापहार-साकार-मन्त्र-भेदाः॥२६॥ स्तेन-प्रयोग-तदा-हृता-दान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्-मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः॥२७॥ परविवाह-करणेत्वरिका-परिगृहीता-परिगृहीता-गमनानङ्ग-क्रीडा-काम-तीव्राभिनिवेशाः॥२८॥ क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-दासी-दास-कुप्य-भाण्ड-प्रमाणा-तिक्रमाः॥२९॥ ऊर्ध्वा- धस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तरा-धानानि॥३०॥ आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-क्षेपाः॥३१॥ कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्या-समीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगा-नर्थक्यानि॥३२॥ योग-दुष्प्रणि-धाना-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि॥३३॥ अप्रत्य-वेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोप-क्रमणा-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि॥३४॥ सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्रा-भिषव-दुःपक्वाहाराः॥३५॥ सचित्त-निक्षेपा-पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः॥३६॥ जीवित-मरणा-शंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध निदानानि॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम्॥३८॥ विधिद्रव्य दातृ-पात्र-विशेषात्-तद्विशेषः॥ ३९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायः॥

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्या-दर्शना-विरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः॥१॥ सकषायत्वाज्-जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गला-नादत्ते स बन्धः॥ २॥ प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास् तद्-विधयः॥ ३॥ आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनी-यायु-र्नाम-गोत्रान्तरायाः॥४॥

पञ्च-नव-द्व्यष्टा-विंशति-चतुर्द्वि-चत्वा-रिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम्॥५॥ मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानाम्॥६॥ चक्षु-रचक्षु-रवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यान-गृद्धयश्च॥७॥ स-दसद्-वेद्ये॥८॥ दर्शन-चारित्र-मोहनीया-कषाय-कषाय-वेदनी-याख्यास्-त्रि-द्वि-नव-षोडश-भेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदु-भयान्य-कषाय-कषायौ-हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्-नपुंसक-वेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्-चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः॥९॥ नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि॥१०॥ गति-जाति-शरीराङ्गो-पाङ्ग-निर्माण-बंधन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानु-पूर्व्यगुरु-लघूपघात-परघाता-तपो-द्योतोच्छ्वास-विहायो-गतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च॥११॥ उच्चै-र्नीचैश्च॥१२॥ दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणाम्॥१३॥ आदितस्-तिसृणा-मन्त-रायस्य च त्रिंशत्-सागरोपम-कोटी-कोट्यः परा स्थितिः॥१४॥ सप्तति-र्मोहनीयस्य॥१५॥ विंशति-र्नाम-गोत्रयोः॥१६॥ त्रयस्-त्रिंशत्सागरो पमाण्यायुषः॥१७॥ अपरा द्वादश-मुहूर्ता वेदनीयस्य॥१८॥ नाम-गोत्रयो-रष्टौ॥१९॥ शेषाणा-मन्तर्मुहूर्ताः॥२०॥ विपाकोऽनुभवः॥२१॥ स यथानाम॥२२॥ ततश्च निर्जरा॥२३॥ नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात् सूक्ष्मैक-क्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्-वनन्तानन्त-प्रदेशाः॥२४॥ सद्-वेद्य-शुभायु-र्नाम-गोत्राणि पुण्यम्॥२५॥ अतोऽन्यत्पापम्॥२६॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायः॥

नवमोऽध्यायः

आस्त्रव-निरोधः संवरः॥१॥ स गुप्ति-समिति-धर्मा-नुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः॥२॥ तपसा निर्जरा च॥३॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः॥४॥ ईर्या-भाषैषणा-दान-निक्षेपोत्सर्गाः समितयः॥५॥ उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागा-किञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः॥६॥ अनित्या-शरण-संसा-रैकत्वा-न्यत्वा-शुच्यास्त्रव संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्म-स्वाख्या-तत्वानु-चिन्तन-मनुप्रेक्षाः॥७॥ मार्गाच्य-वन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः॥८॥ क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्या-रति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्या-क्रोश-वध-याचना-लाभ-रोग-तृण-स्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञाना-दर्शनानि९॥ सूक्ष्म-साम्पराय-छद्मस्थ-वीतरागयोश्-चतुर्दश॥१०॥ एकादश जिने॥११॥ बादर-साम्पराये सर्वे॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शन-मोहान्तराययो-रदर्शनालाभौ॥१४॥ चारित्र-मोहे नाग्न्या-रति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः॥१५॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या-युगपदे-कस्मिन्-नैकोनविंशतेः॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना-परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यात-मिति चारित्रम्॥१८॥ अनशनाव-मौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः॥१९॥ प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरं ॥२०॥ नव-चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्-ध्यानात्॥२१॥ आलोचना प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारो -पस्थापनाः॥२२॥ ज्ञान-दर्शन-चारित्रोप-चाराः ॥२३॥ आचार्यो-पाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम् ॥२४॥ वाचना-पृच्छनानु-प्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्या-

भ्यन्तरो-पध्योः ॥२६॥ उत्तम-संहननस्-यैकाग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यान-मान्त-र्मुहूर्तात्॥२७॥ आर्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि॥२८॥ परे मोक्ष-हेतू॥२९॥ आर्त-ममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्-विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य॥३१॥ वेदना-याश्च॥३२॥ निदानं च॥३३॥ त-दविरत-देशविरत-प्रमत्त-संयतानाम्॥३४॥ हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्र-मविरत-देशविरतयोः॥३५॥ आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः॥३७॥ परे केवलिनः॥३८॥ पृथक्-त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत-क्रिया-निवर्तीनि॥३९॥ त्र्येक-योग-काय-योगा-योगानाम्॥४०॥ एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम्॥४२॥ वितर्कःश्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योग-संक्रांतिः॥४४॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशम-कोपशान्तमोह क्षपक-क्षीणमोह-जिनाःक्रमशोऽ संख्येय गुण-निर्जराः॥४५॥ पुलाक -बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातकाः निर्ग्रन्थाः ॥४६॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपाद-स्थान विकल्पतः साध्याः ॥४७॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्यायः॥

दशमोऽध्यायः

मोह-क्षयाज्ज्ञान - दर्शनावरणान्तराय - क्षयाच्च केवलम्॥१॥ बन्ध-हेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः॥२॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च॥३॥ अन्यत्र केवल-सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः॥४॥ त-दनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्या-लोकान्तात्॥५॥ पूर्व - प्रयोगा-दसंगत्वाद्-बन्धच्-छेदात्-तथा-गति-परिणामाच्च॥६॥ आविद्ध-कुलाल-चक्रवद्-व्यपगत-लेपालांबु-वदेरण्ड-बीज-वदग्नि शिखावच्च ॥७॥ धर्मास्ति-काया-भावात्॥८॥ क्षेत्र-काल-

गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक-बुद्ध-बोधित-ज्ञाना-वगाह-नान्तर-संख्याल्प-बहुत्वतः साध्याः॥९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्यायः॥

अक्षर-मात्र पद-स्वर-हीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्र-समुद्रे॥१॥

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्या-दुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः॥२॥

तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्ध-पिच्छोप-लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र-संजात-मुमास्वामी-मुनीश्वरम्॥३॥

पढम चउक्के पढमं पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च।
छह सत्तमे हि आस्सव अट्ठमे बंध णायव्वो॥४॥

णवमे संवर णिज्जर दहमे मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणियं दह सुत्ते मुणिवरिं देहिं॥५॥

जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दह-माणो जीवो, पावइ अजरा-मरं ठाणं॥६॥

तवयरणं वयधरणं, संजम-सरणं च जीवदया-करणम्।
अन्ते समाहि-मरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई॥७॥

कोटिशतं द्वादश-चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्-त्र्यधिकानि चैव।
पंचा-शदष्टौ च सहस्र-संख्य, मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि॥८॥

अरहंत भासियत्थं, गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाण-महोवयं सिरसा॥९॥

गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्ष-मार्गोप-देशकाः॥१०॥

===

श्रीजिनसहस्त्रनाम-स्तोत्र

(प्रस्तावना)

स्वयं-भुवे नमस्तुभ्य-मुत्पाद्यात्मान-मात्मनि।
स्वात्म-नैव तथोद्भूत - वृत्तयेऽचिन्त्य-वृत्तये॥ १॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मी-भर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर॥२॥
काम - शत्रुहणं देव-मामनन्ति मनीषिणः।
त्वामान-मत्सुरेण्मौलि-भा-मालाभ्यर्चित-क्रमम्॥ ३॥
ध्यान - दुर्घण-निर्भिन्न-घन- घाति - महातरुः।
अनन्त-भव-सन्तान, जयादासी-रनन्तजित्॥ ४॥
त्रैलोक्य - निर्जया-वाप्त - दुर्दर्प-मति-दुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासीज्-जिन! मृत्युञ्जयो भवान्॥ ५॥
विधूताशेष - संसार - बन्धनो भव्य-बान्धवः।
त्रिपुरारिस्-त्वमीशाऽसि जन्म-मृत्यु-जरान्तकृत्॥ ६॥
त्रिकाल-विषयाशेष - तत्त्व - भेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्-त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः॥ ७॥
त्वामन्ध-कान्तकं प्राहु-र्मोहान्धासुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्मा-दर्ध-नारीश्वरोऽस्यतः॥ ८॥
शिवः शिव-पदाध्यासाद् दुरितारि - हरो हरः।
शङ्करः कृतशं लोके शम्भवस्त्वं भवन्सुखे॥ ९॥
वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरु-गुणोदयैः।
नाभेयो नाभि - संभूते-रिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः॥ १०।
त्वमेकः पुरुष-स्कन्धस्-त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध-सन्मार्गस्-त्रिज्ञस्-त्रिज्ञान-धारकः॥११॥

चतुःशरण–माङ्गल्य–मूर्तिस्त्वं चतुरस्त्रधीः।
पञ्च–ब्रह्ममयो देव! पावनस्त्वं पुनीहि माम्॥१२॥
स्वर्गा–वतरणे तुभ्यं सद्यो–जातात्मने नमः।
जन्माभिषेक–वामाय वामदेव नमोऽस्तु ते॥१३॥
सन्निष्क्रान्ता–वघोराय परं प्रशम–मीयुषे।
केवल–ज्ञान–संसिद्धा–वीशानाय नमोऽस्तु ते॥१४॥
पुरस्–तत्पुरुषत्वेन विमुक्ति–पद–भाजिने।
नमस्–तत्पुरुषावस्थां भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते॥१५॥
ज्ञानावरण–निर्ह्रासान्–नमस्तेऽनन्त – चक्षुषे।
दर्शना–वरणोच्छेदान्–नमस्ते विश्व–दृश्वने॥१६॥
नमो दर्शन – मोहघ्ने क्षायिकामल–दृष्टये।
नमश्चारित्र – मोहघ्ने विरागाय महौजसे॥१७॥
नमस्तेऽनन्त – वीर्याय नमोऽनन्त – सुखात्मने।
नमस्तेऽनन्त–लोकाय लोका–लोकावलोकिने॥ १८॥
नमस्तेऽनन्त – दानाय नमस्तेऽनन्त–लब्धये।
नमस्तेऽनन्त – भोगाय नमोऽनन्तो–पभोगिने॥१९॥
नमः परमयोगाय– नमस्तुभ्य–मयोनये।
नमः परम–पूताय नमस्ते परमर्षये॥२०॥
नमः परम–विद्याय नमः पर–मतच्छिदे।
नमः परम–तत्त्वाय नमस्ते परमात्मने॥ २१॥
नमः परम–रूपाय नमः परम–तेजसे।
नमः परम–मार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने॥ २२॥
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः–प्राप्त – धाम्ने परतरात्मने ॥ २३॥

नमः क्षीण-कलङ्काय क्षीण-बन्ध! नमोऽस्तु ते।
नमस्ते क्षीण-मोहाय क्षीण-दोषाय ते नमः॥२४॥
नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेऽ-तीन्द्रियज्ञान-सुखाया-निन्द्रियात्मने ॥ २५॥
काय-बन्धन-निर्मोक्षा-दकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्य-मयोगाय योगिनामधियोगिने॥२६॥
अवेदाय नमस्तुभ्य-मकषायाय ते नमः।
नमः परम - योगीन्द्र -वन्दिताङ्घ्रि-द्वयाय ते ॥२७॥
नमः परम-विज्ञान! नमः परम-संयम!
नमः परम - दृग्दृष्ट, परमार्थाय ते नमः॥२८॥
नमस्तुभ्य-मलेश्याय शुक्ललेश्यांश-क-स्पृशे।
नमो भव्ये-तरावस्था, व्यतीताय विमोक्षिणे॥२९॥
संज्ञ्यसंज्ञि-द्वयावस्था, व्यतिरिक्ता-मलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय, नमः क्षायिक-दृष्टये॥ ३०॥
अनाहाराय तृप्ताय, नमः परम-भाजुषे।
व्यतीता-शेषदोषाय, भवाब्धेः पारमीयुषे॥ ३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं, नमस्तेस्ता-दजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्य-मचलाया-क्षरात्मने॥३२॥
अलमास्तां गुणस्तोत्र, मनन्तास्-तावका गुणाः।
त्वां नामस्मृति-मात्रेण, पर्युपासि-सिषामहे॥ ३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं, भक्त्या परमया सुधीः।
पठे-दष्टोत्तरं नाम्नां, सहस्त्रं पाप-शान्तये॥३४॥

इति जिनसहस्त्रनामस्तोत्रप्रस्तावना

प्रथमशतकम्

प्रसिद्धाष्ट-सहस्रेद्ध-लक्षणं त्वां गिरां पतिम्।
नाम्ना-मष्ट -सहस्रेण तोष्टुमोऽ-भीष्ट - सिद्धये॥ १॥
श्रीमान् स्वयंभू-वृषभः शंभवः शंभु-रात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभू-रपुनर्भवः॥ २॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्-चक्षु-रक्षरः।
विश्वविद् विश्वविद्येशो विश्वयोनि-रनश्वरः॥ ३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः॥ ४॥
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्ति-र्जिनेश्वरः।
विश्वदृग्-विश्वभूतेशो विश्वज्योति-रनीश्वरः॥ ५॥
जिनो जिष्णु-रमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः।
अनन्तजिद-चिन्त्यात्मा भव्य-बन्धु-रबन्धनः॥ ६॥
युगादि-पुरुषो ब्रह्मा पञ्च - ब्रह्ममयः शिवः।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः॥ ७॥
स्वयंज्योति-रजोऽजन्मा ब्रह्म-योनि-रयोनिजः।
मोहारि-विजयी जेता धर्म-चक्री दयाध्वजः॥ ८॥
प्रशान्तारि-रनन्तात्मा योगी योगी-श्वरार्चितः।
ब्रह्मविद् ब्रह्म-तत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्या-विद्यतीश्वरः॥ ९॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्धः सिद्धान्त-विद्ध्येयः सिद्धसाध्यो-जगद्धितः॥ १०॥
सहिष्णु-रच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णु-र्भवोद्भवः।
प्रभूष्णु-रजरोऽजर्यो भ्राजिष्णु-र्धीश्वरोऽव्ययः॥ ११॥
विभाव-सुर-सम्भूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परंज्योतिस्-त्रिजगत्-परमेश्वरः ॥ १२॥

॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥ १॥

द्वितीयशतकम्

दिव्यभाषा-पतिर्दिव्यः पूतवाक -पूतशासनः।
पूतात्मा परम-ज्योति-र्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः॥ १॥
श्रीपति-र्भगवा-नर्हन्-नरजा विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत्-केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः॥ २॥
अनन्त-दीप्ति-र्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः॥ ३॥
निरञ्जनो जगज्ज्योति-र्निरुक्तोक्ति-रनामयः।
अचल-स्थिति-रक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणु-रक्षयः॥ ४॥
अग्रणी-र्ग्रामणी-र्नेता प्रणेता न्याय-शास्त्रकृत्।
शास्ता धर्मपति-र्धर्म्यो धर्मात्मा धर्म-तीर्थकृत्॥ ५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतु-र्वृषायुधः।
वृषो वृषपति-र्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः॥ ६॥
हिरण्य-नाभि-र्भूतात्मा भूतभृद् भूतभावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः॥ ७॥
हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूत-विभवोऽभवः।
स्वयंप्रभुः प्रभू-तात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः॥ ८॥
सर्वादिः सर्वदृक्-सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित् सर्वलोकजित्॥ ९॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत्, सुवाक् सूरि-र्बहुश्रुतः।
विश्रुतो विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः॥ १०॥
सहस्त्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्त्रपात्।
भूत-भव्य-भवद्भर्ता विश्व- विद्या-महेश्वरः॥११॥

॥ इति दिव्यादिशतम् ॥ २॥

तृतीयशतकम्

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः प्रष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठ-धीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठ-गीः॥ १॥
विश्वभृद् विश्वसृड् विश्वेड्, विश्वभुग्-विश्व-नायकः।
विश्वासी-र्विश्वरूपात्मा, विश्वजिद्-विजितान्तकः॥ २॥
विभवो विभयो वीरो, विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसङ्गो, विविक्तो वीत-मत्सरः॥ ३॥
विनेय-जनता-बन्धु-र्विलीना-शेष-कल्मषः।
वियोगो योगविद्-विद्वान् विधाता सुविधिः सुधीः॥ ४॥
क्षान्तिभाक् पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः।
वायुमूर्ति-रसङ्गात्मा वह्निमूर्ति-रधर्मधक्॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्राम-पूजितः।
ऋत्विग्-यज्ञपति-र्याज्यो यज्ञाङ्ग-ममृतं हविः॥ ६॥
व्योम-मूर्ति-रमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोम-मूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्य-मूर्ति-र्महाप्रभः॥ ७॥
मन्त्रवित्-मन्त्रकृत्-मन्त्री मन्त्र-मूर्ति-रनन्तगः।
स्वतन्त्रस्-तन्त्रकृत्-स्वन्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्॥ ८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृत-क्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयोऽमृत्यु-रमृतात्मा-मृतोद्भवः॥ ९॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मा ब्रह्मात्मा ब्रह्म-संभवः।
महाब्रह्म-पतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्म-पदेश्वरः॥१॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञान - धर्म - दम - प्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराण-पुरुषोत्तमः॥ ११॥

॥ इति स्थविष्ठादिशतम्॥ ३॥

चतुर्थ-शतकम्

महाशोक – ध्वजोऽशोकः कः स्त्रष्टा पद्म-विष्टरः।
पद्मेशः पद्म-सम्भूतिः पद्मनाभि-रनुत्तरः॥ १॥
पद्मयोनि-र्जगद्योनि-रित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जित-जेयः कृत-क्रियः॥ २॥
गणाधिपो गण-ज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधि-र्गुणज्ञो गुणनायकः॥ ३॥
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगी-र्गुणः।
शरण्यः पुण्य-वाक्पूतो वरेण्यः पुण्य-नायकः॥ ४॥
अगण्यः पुण्यधी-र्गुण्यः पुण्यकृत्-पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्य-निरोधकः॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीत-कल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरु-पद्रवः॥ ६॥
निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरु-पप्लवः।
निष्कलङ्को निरस्तैना निर्धूतागा निरास्त्रवः॥ ७॥
विशालो विपुलज्योति-रतुलोऽचिन्त्य-वैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्-सुनय-तत्त्ववित्॥ ८॥
एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विह-तान्तकः॥ ९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान्॥ १०॥
कविः पुराण-पुरुषो वर्षीयान्-वृषभः परुः।
प्रतिष्ठा-प्रसवो हेतु-र्भुवनैक-पितामहः॥ ११॥

॥ इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥ ४॥

पञ्चमशतकम्

श्रीवृक्ष-लक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः॥१॥
सिद्धिदः सिद्ध-संकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्ध-बोध्यो महाबोधि-र्वर्धमानो महर्धिकः॥२॥
वेदाङ्गो वेदविद्-वेद्यो जातरूपो विदांवरः।
वेद-वेद्यः स्व-संवेद्यो विवेदो वदतांवरः॥३॥
अनादि-निधनो व्यक्तो व्यक्तवाग् व्यक्त-शासनः।
युगादिकृत् युगाधारो युगादि-र्जगदादिजः॥४॥
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽ-तीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोऽ-हमिन्द्रार्च्यो महेन्द्र-महितो महान्॥ ५॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भव-तारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः॥६॥
अनन्तर्द्धि-रमेयर्द्धि-रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽ-ग्रिमोऽग्रजः॥ ७॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्- - महाबलः।
महाशक्ति-र्महाज्योति-र्महाभूति-र्महाद्युतिः ॥९॥
महामति-र्महानीति-र्महाक्षान्ति - र्महादयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः ॥ १०॥
महामहा महाकीर्ति-र्महाकान्ति-र्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः॥११॥
महामहपतिः प्राप्त- महाकल्याण-पञ्चकः।
महाप्रभु-र्महाप्राति-हार्याधीशो महेश्वरः॥१२॥

॥ इति श्रीवृक्षादिशतम्॥ ५॥

षष्ठशतकम्

महामुनि-र्महामौनी महाध्यानो महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः॥१॥
महाव्रत-पतिर्मह्यो महाकान्ति-धरोऽधिपः।
महामैत्री - मयोऽमेयो महोपायो महोमयः॥२॥
महाकारुणिको मन्ता महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः॥३॥
महाध्वर-धरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधाम महर्षि-र्महितोदयः॥४॥
महाक्लेशाङ्कुशः शूरो महाभूत-पतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽ-नन्तो महाक्रोध-रिपुर्वशी ॥५॥
महाभवाब्धि-संतारी महामोहाद्रि-सूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी॥६॥
महाध्यानपति-र्ध्याता-महाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मा-रिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता॥७॥
सर्वक्लेशा-पहः साधुः सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः॥८॥
सर्व-योगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्ट-रश्रवाः।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः॥९॥
प्रधान-मात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीण-बन्धः कामारिः क्षेमकृत् क्षेमशासनः॥ १०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधि-र्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्यु-रध्वरः॥ ११॥
आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः काम-धेनु-ररिञ्जयः॥१२॥

॥ इति महामुन्यादिशतम्॥ ६॥

सप्तमशतकम्

असंस्कृत-सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतान्त-कृत्।
अन्तकृत्-कान्तगुः कान्तश्-चिन्तामणि-रभीष्टदः॥ १॥
अजितोऽजित-कामारि-रमितोऽमित-शासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः॥ २॥
जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभि-स्वनः।
महेन्द्र-वन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः॥३॥
नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वा-नधिकोऽधिगुरुः सुगीः॥ ४॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः॥ ५॥
क्षेमी क्षेमङ्करोऽक्षय्यः क्षेम-धर्म-पतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञान-निग्राह्यो ध्यान-गम्यो निरूत्तरः॥ ६॥
सुकृती धातु-रिज्यार्हः सुनयश्-चतुराननः।
श्रीनिवासश्-चतुर्वक्त्रश्-चतुरास्यश्-चतुर्मुखः ॥ ७॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्-सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्य-सन्धानः सत्यः सत्य-परायणः॥ ८॥
स्थेयान्-स्थवीयान्-नेदीयान्-दवीयान्-दूरदर्शनः।
अणो-रणीयान-नणु-र्गुरु-राद्यो गरीयसाम् ॥९॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः॥१०॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमेश्वरः॥ ११॥

॥ इति असंस्कृतादिशतम्॥ ७॥

अष्टमशतकम्

बृहद्-बृहस्पति-र्वाग्मी वाचस्पति-रुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्-छेमुषीशो गिरांपतिः॥ १॥
नैक-रूपो नयोत्तुङ्गो नैकात्मा-नैक-धर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रत-र्क्यात्मा कृतज्ञः कृत-लक्षणः॥ २॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः॥३॥
लक्ष्मीवांस् -त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीर-शासनः॥४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्म-नेमि-र्मुनीश्वरः।
धर्म-चक्रायुधो देवः कर्महा धर्म-घोषणः॥५॥
अमोघवाग-मोघाज्ञो निर्मलोऽमोघ-शासनः।
सुरूपः सुभगस् -त्यागी समयज्ञः समाहितः॥६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक-स्वस्थो नीरजस्को-निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गतस्पृहः॥७॥
वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोऽनन्त-धामर्षि-र्मङ्गलं मलहानयः॥८॥
अनीदृगु-पमाभूतो दिष्टि-र्दैव-मगोचरः।
अमूर्तो मूर्ति-मानेको नैको नानैक-तत्त्वदृक्॥९॥
अध्यात्म-गम्योऽगम्यात्मा योगविद्योगि-वन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकाल-विषयार्थदृक्॥१०॥
शङ्करः शंवदो दान्तो दमी क्षान्ति-परायणः।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः॥११॥
त्रिजगद्-वल्लभोऽभ्यर्च्यस्-त्रिजगन्-मङ्गलोऽदयः।
त्रिजगत्पति-पूज्यांघ्रिस्-त्रिलोकाग्र-शिखामणिः॥ १२॥

॥ इति बृहदादिशतम्॥ ८॥

नवमशतकम्

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढ़व्रतः।
सर्व-लोकातिगः पूज्यः सर्व-लोकैक-सारथिः॥ १॥
पुराणः पुरुषः पूर्वः कृत-पूर्वाङ्ग-विस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरु-देवोऽधिदेवता॥२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादि-स्थिति-देशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याण-लक्षणः॥ ३॥
कल्याण-प्रकृति-र्दीप्त - कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलङ्कः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः॥४॥
देव-देवो जगन्नाथो जगद्बन्धु-र्जगद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जग-दग्रजः॥५॥
चराचर-गुरुर्गोप्यो गूढ़ात्मा गूढ़-गोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्-ज्वलन-सत्प्रभः॥ ६॥
आदित्य-वर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटि-समप्रभः॥७॥
तपनीय-निभस्तुङ्गो बालार्का-भोऽनल-प्रभः।
संध्याभ्र-बभ्रु-र्हेमाभस्-तप्त-चामीकरच्छविः॥ ८॥
निष्टप्त-कनकच्छायः कनत्काञ्चन-सन्निभः।
हिरण्य-वर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भ-निभ-प्रभः॥ ९॥
द्युम्नाभो जात-रूपाभस्-तप्त-जाम्बू-नदद्युतिः।
सुधौत-कलधौत-श्रीः प्रदीप्तो हाटक-द्युतिः॥ १०॥
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः।

शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः॥ ११॥
शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान् कामितप्रदः॥ १२॥
श्रेयोनिधि-रधिष्ठान-मप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्-प्रथितः पृथुः॥ १३॥

॥ इति त्रिकालदर्श्यादिशतम्॥ ९॥

दशमाष्टोत्तरशतम्

दिग्वासा वात-रसनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षु-रमोमुहः॥ १॥
तेजोराशि-रनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शील-सागरः।
तेजोमयोऽमितज्योति-र्ज्योतिर्मूर्तिस्-तमोऽपहः॥ २॥
जगच्चूड़ामणि-र्दीप्तः शंवान्विघ्न-विनायकः।
कलिघ्नः कर्म-शत्रुघ्नो लोकालोक-प्रकाशकः॥ ३॥
अनिद्रालु-रतन्द्रालु-र्जागरुकः प्रमामयः।
लक्ष्मीपति-र्जगज्ज्योति-र्धर्मराजः प्रजा-हितः॥ ४॥
मुमुक्षु-र्बन्ध-मोक्षज्ञो जिताक्षो जित-मन्मथः।
प्रशान्त-रस-शैलूषो भव्य-पेटक-नायकः॥ ५॥
मूलकर्त्ता-खिलज्योति-र्मलघ्नो मूल-कारणः।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्-छ्रायसोक्ति-र्निरुक्तवाक्॥६॥
प्रवक्ता वचसा-मीशो मारजिद्-विश्व-भाववित्।
सुतनुस्-तनुनिर्मुक्तः सुगतो हत-दुर्नयः॥ ७॥
श्रीशः श्रीश्रित-पादाब्जो वीत-भीर-भयङ्करः।
उत्सन्न-दोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोक-वत्सलः॥ ८॥

लोकोत्तरो लोकपति-र्लोकचक्षु-रपारधीः।
धीर-धीर्बुद्ध- सन्मार्गः शुद्धः सूनृत-पूतवाक्॥ ९॥
प्रज्ञा-पारमितः प्राज्ञो यति-र्नियि-मितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्रकृद् भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः॥ ०॥
समुन्मूलित-कर्मारिः कर्म-काष्ठा-शुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशु-र्हेयादेय-विचक्षणः॥११॥
अनन्त-शक्ति-रच्छेद्यस्-त्रिपुरारिस्-त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्-त्र्यम्बकस्-त्र्यक्षः केवलज्ञान-वीक्षणः॥ १२॥
समन्तभद्रः शान्तारि-र्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालु-र्धर्मदेशकः॥१३॥
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशि-रनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्य-नायकः॥१४॥

॥ इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥ १०॥

उपसंहार

धाम्नांपते! तवामूनि नामान्यागम-कोविदैः।
समुच्चितान्-यनुध्यायन्-पुमान्-पूतस्मृति-र्भवेत्॥ १॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्-गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्य-संदिग्धं त्वत्तोऽभीष्ट-फलं भजेत्॥ २॥
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्-त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः॥ ३॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्-त्वं द्विरूपो-पयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैक-मुक्त्यङ्गं स्वोत्थानन्त-चतुष्टयः॥ ४॥

त्वं पञ्च–ब्रह्म–तत्त्वात्मा पञ्चकल्याण–नायकः।
षड्भेद–भाव–तत्त्वज्ञस्–त्वं सप्त–नय–संग्रहः॥ ५॥
दिव्याष्ट– गुण–मूर्तिस्त्वं नव–केवल–लब्धिकः।
दशावतार–निर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर!॥६॥
युष्मन्नामावली – दृब्ध – विलसत्–स्तोत्र–मालया।
भवन्तं वरिवस्यामः प्रसीदा–नुगृहाण नः॥७॥
इदं स्तोत्र–मनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याण–भाजनम्॥ ८॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान् पठतु पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमा–मभिलाषुकः॥ ९॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचर–जगद्गुरुम्।
ततस्तीर्थ–विहारस्य व्यधात्–प्रस्तावना–मिमाम्॥ १०॥
स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवान् स्तुत्यः फलं नैःश्रेयसं सुखम्॥ ११॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्,
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नतरां ध्याता स्वयं कस्यचित्।
योनन्तॄन् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्य–पक्षेक्षणः,
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः॥ १२॥
तं देवं त्रिदशाधि–पार्चित–पदं घाति–क्षया–नन्तरम्,
प्रोत्थानन्त–चतुष्टयं जिनमिनं भव्याब्जि–नीनामिनम्।
मानस्तम्भ–विलोकना–नतजगन्–मान्यं त्रिलोकी–पतिम्,
प्राप्ताचिन्त्य–बहिर्विभूति–मनघं भक्त्या प्रवन्दामहे॥ १३॥

॥ इति श्रीभगवज्जिनाष्टोतर सहस्त्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्॥

तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

चैत्र माह कृष्णपक्ष

चतुर्थी — पार्श्वनाथ-ज्ञान
पंचमी — चन्द्रप्रभ-गर्भ
अष्टमी — शीतलनाथ-गर्भ
नवमी — वृषभनाथ-जन्म-तप
अमावस्या — अनन्तनाथ-ज्ञान-मोक्ष
अमावस्या — अरनाथ-मोक्ष

चैत्र माह शुक्लपक्ष

एकम — मल्लिनाथ-गर्भ
तीज — कुंथुनाथ-ज्ञान
तीज — नमिनाथ-ज्ञान
पंचमी — अजितनाथ-मोक्ष
षष्ठी — शम्भवनाथ-मोक्ष
दसमी — सुमतिनाथ-मोक्ष
एकादशी — सुमतिनाथ-जन्म-ज्ञान
त्रयोदशी — महावीरस्वामी-जन्म
पूर्णिमा — पद्मप्रभ-ज्ञान

वैशाख माह कृष्णपक्ष

दूज — पार्श्वनाथ-गर्भ
नवमी — मुनिसुव्रतनाथ-ज्ञान
दशमी — मुनिसुव्रतनाथ-जन्म-तप
एकादशी — मल्लिनाथ-तप
त्रयोदशी — धर्मनाथ-गर्भ
चतुर्दशी — नमिनाथ-मोक्ष

वैशाख माह शुक्लपक्ष

एकम — कुंथुनाथ-जन्म-तप-मोक्ष
छठ — अभिनंदननाथ-गर्भ-मोक्ष
अष्टमी — धर्मनाथ-गर्भ
नवमी — सुमतिनाथ-तप
दशमी — सुमतिनाथ-ज्ञान
दशमी — पद्मप्रभ-ज्ञान
दशमी — महावीरस्वामी-ज्ञान
त्रयोदशी — नेमिनाथ-ज्ञान
त्रयोदशी — धर्मनाथ-गर्भ

ज्येष्ठ माह कृष्णपक्ष

छठ — श्रेयांसनाथ-गर्भ
दशमी — विमलनाथ-गर्भ
द्वादशी — अनन्तनाथ-जन्म-तप
चतुर्दशी — शांतिनाथ-जन्म-तप-मोक्ष
अमावस्या — अजितनाथ-गर्भ

ज्येष्ठ माह शुक्लपक्ष

चतुर्थी — धर्मनाथ-मोक्ष
द्वादशी — सुपार्श्वनाथ-जन्म-तप

आषाढ़ माह कृष्णपक्ष

दूज — आदिनाथ गर्भ
छठ — वासुपूज्य-गर्भ
अष्टमी — विमलनाथ-मोक्ष
दशमी — नमिनाथ-जन्म-तप

आषाढ़ माह शुक्लपक्ष

छठ — महावीरस्वामी-गर्भ
अष्टमी/सप्तमी—नेमिनाथ-ज्ञान-मोक्ष
दशमी — नमिनाथ-जन्म

श्रावण माह कृष्णपक्ष

दूज — मुनिसुव्रतनाथ-गर्भ
दशमी — कुंथुनाथ-गर्भ

श्रावण माह शुक्लपक्ष

दूज — सुमतिनाथ-गर्भ
छठ — नेमिनाथ-जन्म-तप
सप्तमी — पार्श्वनाथ-मोक्ष
एकादशी — सुमतिनाथ-जन्म
पूर्णिमा — श्रेयांसनाथ-मोक्ष

भाद्र माह कृष्णपक्ष

सप्मती — शांतिनाथ-गर्भ

भाद्र माह शुक्लपक्ष

दूज — वासुपूज्य-ज्ञान
छठ — सुपार्श्वनाथ-गर्भ
अष्टमी — पुष्पदंत-मोक्ष
त्रयोदशी — धर्मनाथ-तप
चतुर्दशी — वासुपूज्य-मोक्ष

आश्विन (क्वांर) माह कृष्णपक्ष

दूज — नमिनाथ–गर्भ
त्रयोदशी — पद्मप्रभ–जन्म

आश्विन (क्वांर) माह शुक्लपक्ष

एकम — नेमिनाथ–ज्ञान
द्वादशी — मुनिसुव्रत–जन्म
पूर्णिमा — शम्भवनाथ–तप

कार्तिक माह कृष्णपक्ष

एकम — अनन्तनाथ–गर्भ
चतुर्थी — शम्भवनाथ–ज्ञान
त्रयोदशी — पद्मप्रभ–जन्म–तप
अमावस्या — महावीरस्वामी–मोक्ष

कार्तिक माह शुक्लपक्ष

दूज — पुष्पदंत–ज्ञान
पंचमी — सुमतिनाथ–ज्ञान
पंचमी — शीतलनाथ–मोक्ष
छठ — नेमिनाथ–गर्भ
द्वादशी — अरनाथ–ज्ञान
त्रयोदशी — पद्मप्रभ–जन्म–तप
पूर्णिमा — शम्भवनाथ–जन्म

मगशिर माह कृष्णपक्ष

दशमी — महावीरस्वामी–तप

मगशिर माह शुक्लपक्ष

एकम — पुष्पदंत–जन्म–तप
दशमी — अरनाथ–तप
एकादशी — मल्लिनाथ–जन्म–तप
एकादशी — नमिनाथ–ज्ञान
चतुर्दशी — अरनाथ–जन्म
पूर्णिमा — शम्भवनाथ–तप

पौष माह कृष्णपक्ष

दूज — मल्लिनाथ–ज्ञान
एकादशी — चन्द्रप्रभ–जन्म–तप
एकादशी — पार्श्वनाथ–जन्म–तप
चतुर्दशी — शीतलनाथ–ज्ञान

पौष माह शुक्लपक्ष

दूज — मल्लिनाथ–ज्ञान
दशमी — विमलनाथ–ज्ञान
एकादशी — अजितनाथ–ज्ञान
एकादशी — शांतिनाथ–ज्ञान
चतुर्दशी — अजितनाथ–ज्ञान
चतुर्दशी — अभिनंदननाथ–ज्ञान
पूर्णिमा — धर्मनाथ–ज्ञान

माघ माह कृष्णपक्ष

छठ — पद्मप्रभ–गर्भ
द्वादशी — चन्द्रप्रभ–जन्म–तप
चतुर्दशी — आदिनाथ–मोक्ष
अमावस्या — श्रेयांसनाथ–ज्ञान

माघ माह शुक्लपक्ष

दूज — वासुपूज्य–ज्ञान
चतुर्थी — विमलनाथ–जन्म–तप
छठ — विमलनाथ–ज्ञान
नवमी — अजितनाथ–तप
दशमी — अजितनाथ–जन्म–तप
द्वादशी — अभिनंदन–जन्म–तप
त्रयोदशी — धर्मनाथ–जन्म–तप

फाल्गुन माह कृष्णपक्ष

चतुर्थी — पद्मप्रभ–मोक्ष
छठ/सप्तमी— सुपार्श्वनाथ–मोक्ष
नवमी — पुष्पदंत–गर्भ
एकादशी — आदिनाथ–ज्ञान
एकादशी — श्रेयांसनाथ–जन्म–तप
द्वादशी — मुनिसुव्रतनाथ–मोक्ष
चतुर्दशी — वासुपूज्य–जन्म–तप

फाल्गुन माह शुक्लपक्ष

तृतीया — अरनाथ–गर्भ
पंचमी — मल्लिनाथ–मोक्ष
सप्तमी — चन्द्रप्रभ–मोक्ष
अष्टमी — शम्भवनाथ–गर्भ

सोर-सूतक-पातक शुद्धि का काल प्रमाण

क्रमांक	अवसर	जन्म	मरण	विशेष
१	३ पीढ़ी तक	१० दिन	१२ दिन	
२	४ पीढ़ी तक	१० दिन	१० दिन	श्रावकाचार संग्रह में ५ से ६ दिन
३	५ पीढ़ी तक	६ दिन	६ दिन	श्रावकाचार संग्रह में ४ से ५ दिन
४	६ पीढ़ी तक	४ दिन	४ दिन	श्रावकाचार संग्रह में ३ से ४ दिन
५	७ पीढ़ी तक	३ दिन	३ दिन	श्रावकाचार संग्रह में २ से ३ दिन
६	८ पीढ़ी तक	१ दिन	१ दिन	श्रावकाचार संग्रह में स्नान मात्र
७	९ पीढ़ी तक	२ पहर	२ पहर	स्नान मात्र
८	१० पीढ़ी तक	स्नान करने तक	स्नान करने तक	
९	पुत्री एवं रिश्तेदार (निज घर में)	३ दिन	३ दिन	घर से बाहर हों तो नहीं लगेगा
१०	अन्य व्यक्ति नौकर या पालतू जानवर	१ दिन	१ दिन	घर से बाहर हों तो नहीं लगेगा
११	गृह त्यागी, संन्यासी, संग्राम में	-	१ दिन	
१२	गोत्री अन्य स्थान पर (विदेश में)	खबर आने के पीछे शेष दिनों में	खबर आने के पीछे शेष दिनों में	
१३	गर्भस्त्राव होन पर (३ माह)	-	जितने माह का हो उतने दिन माता को	परिवारजनों को नहीं लगेगा
१४	गर्भपात होने पर (४ से ६ माह तक का)	-	जितने माह का हो उतने दिन माता को	परिवारजनों को १ दिन का
१५	मरा हुआ बालक होने पर	-	माता को ४५ दिन	परिवारजनों को ३ दिन
१६	बालक के नाल छेदने के उपरांत मरने पर	-	माता को ४५ दिन	परिवारजनों को ५ दिन
१७	आठ वर्ष के बालक के मरने पर	-	३ पीढ़ी तक १० दिन	अन्य पीढ़ियों को उपर्युक्तानुसार
१८	अपघात मृत्यु-गर्भपात कराने पर	जीवन पर्यंत	६ माह	प्रायश्चित्त के पश्चात् शुद्धि
१९	रजस्वला स्त्री		-	५ दिन के पश्चात् शुद्धि
२०	अनाचारी स्त्री-पुरुष को		जीवन पर्यंत	

नोट— सूतक पातक की व्यवस्था के काल का क्षेत्रीय परम्परानुसार निर्धारण करें।

विशेष— स्वस्थ संतान के जन्म होने पर माता-संतान को ४५ दिन का ।

श्री कुण्डलपुर के बड़े बाबा चालीसा

(दोहा)

पूज्य बड़े बाबा हरो, हम सब की भव पीर।
आदिनाथ भगवान जी, हमको दो भव तीर॥
सिद्धक्षेत्र अतिशय यहाँ, हम सबको सुखकार।
पूजैं वन्दें हम सभी, पायें आतम सार॥

(चौपाई)

१. पूज्य बड़े बाबा हितकारी, कुण्डलपुर वाले उपकारी।
उच्च शिखर पर आन विराजे, प्रातिहार्य अद्भुत छवि राजे॥
२. सिद्धक्षेत्र शुभ मंगलकारी, पद्मासन प्रतिमा मनहारी।
ऐसी मूरत और न दूजी, जिसने देखी उसने पूजी॥
३. वृषभनाथजी अतिशयकारी, पार्श्वनाथ खड्गासनधारी।
आजू-बाजू नाथ खड़े हैं, पूज्य आप तो नित्य बड़े हैं॥
४. यह पर्वत कुण्डल के जैसा, तभी नाम कुण्डलपुर तैसा।
उच्च-मध्य में आप विराजे, भक्तों के मन मन्दिर राजे॥
५. ग्राम पटेरा का व्यापारी, पैदल जाता वंजीधारी।
जब-जब पथ से आये-जाये, तब पत्थर की ठोकर खाये॥
६. एक दिवस उसका मन खीझा, पत्थर खोद फेंकने रीझा।
पर असमर्थ हुआ व्यापारी, घर वापिस आया दुखयारी॥
७. उसी रात फिर सपना आया, गाड़ी लेकर वहीं बुलाया।
मूर्ति स्वतः उस पर आयेगी, और गाँव तेरे आयेगी॥
८. तू लेकर जब मूर्ति चलेगा, तो पीछे संगीत सुनेगा।
तू यदि मुड़कर देखेगा वो, मूर्ति वहीं रुक जायेगी सो॥

९. सुबह शीघ्र पहुँचा व्यापारी, लेकर अपनी गाड़ी प्यारी।
और वहाँ ज्यों किया खुदाई, मूर्ति निकल गाड़ी पर आई॥
१०. चला मूर्ति ले ज्यों व्यापारी, अद्‌भुत वाद्य बजे थे भारी।
उसने मुड़कर देखा जैसे, रुकी मूर्ति पर्वत पर तैसे॥
११. फिर वह व्यापारी पछताया, चरण पूजकर शीश झुकाया।
पर्वत पर ऐसे प्रभु आये, भक्तों को अतिशय दिखलाये॥
१२. जब औरंगजेब था आया, मूर्ति नाशने घात लगाया।
उसने वार किया था जैसे, दूध-धार निकली थी वैसे॥
१३. मधू मक्खियों में बदली वो, तब डरकर सेना भग ली सो।
चमत्कार को लख घबराया, अपनी गलती पर पछताया॥
१४. अब तक मैं तो रहा विरोधी, बहुत मूर्तियाँ मैंने तोड़ी।
किन्तु कभी ना अब तोड़ूँगा, श्रद्धा से उनको पूजूँगा॥
१५. बाबा के जो लोग विरोधी, उनकी जीत कहाँ से होगी?
कौन राह उनको दिखलाए ? दुख कष्टों से कौन बचाए?॥
१६. पन्ना का राजा जब आया, दर्शन करके वह हर्षाया।
मन्दिर जीर्णोद्धार कराया, और शीश पर छत्र चढ़ाया॥
१७. राज्य हारकर वह रोता था, चिन्तित-चिन्तित नित होता था।
कृपा आपकी वह ज्यों पाया, गया राज्य फिर वापिस पाया॥
१८. भव्य भक्त जो बनें पुजारी, उनकी महिमा जग में न्यारी।
यश वैभव सम्मान कमाते, उभय लोक के सुख वे पाते॥
१९. बहुत यहाँ पर अतिशय ऐसे, पूर्ण कहें उनको हम कैसे?
किन्तु भक्तिवश कुछ गुण गाये, सिद्धक्षेत्र को अब सिर नाये॥
२०. मन्दिर प्राङ्गण जब खुदवाया, तब अवशेष वहाँ इक पाया।

चरण-चिह्न वे शिवपुरगामी, पूज्य केवली श्रीधर स्वामी॥
२१. जबसे इसको हम सब जाने, सिद्ध क्षेत्र इसको पहचाने।
अतिशय क्षेत्र सिद्ध भी प्यारा, श्रद्धा आस्था का आधारा ॥
२२. यहाँ तिरेसठ मन्दिर प्यारे, ऊँचे-ऊँचे न्यारे-न्यारे।
कुछ पर्वत पर शोभा पाते, कुछ नीचे भी सबको भाते॥
२३. नीचे एक सरोवर प्यारा, वर्द्धमान सागर वह न्यारा।
उसमें एक जिनालय भी है, सबको सुखकारक वो भी है॥
२४. भवसागर से तिरने हेतु, "ज्ञान साधना केन्द्र" है सेतु।
वहाँ साधुजन आतम ध्याते, और भक्तजन पुण्य कमाते॥
२५. एक समाधी केन्द्र यहाँ है, वृद्ध व्रतीजन रुके जहाँ हैं।
करें समाधी की तैयारी, जिससे मिलती मोक्ष सवारी॥
२६. यहाँ एक आश्रम है प्यारा, श्रावक-व्रतियों का आधारा।
धर्म-ध्यान वे किये वहाँ हैं,जैनधर्म के दिये जहाँ हैं॥
२७. शान रहा नित भारत की ये, ज्यों शरीर में शोभे हीये।
मध्यप्रदेश दमोह जिला है, जो पूजे सो यह उसका है॥
२८. दूर-दूर से यात्री आते, वन्दन पूजन कर सुख पाते।
वृहताकार धर्मशालायें, रुके वहाँ पर जो भी आयें ॥
२९. करें वन्दना ऊपर नीचे, पुण्यामृत से निज नित सींचे।
भाव सहित जो सिर नाते हैं, मन-वाञ्छित फल वे पाते हैं॥
३०. द्वार आपके हम सब आए, खाली झोली को फैलाए।
बाबा इसको तुम भर देना, अपने सम हमको कर लेना॥
३१. तुमको पूजें सुर नर राजा, और पूजते नित मुनिराजा।
छोटेबाबा भी नित आते, तुम से दूर नहीं रह पाते॥

३२. विद्यागुरुवर छोटेबाबा, आय छियत्तर सन् में बाबा।
प्रथम दर्श कर वे हर्षाए, और आपसे सब कुछ पाए॥
३३. मंदिर देख बड़ेबाबा का, हृदय दुखा छोटेबाबा का।
नाम बड़ेबाबा है प्यारा, पर मंदिर तो छोटा न्यारा॥
३४. जैसा नाम बड़ेबाबा का, वैसा मंदिर हो बाबा का।
सो उपदेश दिये भक्तों को, ठेस लगे ना जिनभक्तों को॥
३५. यहाँ बड़ा मंदिर बन जाए, प्रभुदर्शन सबको मिल पाए।
भक्त दान दें पुण्य कमाएँ, छोटेबाबा नित यह भाएँ॥
३६. श्रद्धा से जो दान करेंगे, वे झोली में पुण्य भरेंगे।
वे सब कर्मों को नाशेंगे, मोक्ष महल को वे पाएँगे॥
३७. भक्त आपके हम अज्ञानी, जपें आपका मन्त्र कहानी।
चरण शरण में आये बाबा, शीघ्र हमें अपना लो बाबा॥
३८. मनोकामना पूरी कीजे, पाप विघ्न सबके हर लीजे।
धर्म-ध्वजा को हम फहराएँ,'सुव्रत' धरकर शीश झुकाएँ॥

(दोहा)

आप बड़ेबाबा रहे, पूर्ण करो लघु आस।
कृपा करो हम पर विभो, करना हृदय निवास॥
श्रद्धावश हमने किया, भक्ति सहित गुणगान।
भूल अगर कुछ हो गयी, क्षमा करो भगवान॥
हमको कुछ ना चाहिए, धन विद्या बल मन्त्र।
बस इतना वर चाहिए, भूलूँ ना तव मन्त्र॥
चालीसा यह जो पढ़ें, जीवन में अविराम।
विघ्न कष्ट उनके नशें, सफल होंय सब काम॥

===

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

(दोहा)

कर नमोस्तु अरिहंत को, सिद्धों का कर ध्यान।
सेवा कर आचार्य की, उपाध्याय का ज्ञान॥
करें साधु की अर्चना, बढ़े धर्म की शान।
सो चालीसा से भजें, पार्श्वनाथ भगवान॥

(चौपाई)

१. जय जय पारसनाथ जिनंदा, अतिशयकारी परमानंदा।
चौबीसी में सबसे प्यारे, भक्त लाड़ले जग से न्यारे॥
२. पारसप्रभु जग हितकारी हैं, श्री चैतन्य चमत्कारी हैं।
नाम आपका जग में साँचा, जिससे भक्तों का मन नाँचा॥
३. दुख संकट उपसर्ग हटाए, धन दौलत सुख शांति दिलाए।
सो पारस की करें जयोस्तु, सादर सविनय करें नमोस्तु॥
५. देकर सोलह सपने न्यारे, काशी नगरी आप पधारे।
अश्वसेन-वामा के प्यारे, राज दुलारे नयन सितारे॥
६. बचपन से थे आप विरागी, लेकिन मित्र मंडली रागी।
सो कुछ गाथा सुनो लाल की, हाथी घोड़ा चढ़े पालकी॥
७. खेल-खेल में जा पहुँचे वन, देखे वहाँ तपस्वी इक जन।
जो लकड़ी में आग लगाके, यज्ञ रचाये ध्यान लगाके॥
८. जिसे देख पारस घबराए, लकड़ी में दो जीव दिखाए।
अतः तपस्वी को समझाए, क्यों तू हिंसा पाप कमाए॥
९. इसमें दो दो प्राणी प्यारे, यज्ञ रोककर इन्हें बचा रे।
सो होकर वह क्रोधित भारी, लकड़ी काटी उठा कुल्हाड़ी॥
१०. नाग नागिनी जिसमें निकले, जिन्हें बचाने पारस मचले।
लेकिन उनको बचा न पाए, णमोकार तब उन्हें सुनाए॥
११. तब तो समता धार मरे वे, पद्मावति धर्णेन्द्र बने वे।
मरा तपस्वी कमठ बना है, जो पारस का शत्रु घना है॥

१२. ज्यों ही पारस बने विरागी, आया कमठ देख मुनि त्यागी।
लेकर भाव शत्रुता वाले, फिर उपसर्ग घने कर डाले॥
१३. करके बादल काले-काले, गरजा, तूफानों वाले।
बहुत तेज पानी बरसाया, कहर बिजलियों का बरपाया॥
१४. ओले गिरे पत्थरों जैसे, लेकिन पारस सहते ऐसे।
जैसे कुछ भी नहीं हुआ है, किंतु भक्त मन दुखी हुआ है॥
१५. तब धर्णेन्द्र लिए पद्मा को, गया रोकने दुर्घटना को।
फण फैला धर्णेन्द्र प्रभु को, सिर पर बैठाया पारस को॥
१६. पद्मावति ने भी फैलाया, प्रभु पर फण का छत्र लगाया।
टली घोर उपसर्ग निशानी, नशी घातिया कर्म कहानी॥
१७. बने केवली पारस स्वामी, कमठ बना पारस अनुगामी।
पार्श्वप्रभु की हुई देशना, अहिच्छत्र की करें अर्चना॥
१८. अतिशयकारी बना जिनालय,पार्श्वप्रभु की सब बोलें जय।
फिर विहार कर पारस स्वामी, बने हमारे प्रभु कल्याणी॥
१९. घूम घूमकर नगर डगरिया, पहुँचे प्रभु सम्मेद शिखरिया।
स्वर्णभद्र की कूट आसनी, मोक्ष गए दे मोक्ष सप्तमी॥
२०. जय पारस उपसर्ग विजेता, जो भी नाम आपका लेता।
दुख संकट उपसर्ग नशाए, वो सुख शांति सम्पदा पाए॥
२१. पारस का दरबार निराला, विजय पराक्रम देने वाला।
सो विद्या के सुव्रतसागर, करें नमोस्तु शीश झुका कर॥

(सोरठा)

कर पारस के ध्यान, चालीसा के पाठ हों।
मिटें पाप अज्ञान, ऋद्धि सिद्धि सुख ठाठ हों॥
धन दौलत संतान, बढ़ें पार्श्व के नाम से।
कर सुव्रत गुणगान, करें नमोस्तु ध्यान से॥

===

विद्यागुरु चालीसा

(दोहा)

अरिहंत सिद्ध आचार्य को, वंदन वारम्बार।
उपाध्याय अरु साधु जी, सबको हैं सुखकार॥
परम-गुरू उपदेश को, कर लो आतमसात।
गुरु चालीसा पाठ कर, पाओ सुख साक्षात्॥

(चौपाई)

१. विद्यासागर गुरु अनगारी, मोहिनि मूरत प्यारी-प्यारी।
भक्तों के भगवन कहलाए, मुनि आचारज बनकर आए॥
२. चतुर्संघ के तुम हो स्वामी, जग में हो तुम सबसे नामी।
भेष दिगंबर धार लिया है, जग पर फिर उपकार किया है॥
३. गाँव सदलगा जन्म लिया है, वंश अष्टगे धन्य किया है।
मल्लप्पा के राज दुलारे, माँ श्रीमति को सबसे प्यार॥
४. तारिख दस अक्टूबर ईसा, शत उन्नीस वर्ष छियालीसा।
शरद पूर्णिमा का दिन प्यारा, जब तुमने लीना अवतारा॥
५. बचपन से तुम सबको भाए, तोता पीलू नाम कहाए।
कंचन जैसी काया पाई, सबके मन को खूब लुभाई॥
६. घर में रहकर हिंसा त्यागी, सब कुछ तजकर बने विरागी।
प्रथम छोड़कर घर को आए, पीछे सब बांधव भी आए॥
७. बांधव जन की करते सेवा, दुखियों के बन जाते देवा।
अल्प उम्र में जग को छोड़ा, विषयों से मुख अपना मोड़ा॥
८. गुरु देशभूषण उपकारी, व्रत लीना बालब्रह्मचारी।
फिर दक्षिण से उत्तर आए, ज्ञानगुरु को शीश झुकाए॥ ८॥

९. गुरु ने तुमको परखा जाँचा, धार्मिकता को पाया साँचा।
तुमको अपना शिष्य बनाया, मोक्षमहल का रूप दिखाया॥९॥
१०. शिरोधार्य गुरु आज्ञा कीनी, दे दी गुरु ने राह नवीनी।
रत्नत्रय का दान दिया है, निज पर का कल्याण किया है॥
११. तीस जून अड़सठ दिन आया, ज्ञान गुरू से मुनिपद पाया।
राजस्थान अजमेर नगरिया, विद्याधर को मिली डगरिया॥
१२. विद्यासागर नाम है पाया, विद्या का वरदान है पाया।
गुरु से पाकर अच्छी विद्या, सबको देते अच्छी शिक्षा॥
१३. देकर शुरु ने शिक्षा दीक्षा, फिर कीनी उपयुक्त परीक्षा।
देख सफल तुमसे गुरु बोले, लेने को निज पदवी बोले॥
१४. पदवी लेना काम बड़ा था, अनुभव से अनजान पड़ा था।
सो इन्कार किया लेने को, मुझको ऐसे ही रहने दो॥
१५. तभी दक्षिणा गुरू ने चाही, फिर कैसे कर पाते नाहीं।
गुरु ने अपना गुरु बनाया, सूरि पद पर तुम्हें बिठाया॥
१६. तिथी दूज थी मगशिर कृष्णा, नसीराबाद राजस्थाना।
पद आचार्य गुरू ने दीना, अपना कारज पूरा कीना॥
१७. फिर शुरु सल्लेखन कीनी, तुमरे आगे सब कह दीनी।
गुरु का सल्लेखन करवाया, पद सम्राट समाधी पाया॥
१८. गुरु बिन आगे बढ़ते जाते, गुरु के पद चिन्हों पर ज्ञाते।
दो लघु भ्राता मुनि बनाए, जिन आगम का पाठ पढ़ाए॥
१९. बालयती है संघ बनाया, दर्शक जन को खूब लुभाया।
गुरुकुल तुमने बड़ा बनाया, जिन महिमा को खूब बढ़ाया॥
२०. शिष्यों पर उपकार किया है, संयम का आधार दिया है।
सबको व्रती बनाना चाहो, सुव्रत पद दिलवाना चाहो॥

२१. गुरु ने तुमको तीर्थ बनाया, तुमने तीर्थों को बनवाया।
चलते फिरते तीर्थ बनाए, तुम तीर्थंकर सम कहलाए॥
२२. सर्वोदय सिद्धोदय दाता, भाग्योदय के तुम निर्माता।
तीर्थोद्धारक तुम कहलाए, नय तीर्थों को भी बनवाए॥
२३. तुमने पूजी माँ जिनवाणी, जो सब जग की है कल्याणी।
कुशल बुद्धि के तुम हो स्वामी, ज्ञान ध्यान से जग में नामी॥
२४. रागद्वेष को दूर भगाया, मद माया का किया सफाया।
सबको अपना मित्र बनाया, मानवता का पाठ पढ़ाया॥
२५. समयसार का ध्यान लगाते, ग्रंथों के तुम राज बताते।
मूलाचाराचरण किया है, संयम का उपदेश किया है॥
२६. मधुर वचन से तुमने दीना, धर्मामृत का स्रोत नवीना।
चर्या से यश खूब कमाया, विद्वतता से नाम कमाया॥
२७. यथाजात शिशु सम अविकारी, दृष्टी रखते सबसे न्यारी।
पूर्वाचार्यों के अनुगामी, बनकर चलते शिवपथ गामी॥
२८. समयसार के पद्य लिखे हैं, भक्ती में शुभ भाव दिखे हैं।
दोहा लिखकर दान दिया है, उपदेशों से ज्ञान दिया है॥
२९. महाकाव्य तुमने रचडाला, मूकमाटि है नाम निराला।
जैनों की गीता लिख डाली, पद्यों की है छटा निराली॥
३०. कितना सत् साहित्य लिखा है, जिससे सच्चा रूप दिखा है।
जिनवाणी के तुम ज्ञाता हो, दुखियों के तुम मात-पिता है॥
३१. काम आपके सबसे प्यारे, जग में हो तुम जग से न्यारे।
दया धर्म बचपन से प्यारा, इससे पलता धर्म हमारा॥
३२. जैसा तन वैसा मन पाया, अंदर बाहर धर्म समाया।
दया धर्म जो है अपनाता, मुक्तिरमा से जोड़े नाता॥

३३. दया धर्म पर चलने वाले, मुक्तिरमा को पाने वाले।
मूक पशू की सुन के भाषा, दे दी उनको जीवन आशा॥
३४. उनके रक्षण करने हेतू, भारत जन के रक्षण हेतू।
तुमने गौशाला खुलवाए, काम दयोदय तुम बतलाए॥
३५. जैसा अपना जीवन होता, वैसा पर जीवन भी होता।
नहीं बनो तुम पर दुख दाता, ऐसा गुरु का जीवन गाता॥
३६. धर्म अहिंसा तुम बतलाते, जगह-जगह पर चलकर जाते।
जहाँ-जहाँ भी तुम रुक जाते, दुखियों को सुख देकर जाते॥
३७. जंगल में मंगल हो जाता, जहाँ आपका पग रुक जाता।
जिस पर होवे कृपा तुम्हारी, मुक्ति महल की मिले सवारी॥
३८. दर्श आपके जो भी पाता, भूल नहीं वो तुमको पाता।
बिन माँगे सब ही मिल जाता, जन-जन का प्यारा हो जाता॥
३९. हिन्दू तुमको हरिहर माने, मुस्लिम पैगंबर सा जाने।
सिक्खों की गुरुनानक पूजा, कोई कहे न तुमको दूजा॥
४०. ध्यान समय साधू बन जाते, उपाध्याय सम पाठ पढ़ाते।
सूरी बन दे दीक्षा तारे, तीनों परमेष्ठी अवतारे॥
४१. सदा आपके गुण जो गाये, गुणी शीघ्र वो बन भी जाये।
'सुव्रत' गुण धारेगा जो भी, मुक्तिरमा पाएगा वो भी॥

(दोहा)

शांति वीर शिव ज्ञान ये, गुरु परंपरा जान।
विद्यागुरु आचार्य का, यह चालीसा जान॥
मोक्ष सप्तमी पर्व पर, अमरकंटक स्थान।
वीर संवत् पच्चीस सौ, उन्तीस सुतिथि जान॥

===

गंधोदक भजन

(लय—मानो तो मैं गंगा माँ हूँ....)

मानो तो मैं गंधोदक हूँ, ना मानो तो झरता पानी।
जो प्रभु ने दी भक्तों को, वो धर्म की अमर निशानी॥

अनादिकाल से बहती आई, जिन अभिषेक की धारा।
जिन गंधोदक से भक्तों ने, निज आतम शृंगारा॥
मेरी बूँद-बूँद में भरी है, जिनधर्म की अमर कहानी। जो प्रभु...
मानो तो मैं....

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोये सव्वसाहूणं।

कोई कष्ट हरे मेरे जल से-२, कोई तन के रोग मिटाए।
कोई इच्छा पूरी करने, मुझे जगह-जगह छिड़काए॥
हो जिसकी जैसी श्रद्धा, हो वैसी ही फलदानी। जो प्रभु...
मानो तो मैं...

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनं।
जिन गंधोदकं वंदे, अष्टकर्म विनाशनं॥

मैना सुन्दरी ने मुझसे, निज पति का कुष्ट मिटाया।
हुए सात शतक भी निरोगी, तन चेतन को चमकाया॥
मेरी धारा करके मिटी है, भक्तों की कर्म कहानी। जो प्रभु...
मानो तो मैं...

===

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥1॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥2॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएंगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएंगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥3॥
चंदा बिना चकोरों को ज्यों, कितनी पीड़ा हो।
बिना स्वाति की बूँदों जैसे, दुखी पपीहा हो॥
मिट्ठू-मिट्ठू जैसी रटना, भक्त लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥4॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥5॥

===